लोकनायक
मुरलीधर व्यास
स्मृति ग्रन्थ

बालचंद साँड
वास्ते लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रन्थ
प्रकाशन समिति, कलकत्ता

लोकनायक

मुरलीधर व्यास

स्मृति ग्रंथ

स भवानी शकर व्यास 'विनोद'



संस्करण : अक्टूबर 1990

मूल्य : एक सौ एक रुपये मात्र

प्रकाशक
[illegible] व्यास
[illegible] व्यास स्मृति ग्रंथ प्रकाशन समिति कलकत्ता

मुद्रक
[illegible] टेक्नोग्राफिक्स एजेंसी
178 महात्मा गांधी रोड ([illegible])
कलकत्ता 700 007

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] बीकानेर 334 001

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] Vyas Smriti Granth
[illegible] by [illegible] Vyas

Rs. 101.00

अपना कुछ भी नहीं

लोकनायक मुरलीधर व्यास का स्वर्गवास हुए अब 19 वर्षों से अधिक का समय बीत चुका है। उनकी मृत्यु के तत्काल बाद जिस पीढ़ी ने जन्म लिया, उसमें से अधिकांश ने आम चुनावों में अपने प्रथम मताधिकार का प्रयोग भी कर लिया है यानी एक पूरी वयस्क पीढ़ी समाज के सामने आ चुकी है। इस पीढ़ी ने मुरलीधर व्यास को काया रूप में कभी नहीं देखा। हाँ, उनके बारे में बहुत कुछ सुना है और उनकी मूर्तियों से प्रेरणा भी ली है। इस पीढ़ी के सामने भी यदि आदर्श नेता की बात उछाली जाए तो पहला नाम जो जुबान पर आएगा वह मुरलीधर व्यास का ही होगा। पुरानी पीढ़ी के लोगों ने तो व्यासजी को अपने सुख दुख के साथी के रूप में खूब देखा-परखा था दीन दलितों के लिए जूझते देखा, विधान सभा में गरजते देखा, जनसभाओं में हुंकारते देखा, आन्दोलनों में गिरफ्तार होते हुए देखा, केश पकड़ कर घसीटे जाते और लाठियाँ खाते हुए भी देखा। 1948 से 1971 तक के 23-24 वर्षों का परिदृश्य उनकी स्मृति पटल में आज भी इतना सजीव और मार्मिक है कि मृत्यु की घटना या उसके बाद के 19 वर्ष भी उसे विस्मृति की ओर नहीं धकेल सकते।

लोग कहते, 'यह व्यक्ति गरीबी में रहा, गरीबी में जीया और गरीबी में मरा लेकिन मन से कभी गरीब नहीं रहा। मानवीय मूल्यों की अपार सम्पत्ति का खजाना हमेशा उसके पास रहा। जब तक जीया, चर्चित रहा। आज भी 'जीवित' नेताओं से कहीं अधिक चर्चित है।'

लोकनायक व्यास को देश के कर्णधारों का सान्निध्य मिला। बचपन में महात्मा गाँधी के वर्धा आश्रम के निकट के नवजीवन विद्यालय में पढ़ते समय उन्होंने गाँधीजी के खूब दर्शन किये, उनके प्रवचनों को सुना। वहाँ आने वाले नेताओं—सुभाष, नेहरू, विनोबा, जाकिर हुसैन, श्री मन्नारायण आदि से प्रभावित हुए और फिर राष्ट्रीय नेताओं के निकट सम्पर्क में आते गये। उनकी प्रतिभा को पहचानने वालों में प्रमुख थे—आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, अरुणा आसफ अली, प्रेम भसीन, अशोक मेहता, नाथ पै, एन जी गोरे और समरगुहा आदि। साथी थे—चन्द्रशेखर, मधु दण्डवते, सुरेन्द्र मोहन, समरेन्दु कुन्दु एवं अनेक ऐसे नेता जो आज की राजनीति में दिव्य नक्षत्र हैं। अपने दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के तो वे जीवन पर्यन्त सदस्य रहे। राजस्थान विधान सभा में विरोधी दल के नेता के रूप में उन्होंने जो दस्तावेजी कार्य किये, वे अब इतिहास का अंग बनने जा रहे हैं।

इन सभी कार्यों को करते हुए भी उन्होंने न तो मन में कटुता रखी और न वैयक्तिक विद्वेष को ही अपने जीवन का अंग बनाया। मूल रूप में वे 'राजनेता' थे ही नहीं। उनके जीवन का अध्याय तो संवेदना की स्याही से लिखा हुआ था। वे एक नाट्य लेखक और रंगकर्मी थे, कवि, कलाकार और पत्रकार थे, अच्छे वक्ता, और व्याख्याकार थे और सबसे ऊपर वे एक श्रेष्ठ इन्सान थे। उनका 'फक्कड़पन' भी लुभावना था। एक साथ कई ध्रुवों पर संघर्ष करते हुए भी वे 'अजेय' थे, प्रखर विरोधी के भी मन से मित्र थे अतः अजातशत्रु थे।

इस ग्रंथ में मेरा कोई विशेष अवदान नहीं है। मैंने तो सैकड़ों हजारों लोगों की भावनाओं को पिरोया भर है। कईयों की भाषा और भावों को शब्दशः उद्धृत किया है। अनेकों पत्रों, चित्रों और दस्तावेजों को आधार बनाया है। मौखिक साक्षात्कारों और अनौपचारिक वार्ताओं के आधार पर घटनाओं के तिथिक्रम को व्यवस्थित रूप दिया है। इसके अलावा मेरा कोई योग नहीं है इस ग्रंथ में। हाँ, यह चेष्टा अवश्य रही है कि किसी भी व्यक्ति का न तो चरित्र हनन हो, न उस पर व्यक्तिशः लांछन लगाया जाए। बात जब मुरलीधरजी की करनी है तो दूसरों को लांछित करने या हेय सिद्ध करने का अधिकार हमें किसने दिया? अपनी ओर से ऐसा प्रयास मैंने कभी नहीं किया। जो कुछ लिखा, उद्धृत किया या संकलित किया वह सब पत्रों, दस्तावेजों और साक्षात्कारों के मूल शब्दों पर आधारित है।

अब रही धन्यवाद की बात। स्व. मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रंथ प्रकाशन समिति के अनथक प्रयासों से यह ग्रंथ सामने आया है। व्यासजी के शिष्यों का इसमें विशेष अवदान है। सैकड़ों लोगों ने मौखिक वार्ताओं, साक्षात्कारों, संस्मरणों और दस्तावेजी सामग्रियों से हमें सहयोग दिया है। ये सब धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही उन सभी ज्ञात अज्ञात व्यक्तियों के प्रति भी हम कृतज्ञ हैं जो मुरलीधरजी के व्यक्तित्व के सम्मोहन से जुड़े हुए हैं और चाहते हैं कि ऐसा ग्रंथ तत्काल सामने आए जो उनके 'नेता' के 'अमरत्व' को रेखांकित कर सके।

इस ग्रंथ में कमियाँ होनी हैं और आगे भी रहेंगी। मुरलीधरजी जैसे लोकनायक पर जितनी बातें कही जाती हैं, उनसे कहीं अधिक 'अनकही' रह जाती हैं। जो व्यक्ति लोगों के आख्यानों और संस्मरणों में जीवित हो, उसके व्यक्तित्व और कृतित्व पर 200 तो क्या 2000 पृष्ठ भी लिखे जाएँ तो भी कुछ न कुछ तो ऐसा रहेगा जो लिखने से रह गया हो। ऐसी कमियाँ हमें और अधिक लिखने के लिए उत्प्रेरित करती हैं तथा और अधिक ग्रंथ सामने आते हैं। यही तो हमें अभीष्ट है।

यह कहना मेरी अतिरिक्त विनम्रता नहीं कि ग्रंथ में जो भी कमियाँ हैं वे मेरी अपनी हैं। एक इच्छा अवश्य है कि सुधी पाठक कमियों की ओर ज्यादा ध्यान न देकर भावना की ओर देखेंगे।

—सम्पादक

अनुक्रम

समर्पण

उन सब लोगों को—
- जो सत्य-पथ के अन्वेषी है,
- जो सत्य पथ के पथिक है और
- जो सत्य पथ पर चलते हुए

हर संभव कुर्बानी के लिए तैयार रहते हैं।

बिम्ब-बिम्ब चैतन्य

लोकनायक मुरलीधर व्यास का नाम लेते ही जो बिम्ब बनता है वह आस्था, विश्वास एव निष्ठा के व्यक्तित्व का बिम्ब है। बीकानेर की जनता के लिए व्यासजी समाजवादी आदोलन के प्रतीक भी थे और पर्याय भी। इससे थोडा आगे बढकर कहें तो उनका नाम सत्य और ईमानदारी का निर्भीकता और त्याग का सेवा और परोपकार का पर्याय था। व उन लोगो के लिए भी आस्था का केन्द्र थे जिन्होने समाजवाद का नाम शायद पहली बार सुना था। लोग उनकी बातो से आदोलित होते थे क्योंकि वे जानते थे कि व्यासजी जो कुछ कहते है वह सच ही होता है। वे राजनीति म सत्य के पक्षधर थे अत साफ सुथरी और बेबाक राजनीति करते थे। छल, छद्म, दुराव और दोगलेपन की राजनीति उन्हे रास नही आती थी।

आज राजनीति का जो विकृत रूप हमारे सामने आया है व्यासजी उससे एकदम अलग थ। उनकी बातो म न तो "राजनीतिक क्षुद्रता की गध आती थी और न वे 'राजनीति" के घटिया खेल खेलते ही थे। उनके लक्ष्य स्पष्ट, विचार सुलझे हुए तथा साधन पवित्र थे। एक चरित्रवान राजनेता के रूप म उन्होने राजनीति म ईमानदारी चारित्रिक निष्ठा एव सत्य के अध्याय जोडे। दूसरे शब्दो म कहें तो उन्होने "राजनीति" को विश्वसनीय बनाया।

व्यासजी का एक पारम्परिक समाज मे काय करना था। व उसकी सीमाओ, रूढिगत आस्थाओ और दुबलताओ को जानते थे। वे जानते थ कि शताब्दियो तक साम ती व्यवस्था म रहने वाले लोगो म कुछ बधी बधाई धारणाएँ होती हैं। देवपूजा, सामतपूजा और पुरानी मा यताओ की अधश्रद्धा उनके रक्त म घुन मिल गई है। ऐसे समाज का समाजवादी विचारधारा की ओर ले जाना लोक जागति क लिए जन जन को जुझारू सघष के लिए तयार करना और फिर अधिकारो के प्रति निरन्तर सचेष्ट बनाये रखना एक बहुत ही कठिन काय था। व्यासजी ने इस कठिन काय म भी सफलता प्राप्त की। वे पारम्परिक समाज म जाग्रत लोक चेतना के केन्द्र बन गये।

यह बात नही कि बीकानेर के लोग सघष करना जानते ही नही थे। राज्य सत्ता के समथन के साथ साथ राज्यतन्त्र के विरोध की समाना तर धारा भी यहा चलती रही

थी। इस जनधारा के प्रतीक थे बाबू मुक्ताप्रसाद जिन्होंने सार्वजनिक व लोक कल्याण कार्यों से चेतना का श्री गणेश किया था। उन्होंने औषधालय वाचनालय, प्याऊ एवं शिक्षण शालाएं खोली सेवादलों के माध्यम से जन कल्याण के काम किये तथा युवा शक्ति को जोड़कर उसे जागरूक बनाया। असहायों और निर्धन जनों के मुकदमों की निःशुल्क पैरवी करना राष्ट्र नायक वीरों की जयंतियाँ मनाना और इस प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार करना उनका लक्ष्य था। जागरूक राज्य सत्ता ने उन्हें निर्वासित कर दिया। आजादी की मशाल को जलाये रखने का काम फिर भी चालू रहा। वैद्य मघाराम एवं रघुवरदयाल गोयल जैसे अनेक लोगों ने उस लोक चेतना को जीवित बनाये रखा। पर यह सब स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले की कहानी है।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में मूल्यों की एक रिक्तता सी सामने आई। सामंती राज्य तो चला गया पर सामंती संस्कार फिर भी बने रहे। बाबू मुक्ताप्रसाद जैसे पुरोधा और योद्धा अब नहीं थे। जो शेष बचे उनमें से कुछ सत्ता पक्ष की ओर उन्मुख हो गए और कुछ 'संन्यास' की ओर। एक जबरदस्त रिक्तता थी। एक ऐसी रिक्तता जो भटकाव को जन्म देती है। स्वभाव में सत्ता की ओर रहने वाला पारम्परिक समाज इस समय में सहज ही भटकाव में आ सकता है, आने भी लगा था पर तभी उसकी तंद्रा एक झटके के साथ टूट गई और वह "झटका" देने वाले थे स्वर्गीय लोकनायक मुरलीधर व्यास।

व्यासजी को लोगों ने सहज रूप में तत्काल ही स्वीकार लिया हो—ऐसी बात भी नहीं थी। लोगों ने उनकी विलक्षणता को देखा परखा, कभी विस्मय किया तो कभी संदेह। विस्मय इस बात का था कि जो व्यक्ति व्यवहार में इतना सहज सरल और साधारण हो वह सत्ता के फौलादी पंजों को तोड़ने में कैसे सक्षम हो सकता है? और संदेह इस बात का था कि बर्षों से आप इस अपेक्षाकृत अनजाने व्यक्ति का साथ देना कहाँ तक ठीक रहेगा? फिर जब संदेह तिरोहित होने लगा तो विश्वास अंकुरित हुआ। विश्वास से आस्था और आस्था से अनुसरण की प्रवृत्ति जगी और अनुसरण भी इस हद का कि जिस भी आंदोलन का आह्वान होता हजारों हजारों लोग स्वतः ही उमड़े पड़ते थे। विस्मय से अनुसरण तक की यह लम्बी यात्रा बीकानेर के इतिहास के लगभग दो युगों की यात्रा है।

व्यासजी इतने सरल स्वभाव थे कि साधारण से साधारण आदमी भी उन्हें अपना समझता था और इतने असाधारण थे कि सत्ता के शक्तिशाली केन्द्र भी उनसे सकोच करते थे। विचारों के इतने प्रखर थे कि बड़ा प्रलोभन भी उन्हें डिगा नहीं

मकत थे और व्यक्तिगत सम्ब धा म इतन मधुर भी थे कि विरोधियो के प्रति भी उनके मन म कोई कटुता नही थी। अपन विरोधी विचारधारा के व्यक्तियो के घरेलू समारोहो म बिना झिझक के आ-जा सकत थ पर मचो पर या विधान सभा म उनकी बखिया उधेडने म भी सबसे आगे रहत थे। ये बि दु परस्पर विरोधाभास के लग सकत हैं पर उनका समग्र व्यक्तित्व इन्ही सब से मिलकर बना था। लोक व्यवहार म मक्खन की तरह कोमल दिखने वाला यह व्यक्ति भ्रष्टाचार के आरोप लगाते समय वज्र से भी अधिक कठोर दिखाई दता था।

व एक राजनीतिक दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य थे-पर दल के 'दलदल' स फिर भी दूर थ । दल की भीतरी गुटबदियो म उनका कोई विश्वास नही था। उनमे सगठन कौशल की अद्भुत क्षमता थी। जिन लोगो न उन पर व्यक्ति वादी होन का आरोप लगाया व भी जानत हैं कि जितन अधिक राजनीतिक कार्यकर्त्ता व्यासजी न दिय उतने व सब मिल कर भी नही दे सकत। व्यासजी द्वारा तयार किये हुए कार्यकर्त्ता आज भी विभि न दलो   सगठना एव सस्थाओ म सक्रिय रूप स कायरत हैं। उ होने ऐसे ठोस कार्यकर्त्ता तयार किय जो न आदोलनो से डरते हैं, न जल जान स न डर कर समझौता करत हैं और न सच्चे माग से विचलित ही होत हैं। राजनीतिक चेतना के लिए जिस मानव शक्ति की जरूरत होती है वह व्यासजी ने दी   उसे आदोलित भी किया और उद्वेलित भी। उस खराद पर चढाया अग्नि परीक्षा म तपाया और खरा सोना बनाया।

व्यासजी का युग राजस्थान म सत्ता म सक्रिय सघष का युग था। उ होन आदो लनो की एक शृखला सी चलाई। वे मानते थ कि आदोलन जनशक्ति को और अधिक प्रखर करते हैं उसम और अधिक आत्म विश्वास भरते हैं। गृह निकासी आदोलन, गोवा आदोलन जागसर जिप्सम मजदूरो का आदोलन दूध निकासी आदोलन तो मुख्य है ही, इनके आगे वालो ठेले वालो सरकारी कमचारियो विद्या- र्थियो रेलवे कमचारियो टक्सी और ट्रक वालो कारखानो के मजदूरो मध्य-अल्प आय व्यापारियो साधारण उपभोक्ताओ से लकर वकीलो व अ य बुद्धिजीवियो तक को उ होने आदोलित किये रखा। सत्ता पक्ष समझ गया कि व्यासजी के रहते हुए वह भ्रष्ट आचरण नही कर सकता और यदि भ्रष्ट आचरण करत पकडा गया तो फिर विरोध की सशक्त आवाज और आदोलन की तीखी धार से नही बच सकता।

व्यासजी कठिन परिस्थितियो म भी अविचलित रहते थे। घटनाओ का प्रभाव उ हें भटका नही सकता था। उनके बच्चो की रोटी पर कइ 'जन विनायो' की नजर थी पर उ होने कभी समपण नही किया। भूख की आच ने उनको और अधिक

दढ बनाया । हजारो बेघर लोगा के हरा री रक्षा करने वाले व्यासजी अपन लिए एक छोटा मा घर भी नही बना मके । हर बच्चे की शिक्षा के लिए लडन और जेल जाने वाले व्यासजी अपन बच्चा के लिए अच्छी शिक्षा का प्रबध तक नही कर पाये थे । जिसका एक पग घर म और एक जन मघष क लिए बेताब हो उससे भला और क्या अपक्षा की जा सकती है ?

विधान सभा म वे चाहे अकेले हो अथवा विरोधी मदस्या के साथ, विराध पक्ष के ता वे नेता ही रहे । वे अकेले ही राज्य मत्ता का हिलान म काफी थ, जब और विरोधी दल भी साथ देते तब ता उनकी शक्ति स्वत ही कई गुणा हो जाती थी । विधान सभा म उनकी सिंह गजना, अकाट्य तक एव पुख्ता आकडे इस तरह छाये रहते कि मत्रिगण सहज रूप म उपक्षा करने की हिम्मत तक नही कर मकते थे । राजस्थान भर के समाचार पत्रो ने उनके वक्त या का हमशा सुविधा के साथ छापा प्रदेश के सभी लागो न उनम एक सकल्पवान लाकनता की झलक देखी क्राति धर्मी लोगा ने उनको रहनुमा माना और साधारण जनता मजदूरा और मध्यम श्रेणी के लोगा ने उनको मसीहा क रूप म लिया ।

व्यासजी आत्मीयता सहृदयता एव अपनत्व के प्रतीक थे । उनकी मधुर मुस्कान निश्छल वाणी सहजता और प्रेम भावना विरोधियो का भी दिल जीत सकती थी । लाक सेवा उनके जीवन का एक मात्र ध्येय था और लोक जागरण उनका अभीष्ट । अपने सेवापरक और शिक्षाप्रद जीवन से व अपने आप म एक सस्था बन चुके थे । वे एक मिसाल थ जिस आनेवाले कई युग अपन सामने रखा करगे । व्यासजी न व्यक्तियो को वर्गो धर्मा अथवा सकुचित विचार वीथियो म बाट कर नही देखा । धम निरपक्षता उनके लिए श्वास की तरह स्वाभाविक प्रक्रिया थी ता लोकतत्र हृदय के स्पदन की तरह जरूरी तथ्य । जुल्मो का प्रतिकार करने मे वे सदव अग्रणी रहते थे पर व्यक्ति क कुकर्मों स घणा करत हुए भी स्वय व्यक्ति से घणा नही करते थे । व उत्पीडित एव दलित लागो के त्राता थे । हर आख का आसू पोछने म तत्पर रहने वाल और हर पीडित के हिमायती थे । ऐसे व्यक्ति शताब्दियो म जाकर पदा हात ह और जब कभी सामन आत हैं—आन वाली कई शताब्दियो के लिए प्रेरणा के स्रोत बन जात हैं ।

उगते सूरज की साख

व्यासजी न जीवन के कुल 53 बसन्त ही देख । जितनी अनुभव यात्रा उन्होंने इस छोटे से जीवन म की उतनी विरले लोग ही कर पात हैं। वे कवि कलाकार, रगकर्मी, नाटक लेखक, व्यायामविद शिक्षक समाजसेवी एव राजनेता तो थे ही, मानव मूल्या के पोषक और त्यागवृत्ति वाले अपरिग्रही सत भी थ । परिव्राजक के रूप म उन्होंने गाव गाव की परिक्रमा की, प्रदेशा म घूम घूम कर भारत दर्शन किया तथा विदेशा की यात्रा भी की । गरीब की झोपडी से लेकर राज प्रासादा तक उनकी पहुच थी । जहा मजदूर से मिलने वे खुद दौड कर जाते थे मिल मालिक को उनसे मिलने के लिए स्वय आना पडता था ।

महात्मा गाधी जैसे महान नताओ के सम्पर्क म तो वे बचपन म ही आ गये थे । उनको सुभाषचन्द्र बोस, जयप्रकाश नारायण एव राममनोहर लोहिया जसे क्रांतिकारी नेताओ का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ । एक दशक तक बीकानेर नगर का राजस्थान विधान सभा म प्रतिनिधित्व किया तेईस वर्षों तक प्रतिपक्ष व सघष की राजनीति को सम्बल दिया प्रान्तीय स्तर पर दल के अध्यक्ष और मन्त्री रहे तथा राष्ट्रीय कायकारिणी के सदस्य भी बन रहे । गौरव मण्डित होकर भी व पूणत सहज, सरल, निष्पृह निरभिमानी एव सब सुलभ थे । त्याग उनका मूल मन्त्र था तो फक्कडपन उनका स्वभाव । वे मुस्कानें लुटाते थे प्रेम से दिल जीतते थ और विरोधिया तक को अपना बनाने म सिद्ध हस्त थे । 53 वष की उम्र वस तो बहुत छोटी है पर ऐसी विशाल अनुभव सम्पदा को देखते हुए मानव को महानता की ओर ले जाने म पर्याप्त है ।

व्यासजी का जन्म 4 जुलाई 1918 को हिंगनघाट नगर म हुआ । यह महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले म स्थित है । मध्यम श्रेणी के ब्राह्मण कुल म जन्म लेकर समाजवाद की अलख जगाने वाले इस महान नेता का शशव हिंगनघाट म ही बीता । पिता श्री सूरजकरण जी व्यास से जहा उन्होंने सकल्पो की दृढता और सिद्धान्त प्रियता सीखी वहा माता श्रीमती कस्तूरी देवी से पारम्परिक सस्कार भी प्राप्त किये । पाचवी कक्षा उत्तीण करन के बाद व्यासजी हिंगनघाट स वर्धा आ गये । छठी स मैट्रिकुलेशन तक की शिक्षा उन्होंने मारवाडी विद्यालय वर्धा म ही

प्राप्त की। यहा उन्हें होस्टल म रहना पडता था—घर से दूर परिजनो स दूर, ममता के स्नेहिल वातावरण से दूर, पर व्यासजी ने जल्दी ही अपने आपको होस्टल के वातावरण म ढाल लिया। नन्हें नन्हें बालको के रूप मे उन्हें नये नये मित्र मिले—हम उम्रो का समूह मिला और शीघ्र ही घर जसा वातावरण बन गया। होस्टल के जीवन का सबसे बडा सुख यह था कि वहा महात्मा गाधी के दर्शनो का लाभ सहज म ही मिल जाता था। इसी नव भारत विद्यालय के पास स्थित महिला आश्रम म महात्मा गाधी रहा करते थे। विद्यालय एव छात्रावास पर महात्मा गाधी की विचारधारा का प्रखर प्रभाव था। सारे छात्र खादी के वस्त्र पहनते तथा देश प्रेम के गीत गुनगुनाया करते थे। काग्रेस सेवा दल के बडे सदस्यो की नकल करते हुए वे भी अपने छोटे-छोटे सेवा दल बनाते, वन्दे मातरम् गाते, झण्डे को सलामी देते तथा मार्चपास्ट किया करते थ। इस लघु समार के रचाव म व्यास जी का बडा भारी योगदान था।

गाधीजी वर्धा मे भी रहते थे और इसी कारण वर्धा देश विदेश के आकर्षण का केन्द्र स्वत ही बन गया। देश के प्राय सभी प्रख्यात नेता, शिक्षाविद एव समाज सुधारक वहा आते और महात्माजी से मत्रणा किया करते थे। उनम पडित नेहरू, आचार्य कृपलानी जमनालाल बजाज पट्टाभि सीतारामैया, विनोबा भावे, काका साहब कालेलकर किशोर लाल मशुवाला, श्रीयुत् श्री कृष्णदास जाजू कुमारप्पा एव आर्य नायकम् आदि प्रमुख थे। एक बार सुभाष बाबू भी वहा आये थे, उन्होंने हिन्दी म भाषण दिया था। व्यासजी के जीवन का स्वत ही एक दिशा मिलती जा रही थी। उनका बीज—व्यक्तित्व विकासमान अकुरण की ओर बढने लगा था।

विद्यालय और छात्रालय (छात्रावास) म बडे बडे नेताओ के भाषणो का आयोजन किया जाता। काग्रेस के गरम और नरम दल वाले नेताओ के अतिरिक्त समाजवादी विचारको के भाषण भी होते। व्यासजी उन विचारको के भाषण सुनते अपनी बालबुद्धि से उनका मूल्याकन करते तथा उनम स जो अनुकूल होता उसे अपनी विचारधारा का अग बना लेते। यह क्रम निरन्तर चलता रहा। विद्यालय म उन्हें श्री नामलेजी व छात्रालय म श्री भिडे का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ। व्यासजी विद्यालय के तो कप्तान थ ही छात्रालय म भी वे वर्षों तक कप्तान रहे। विद्यार्थी साथियो म वे इतने अधिक लोकप्रिय थे कि उनके स्थान पर किसी अन्य को कभी नहीं चुना गया। जब तक वे छात्रालय म रहे कप्तान ही बने रहे। श्री गणेश हरि भिडे छात्रालय के अधीक्षक थ। उनकी इच्छा थी कि चुनाव हो तथा नया कप्तान बने, पर छात्र व्यासजी के अतिरिक्त किसी और को चाहते ही नहीं थ। अत कोई परिवर्तन नहीं हो सका। कप्तान के रूप म उन्होंने कभी

किसी छात्र की शिकायत नही की। उनकी स्वय की काय प्रणाली ऐसी थी कि शिकायत का अवसर आ ही नही सकता था। छात्र स्वत ही अनुशासित थे अत स्वत स्फूत प्रेरणा स काय करते थे। अधिकारीगण भी आश्वस्त थे कि व्यासजी के रहते अनुशासन की कोई समस्या नही आ सकती।

अपन सुगठित शरीर एव आकपक व्यक्तित्व से उन दिना भी व लोगा को प्रभावित करत थे। छात्रालय म रहत हुए उ होने लाठी व तलवार चलाने का अभ्यास किया। कुश्ती म दक्षता प्राप्त की तथा तरन म कुशलता हासिल की। व हर काय विशिष्ट योग्यता की सीमा तक किया करते थे। लाठी चलाते समय वे अकेले होत तथा बीस पच्चीस छात्र सामन होत। सबको छूट थी कि व व्यास जी पर लाठिया का मनचाहा वार करें पर व्यासजी थे कि चक्राकार लाठी चलाकर सबको परास्त कर देत थे। जब साइकिल चलाने की कला सीखी तो उनम भी विशिष्टता का प्रदशन ही किया। व एक साथ 14–14 छात्रा को बिठा कर साइकिल चला सकत थे। आग पीछे की खूटियोपर आग पीछे के मडगाडो पर हण्डल पर, कधो पर, एक दूसर के सहार स खडे बठे 14 छात्र एक ही साइकिल पर चलते तथा ऊपर बठे छात्र जयहि द बालत। बडा ही रोचक दश्य बनता था।

व्यासजी कुश्ती के भी शौकीन थे। भिन्न भिन्न प्रकार के दावपच सीखना, नियमित दड बठकें लगाना, अखाडे म साथिया को ललकारना आदि उनका नियमित क्रम था। एक बार उनकी कुश्ती अपने से दुगुन वजन और डील डौल के लडके से रख दी गई। लडका हिंगनघाट का ही था। वर्धा म आयोजित इस कुश्ती न आकपण और कुतूहल का एक ऐसा वातावरण बनाया कि सकडा लाग कुश्ती देखन एकत्रित हो गये। लोग सोचते थ कि व्यास जी अवश्य हारेंगे क्योकि कुश्ती जोड की नही थी। बराबरी की जोड होती तो बात और थी, पर यहा तो दुगुन वजन और डील–डौल का पहलवान सामने था। कुश्ती शुरु हुई और ज्या ज्या दाव पच होन लगे लोगा का विस्मय भी बढन लगा। व्यासजी अनेक दाव पचो म सिद्धहस्त थे। अत मौका पाकर उन्होन विपक्षी पहलवान को ऐसा उठा कर फेंका कि लोग देखते ही रह गये। इस कुश्ती से व्यासजी का आत्म विश्वास और अधिक बढ गया। आगे जाकर जीवन म उन्हें कई क्षेत्रो म कई भारी भरकम पहलवानो से जूझना पडा तथा लाग जानत है कि व्यासजी न कभी मदान नही छोडा।

खेलो म उनका विशेष रुझान सदैव ही बना रहा । अ य बातो के अलावा वे एक अत्य त ही कुशल तराक और फुटबाल के उत्तम खिलाडी भी थे । पानी म घण्टा तरना एक छोर से दूसरे छोर तक तरते हुए निकल जाना, ऊचाई से पानी म कूदना, शवासन की मुद्रा म बिना हिले डुले काफी समय तक पानी म पडे रहना आदि उनके लिए बायें हाथ का खेल था । फुटबाल म भी उ होन अपनी टीम की कप्तानी की थी ।

व्यासजी का सर्वाधिक प्रेरणा अपने गुरुजा से मिली । सौभाग्य से उन दिना नव भारत विद्यालय राष्ट्रीय गतिविधियो का केन्द्र बना हुआ था । उसके प्रधानाचाय थे श्री इ डब्ल्यू नायकम् जो विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टगोर के सचिव भी रह चुके थे । श्री नायकम् मूलत श्रीलका के निवासी थे । अपन नाम के आगे आय ' शब्द लगाकर व आय नायकम् बन गय थे । उ होने एक बगाली महिला आशा देवी से शादी की । श्री नायकम् जहा नौ भाषाओ के ज्ञाता थे, श्रीमती आशा नायकम अग्रेजी व सस्कृत म एम ए होने के साथ साथ सगीत के क्षेत्र मे भी विशेष योग्यता रखती थी ।

जिन अ य महिलाओ न व्यासजी को अत्यधिक प्रभावित किया उनम सरला बेन एव शाता बेन प्रमुख थी । ये दोनो विदेशी महिलाए महात्मा गाधी के आश्रम म रहती और अतिरिक्त समय मे नव भारत विद्यालय म अध्यापन भी करती थी । सरला बेन वाणिज्य एव बाल क्रीडाओ के कालाश लेती थी । शाता बेन जो मूलत जमन महिला थी, बच्चो को हॉकी खेलना सिखाया करती थी । इस तरह श्री आय नायकम श्रीमती आशा आय नायकम सरला बेन शाता बेन छात्रालय के अधीक्षक श्री गणेश हरि भिडे एव विद्यालय म श्री दामले जसे समर्पित व्यक्तियो के कुशल नेतत्व एव अध्यापन म व्यासजी का विकास हुआ । देश के नेताओ के निर तर सम्पक से उनकी चेतना का सदव स्फूर्णा मिलती रही तथा समाजवादी एव क्रातिधर्मी नेताओ के ओजस्वी भाषणा का उन पर अमिट प्रभाव पडा । बचपन की ऐसी प्रयोगशाला मे से निकला यह किशार एक नक्षत्र की तरह चमत्कृत हुआ जिसका मूल श्रेय नव भारत विद्यालय क वातावरण को ही है ।

शिक्षा मण्डल की व्यवस्था श्रीयुत् श्री कृष्णदास जी जाजू अध्यक्ष श्री जमनालाल जी बजाज की देख रेख म करते थे । नव भारत विद्यालय उसी का अग था । त्याग मूर्ति श्री बजाज खोज खाज कर प्रतिभा सम्पन्न लोगो को उस विद्यालय म लाया करते थे । उ ही दिनो श्रीयुत् श्री म नारायण अग्रवाल मारवाडी शिक्षा मण्डल के मत्री बन कर आये । अपने प्रखर राष्ट्रवादी विचारो से श्री अग्रवाल ने भी छात्रो को

अत्यधिक प्रभावित किया। वे एक प्रमुख शिक्षा शास्त्री थे। अपने अध्ययन के क्रम मे वे विदेशो म भी ज्ञानाजन कर चुके थे। आगे जाकर श्रीयुत् श्री मन्नारायण की शादी सेठ जमनालाल बजाज की द्वितीय पुत्री मदालसा देवी से हुई। शादी का आयोजन गाधीजी के वर्धा आश्रम के निकट नव भारत विद्यालय मे ही रखा गया। सारा प्रबन्ध स्वय सेवको के हाथो मे था। इस स्वय सेवक टोली के मुखिया श्री मुरलीधर व्यास ही थे।

इस शादी का वर्धा के जन जीवन पर परिवतनकारी प्रभाव पडा। शादी बिना पर्दे, बिना घूघट के और बिना किसी आडम्बरी शान शौकत के हुई। बिल्कुल सादे वातावरण म वर वधू ने परस्पर मालाओ का आदान प्रदान किया तथा महात्मा गाधी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

सेठ जमनालाल बजाज एक समर्पित भावना के व्यक्ति थे। नव भारत विद्यालय का भवन उन्होने ही बनवाया था तथा सारी व्यवस्था का भार उनके कधो पर ही था। बजाज परिवार से व्यासजी का घनिष्ठ लगाव सा हो गया। सेठ जमनालालजी पुत्र रामकृष्ण बजाज तो व्यासजी के सहपाठी ही थे। व्यासजी के कई अविस्मरणीय प्रसगो म वे व्यासजी के साझीदार थे।

इधर व्यासजी का विद्यार्थी काल चल रहा था और दूसरी ओर देश मे आजादी के आदोलन का दौर दिना दिन तेज होता जा रहा रहा था।

1937 से 1942 तक का समय भारतीय स्वतन्त्रता आदोलन के इतिहास का तीव्र आदोलनकारी समय था। 1937 मे ही अनेक राज्यो मे काग्रेसी सरकारो का गठन सभव हुआ। कुछ अन्य राज्यो म मुस्लिम लीग की सरकारें भी बनी। अत्यन्त ही सीमित अधिकारो एव निरकुश ब्रिटिश शासन सत्ता के अधीन काय करने वाली ये सरकारें अधिक समय तक नही टिक पाई। अतत उनका विघटन हुआ। एक बार फिर आदोलन ने जोर पकडा। बीच बीच म समझौते भी होते रहे। इसी दौरान द्वितीय महायुद्ध छिड गया। अग्रेजो ने महात्मा गाधी का समथन चाहा ताकि भारतीय सैनिक युद्ध म भेजे जा सकें। महात्मा गाधी ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने की शत पर समथन देना स्वीकार किया पर बाद मे अग्रेजो के विश्वास-घात से वे इतने अधिक तिलमिला उठे कि उन्होने 9 अगस्त 1942 को अग्रेजो भारत छोडो' की ऐतिहासिक घोषणा कर दी। हजारो लोग जेलो मे ठूस दिये गये—लाठी चाज आसू गैस और गालियो की निष्ठुर नीति एक बार पुन प्रदर्शित की गई।

इस एतिहासिक विप्लवी युग म श्री मुरलीधर व्यास 1936 स 1941 तक नव भारत विद्यालय के छात्र रहे। देश म एसी युग परिवर्तनकारी घटनाएँ घटती रह और व्यासजी जैसे सवेदनशील छात्र अप्रभावित रह यह कस हो सकता था। गाधीजी का जादू तो उन पर था ही व समाजवादी विचारको से भी बहुत प्रभावित थे। इस बहुआयामी प्रभाव न ही उनके व्यक्तित्व म भिन्न भिन्न सोपान जोड।

1937 म श्री आय नायकम् के पयत्नो स नव भारत विद्यालय म एक अखिल भारतीय बुनियादी शिक्षा सम्मलन आयोजित किया गया। सम्मलन की अध्यक्षता श्री प्रफुल्लच द्र राय ने की। उसम मुख्य अतिथि पद का निर्वाह किया डाक्टर जाकिर हुसन न जो कालान्तर मे भारत के राष्ट्रपति बन। महात्मा गाधी द्वारा उद्घाटित इस सम्मलन ने देश मे प्रचलित शिक्षा पणाली के समानान्तर बुनियादी शिक्षा प्रणाली का प्रस्ताव पारित किया। इस पस्ताव के अनुसार विद्या मदिर की स्थापना की गई। नई तालीम सघ का गठन हुआ। भारत के प्राय सभी शीर्ष नेता इस अवसर पर उपस्थित थे जिनम पडित नेहरू, सरदार पटल और मौलाना आजाद मुख्य थे।

नयी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य था कि शिक्षा सवसुलभ हो—अनिवाय प्राथमिक शिक्षा सभी को प्राप्त हो शिक्षित लोग देहातो म जाकर अन्य लोगो को शिक्षित करें—व जीवन को स्वावलम्बी बनाने म समथ हो तथा श्रम के प्रति निष्ठा प्रतिष्ठापित हो सके। व्यासजी ने भी इसी शिक्षा पणाली का ग्रामीणो म प्रचार-प्रसार किया।

व्यासजी के जीवन पर श्री आय नायकम् के चरित्र का गहरा प्रभाव पड़ा। श्री नायकम् नवभारत विद्यालय को शान्ति निकेतन जसा शिक्षा केन्द्र बनाना चाहते थ। उन्होने प्रधानाचाय बनते ही स्कूल म चरखे का प्रचलन शुरू कर दिया। विद्यालय का समय परिवतन करके प्रात कालीन पारी म व्यायाम अनिवाय कर दिया। जल्दी उठने नियमित काय करने के आदश स्वय के उदाहरण व आचरण स स्थापित किय तथा विद्यार्थियो म राष्ट्रीय भावना का सचार किया। विद्यार्थी व्यायाम के पश्चात नींबू और चना का सेवन करते। सारी व्यवस्था किशोर छात्र मुरलीधर व्यास के कधो पर थी। नायकम् चाहते थे कि इस विद्यालय क छात्र आगे जाकर नौकरी क चक्कर म नही पड़ें। स्वावलम्बन स अपना स्वय का धन्धा शुरु कर सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति क लिए उन्होने विद्यालय म मिट्टी क खिलौने बनाना जिल्दसाजी करना बढ़ई का काय करना साबुन बनाना, कागज बनाना आदि कई

उद्योगो का प्रशिक्षण दिया। भूगोल और इतिहास का ज्ञान सिनेमा स्लाइड्स की विधि से देन का प्रयाग भी किया जाता। स्लाइड्स क माध्यम से खेती करन की नवीन विधिया का भी ज्ञान दिया जाता।

उन्ही दिना इस विद्यालय म स्पेन के श्री फिशर भी आये जो द्वितीय महायुद्ध मे अपन देश की नीति से नफरत करन क कारण भारत आ गये थे। व खेलकूद के प्रभारी थे। व गाधीजी के पास आश्रम मे रहते तथा छात्रा को खेलकूद की विशिष्ट शिक्षा देते थे। श्री फिशर प्रत्येक काय अपने हाथ से करते। व्यासजी पर उनका भी अनुकूल प्रभाव पडा। आगे जाकर अमरावती मे जो प्रशिक्षण उन्हान लिया, उसक पीछे श्री फिशर जस व्यक्तिया की प्रेरणा ही थी।

कालान्तर म नवभारत विद्यालय के भवन मे गोविन्दराम सेक्सरिया वाणिज्य महाविद्यालय आ गया। विद्या भवन अन्यत्र स्थानान्तरित हो गया। स्वावलम्बी विद्यालय, मारवाडी विद्यालय आदि अनेक स्कूल एक अन्य स्थान पर सवश्री दामले एव गणेश हरि भिडे आदि की स्वतन्त्र कमेटी के अधीन सचालित होते रहे। जो आज भी चल रहे हैं।

श्री गणेश हरि भिडे तो अधीक्षक थे ही। श्री नबदा पसाद केवलिया उप अधीक्षक एव प्रधानाध्यापक बनाये गये। आजकल श्री केवलिया वर्धा म शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय के प्रधानाचाय हैं। व्यासजी के सहपाठिया मे रामकृष्ण बजाज, नबदा प्रसाद केवलिया, बलीराम बनमाली गोपीकृष्ण टावरी, अयोध्या प्रसाद चाडक नथमल व्यास, बिठठल व्यास एव लक्ष्मण सिह यादव के नाम उल्लेखनीय है। स्वर्गीय श्री बलीराम बनमाली वर्धा म वाणिज्य महाविद्यालय के प्रधानाचाय रह चुके हैं। श्री गोपीकृष्ण टावरी नागपुर के प्रसिद्ध एडवाकेट रहे हैं। श्री लक्ष्मण सिह यादव न व्यासजी के साथ कई बार अखाडो मे जोर किया था। कुश्ती के शौकीन श्री यादव आजकल वर्धा म रहते है। वर्धा के इन साथिया म एक उल्लेखनीय नाम सीमान्त गाधी खान अब्दुल गफ्फार खान के पुत्र वलीखान का भी है। वलीखान का व्यासजी स बडा ही आत्मीय सम्बन्ध रहा। यह सम्बन्ध वलीखान के पाकिस्तान चले जान के बाद भी बना रहा।

खेलकूद के क्षत्र म व्यासजी की अभिरुचि प्रारम्भ से ही थी। उनके शरीर म इतनी स्फूर्ति और शक्ति थी कि व बाहु से बधी हुई साकल को जोर लगाकार तोड देते थे। उन्हान कई बार शारीरिक क्रियाओ के रोमाचक प्रदशन भी किय। रिंग बनाकर उसम आग लगाना और धधकती आग म कूद कर पुन निकल आना उनके लिए बहुत ही आसान काम था।

विद्याध्ययन के बाद उन्होंने अमरावती में मलखम्ब का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। हनुमान व्यायामशाला अमरावती में एथलेटिक्स के प्रशिक्षण से विशारद तक अर्जित मलखंद कौशल में और अधिक विकास हुआ। आगे जाकर उन्होंने स्टाक होम (स्वीडन) में इण्टरनेशनल समर कोर्स इन स्वीडिश जिम्नास्टिक्स' में भी भाग लिया। उनकी विदेश यात्रा का विस्तृत वृत्तांत आगे के अध्याय में है।

कार्यकारी जीवन में प्रवेश करने पर व्यासजी ने सर्वप्रथम सावतराम रामप्रसाद मिल्स लिमिटेड में सहायक टाइम कीपर के रूप में कार्य करना शुरू किया। यह सन् 1941 की बात है। रुचि का कार्य न होने में वे वहां अधिक समय नहीं टिक सके और उसे छोड़कर अध्यापक बन गये। उन्होंने कुछ दिनों अकोला में अध्यापन किया। बाद में विद्या मंदिर वर्धा में अध्यापक बने। उन्हें तत्कालीन प्रधानाध्यापक श्री प्रभुदयाल अग्निहोत्री के नेतृत्व में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री अग्निहोत्री हिंदी के उद्‌भट विद्वान हैं। वे भोपाल विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रह चुके हैं।

1942 में व्यासजी ने अपने जन्म स्थान हिंगनघाट में भी अध्यापन का कार्य किया। उनके द्वारा स्थापित राजस्थानी मण्डल उन दिनों काफी लोकप्रिय हुआ। छात्र छात्राओं के अतिरिक्त वयस्क नागरिक भी लाठी सीखने वहां आया करते थे।

एक ही जीवन क्रम में भिन्न भिन्न रुचियों के कई अध्याय साथ साथ चलते रहे। सभी अपने आप में विकासमान भी बने रहे। यह बात विस्मयजनक भले ही हो, पर सत्य है। व्यासजी का जीवन इसी विभिन्नता व सहविकास प्रक्रिया का एक ज्वलन्त उदाहरण है। शारीरिक शिक्षा में अत्यंत ही कुशल व्यक्ति साहित्य जगत में भी उसी कौशल एवं सृजनशीलता का निर्वाह करे—यह कम ही देखने को मिलता है। व्यासजी के जीवन में बहुआयाम स्पष्ट प्रतीत होता था। कवि, नाटककार, कथालेखक एवं स्तम्भलेखक के रूप में उन्होंने अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की। उनके कई नाटकों का मंचन भी किया गया। उनमें सर्वाधिक चर्चित नाटक था 'भारत माता' जिसने हिंगनघाट व वर्धा के जन जीवन में तहलका मचा दिया। 1942 के आंदोलन के दिनों में यह नाटक हिंगनघाट में खेला गया। भारत की आजादी व क्रांति का आह्वान करने वाला यह नाटक तत्कालीन सत्ता के लिए असह्य बन गया। नाटक में भारत माता को बेड़ियों में जकड़ा हुआ दिखाया गया तथा क्रांतिकारी पुरुष व नारी पात्रों ने अपने संवादों में विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। नाटक नगर भर में चर्चा का विषय बन गया, गुप्तचर लोग उसके मूल लेखक व पार्श्व प्रणेता को खोजने में लग गये। व्यवस्था ने उस नाटक को प्रतिबंधित कर दिया। नाटक स्वयं व्यासजी का ही लिखा हुआ

था । उ होने अपने विद्यार्थी जीवन मे कई नाटक मचित किये जिनमे जयद्रथ वध दानवीर कण वीर अभिम यु गरीब किसान और गोरा व भारत माता आदि प्रमुख थे । गरीब किसान और गोरा भी व्यासजी का लिखा हुआ नाटक था । कण अभिम यु अथवा अर्जुन के रूप मे व्यासजी की भूमिका सदव सराहनीय रहती थी ।

1942 का वष जहा पूरे दश के लिए चेतना का शखनाद था वहा व्यासजी के मानस पर भी परिवतनकारी सिद्ध हुआ । इसी वष वे गाधीजी के आह्वान पर जेल गये । फिर तो जेल जान का सिलसिला कुछ ऐसा बना कि जीवन भर जेल यात्राए जैसे उनके स्थायी 'टाइमटेबुल' का अग ही बन गई । अ य बातो के अतिरिक्त व्यासजी पर यह आरोप भी था कि वे ट्राटेस्की व बोल्शोविक पार्टी के कागज पत्र रखते है । गाधी जी क हैडबिल बाटत है तथा प्रनिर्बा धत गतिविधियो म भाग लेते है । जेल यात्रा न उनके मनोबल को और अधिक प्रखर किया—अग्रेजा के विरुद्ध उनकी घणा और अधिक तीव्र व घनीभून बन गयी ।

रगकर्मी के रूप म व्यासजी चाहते तो फिल्मो के सवाद लेखक व गीतकार भी बन सकते थ, पर ऐसा नही हो सका । उ होने ' भारत माता" नाटक पर आधारित एक फिल्मी कहानी भी लिखी । प्रसिद्ध अभिनता किशोर साहू ने जब उस कहानी को पढा तो व इतन प्रभावित हुए कि उस कहानी को पृथ्वीराज कपूर को दिखाया । किशोर साहू चाहत थ कि व्यासजी फिल्म क्षेत्र म आ जायें और पृथ्वी थियेटर मे काय करना शुरू कर दें । बाद म अ य क्षेत्र भी खुलते चले जायगे । स्वय पृथ्वी राज कपूर ने पृथ्वी थियेटर म काय करन का प्रस्ताव व्यासजी से किया था । राष्ट्रीय चेतना से जुडे होने, क्राति मे विश्वास करन, सक्रिय राजनीति म आकर अग्रेजी सत्ता के विरुद्ध प्रचार करत रहने आदि की धारा इतनी प्रबल प्रखर थी कि उसके आगे फिल्मी जीवन का यह प्रस्ताव टिक नही सका । घर वाले भी इसके लिए सहमत नही थे । व्यासजी के साथिया ने भी विरोध किया।

फिल्म जीवन व्यासजी जसे जीवट और सघषशील व्यक्तित्व के लिए सचमुच ही कस उपयुक्त रहता ? उनके सादगी भरे जीवन का देखकर तो सोचा ही नही जा सकता कि फिल्मी जीवन के प्रति उनक मन म काई रुझान भी रहा होगा। अ तत एक सजग और जुझारू लोक नेता क रूप म वे राजनीति के पटल पर जीवन पयन्त छाए रह ।

प्रथम आम चुनाव से पहले

आजादी के शंखनाद के साथ ही साथ भारतीय जनमानस में एक नयी चेतना का संचरण हुआ। लोगों ने स्वतंत्रता की आरती उतारी, नवराष्ट्र के निर्माण के लिए नये संकल्प लिये तथा हुतात्माओं के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए शपथ खाकर देश को आगे बढ़ाने के दृढ़ निश्चय कोहगये। देश आजाद हुआ। पर राजस्थान में अभी भी रियासती शासन प्रणाली चल रही थी। राजाओं के शासन का अंत नहीं हुआ था। सामंती सरकार राजतन्त्र के प्रति रूढ़िगत लगाव व निपट भाग्यवाद के सहारे जीने वाले अनपढ़ लोग अब भी आशा लगाये हुए थे कि बीकानेर में राजशाही बनी रहेगी। 15 अगस्त 1947 से 30 मार्च 1949 तक का समय राजस्थान के लिए ऐतिहासिक उथल पुथल का काल सिद्ध हुआ। दोनों तिथियां अपने आप में महत्वपूर्ण थीं। जहां 15 अगस्त 47 को हम अँग्रेजों को उखाड़ फेंकने में सफल हुए वहीं 30 मार्च 1949 को राजस्थान के निर्माण के साथ रियासती सत्ता की टिमटिमाती अंतिम ज्योति भी बुझ गई। लोग सदियों की दासता से मुक्त हुए।

लोकनायक मुरलीधर व्यास लोक चेतना के इसी बदलाव के ऐतिहासिक काल में बीकानेर आये। 1948 में बीकानेर आते ही वे सर्वप्रथम पुष्करणा विद्यालय में अध्यापक बने। उनके एक शिष्य श्री सत्यनारायण पुरोहित के अनुसार "एक अध्यापक के रूप में श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर की पुष्करणा स्कूल में आये। अध्यापक अनेक आये और चले गये लेकिन श्री व्यास ने अपनी अमिट छाप वहां के विद्यार्थियों पर छोड़ी। शाला के समय में जितना ध्यान छात्रों के अध्यापन कार्य पर देते थे उतना ही ध्यान वे शाला के अतिरिक्त समय में छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा देने में दिया करते थे। वे अध्यापक के वेश में सचमुच एक राष्ट्र निर्माता थे।

यह है पुष्करणा स्कूल के एक विद्यार्थी की भावना। जैन स्कूल के छात्र भी व्यासजी से अत्यंत प्रभावित थे। पुष्करणा विद्यालय की सेवा के बाद जब वे जैन विद्यालय में अध्यापक बने तो उन्होंने अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से अपने शिष्यों में राष्ट्रीय भावना का संचरण किया। शारीरिक अध्यापक होने के कारण

वे शरीर सौष्ठव, पुष्टता, स्वास्थ्य एव उत्कृष्ट खेल भावना पर तो जोर देते ही थे, खेल खेल मे ही राष्ट्रीय विचारो का आविर्भाव भी करते थे। प्रत्येक क्रीडा का अतिम चरण "जयहिन्द" के नारे के साथ समाप्त होता था। क्रीडा की चरम स्थिति म छात्र "भारत माता की जय" का जयघोष भी किया करते थे।

व्यासजी के एक समर्पित शिष्य एव सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता श्री बालचन्द साड के अनुसार व्यासजी का सम्पर्क कई स्मृतियो को जीवन्त बनाये रखने वाला अनुभव था। "याद आते हैं उन पाठशाला के वे दिन जब हमे स्वर्गीय लोकनायक श्री मुरलीधर जी व्यास के शिष्य होने का सौभाग्य मिला था। हृष्टपुष्ट शरीर, तेजस्वी मुखमडल और भुजदण्ड वाले एक व्यक्ति को जब हमने खादी के चोले धोती हाथ से सिली बनियान और चप्पलें धारण किये हुए देखा तो बरबस आकर्षित हो गये। उनकी मधुर मुस्कान मृदु व्यवहार और निष्कपट आचरण ने हमको इतना प्रभावित किया कि हमारे मन म सहज रूप से ही शिष्य भाव जाग्रत हो गया और लगा कि जैसे एक सच्चा गुरु मिल गया है। वे हमे आजादी के सघर्षो की कहानिया सुनाते देश भक्ति की बातें बताते और समाज के प्रति हमारे कर्त्तव्यो की चर्चा करते। समय बीतता गया और उसके साथ ही उनके प्रति छात्रो के मन म अकुरित आस्था का पौधा भी बडा होने लगा।"

आस्था का यह पौधा ही कालान्तर म एक विशाल वटवृक्ष बन गया जिसके नीचे शिष्य परम्परा पुष्पित और पल्लवित होती रही। श्री सत्यनारायण पुरोहित और श्री बालचन्द साड ने व्यासजी को केवल अध्यापक के रूप म नही वरन राष्ट्रीय भावना भरने वाले एक महान तपस्वी के रूप म भी याद किया है। खेलकूद अथवा अध्यापन तो साधन मात्र थे व्यास जी का साध्य तो राष्ट्रीय भावनाओ का प्रचार प्रसार ही था। भारत माता के प्रति उनके हृदय म जो अनन्य श्रद्धा थी वह उन्होने अपनी विदेश यात्रा म जहाज के डेक पर से लिखे एक पत्र मे भी व्यक्त की थी। उन्होने यह पत्र अपने एक निकटतम सम्बन्धी श्री शिवकिसन बिस्सा को जुलाई 1949 म लिखा था।

पत्र का आशिक उद्धरण इस प्रकार है
आज मैं यह पत्र तुम्हे जल जवाहर म बैठे बैठे लिख रहा हू। इस समय हमारा स्टीमर अदन को पार करके लाल सागर स होता हुआ पोर्ट सय्यद व दरगाह की ओर जा रहा है।

'हम लोग 8 जुलाई को स्टीमर पर बैठे थे। जिस समय हम स्टीमर पर बैठे उस

समय सब साथियों के हृदय में आनन्द एवं उल्लास की लहरें हिलोरें कर रही थी। अन्यान्य देशों के नर नारी डेक पर अपने अपने सज्जनों को विदाई देने उपस्थित थे। हमारा दल एक विशेष प्रकार की वर्दी पहने डेक पर आया था। हम सबकी एक प्रकार की वेशभूषा डेक पर उपस्थित समस्त महानुभावों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। एकाएक सीटी हुई। लौह शृंखलाओं से बंधा हुआ स्टीमर मुक्त हुआ और धीरे धीरे मन्द गति के साथ किनारे से विलग होकर सागर की लहरों में डोलता हुआ आगे बढ़ने लगा। हम सब साथियों ने वन्देमातरम् गीत एक स्वर में गाते हुए मातृभूमि से विदा ली। सचमुच विदाई का दृश्य अत्यन्त ही रोमस्पर्शी था। एक ओर विश्व दर्शन की अभिलाषा हृदय को अह्लादित कर रही थी तो दूसरी ओर मातृभूमि एवं स्वजनों का वियोग हृदय में एक गुमसुम सी वेदना भर रहा था।

व्यास जी ने लिंगियाद टीम आफ इण्डिया के तत्वावधान में लिंगियाद आरगेनाईजिंग कमेटी स्टोकहोम द्वारा आयोजित शिविर में भाग लेने जाते समय में ये विचार व्यक्त किये थे। 'जो व्यक्ति मातृभूमि ■ विदाई से उसके हृदय की उत्कृष्ट राष्ट्र भावना का छोर कहा मिल सकता है?' ईश्वर ने भी व्यास जी की भावनाओं के साथ न्याय किया तथा अपने शेष जीवन में उन्हें कभी भी मातृभूमि के वियोग की चरम पीड़ा नही उठानी पड़ी।

ऊपर तीनो दृष्टान्त एक बात की ओर इंगित करते हैं—व्यासजी चाहे अध्यापक हो अथवा प्रशिक्षणार्थी प्रथम पंक्ति के राजनेता हो अथवा समाज सेवी, उनके हृदय का छलछलाता राष्ट्र प्रेम हर घड़ी, हर पल, हर स्थिति में सामने आता था।

व्यास जी का बीकानेर आगमन को न तो आकस्मिक घटना माना जा सकता है और न संयोग ही कहा जा सकता है। उनका पारिवारिक परिवेश इस नगर से ही जुड़ा हुआ था। व्यास जी का यज्ञोपवीत संस्कार यहीं हुआ। उनके दोनो चाचा सव श्रीरामदत्तजी व्यास एव किसन दत्त जी (जीवनदत्त जी व्यास के पिताजी) यहीं पर रहे। उनकी दादी का स्वर्गवास बीकानेर में ही हुआ। उनके व उनके बड़े भाई बंशीलाल जी के ससुराल भी यहां पर थे। यह पारिवारिक कड़ी ही उन्हें बीकानेर खींच लाई। उनके पिता श्री सूरजकरण जी रेलवे पुत्र होने के कारण हिंगनघाट रहने लगे थे। यही कारण था कि मूलतः राजस्थानी होते हुए भी मुरलीधर जी एवं उनके तीनो भाई बचपन में हिंगनघाट में रहे।

बीकानेर में वे रोजगार के लक्ष्य से नही वरन सेवा भावना से आये। उन्होंने न तो कभी नौकरी पर अधिक ध्यान दिया और न परिवार के भरण पोषण का ही

सर्वोच्च प्राथमिकता दी। लगभग 24 वर्षों तक यहा रहने पर भी वे अपने लिए कोई मकान तक नही बना सके। किरायेदार के रूप म वे जगह जगह घूमते रहे कभी दफ्तरिया के चौक म रहे तो कभी बागडिया के मोहल्ले म रहे कभी बनीसर कुए पर स्थित किसी मकान म निवास किया तो कभी सुथारो की बडी गुवाड म आ गये। एक ही मोहल्ले मे दो दो तीन-तीन मकान उन्हें बदलने पडे थ। नगर के निवास स्थानो का यह यायावरीय जीवन, यह परिव्रजण, यह बार बार का बदलाव असुविधापूर्ण अवश्य था, पर एक सेवाभावी फक्कड वृत्ति के व्यक्ति के लिए इसके अतिरिक्त और कोई चारा भी तो नही था।

व्यासजी के जीवन से जैन स्कूल के प्रसग भी अविच्छिन्न रूप से जुडे हुए हैं। जैन स्कूल के कार्यकाल ने उनके जीवन को दो नये मोड दिये। एक तो वे उसी अवधि मे लोकनेता के रूप म प्रकट हुए और दूसरे उन्होंने शिष्यो के रूप मे एक ऐसा समूह पाया जो जीवनभर उनके साथ पाव से पाव मिलाकर चलता रहा। ये दोनो बिन्दु अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जैन स्कूल मे जब वे आये थे उस समय और बातो से अधिक एक अध्यापक थे। पर जैन स्कूल से जब उन्होंने विदा ली तो वे और बातो से अधिक एक लोकनेता बन चुके थे। अध्यापक से लोकनेता बनने तक की यह अल्पावधि की यात्रा ही उनके जीवन की अत्यन्त मुखर एव निर्णायक मोड सिद्ध हुई पर इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनका लोकनेता स्वरूप उनके अध्यापक स्वरूप का साथ लेकर चलता रहा। वे नेता होते हुए भी गुरु गरिमा से सदा मण्डित रहे। उनके शिष्य उन्हे आज भी सच्चे गुरु की तरह ही याद करते है।

जब शिष्यो की बात छिड ही गई तो व्यासजी के बारे म किसी शिष्य की दृष्टि से ही बात को आगे बढाया जावे। व्यासजी के कई समर्पित शिष्य है—उनम से एक है श्री बालचन्द साड। स्मृतिया के वातायन को खोलते हुए श्री बालचन्द साड ने व्यासजी के वे दिन याद किये जब वे जैन स्कूल म शारीरिक शिक्षक थे तथा बच्चो को खेल खेल म राष्ट्रीय विचारधारा से जोडते रहते थे। श्री साड के शब्दो मे उन दिनो के इक्के दुक्के बिखरे प्रसग इस प्रकार है—'क्या भूलू क्या याद करू वाली स्थिति आ गई है। उस समय हम बच्चे तो थे ही स्वाभाविक रूप से हमारी रुचि खेलकूद, कबड्डी, साइकिलिंग अखाडेबाजी तरने आदि म थी। सौभाग्य से श्री व्यासजी शारीरिक शिक्षा के अध्यापक थे। उनकी प्रेरणा से इन सभी क्षेत्रो म नये नये आयाम खुलने लगे। हमारी रुचि देशभक्ति के गीत, नाटक और कविता के प्रति भी बढने लगी।"

एक दृश्य याद आ रहा है—साइकिलिंग म निपुण व्यासजी एक साथ 13 बच्चो

को साइकिल पर चढाकर साइकिल चला रहे हैं। अगले चक्के की खूटियो से हैण्डल पर पांव रखकर मैं व्यासजी के कंधे पर बैठ गया हूं। इसी प्रकार दूसरा बच्चा दूसरे कंधे पर बैठ गया है। दो बच्चे आगे की खूटियो पर और दो पिछली खूटियो पर–उनके हाथ व्यासजी के कंधो पर हमारे पांव आगे वाले बच्चे के कंधो पर–जहाज जैसा दृश्य है। एक बच्चा पीछे मडगाड पर और एक उसके कंधो पर खड़ा होकर हमारे कंधो पर हाथ रखे है। एक बच्चा साइकिल के हैण्डल पर और एक उसके कंधे पर हाथ फैलाये बैठा है। एक साइकिल के डंडे पर और एक अगले मडगाड पर हमारे हाथो को पकड़े हुए। तेरहवां बच्चा हमारे पांवो पर बैठा है। व्यासजी के कंधो पर बैठे हम दोनों के हाथ खुले हैं–व्यासजी साइकिल चला रहे हैं और हम सलामी दे रहे हैं। उपस्थित जन समुदाय की तालियो की गड़गड़ाहट से आकाश गूज रहा है। याद आ रहा है कि वह दृश्य जैन पाठशाला के वार्षिक उत्सव का था।"

'इसके साथ ही एक और दृश्य याद आ रहा है—हम कई बच्चे साइकिल चला रहे हैं—धीरे धीरे धीरे—स्लो साइकलिंग प्रतियोगिता। व्यासजी हमारे साथ साथ चल रहे हैं। सबसे पीछे रहने वाला बच्चा विजयी घोषित हुआ है।'

उसी वार्षिकोत्सव का एक दूसरा दृश्य भी सजीव हो उठा। मैं और मेरे साथी बच्चे हाथों मे जलती मशाल लिये प्रदर्शन कर रहे हैं। कभी वृत्ताकार होकर घूमर नृत्य जैसे और कभी साथिया (स्वास्तिक) जैसा दृश्य दर्शको को बड़ा पसन्द आ रहा है। तालियो और वाह वाह की आवाजो से हमारे प्रदर्शन की सराहना हो रही है जो वास्तव मे हमारे गुरु की प्रशंसा ही है। इस मशाल प्रदर्शन को बीकानेर की राजकीय फोर्ट हाई स्कूल के प्रांगण मे व्यासजी ने हमसे प्रस्तुत करवाया था और काफी सराहना भी हुई थी।'

'व्यासजी उन दिनो हम तैरना भी सिखाते थे। उनके साथ हमने तैरने का बहुत अभ्यास किया। वे बहुत ही कुशल तैराक थे। वे कभी पानी के अन्दर मछली की तरह तैरते कभी पानी की सतह पर सांस खींचकर शवासन की मुद्रा मे किसी बच्चे को अपने सीने पर बिठाकर तैरते। वे ऊंचे स्थान से पानी मे कूदने का अभ्यास भी कराते थे। मुझे अच्छी तरह याद है अभी कुछ ही साल पहले की बात है व्यासजी एक दिन मेरे (पुत्र) राजू को अपने सीने पर बिठाकर उसी शवासन की मुद्रा मे काफी देर तैरते रहे। कोलायत के तालाब मे यह दृश्य देखकर मैं तो घबरा सा गया था पर व्यासजी निश्चिन्त राजू (राजेन्द्र साह) को लिए हुए तैरते रहे।'

उन दिनो री याद करते हुए ्यासजी के निर्देशन म खेले वीर अभिम्यु नाटक का एक दृश्य सामन आ रहा है । मैं अभिमन्यु की भूमिका म एक जोशीला सवाद बोल रहा हू—दूसरे बच्चे भी बडे जोशीले सवाद बोल रहे हैं । हम सभी हाथो म चमकीला रग की हुई लकडी की तलवारें लिए हुए हैं । ्यासजी द्वारा निर्देशित यह नाटक बहुत ही पस द किया गया । मुझे याद है कि मैंने व्यासजी द्वारा निर्देशित कई नाटको मे हास्य कलाकार (कामडियन) की भूमिका भी निभाई थी । उनम से एक था 'भला भई गप्पी मेरा नाम'—बोल थे–'चीटी चढी पहाड पर नौ मन काजल सार । हाथी लीने हाथ म और ऊठ लिय फटकार । भला भई गप्प सुनो भाई सप्प, सुनो भाई गप्पी मेरा नाम ।'

' नाटक के दृश्य के साथ यह भी याद आ रहा है कि व्यासजी हमे उन दिनो कई कविताए भी सुनाते थे । उनम स कुछ उनकी स्व रचित थी तो कुछ साथी कवियो की रचनाएँ भी थी । एक कविता की पक्तिया इस प्रकार हैं—

युग मुक्त कठ से कहे मैं भी बदल गया,
तुम पृष्ठ क्यो नही खोलते इतिहास का नया ?
हर दा्न पक्ति म लिखा नूतन विधान है
ज्वालामुखी लिए हुए हर नौजवान है ।"

उ ही दिनो खेलकूद नाटक आदि के साथ व्यासजी हम लाठी चलाना भी सिखात थे । दूसरे पर वार करना उसका वार रोकना और चक्करदार लाठी चलाकर बीसो लोगो की लाठियो के वार स अपने आपको बचाना आदि सभी तरह के करतब हमे सिखाते थे ।"

"इन सभी गतिविधियो के साथ स्काउटिंग म भाग लेने का कायक्रम भी रहता था । हम कई बच्चो को स्काउटिंग की वर्दी म व्यासजी शिवबाडी मले म व्यवस्था के लिए ले जाते थे ।"

व्यासजी के प्रेरक व्यक्तित्व के घनीभूत प्रभाव म आए एक शिष्य की भावनाए ऊपर की पक्तियो म है । अब जरा उनके साथी अध्यापको की भावनाओ का आकलन भी कर लिया जाय तो उचित रहगा । जन स्कूल म 1931 स 1968 तक सेवा करने वाले अध्यापक श्री सूय भानु गुप्ता ने बताया कि 'व्यासजी शारीरिक शिक्षा के अध्यापक बनकर जन पाठशाला म आये थ । उस समय उनका शरीर अत्य त ही सुगठित था । दीप्त मुखमडल विशाल भुजदण्ड पुष्ट जघाये भरा-भरा शरीर एव कसी कसी मास पशिया सब मिलाकर उनके तन को एक सुगठित आकार दे रहे थे । छात्रो पर उनका आत्यन्तिक प्रभाव व सहकर्मियो म आत्मीय भाव विशेष उल्लेखनीय है ।'

व बताते हैं- व्यासजी जब जन स्कूल म आये, पहले श्री पृथ्वीराज एव बाद म श्री ज्वालाप्रसाद गुप्ता प्रधानाध्यापक थ। विद्यालय के सचिव थ श्री शिवबक्श कोचर नियमो क अत्यत पाबन्द एव निपट अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे । नियमो म जरा सी ढील भी उ ह रुचिकर नही थी । व्यासजी की सक्रिय राजनीतिक गतिविधिया विद्यालय की प्रक्रियाओ से मेल खा ही नही सकती थी । एक तरफ था आदोलन, उद्वेलन सभाआ एव जनजागरण हेतु जेल यात्रा का क्रम तथा दूसरी ओर था आचार सहिता से सम्पूर्ण प्रतिबद्ध श्री शिवबख्श कोचर का व्यक्तित्व । व्यासजी का जन स्कूल से पृथक होना पडा । उनका निष्कासन इ ही दा ध्रुवो के नितान्त विरोधाभास की चरम परिणति ही था । लेकिन शानदार बात यह थी कि इस निष्कासन ने दोनो क हृदयो (शाला मत्री व व्यासजी) म जमे पारस्परिक स्नेह व श्रद्धा के अकुरण को मुरझान नही दिया । आगे जाकर जब व्यासजी चुनाव म खडे हुए तो स्वय श्री कोचर न अपन ही मोहल्ल म व्यासजी क भाल पर कुकुम लगाकर उनकी अगवानी की थी तथा उ ह विजयी होने का आशीर्वाद भी दिया था ।

व्यासजी राजनीति मे सक्रिय तो थे, पर शुरु मे वे इतने जाग्रत नही थे जितने बाद मे हुए । पहल उनमे उतनी 'चेतना' नही थी । हम तो उ ह केवल अध्यापक ही समझते थ पर धीरे-धीरे वे सभाओ मे भाग लेने लगे जुलूस आदि निकालने लगे तथा लोगो को पता लगन लगा कि वे एक जननेता है।

व कभी ताग वालो क जुलूस का नेतृत्व करते तो कभी जन समस्याआ पर ज्ञापन देने जिलाधीश कार्यालय जाते । इस बीच बहुचर्चित गेहू निकासी आ दोलन भी शुरु हो गया था । व्यासजी का राजनीति स दूर रहने व नियमानुसार विद्यालय काय करने की सलाह दी गई ऐसा न करन पर चेतावनिया भी दी गई तथा अतत उनको सेवामुक्त कर दिया गया । लाक सेवा के आगे आजीविका को गौण समझन वाल व्यासजी ने इसे भी सहष स्वीकार किया पर वे अपने निश्चित माग स विलग नही हुए ।"

श्री सूय भानु गुप्ता क अनुसार 'व्यासजी अपने अध्यापक साथियो को गाधीजी के अतरग प्रसग एव वर्धा आश्रम की गतिविधि के सस्मरण सुनाया करते थे । वे अपनी विदेश यात्रा एव वहा के जनजीवन के बारे मे भी छात्रो व अध्यापक मित्रो को नई रोचक वृत्ता त सुनात थ । अपनी मिलनसारिता एव नम्रता के कारण व अध्यापको एव छात्रो दोनो म ही समान रूप से लोकप्रिय थे । अध्यापकगण तो यह जानते ही थे कि व्यासजी अधिक समय तक सेवा मे नही रह सकते । जन स्कूल के सचिव श्री शिवबख्श कोचर का भी यही मत था । उनकी धारणा बन

चुकी थी कि यह व्यक्ति उदरपूर्ति के लिए अध्यापक तो बन गया है, पर इसका असली लक्ष्य जनता को आंदोलित करना एव सत्य के लिए संघर्ष करना ही है। अत जब उन्हे सेवामुक्त किया गया तो अध्यापकों ने भी इसे स्वाभाविक मानकर विरोध नही किया। व्यासजी का छात्रो के प्रति प्रेम उनके राजनीतिक जीवन मे भी सहायक सिद्ध हुआ। व्यासजी के भावी जीवन की बुनावट मे शिष्यो का भी हाथ रहा है–यह सभी लोग जानते हैं।"

जैन विद्यालय के एक अन्य भूतपूर्व अध्यापक श्री कानमल चर्चा करते हुए व्यासजी के प्रति भाव विभोर हो गये। उनका मानना है कि व्यासजी के कारण वे भी जनसेवा की ओर उन्मुख हो सके थे। 'एक बार मेरी लडकी जब छत से गिर गई तो व्यासजी उसे लेकर अस्पताल गये तथा चिकित्सा की मुकम्मिल व्यवस्था करवाई। इसी प्रकार मेरे पोते को जब विषम रोग हो गया और पी बी एम अस्पताल के डाक्टर रोग का निर्धारण नही कर सके तो व्यासजी ने उसके लिए आयुर्वेदिक चिकित्सा की व्यवस्था करके उसे बचाने म सराहनीय योग दिया।" कानमलजी ने बताया कि व्यासजी फक्कड वृत्ति के थे तथा उनका सारा झोली झण्डा उनके थैले म ही रहता था। उनको कई बार किराये के मकान बदलने पडे। कभी इस घर मे रहे तो कभी उस घर मे। विद्यालय जीवन म उनके कारण गहमागहमी बनी रहती थी। वार्षिकोत्सव का आयोजन तो आज तक लोगो की स्मृति म जीवन्त बना हुआ है।"

बीकानेर के जनजीवन से व्यासजी का सही मायने मे जुडाव समाजवादी दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के समारोह एव प्रान्तीय सम्मेलन से हुआ। ये दोनो सम्मेलन 1948 म बीकानेर म आयोजित किये गये। इन सम्मेलनो का एक ऐतिहासिक महत्व था। समाजवादी दल कांग्रेस से पृथक हो चुका था और इस अलगाव के बाद यह उसकी कार्यकारिणी का प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन था। साथ ही भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात समाजवादी दल का भी यह प्रथम सम्मेलन ही था। बीकानेर के लिए ये सम्मेलन दो कारणो से महत्व रखते थे। इस नगर मे किसी भी राष्ट्रीय दल के महत्वपूर्ण सम्मेलन का यह पहला अवसर था तथा इसी सम्मेलन के माध्यम से बीकानेर नगर को मुरलीधर व्यास जैसा तपस्वी नेता मिला।

देश के दिग्गज समाजवादी नेताओ ने इसमे भाग लिया। उनमे सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, डा राममनोहर लोहिया, मुंशी अहमददीन, अच्युत पटवर्धन, बाबा हरिश्चन्द्र, रामनंदन मिश्र (बिहार) श्यामनंदन मिश्र (नागपुर) मगनलाल बागडी, ईश्वरी सिंह एव हीरालाल जैन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। रानी बाजार

स्थित सरावगी भवन के मदान म सम्मेलन सम्प न हुए। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बठकें स्था ीय गुण प्रकाशक सज्जनालय म आयोजित की गई जबकि खुला अधिवेशन सरावगी भवन के सामने वाले मदान म हुए।

समाजवादी नता श्री भवरलाल स्वणकार के अनुसार खुले अधिवेशनो म हजारो नगर निवासी भाग लेते थे। दासरी दासता म दबी जनता के लिए राजनीतिक चेतना का यह अभूतपूव अवसर था। लोगो के उत्साह का ही परिणाम था कि तीनो दिन खुली सभाए आयोजित की गइ।

सम्मेलन की व्यवस्था निम्न पदाधिकारियो के हाथो म थी श्री जे बगरहट्टा (स्वागत समिति के अध्यक्ष) श्री भवरलाल स्वणकार (कार्यालय प्रभारी) श्री सोहनलाल कोचर (कोषाध्यक्ष) श्री प्रतापचद कोचर (भडारण व्यवस्थापक) एव दादा मेवरच द आय (भोजन प्रभारी) इन सभी के सामूहिक प्रयासो से ही ये ऐतिहासिक सम्मेलन सु यवस्थित रूप से सम्पन्न हो सके। राष्ट्रीय स्तर के नेताओ की आवास व्यवस्था भी उत्तम थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार अधिवेशन काल म बाबू जयप्रकाश नारायण को श्री आनदराज जी (विश्वज्योति के मालिक) के भवन मे ठहराया गया था जहा आजकल गो सेवा सघ का कार्यालय है। डा राम मनोहर लोहिया श्री च द्रधर ईसर की कोठी म ठहरे। आजकल यहा आयकर कार्यालय स्थित है। बाबा हरिश्च द्र सरावगी भवन स्थित कार्यालय म ही ठहरे थे। श्री मगनलाल बागडी की आवास व्यवस्था सरावगी भवन के सामन भतरसिंह ठेकेदार के क्वाटर म की गई थी।

अधिवेशन म कई महत्वपूण निणय लिय गये। कि ही बिन्दुओ को लेकर स्थानीय कायकर्ताओ मे रोष भी देखन को मिला। वे चाहते थे कि उनको प्रतिनिधि के रूप म अधिवशन म भाग लेने दिया जाए तथा कायकर्ताओ के लिए आयोजित बठक म भी सम्मिलित होन दिया जाय। उ होने अपनी माग बाबू जयप्रकाश नारायण तक पहुचाई। प्रतिनिधियो की इस बैठक को ज पी न ही सम्बोधित किया था। माग की प्रबलता व औचित्य को देखकर अतत सवश्री सत्यनारायण पारीक एव भवरलाल महात्मा को प्रतिनिधि के रूप मे सम्मिलित कर लिया गया। इससे यह अनुमान लगा सकते हैं कि आजादी क प्रारम्भ से ही बीकानेर क समाजवादी कायकर्ताओ म चेतना और अधिकारो के लिए सघष करने की ऊर्जा विद्यमान थी। (ज्ञातव्य है कि सम्मेलन मे देश भर के 250 प्रतिनिधि भाग ले रहे थे)।

इसी सम्मेलन की एक अ य महत्वपूण बात यह थी कि श्री मुरलीधर व्यास को

बीकानेर एव प्रकारा तर से राजस्थान की राजनीति से सक्रिय रूप से जोडा गया। उनका परिचय श्री मगनलाल बागडी ने इन शब्दो मे दिया—"मैं आपको एक विश्वस्त और कमठ साथी देता हू। य मेरे जाचे हुए परखे हुए व्यक्ति है। इन्होन वर्धा म काम किया है। अत्यन्त सेवाभावी है।" स्थानीय नेताओ एव कायकर्त्ताओ न श्री बागडी के प्रस्ताव का सहष स्वागत किया और तब से लेकर मरणोपरा त श्री व्यास का बीकानेर के साथ तादात्म्य सम्ब ध बना रहा। श्री व्यास से पूव श्री गोपाललाल दम्माणी म त्री थे।

समाजवादी दल म राजस्थान के मामलो के प्रभारी डा राममनोहर लोहिया थे। व्यासजी न सवप्रथम श्री लोहिया के प्रभारीत्व वाले क्षेत्र मे काय किया। बाबू जयप्रकाश नारायण जसे तपस्वी नेता के साथ साथ लोहियाजी जस मौलिक सूझ बूझ के नेता का सान्निध्य भी व्यासजी को सहज ही प्राप्त हुआ। बागडी जी जसे शात, दृढ निश्चयी एव समस्याओ का निदान करने वाले नेता न तो उनको अत्यधिक प्रभावित किया ही था। उन दिनो राजनीतिक सभाए स्वणकार पचायत भवन मे हुआ करती थी। किसी कारणवश मुशी अहमददीन की सभा चु नीलाल जी की दुकान के पास फुटपाथ पर आयोजित की गई। हि दू एव मुसलमान श्रोताओ को राष्ट्रीय धारा से जोडने व चेतना का शखनाद करन मे वह सभा अत्यधिक सफल रही। मुशी अहमददीन के लिए आयोजित सभा की त्वरित व्यवस्था भी इस सम्मेलन की एक उल्लेखनीय घटना बन गई।

उन दिनो बिजली कमचारी हडताल पर थे। सम्मलन मे उनकी मागो का प्रबल समथन किया गया। अनत श्री बागडी के प्रयत्नो से बिजली कमचारियो के साथ सरकार का सम्मानजनक समझौता भी हुआ। ये सभी कमचारी स्वेच्छा से सम्मेलन की विद्युत एव मच व्यवस्था म प्राणप्रण से जुडे हुए थे। उनको विश्वास था कि समाजवादी दल उनकी भावनाओ को समझने म अग्रणी रहेगा तथा सक्रिय सहयोग देगा। ऐसा हुआ भी और श्रमिको ने शातिपूण तरीके से पूण अनुशासन म एव सगठित रहते हुए अपनी हडताल को सफल बनाया।

समाजवादी नेता श्री सोहनलाल कोचर के अनुसार व्यासजी महाराष्ट्र से बीकानेर आए थे। उनके काम करने का ढग हम पसद आया। वे एक सनिक की तरह काय करत थे। उनम सघष करने की अदम्य शक्ति और इच्छा थी। सभी लोगो ने इसी इच्छा का स्वागत किया। वे अपन आपको नेता के रूप म थोपना पसद नही करते थे। सब साथ मिल जुल कर एक कायकर्त्ता की तरह काय करते थे। उनम स्वाथ नही था और वे निर्भीक थे। 1952 के आम चुनावो मे हमन लोक सभा एव विधानसभा दोनो के लिए मुरलीधर व्यास का चयन किया।

प्रांतीय कार्यकारिणी ने भी हमारे प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया। लोकसभा में उनकी उम्मीदवारी के पीछे एक मात्र लक्ष्य यही था कि इससे कम से कम पार्टी का प्रचार तो होगा ही। हम जानते थे कि (महाराजा) डा करणीसिंह के मुकाबले कोई भी अन्य उम्मीदवार विजयी नहीं हो सकता। फिर भी एक राजनीतिक दल के रूप में यह उचित समझा गया कि हमारा उम्मीदवार दोनों स्थानों के लिए मुकाबला करे। प्रथम आम चुनाव में यद्यपि हम हार गये पर विधानसभा क्षेत्र में हमें अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिली। विजयी उम्मीदवार मोतीचन्द खजांची ने वही चुनाव चिह्न (तीर) लिया था जो संसदीय चुनाव में महाराजा डा करणीसिंह का था। राजघराने के प्रति पुरानी आस्था के फलस्वरूप मतदाताओं ने दोनों स्थानों पर महाराजा को विजयी बनाने की भावना से तीर चुनाव निशान पर मतदान किया। दूसरे स्थान पर धार्मिक भावना से किया गया मतदान रहा जो राम राज्य परिषद के उम्मीदवार दीनानाथ भारद्वाज के पक्ष में गया। इतना होते हुए भी मुरलीधर व्यास को काफी अच्छी सफलता मिली।" तीर चुनाव निशान ने मोतीचन्द खजांची की नैया पार लगा दी और वे विधान सभा में पहुंच गए पर एक जन नेता के रूप में व्यासजी का व्यक्तित्व तेजस्वी रूप में उभर गया। व्यासजी के लिए यह एक बड़ी सफलता थी।

व्यासजी के साथ पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं की सहानुभूति थी क्योंकि वे अन्य कई लोगों की तरह अपने को नेता नहीं समझते थे—केवल पार्टी कार्यकर्ता ही मानते थे। बीकानेर में समाजवादी दल के गठन की चर्चा करते हुए श्री सोहनलाल कोचर ने बताया कि पहले वे स्वयं (श्री कोचर) प्रजा परिषद में थे, पर कालान्तर में वे प्रजा परिषद की कार्य प्रणाली से ऊब गये। उनके अनुसार इसका मुख्य कारण प्रजा परिषद में जाटवाद का वर्चस्व होना था। श्री गोपाललाल दम्माणी के आग्रह पर वे (श्री कोचर) समाजवादी दल में आये। बाद में प्रजा परिषद के पूर्ववर्ती साथी श्रीयुत् श्रीराम आचार्य, श्रीमती कमला आचार्य और श्री जनार्दन व्यास भी समाजवादी दल में सम्मिलित हो गये। श्री गोपाललाल दम्माणी ने जो दल के प्रांतीय एवं राष्ट्रीय नेताओं से मिलकर आये थे—पांच सदस्यों की कार्यकारिणी बनाई। दल में सम्मिलित होने वाले अन्य सदस्य थे सर्वश्री भंवरलाल स्वर्णकार, सत्यनारायण पारीक रामेश्वर पाडिया, भंवरलाल महात्मा एवं दादा गेवरचन्द आदि। नवनिर्मित दल के अध्यक्ष थे श्री जे बगरहट्टा एवं सचिव थे श्री गोपाल-लाल दम्माणी। प्रांतीय सम्मेलन में श्री बगरहट्टा एवं दम्माणी ही जाया करते थे।

पार्टी के कार्यकर्ता श्री गोपाललाल दम्माणी (सचिव) की कार्यप्रणाली से क्षुब्ध थे।

दादा गेवरचन्द तो कडक नाराज थे । हम भी नाराज थे । लोगो का विचार था कि यदि यही कार्य प्रणाली रही तो श्री दम्माणी को त्यागपत्र देना ही होगा । उधर श्री जे बगरहट्टा (अध्यक्ष) के प्रति भी असतोष था । कार्यकर्ताओ को बडे नेताओ से नही मिलाया गया उससे उनमे असतोष था । अतत सारे कार्यकर्ता बागडीजी को लेकर जयप्रकाश नारायण के पास गये और कहा कि हम कार्यकर्ता आपसे बात करना चाहते हैं ।"

'श्री जयप्रकाश नारायण ने बात करने के लिए बीकानेर से बाहर चलने की बात कही । अत 20–30 कार्यकर्ता जे पी के साथ शिवबाडी गये और वही पर विस्तार के साथ चर्चा की । श्री जयप्रकाश नारायण ने कार्यकर्ताओ को साम्यवाद एव समाजवाद का अन्तर समझाया, सोवियत रूस की अपनी यात्रा के संस्मरण सुनाये तथा बताया कि वहा पर श्रमिक अपने अधिकारो के लिए विरोध या विद्रोह नही कर सकते । समाजवादी व्यवस्था म विरोध पर कोई रोक नही है । भारत जसे प्रजातान्त्रिक देश म समाजवादी दल की नीतिया ही अधिक कारगर सिद्ध हो सकती हैं ।

श्री जयप्रकाश नारायण ने कार्यकर्ताओ की शिकायत ध्यान से सुनी । इस पूर्व पीठिका के बाद सम्मेलन मे श्री मगनलाल बागडी ने जब मुरलीधर व्यास का कार्यकर्ताओ से परिचय करवाया तो सभी न उनका स्वागत किया । व्यासजी का अपन साथी कार्यकर्ताओ से सम्पर्क बढता चला गया और इस प्रकार 1952 म ससदीय एव विधानसभा चुनावो के लिए एकमात्र उम्मीदवार के रूप म सर्व सम्मति से उनका ही चयन किया गया ।"

बीकानेर की जनता को समाजवादी दल के अस्तित्व का शीघ्र ही आभास होन लगा । दल के प्रथम कुछ आयोजनो म झण्डा काण्ड एव माइक काण्ड प्रसिद्ध हैं । वर्तमान ग्रीन होटल के पीछे एक विशाल मैदान था जिसे गाधी मैदान कहा जाता था । एक राजनीतिक दल की अधिकाश सभाए वही होती थी । उस दल विशेष ने एकाधिकार की दृष्टि से अपना झण्डा स्थायी रूप से मैदान म लगा दिया । किसी भी दूसरे दल वाले के लिए वहा पर सभाए करना कठिन था । क्योकि वहा तो पहले से ही एक दल का झण्डा फहराता रहता था । समाजवादी दल के नेताओ ने माग की कि उस झण्डे को वहा से हटाया जाये । यदि ऐसा नही किया तो एक निश्चित तिथि को वे स्वय उस झण्डे को ससम्मान हटा देंगे । घोषणा करने वालो मे मुरलीधर व्यास और रामेश्वर पाडिया भी थे । उस समय दल के मत्री थे श्री सत्यनारायण पारीक एव सयुक्त सचिव थे श्री भवरलाल स्वर्णकार । श्री रामेश्वर पाडिया के अनुसार घोषणा के छठे दिन झण्डा स्वत ही उतार लिया गया और इस तरह लोग एक गभीर राजनीतिक सघर्ष से बच गये ।

इस घटना से उत्साहित होकर अपने प्रति पूर्ण आश्वस्त दल ने अनेक अ य मामलो म भी नेतृत्व देना प्रारम्भ कर दिया । हीरालाल शास्त्री क मुख्यमन्त्रित्व काल म उन दिनो राजनीतिक दलो के लिए ध्वनि प्रसारक यत्र के उपयोग पर सामा यत रोक थी । इसका उपयोग नगर दण्डनायक की लिखित अनुमति स ही किया जा सकता था। समाजवादी दल ने इस प्रतिबध का डटकर विरोध किया। रोजाना माइक के साथ गोलबाग स्थल पर मीटिंग होती और पुलिस माइक छीनकर ले जाती । यह क्रम कई दिनो तक चला । दल के नेताओ के विरुद्ध मुकदमे भी दायर कर दिये गये । व्यासजी एव अ य नेताओ ने इस काले कानून की भर्त्सना की । उ होने नगर दण्डनायक की पूर्वाज्ञा की शर्त को मानने से इ कार कर दिया ।

उ ही दिनो मुख्यमन्त्री हीरालाल शास्त्री का बीकानेर म आगमन हुआ । मुख्यमन्त्री के रूप म यह उनकी पहली बीकानेर यात्रा थी । व्यासजी एव अ य नेताओ के नेतृत्व म स्टेशन के सामने एक विशाल प्रदर्शन किया गया । मुख्यमत्री ने दल की माग को उचित माना तथा माइक सम्ब धी प्रतिब ध एव पूर्वाज्ञा क नियम हटा दिये गये । समाजवादी दल क सारे जब्त माइक , जो थी बी एल शर्मा किराया लिए बिना दल की सभाओ क आयोजन क लिए देत थ लौटा दिये गय ।

समाजवादी दल का तीसरा बडा काम इक्के तागे वालो की सगठनात्मक शक्ति क प्रदर्शन का था । उन दिनो चना की आपूर्ति म कमी तथा भावो म तेजी के कारण इक्के तागा वालो के सामने भरण–पोषण की एक गम्भीर समस्या उपस्थित हो गई थी । व्यासजी ने बीकानेर क समस्त इक्के तागे वालो की एक यूनियन बनाई तथा सभाओ व जुलूसो के माध्यम से उनकी माग को सरकार के सामने रखा । प्रत्यक्षदर्शियो का कथन है कि इक्के ताग वालो का पहला जुलूस अपने आप म इतना लम्बा था जो बाद म कई वर्षों तक देखने को नही मिला । एक छोर कोटगेट के भीतर था तो दूसरा कलेक्टर की कोठी पर पहुच चुका था । आगे के तागो म लाल टोपिया पहने हुए व्यासजी एव अ य नेता थे । इक्के ताग चालक भी अपने अपने खाली तागो को लाल टोपिया पहने हुए चला रहे थ । कार्यकर्तागण भी लाल टोपियो म थ । एक रोमाचक दृश्य था । तरह–तरह के नारे लग रहे थे । व्यासजी क नेतृत्व के इस प्रभावी पडाव म इक्के तागे वालो की सारी मागें मान ली गई । कालान्तर म इक्के तागे वालों के सशक्त सगठन ने और भी कई पडावो पर मोर्चे जीते ।

इस बीच व्यासजी ठेले वालों नगरपालिका के सफाई कर्मचारियो रेलवे के कर्मचारियो एव रोजनीपर के कर्मचारियो के हितो के लिए भी निरन्तर सघर्ष

करते रहे। उनकी जायज मागो पर जन–समर्थन के लिए सभाएँ करना अनुकूल वातावरण बनाना, जुलूस निकालना, विज्ञप्तिया जारी करना एव सरकारी अधिकारिया से वार्ताए करक मजदूरो के पक्ष म निणय करवाना उनकी दनिक गतिविधियो के अ ग बन चुके थे।

1951 मे बीकानेर म नगरपालिका के लिए चुनाव घोषित हुए। उसम भी दल ने अपनी प्रारम्भिक शक्ति का परिचय दिया। श्री रावतमल कोचर का सामना करने से लोग डरते थे। क्योकि प्रतिद्वन्द्वी की जमानत जब्त होन की प्रबल सभावना थी। उस समय दल के मन्त्री श्री जनादन व्यास (जय हजारा दल) थे। दल की कायकारिणी के निणयानुसार श्री सोहनलाल कोचर का श्री रावतमल का मुकाबला करने के लिए खडा किया गया। अन्य वार्डों म भी उम्मीदवार खडे किये गये। श्री सोहनलाल कोचर के समथन मे मुरलीधर व्यास दादा घेवरचद, जनादन व्यास सत्यनारायण पारीक एव रामेश्वर पाडिया के अतिरिक्त गगानगर के श्री शिशुपाल सिंह एव नोहर के श्रीयुत श्रीनिवास थिरानी भी थे। शानदार सभाओ और घर घर प्रचार के कारण प्रबल जन समथन की स्थिति बनने लगी। वार्डों मे भी दल की शक्ति बढ रही थी, जन कॉलेज के विद्यार्थिया एव श्री ताराचन्द सीपानी का सहयाग भी श्री कोचर को मिल रहा था।

राजनीतिक घटनाचक्र इस बीच तेजी से चलने लगा। शरणार्थियो की ओर से माग करवाई गई कि हम म से बहुत से लोगो का नाम मतदाता सूची मे नही है। अत निर्वाचन अवैध माना जाना चाहिए। अतत निर्वाचन से केवल एक दिन पूव निर्वाचन के स्थगन की घोषणा कर दी गई। दल ने इसे भी अपनी विजय ही माना।

1948 से 1951 तक व्यासजी के सहयोगी श्री जनादन व्यास (जय हजारा दल) के अनुसार बीकानेर मे दो नेता अत्यन्त प्रभावशाली हुए है–आजादी से पूव के दिनो म बाबू रघुवर दयाल गोयल एव आजादी के पश्चात् श्रीमुरलीधर व्यास। 1950 51 मे समाजवादी दल के मत्री श्री जनादन व्यास के नेतृत्व म दल ने सडक कूटो आदोलन, मशाल जुलूस एव घास की कमी के विरुद्ध अभियान चलाया था। लोकनायक मुरलीधर व्यास एव जे बगरहट्टा के साथ वे भरतपुर एव जोधपुर के अधिवेशनों मे गये, दल के लिए अथ सग्रह करने बम्बई गये तथा समाज वादी दल की शाखा का गठन करने चूरू भी गये। चूरू म उन्हें सवश्री अद्भुत शास्त्री, फाल्गुन व्यास एव कमलेश व्यास का सहयोग प्राप्त हुआ। बम्बई म तीना नेता (मुरलीधर व्यास, जे बगरहट्टा एव जनादन व्यास) स्वर्गीय भरत व्यास के निवास स्थान पर ठहरे तथा स्व अशोक मेहता एव मगनलाल बागडी के सौजन्य

से दल के लिये अथ संग्रह किया। 1952 के प्रथम आम चुनाव म जनार्दन व्यास यद्यपि व्यासजी क विरुद्ध स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप म खडे हुए पर दोनो का पारस्परिक प्रेम सम्बध यथावत बना रहा।

व्यासजी ने जनहित मे समपण भाव से काय किया फलत प्रबल जन समथन मिला लोकप्रियता के बढते हुए अहसास और जन समथन के कारण समाजवादी दल आगे बढता चला गया। 1952 के निर्वाचन क बाद श्री मुरलीधर व्यास का नेतत्व और अधिक प्रखर हो गया। उ हे जनता का स्नेह व विश्वास और राष्ट्रीय नेताओ का विश्वास अधिक प्राप्त होने लगा।

आन्दोलन की आँच का कुन्दन

व्यासजी का जीवन अनवरत आन्दोलनो की एक लम्बी और अनथक कहानी है। उनके साथी समाजवादी नेता श्री माणिकचन्द सुराणा के अनुसार, "स्वर्गीय व्यास के निकटतम सम्पर्क म व आन्दोलना मे सर्वाधिक नजदीक रहन वाले व्यक्तियो मे से मैं भी एक हू। स्वर्गीय व्यासजी की प्रेरणा के सबसे बडे श्रोत सघर्ष व आन्दोलन ही थे। श्री व्यास सघर्ष मे सदव निर्भीक और आन्दोलना मे अग्रणी रहे। उनकी मान्यता थी कि प्रत्यक आन्दोलन समाजवादी पार्टी का आगे बढायेगा और उसम एकरसता पदा करगा। स्वर्गीय व्यास का जीवन बीकानेर डिवीजन के जनजीवन से जुडे आन्दोलना का इतिहास है।"

विधानसभा चुनाव मे उनके प्रतिपक्षी कांग्रेस प्रत्याशी श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित ने भी व्यासजी द्वारा जनहित मे किये गये सघर्षों एव मानवीय गुणा की साक्षी दी है। उनके अनुसार 'जन साधारण की समस्याओ क लिए अकेले ही जूझ पडने का व्यासजी सदव ही तत्पर रहते थे। स्वातन्त्र्योत्तर काल म जब भी बीकानेर म आन्दोलन हुए श्री व्यास जी जेल कारावास मे अवश्य रहे है। उनके नजदीक के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि समाजवादी विचारो के प्रति तो वे एकनिष्ठ थे ही, धम निरपेक्षता और लोकतन्त्र के प्रति भी वे पूरे आस्थावान थे और साम्प्रदायिकता स उन्हे पूरी नफरत थी। दुर्भाग्य से आज श्री व्यासजी हमारे बीच नही है, पर बीकानर नगर निवासियो को समाजवादी विचारो की ओर अग्रसर करने मे उनका जीवन खप गया और यही उनके जीवन की बडी सफलता रही है।"

श्री सत्यनारायण पारीक न व्यासजी की विशेषताओ का वणन करते हुए कहा है 'उनकी सगठन एव वक्तत्व शक्ति अपार थी। जननेता के रूप मे उनकी सवत्र ख्याति थी। कठिन से कठिन परिस्थितिया म भी अविचलित रहकर अपने लक्ष्य की पूर्ति म लगे रहना उनकी खूबी थी। उनकी जिंदादिली अपरिमित थी। गरीबो की लडाई लडन मे वे हमेशा आगे रहे। चाहे वह सन 54 का गेहू निकासी आन्दोलन हो या 56–57 का जामसर आन्दोलन उन्होने आगे बढकर नेतत्व किया और समाजवादी आन्दोलन को पुष्ट किया।"

उनके एक अन्य चुनाव प्रतिद्वन्द्वी श्री मूलचन्द पारीक ने अपने विचार इस प्रकार

व्यक्त किये हैं ' स्वतंत्रता के बाद बीकानेर के प्रतिपक्षी दलों का जो इतिहास रहा है उसमें से अगर व्यासजी के सम्बंधित अंश व घटनाओं को निकाल दिया जाय तो वह महत्वहीन हो जायेगा। अनगिनत सभाओं में अपने जोशीले भाषणों में गरीब श्रमिकों व मध्य वर्ग को प्रभावित करने वाली तात्कालिक रोजमर्रा की समस्याओं व मुद्दों को जिस ढंग से वे उठाते थे उस पर शासन को सदैव सतर्क नजर रखनी पड़ती थी। प्रशासन जानता था कि व्यासजी का एक एक शब्द कसौटी पर कसा खरा खरा है। सभाओं द्वारा जनमत तैयार कर उसे संगठित करने व उसे आंदोलन का रूप देने की उनमें उत्कृष्ट कला व सामर्थ्य थी। उनका व्यक्तित्व स्थानीय स्तर से प्रादेशिक स्तर का हो गया था और राष्ट्रीय स्तर पर उभरने की प्रक्रिया में था। वे जनप्रिय कार्यकर्ता व नेता थे। श्रमिक आंदोलन को संगठित करने में उनका अपूर्व योगदान रहा है। जिधर से निकलते लोग उनके पीछे हो जाते और उन्हें अपना दुख-दर्द व समस्याएं बताते। हर एक कौम दर्द करना उनकी प्रवृति में था। बीकानेर के राजनतिक इतिहास पर स्वाधीनता से पूर्व जिस प्रकार मुक्ता प्रसादजी वकील रघुवरदयालजी गोयल और मघारामजी वैद्य आदि के व्यक्तित्व व त्याग की अविस्मरणीय छाप है उसी प्रकार स्वातंत्र्योत्तर काल में स्वर्गीय मुरलीधरजी व्यास के व्यक्तित्व की अमिट छाप है और सदा रहेगी। आज भी उनका नाम, काम और प्रतिभा लोगों के लिए प्रेरणा श्रोत बने हुए हैं।"

राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री प्रोफेसर केदारनाथ (जनता पार्टी) व्यासजी द्वारा संचालित कई आंदोलनों में सहभागी रहे हैं। उन्होंने गेहूं निकासी आंदोलन, जामसर आंदोलन, चूरू व गंगानगर के किसान आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके अनुसार व्यासजी की एक विशेषता यह थी कि वे किसी भी जन आंदोलन के लिए जूझने को तैयार रहते थे। चाहे वह आंदोलन राजस्थान के किसी भी कोने में क्यों न हो। भ्रष्टाचार के विरुद्ध निरंतर अभियान चलाने वाले व्यासजी ने अपने आंदोलनों को हमेशा जन आधार दिया। उनके लिए कार्यकर्ताओं को तैयार किया तथा संघर्ष के लिए जनजागृति पैदा की। उनके पास निष्ठावान कार्यकर्ताओं की एक टीम थी। यह टीम साधारण परिवार के कार्यकर्ताओं की थी। किसी भी परिस्थिति में निर्भीक होकर आगे बढ़ना उनके चरित्र की एक विशेषता थी।

1952 एवं 1957 के मध्य जितने भी आन्दोलन हुए उनमें गेहूं निकासी आंदोलन व जामसर जिप्सम आंदोलन तो मुख्य हैं ही व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में गोआ या मुक्ति आन्दोलन भी अग्रणी है। व्यासजी इन समस्त आन्दोलनों की मूल धारा से जुड़े हुए थे। जन जागृति के व्यापक फलक पर साधारण समय

जाने वाले वर्गों को अपनी संगठनात्मक पहचान करवाने में तथा उनमें संघर्ष के माध्यम से सफलता प्राप्त करने की भावना भरने में वे हमेशा सचेष्ट रहे। 1952 से 57 तक की राजनीतिक चेतना के इतिहास के वे केन्द्र बिन्दु थे। उनका साथ देने वाले तो साधारण वर्गों के लोग ही थे। तांगे वाले रेडी वाले, दफ्तर के बाबू, छोटे दुकानदार मजदूर, किसान व गरीबी के बीच जीने वाले असंख्य दीन हीन, असहाय लोग उनके सहकर्मी थे। उनके नेतृत्व में यह जनशक्ति कभी सभाओं के रूप में तो कभी जुलूसों के रूप में अपने आपको अभिव्यक्त करती थी। आदालतों में इसी जन शक्ति की तेज धारा को लेकर वे आगे बढते थे। बीकानेर में स्वातन्त्र्योत्तर काल में राजनीतिक चेतना की यह शुरुआत थी। सभाओं और जुलूसों में लगने वाले नारे ('चना चबीना चीनी दा, बाबा कुर्सी छोड दो' 'माग रहा है राजस्थान रोटी कपडा और मकान, 'हर जोर जुलम की टक्कर में हड़ताल हमारा नारा है अथवा 'रोटी रोजी दे न सके वह सरकार निकम्मी है)' जोश–खरोश के साथ–साथ जन चेतना को भी चरितार्थ करते थे। इसी राजनीतिक चेतना के वातावरण में शुरु हुआ ऐतिहासिक गेहूं निकासी आन्दोलन जिसने बीकानेर की जनता की अद्भुत संघर्ष क्षमता को प्रकट किया।

बीकानेर में अनाज की कमी थी। सरकारी गोदामों एवं भण्डारणों में जमा गेहूं जब बीकानेर से बाहर भेजा जाने लगा तो उसका बीकानेर में जबरदस्त प्रतिरोध हुआ। जन सभाओं, जन मोर्चों जुलूसों एवं चक्का जाम कार्यक्रमों द्वारा बीकानेर की जनता का रोष प्रकट होने लगा। सरकार गेहूं निकासी के निर्णय पर फिर भी अडिग थी। उधर पूरा जनमानस उद्वेलित होकर हर प्रकार की कुर्बानी के लिए तैयार था। लोगों में अद्भुत जोश था। 23 दिन तक चलने वाले इस ऐतिहासिक आन्दोलन से जैसे पूरा का पूरा नगर जुड गया था। आन्दोलन का सूत्रपात करने और उस के लिए वातावरण बनाने का मुख्य श्रेय व्यासजी को ही है।

लक्ष्मीनाथ जी के मन्दिर में व्यासजी के आह्वान पर श्री शिवकिशन आचार्य 'कजलसा' ने 9 दिनों का अनशन किया। पूरे 23 दिनों तक बाजार बंद रहे। शायद इतना सुसंगठित जन आन्दोलन बीकानेर में पहले कभी नहीं हुआ था।

यह अनाज निकासी आन्दोलन जनवरी 1954 से शुरु हुआ। धारा 144 को तोडकर जेलें भरने का जो माहौल बना वह आज भी इतिहास की अमिट घटना रूप में राजस्थान में अपनी अनुगूंज बनाए हुए है।

इस आन्दोलन में 300 से भी अधिक गिरफ्तारियां हुईं। जन संघर्ष समिति के अध्यक्ष श्री रावतमल कावर, मंत्री सत्यनारायण पारीक, उपमंत्री श्री ताराचन्द

सिपानी प्रचार मत्री चम्पालाल राका व मानिकचन्द सुराना तथा समिति के सदस्य वयोवृद्ध पत्रकार श्री जे बगरहट्टा, श्री मुरलीधर व्यास, श्री शिशुपालसिंह, श्री घेवरचन्द, श्री द्वारकाप्रसाद जोशी, श्री द्वारकाप्रसाद पुरोहित, श्री दाऊदयाल जोशी, श्री मूलचन्द सेवग, श्री मघाराम वैद्य आदि नेताओ ने गिरफ्तारिया दी।

गेहू निकासी आन्दोलन के बारे मे गोकुल घी वाले ने बताया, "व्यासजी ने मिलिट्री एरिया म गेहू से भरे हुए ट्रक के आगे सबस पहले मुझे लेटने का आदेश दिया। ट्रक को जाना है तो हमारी छातियो के ऊपर से जायेगा वर्ना नही जा सकता। चारो तरफ पुलिस वाले खडे थे। पूरा शहर उलटा हुआ था। सबसे पहले मुझे गिरफ्तार किया गया। बाद मे कई गिरफ्तारिया हुई। 23 दिन तक चलने वाले इस सत्याग्रह म प्रतिदिन जत्थे के जत्थे गिरफ्तार किये जाकर जेल मे भेजे जात थे। जेल म व्यासजी ने पृथक श्रेणी लेने से इन्कार कर दिया। हम लोग खाने पीने का सूखा सामान ले लेते तथा स्वय बनाकर एव साथ खात थे। सकडो लोग गिरफ्तार किये गये। उनमे डी पी जोशी प्रोफेसर केसर एव द्वारकाप्रसाद पुरोहित भी थे। रात को हमे अलग अलग बरको म रखा जाता पर दिन के समय सभी लोग साथ हो जाते थे।"

श्री भँवरलाल स्वणकार के अनुसार गेहू आन्दोलन के दौरान प्रजा समाजवादी पार्टी के सचिव श्री सादिक अली भी बीकानेर आये थे। 29 जनवरी 1954 को कोचरा मे एक आम सभा हुई जिसे भँवरलाल महात्मा ने सम्बोधित किया। उसी रात श्री भँवरलाल स्वणकार राष्ट्रीय नेताओ को बीकानेर की स्थिति मे अवगत करवाने दिल्ली रवाना हो गये। उन्होने श्री मुश्ताक अली से बातचीत की। स्व श्री डी० डी० वशिष्ठ ने कहा कि यह राज्य का मामला है अत सादिक भाई से बात करनी चाहिए। जो दल मे राजस्थान के मामले के प्रभारी हैं।

श्री सादिक अली दो दिनो तक बीकानेर मे रहे। रेल्वे स्टेशन पर उनका भव्य स्वागत किया गया था। रतन बिहारी पार्क मे विशाल सभा हुई हजारो लोग उसम उपस्थित थे। कार्यकर्ताओ की मीटिंग श्री जवाहर लाल अजमानी के घर (रतन बिहारी के सामने) हुई थी जिसे श्री सादिक अली ने सम्बोधित किया था।

इससे पूव बीकानेर के कई वरिष्ठ नेता गिरफ्तार हो चुके थे। सभाओ और प्रदर्शनो म लोग बराबर भाग लेते थे। बीकानेर मे जब धारा 144 लगा दी गई तो गगाशहर म सभाएँ की जाने लगी।



लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास तत्कालीन राष्ट्रपति डा सवपल्लि राधाकृष्णन्
श्री यू एन ढेबर, श्रीयुत् श्रीमन्नारायण एव श्री प्रभुदयाल डाबडीवाला के साथ।



लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण के साथ लोकनेता सर्व श्री मुरलीधर व्यास, माणकचंद सुराणा रतनलाल रामपुरिया और प्रभुदयाल डाबड़ीवाला। खड़े हैं सर्व श्री जेठमल कोचर, जड़ियाजी सुनार और गंगादास कौशिक।



लोकनेता स्व मुरलीधर व्यास राष्ट्रीय कांग्रेसी नेताओ के साथ प्रमुख नेता हैं श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री ढेबर श्री गोविन्द वल्लभ पंत, श्री लालबहादुर शास्त्री आदि



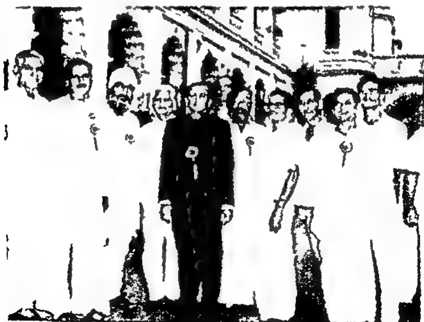
प्रजा समाजवादी पार्टी अधिवेशन मैसूर 1969 की एक सयुक्त चित्र झांकी । प्रमुख नेता सवजीमल्ल वर्मा नाना डॅगरे, लखनलाल कपूर, मुल्का गोविन्द रेड्डी, एस शिवप्पा नाना साहब गोरे, धनराज बरगोता आदि के साथ हैं लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास



दम्माणियो का चौक बीकानेर म आयोजित एक महती जनसभा मच पर अरुणा आसफअली और श्री मगनलाल बागडी



तत्कालीन मुख्यमंत्री सुखाड़िया को ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए गंभीर मुद्रा में लोकनेता स्व
श्री मुरलीधर व्यास । साथ है श्री हनुमानदास आचार्य एडवोकेट
श्री नारायणदास रंगा एव श्री सत्यनारायण पुरोहित ।



लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास अपने दिग्गज पार्टी नेताओं के साथ । साथी है
स्व श्री घनराज वरगोत्रा, हरभजनसिंह, रतनलाल पुरोहित, मुल्का गोविन्द रेड्डी
रामकृष्णन, रामचन्द्र राव और सुरेन्द्र मोहन आदि



लाकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर नगर के गणमान्य नागरिका के साथ प्रसन्नता के क्षणा म । व्यासजी के पास खडे है बीकानर के स्व महाराजा करणीसिहजी श्री जनादन व्यास, सम्पतलाल खजाची एव नारायणदास रगा आदि ।



प्रजा समाजवादी नेता श्रीनाथ प की बीकानर यात्रा पर अगवानी करते हुए लाकनता श्री मुरलीधर व्यास जीप चला रहे है । साथ म हैं श्री शिवकिशन जाशी, डी डी वशिष्ठ श्री श्रीकृष्ण शर्मा प्रेमरतन मादी कल्याणसिंह श्यामजी थानवी आदि

लाकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास अपने साथियो के साथ



गोआ मुक्ति आ दोलन के सदम मे वेलगाम म आ दोलनकारी
साथिया के साथ श्री मुरलीधरजी व्यास

1 मई मजदूर दिवस का रतन बिहारी पार्क म आयोजित सभा म मजदूर नेता एवम् अध्यक्ष एन आर एम यू श्री जगदीश चौबे मजदूरा को सबोधित कर रहे हैं। साक्षी ह दादा घेवरच द लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास, श्रीयुत् श्री कृष्ण कल्याणसिह और श्री डी डी वशिष्ठ

जामसर आ दोलन के समय रतन बिहारी पार्क मे स्व व्यासजी द्वारा सम्बोधित एक सभा का का दृश्य।

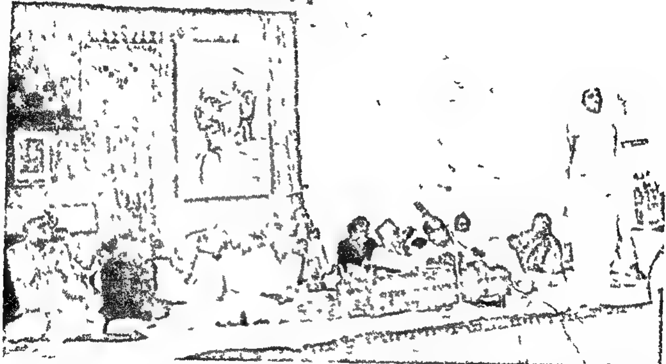


स्व श्री मुरलीधर व्यास के नापन पर मुख्यमंत्री सुखाडिया को कुछ सचेत करते हुए राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री कामराज नाडार। साथ में खडे हैं श्री हरिदेव जोशी।

प्रजा समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय समिति का अध्ययन शिविर (मैसूर, 1969)
श्रीमती प्रमिला दंडवते विजय प्रधान समरेन्द्र कुंडू, मधु दंडवते एलनलाल कपूर
अरुणा मेहता और सुरेन्द्र मोहन के साथ स्व. श्री मुरलीधर व्यास राजनैतिक साथ के
क्षणा में। खड़े हुए श्री रामकृष्णन्।



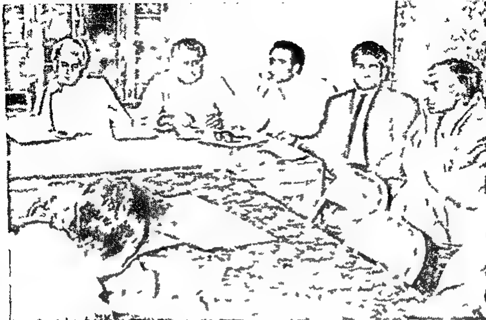
प्रजा समाजवादी दल के राष्ट्रीय
साथ में शिविर



प्रजा समाजवादी पार्टी का 10 वां अधिवेशन बड़ौदा, फरवरी 1970। भाषण करते हुए श्री हरिविष्णु कामथ। साथ ही मंच पर बैठे हैं लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास, समरगुहा, प्रेम भसीन, सुरेन्द्र मोहन, हरभजनसिंह, नाथ पै, नाना साहब गोरे जमुनाप्रसाद शास्त्री, मुल्का गोविन्द रेड्डी, पीटर अलवारिस आदि



लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास तत्कालीन प्रधानमत्री इन्दिरा गाधी व मथुराप्रसाद माथुर के साथ



लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास नेताओ के बीच रेलवे मजदूरो की मागो के सम्बन्ध मे गहरे चिंतन मे। साथी है श्री नाथ प, श्री जे बी चौबे, श्री टी एन वाजपई तथा श्री रघुवंस सरहदी आदि।



प्रजा समाजवादी पार्टी के दसवें अधिवेशन मे लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास सबोधन कर रहे हैं। मच पर बैठे हैं सवश्री मुल्का गोविंद रेड्डी, जी जो परीख, एन जी गारे, यमुनाप्रसाद शास्त्री, नाना डेंगले, मधु दडवते, प्रेम भसीन, हरभजन सिंह एव एच वी कामथ।



प्रजा समाजवादी पार्टी की विशाल जनसभा मे जनता को सबोधित करते हुए स्व श्री मुरलीधर व्यास । मच पर विराजमान है श्री अशोक मेहता । पास मे बैठे है श्री सत्यनारायण पारीक और श्री मानिकचद सुराणा



बीकानेर म समाजवादी नेता श्री नाथ पै की अध्यक्षता मे आयोजित महती जनसभा मे लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास जनता को सबोधित करते दिखाई दे रहे हैं । साथ म सभागी हैं दादा घेवरचद एव बूला महाराज व्यास आदि



गोवा विमुक्ति आन्दोलन में सम्मिलित होकर बीकानेर लौटने पर जनता द्वारा भव्य स्वागत से अभिभूत स्व. श्री मुरलीधरजी व्यास एक भाव मुद्रा में



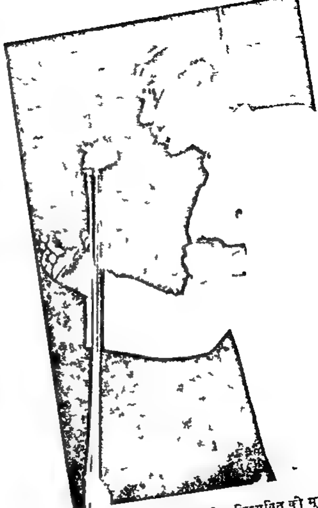
प्रजा समाजवादी पार्टी की विशाल जनसभा म जनता को सबोधित करते हुए स्व
श्री मुरलीधर व्यास । मच पर विराजमान है श्री अशोक मेहता । पास मे बैठे हैं
श्री सत्यनारायण पारीक और श्री मानिकचद सुराणा



बीकानेर मे समाजवादी नेता श्री नाथ पै की अध्यक्षता मे आयोजित महती जनसभा मे
लाकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास जनता को सबोधित करते दिखाई दे रहे है ।
साथ म सभागी हैं दादा धेवरचद एव बुला महाराज व्यास आदि



राजनतिक परिवतन के लिए जनता की एकता को ही सीधा सपाट माग बताते हुए एक महती जनसभा मे स्वर्गीय श्री मुरलीधर व्यास भाषण देते हुए



प्रखर राजनैतिक पीडा की अभिव्यक्ति की मुद्रा मे स्व श्री मुरलीधर व्यास एक महती जनसभा मे जनता को सबोधित करते हुए ।

बीकानेर के तप तपाय समाजवादी नेता तो इसमे कूद ही पड़े थे बाहर से भी चौधरी हरदत्तसिंह व श्री एच के व्यास आय। ये लाग भी गिरफ्तार हुए। आन्दोलन चलता रहा। बीकानेर म सभाए नही होने दी तो गगाशहर म हुई। अतत विपुल जनशक्ति के आगे सरकार को झुकना पड़ा। श्री मगनलाल बागड़ी व श्री जयनारायण व्यास तत्कालीन मुख्यमत्री राजस्थान के बीच मे आयोजित वार्ता के आधार पर अनाज की निकासी रोकने का निर्णय लिया गया। सारे आन्दोलनकारी नेताओ को रिहा कर दिया गया। रिहाई के बाद साले की होली पर एक ऐतिहासिक जन सभा हुई। बीकानेर की जनता ने अपने प्रिय नेता मुरलीधर व्यास सहित सभी आन्दोलनकारियो का जिस तरह स्वागत किया वसा स्वागत कई कई वर्षों तक देखने को नही मिला। एक ऊचा मच दूर दूर तक दिखाई देने वाला जनसमूह, छज्जो अटारियो खिड़कियो तक म भरे हुए लोग जमीन पर तिल रखने की जगह नही—और विजय के उस माहौल म असख्य फूलमालाओ से लदे हुए जननायक मुरलीधर व्यास और उनकी जयजयकार के गगन भेदी नारे—सगठित जन जागृति का ऐसा ममस्पर्शी दृश्य स्वातत्र्योत्तर काल मे प्रथम बार ही देखने को मिला।

गेहू निकासी आन्दोलन स्थानीय समस्याओ के प्रति व्यासजी की सजगता का एक दृष्टात है वही गोआ मुक्ति आन्दोलन उनके उत्कृष्ट देशप्रेम राष्ट्रीयता एव त्याग तथा उत्सग की भावना का ज्वलत प्रमाण है। आजाद भारत पर नासूर की तरह चिपके पराधीन गोआ को पुन राष्ट्र की मुख्यधारा मे जोड़ने के लिए एक जबरदस्त सघर्ष छेड़ा गया था। पूरे भारतवर्ष से सत्याग्रहियो के जत्थे गोआ जा रहे थ। पुर्तगाली शासको ने गिरफ्तारिया से लेकर जघन्य गोली काण्डो एव हत्याओ का एक दुर्दान्त सिलसिला चला रखा था। निहत्थे आन्दोलनकारियो पर बबर अत्याचारो की घटनाओ से पूरे भारत म रोष था। आजादी के दीवाने शुद्ध गाधीवादी तरीके से गोआ म प्रवेश करने एव तिरगा लहराने के लिए सब कुछ न्यौछावर करने को तयार थे।

महात्मा गाधी के आशीर्वाद से वर्धा म पनपने वाली युवा पीढ़ी के एक सहभागी के नाते व्यासजी इस राष्ट्रीय आन्दोलन से दूर कैसे रह सकते थे? पूरे देश म बढ़ रहे जोश खरोश एव बलिदानी माहौल म बीकानेर ने भी सक्रिय योग दिया। व्यासजी के नेतृत्व म 5 सदस्यो का एक जत्था आत्माहुति की भावना लेकर बीकानेर से रवाना हुआ। मोहता के चौक से एक विशाल जुलूस के रूप म इन सत्याग्रहियो को विदा किया गया। वह रोमाचक दृश्य अभी तक भी हजारो लोगो को याद है।

व्यासजी के साथ गोआ आन्दोलन म सक्रिय रूप म भाग लेने वालो म से एक सत्य नारायण हप के अनुसार "उन दिनो जनता म एक जबरदस्त जोश था। गोआ म श्री एन जी गोरे एव अ य नताओ की गिरफ्तारी न उस जोश के माहौल को और अधिक गरमा दिया था। बीकानेर से गोआ के लिए प्रस्थान करने वाले जत्थे के सेनानियो म भी ऐसी जोश की झलक देखी जा सकती थी। श्री मुरलीधर व्यास के नतत्व म जाने वाले सत्याग्रही थ सवश्री महन्त भारद्वाज, सत्यनारायण हप भँवरलाल हप एव महन्त माली। इन पाचो बलिदानी व साहसी आन्दोलनकारियो का जत्था बीकानेर से रवाना होकर अपन कायक्रमानुसार सव प्रथम जयपुर पहुचा। बीकानेर स्टेशन पर हजारो लोगो न जय जयकार के नारो से उन्ह विदा किया। जनता का सहयोग सराहनीय था। आर्थिक सहयोग एव मनोयोगपूण अन्य सहयोग के कारण ही यह कारवा आगे बढ सका था। मोहता के चौक से लेकर स्टेशन तक स्थान स्थान पर मालाओ से स्वागत किया गया। उधर जयपुर म भी यही स्थिति थी। जयपुर के निवासियो ने श्रीमती भगवतीदेवी के नतत्व म आत्माहुति के लिए तत्पर एक जत्थे को इसी जोश खरोश के साथ विदाई दी। राजस्थान स बीकानेर और जयपुर के य दो जत्थे एक साथ रवाना हुए। सवाई माधोपुर होते हुए सभी साहसी सूरमा बम्बई पहुचे। रास्त म सभी मुख्य स्टेशनो पर जनता ने हमारा स्वागत किया।"

'हमारे सामने लक्ष्य स्पष्ट था 15 अगस्त 1954 को गोआ म तिरगा झण्डा लहरा के रहेंगे। फिर चाहे प्राण जायें या रहे, जेलो म डालें या लाठिया बरसायें, गोलियो से भूनें या लम्बे कारावास म रखें कुछ भी करें या कुछ भी हो सबो पर यही नारा था कि ' लाठी गोली खायेंगे फिर भी गोआ जायेंगे।"

यह कारवा अ तत बम्बई पहुचा। वहा एक दिन रुक कर देश भर स आय अन्य जत्थो से सम्पक किया। गोआ विमोचन समिति न सम्पूण स्थिति एव वातावरण से अवगत करते हुए उ ह आग का कायक्रम बताया। 14 अगस्त को जो जत्था कैसलराक स्टेशन पहुचा उसम राजस्थान सहित अन्य प्रातो के लगभग 250 300 सत्याग्रही थे। 15 अगस्त के दिन तिरगे झण्डा की छत्रछाया म गोआ म प्रवेश करना था।"

"आन्दोलन के कारण रेल एव बस मार्ग ब द कर दिये गये थे। कसलराक से आगे बढने के लिए और गोआ म प्रवेश करने के लिए सुरंग माग के अलावा और कोई माग नही था। जगल म कोई कमी नही थी। ऊबड खाबड माग, पहाडी रास्ते जगली पशुओ की डरावनी आवाजें, असख्य पेड एव झाडिया, उतार चढाव की

शृखलाए एव उन सबके बीच बढते हुए अविराम ठोस कदम 'हमने सोचा कि यदि हल्ला करते हुए आगे बढेंगे तो जगली पशु भाग छूटेंगे। हमने ऐसा ही किया, जोर जोर से नारे लगाते हुए आगे बढते रहे। यह रास्ता लगभग चार पाच किलोमीटर का ही था, पर था बडा डरावना। हमे इसी बात से शक्ति या प्रेरणा मिल रही थी कि चाहे कुछ भी हो 15 अगस्त को गोआ पहुचना ही है।"

"पहाडी रास्ते म आगे बढते बढते अतत सभी लोग रेल लाइन तक पहुचे जो सत्तर पचहत्तर फीट की गहराई म थी तथा पहाड का काटकर बनाई गई थी। रेल लाइन तक पहुचने के लिए भी पहाडी पगडडिया एव सुविधा के लिए नीचे उतरने वाली पैडियो का सहारा लेना पडा। स्थान स्थान पर पुलिस की चौकिया थी। बम्बई–पूना–बेलगाव और कसललोक–सभी स्थानो पर पुलिस का बन्दोबस्त था। यहा तक कि पहाड काटकर बनाई गई रल लाइन पर भी एक स्थान पर पुलिस की व्यवस्था की गई थी। सुरक्षा के लिए तनात पुलिस दल की इस टुकडी ने सत्याग्रहिया को आगे जाने के लिए मना किया पर लाग अपने सकल्प स विचलित नहीं हुए। 'लाठी गोली खायेंगे फिर भी गोआ जायेंगे' की गगनभेदी ध्वनि बराबर गूजती रही।"

'बम्बई की पुलिस ने कोई विशेष प्रतिरोध नहीं किया। उसने तो आग के खतरे की चेतावनी देने के लिए ही आ दोलनकारिया को रोका था पर जब बुल द हौसले व दढ सकल्प देखे तो उनका आगे बढने दिया गया। सत्याग्रही लोग अब रेल माग के साथ साथ चलने लगे। यह रेलमाग भी आगे गुफाआ म से होता हुआ निकाला गया था। कई फुट लम्बी गुफा म से निकलने के बाद एक खभा था जिस पर बम्बई की सीमा के समाप्त होन का सकेत था। जाहिर था कि इसके आगे गोआ की सीमा शुरू होती है। रेल्वे सिगनल के बाद फिर एक छोटी गुफा थी। उसे पार करत ही हम पहाड पर काले काले आदमी दिखाई दिय—पुतगाली पुलिस के आदमी। उन्होने ऊपर स बेतार के तार से नीचे सन्देश भेजा ताकि पुतगाली पुलिस व सनिको की टुकडियाँ चौकन्नी हा जायें।"

'आग एक और गुफा थी। लम्बी सी गुफा। कोई तीन सौ चार सौ फुट लम्बी। बम्बई की पुलिस सिगनल से लगभग 100 150 फुट दूर थी। सत्याग्रही लोग उस काली भयावह गुफा म घुस चुके थे। गुफा म एक ओर ता हिन्दुस्तानी लोग थे और दूसरी ओर दुर्दा त पुतगाली सनिक। सिगनल स सौ डेढ सौ फुट पार करके सभी दृढ सकल्पी लोग मौत के मुह मे स्वय ही आय थ। एक ओर सत्य त्याग एव उत्सग का जलजला था तो दूसरी ओर पराधीन गाआ के विदेशी शासका की ओर से तनात सन्य बल था।'

'विदेशी सनिको ने हमे आगे बढने स मना किया, पर हमने अपने वही नार गु जाये लाठी गोली खायेंगे फिर भी गोआ जायेंगे।" नताओ के हाथो म तिरगे झण्डे थे। एक तरह से हमारा प्रण पूण हा चुका था। गाआ की धरती 15 अगस्त का दिन-हाथो म तिरगे झण्ड और मुह म "भारत माता की जय' की आवाजें।"

'पराधीनता की दुर्गा त शक्ति के मुह पर तमाचा लग चुका था और अब वह बौख लाई हुई शक्ति हम आगे बढने से राक रही थी। आग आगे झण्डा लिय हुए जो लोग चल रहे थे उनम व्यासजी तो प्रमुख थे ही, बीकानर के श्री भरू दत्त भारद्वाज के हाथा म भी झण्डा था। हम लोग चार चार पाच पाच की कतारो मे आगे बढ रहे थे। आगे के झण्डाधारियो से हम (सत्यनारायण हष एव कुछ अन्य लोग) आठ दस कतारें पीछे चल रहे थे। '

किसी के हाथ म दल विशेष का झण्डा नही था—भारत की एकता का प्रतीक तिरगा ध्वज ही आगे बढ रहा था। इतने म बिना किसी विशेष चेतावनी के धाय धाय की आवाजें आने लगी। गालिया चलने लगी थी। हमारे सामने बन्दूकों से लस सनिक थे और इस तरफ हम निहत्थे सत्याग्रही थे। काली भयावनी गुफा और मौत की डरावनी छाया सबको निगलने के लिए तयार थी। '

हम समझाया गया था कि गोली चलते ही लेट जाना। हम सभी धरती पर लेट गये। उधर गालियो के कारण भगदड मच चुकी थी कुछ लोग हमारे ऊपर ही आ पडे थे। वे जीवित थे या मृत घायल थे या स्वस्थ कुछ भी पता नही पड रहा था। धाय धाय धाय जब समाप्त हुई तब पता चला कि तीन सत्याग्रही शहीद हो चुके थे बहुत से जख्मी थे। लोग किसी तरह उठकर घुटनो के बल चलते चलते गुफा से बाहर आग। गुफा के बाहर जब दृश्य देखा तो ज्ञात हुआ कि तीन मृतको के अलावा घायलो की सख्या बहुत अधिक थी।'

व्यासजी के कधे के पास चोट लगी थी। खुशकिस्मती स गोली कधे के ऊपर से होती हुए निकल गई। श्री भरू दत्त भारद्वाज के बायें हाथ म और पेट की बायी तरफ गालिया लगी थी। गुफा म मेरे ऊपर आकर गिरने वालो म श्री भरू दत्त भारद्वाज ही था। हम तीन-चार साथी उसे उठाकर लाये थे। सत्याग्रही लोग घायलो और मृतको को उठा-उठाकर बाहर लाने म लगे थे। बडा ही करुण मार्मिक दृश्य था पर हौसला अब भी बुलन्द था। कई साथी आग्रह कर रहे थे कि हम वापिस गुफा म जायेंगे, पर नेताओ ने समझाया कि हमारा लक्ष्य पूरा हो चुका है। भारत का तिरगा झण्डा गोआ की धरती पर लहरा दिया गया। आजादी के दीवानो न अपने खून से मा के भाल पर तिलक कर दिया। अत्याचारियो के दमन के बावजूद सकल्प सिद्ध हो चुका।

"अनमने होते हुए भी हम लोग अपने शहीदों के शवों को लेकर पुन सिगनल तक आये।"

'मृत्यु की घटनाओं के कारण हम शोक सन्तप्त तो थे पर कायरता बिल्कुल नहीं थी। सिगनल से 150-200 फुट दूरी पर तनात बम्बई की पुलिस ने तत्काल ही कैसलरॉक वायरलेस संदेश भेजा और आग्रह किया कि उस स्थान तक रेलगाडी भेजी जावे। यद्यपि आंदोलन के कारण रेल मार्ग बंद कर दिया गया था पर इस घटना को ध्यान में रखते हुए हमारे लिए सिगनल से थोडी दूर आगे तक रेल की व्यवस्था कर दी गई। जो इंजिन रेलगाडी को लेकर आया था उसे बिना मुडे उल्टे-उल्टे ही रेलगाडी को लेकर रवाना होना था।'

"मृतकों में एक थे श्री नत्थूराम। वे मथुरा के निवासी थे। उस समय साधारण बूंदाबांदी भी हो रही थी। शहीदों के शवों एवं गंभीर रूप से घायल सत्याग्रहियों के लिए उसी समय उपलब्ध लाठियों व कम्बलों से स्ट्रेचर बनाये गये और सबको रेलगाडी में पहुंचाया गया। कैसलरॉक से गोआ की दूरी रेल मार्ग से लगभग 30-35 किलोमीटर है पर इस स्टेशन (कैसलरॉक) से गोआ की तरफ वाले मार्ग में 10 15 किलोमीटर पर भारतीय पुलिस की बहुत अच्छी व्यवस्था की गई थी। सत्याग्रहियों ने घटनास्थल (गुफा) से दो किलोमीटर तक शहीदों के शवों को स्ट्रेचरों पर पहुंचाया जहां से रेलगाडी की व्यवस्था की गई थी। पच्चीस-तीस घायलों में से कुछ गम्भीर रूप से घायल थे-उनके लिए भी पर्याप्त व्यवस्था की गई।"

"बेलगांव स्टेशन पर गोआ विमोचन समिति ने सत्याग्रहियों की अगवानी की। रात्रि का समय होने से मृतक साथियों के शवों को एक सुरक्षित स्थान पर रखा गया। घायलों को उपचारार्थ तत्काल ही बेलगांव के अस्पताल में ले जाया गया। व्यासजी के कंधे पर चोट के निशान थे, जबकि भरूदत्त भारद्वाज गंभीर रूप से घायल होने वालों में थे। 16 अगस्त का दिन। शहीदों के दाह संस्कार में पूरा बेलगांव ही जैसे उमड पडा। बाजार बंद स्कूलें बंद, प्रतिष्ठान बंद। आगे-आगे तीन अर्थियां और उनके पीछे चलने वाले हजारों-हजारों आबाल वृद्ध जन-बडा ही मार्मिक दृश्य था। पूरे सम्मान के साथ शहीदों का दाह संस्कार किया गया। उसके बाद श्मशान से थोडी दूरी पर ही व्यासजी का ओजस्वी भाषण हुआ। चूंकि व्यासजी वहां की स्थानीय भाषा में नहीं बोल सकते थे, अतः वे अंग्रेजी में बोले। तिलगम भाषा भाषी एक व्यक्ति ने जहां आवश्यक समझा उसका आशय-

लिमिटेड' की स्थापना भूतपूव बीकानेर राज्य के समय म ही हो गई थी । प्रारम्भ मे उसे बीस वप का लीज प्रदान किया गया, पर कालान्तर म उसकी अवधि मे वृद्धि कर दी गई । राजस्थान सरकार का नियत्रण पहले 40 प्रतिशत हिस्सा पर बाद मे 51 प्रतिशत हिस्सा पर हो गया ।

अपनी स्थापना से लेकर 1967 के आदोलना तक कम्पनी की व्यवस्था एक ही मनेजिंग एजेंसी के हाथ म रही थी । व्यासजी पहले व्यक्ति थे जिहाने कम्पनी के मजदूरो की दुदशा देखकर उन्ह सगठित होने एव अपने अधिकारो के लिए सघप करने के लिए प्रेरित किया था । सघप करने के प्रारम्भिक दिनो की याद करते हुए जिप्सम मजदूर यूनियन नेता श्री बजरग लाल ओझा ने अपने एक लेख 'जिप्सम मजदूरो के मसीहा'' म उस समय की स्थिति का वणन इस प्रकार किया है

' जिप्सम मजदूरो के आन्दोलन की शुरुआत व्यासजी न उस समय की जब इस उद्योग म कायरत मजदूरो की दशा अत्यत शोचनीय थी । मालिको द्वारा मजदूरो का भयकर रूप से शोषण किया जा रहा था । उनकी नौकरी की कोई सुरक्षा नही थी और न ही किसी प्रकार का मजदूर हितपी कानून इस उद्योग पर लागू था । बेराजगारी की विभीपिका से पीडित मजदूर चार आने प्रति टन लोडिंग की मजदूरी, अपमान और मालिको की मरजी पर नौकरी पर रखे जाने और निकाल दिये जाने जैसी असहनीय स्थिति को सहन करने के लिए मजबूर थे । उन दिनो जिप्सम कम्पनी के बाबू तक को भी अधिक तनख्वाह नही मिलती थी । मजदूर अन्दर ही अन्दर सिसकता था, पर खुला विरोध प्रदर्शित कर नौकरी गवाने से डरता था ।"

"ऐसी विपम परिस्थितियो मे श्री व्यासजी ने जिप्सम मजदूरा की दयनीय स्थिति से द्रवित होकर उन्हे सगठित करने का बीडा उठाया । सन् 1954 म व्यासजी ने सवप्रथम जिप्सम मजदूरा की यूनियन बनाने का प्रयास आरम्भ किया । एक एक मजदूर की झोपडी म वे गये और मजदूरा को उनके कानूनी अधिकार से अवगत करवाया । अन्याय के विरुद्ध सगठित आवाज उठाने की उन्ह प्रेरणा दी । '

एक तरफ दारुण विवशता दो जून पट भरने की भीषण समस्या विपन्नता और गरीबी तथा दूसरी तरफ निरकुश व्यवस्था स्वेच्छाचारिता, सवेदनहीनता एव शोषण । ध्रुवो मे मिलाप होने की कोई सभावना तक नही थी । ऐसी स्थिति मे एक मात्र माग था सघप का और व्यासजी ने वही चुना । विवश और दयनीय, आतकित और सशकित मजदूर सघप के लिए तत्काल तयार हो गया हो ऐसी बात नही थी । वह डरता था कि कही सघप की बात होठो पर आ गई तो नौकरी से

छुट्टी होते देर ही नहीं लगती। भीतर ही भीतर वह पिसता था, पर मुह खोलने की हिम्मत नहीं करता था।

श्री बजरग लाल ओझा के अनुसार– प्रारम्भ म डरे हुए मजदूर व्यासजी से दिन के उजाले म मिलने से उनके साथ देखे जाने से घबराते थ। जिप्सम कम्पनी के जासूस व्यासजी और मजदूरों की प्रत्येक गतिविधि की रिपोर्ट मालिकों तक पहुचाते थे। इसलिए व्यासजी रात म लोगों से मिलते, उन्हे उत्साहित करते। आखिर कुछ दिनों बाद श्री रहीम शाह और श्री रतनलाल आदि 8 10 साहसी लोगों का सगठन बनाया और उसे कानूनी रूप दिया। धीरे धीरे और मजदूर भी सगठन के सदस्य बने। सन 1956 म मजदूरों की मागों को लेकर पहली हडताल हुई।'

जिस मजदूर ने कभी मौखिक विरोध तक नहीं किया था वह हडताल जैसी स्थिति के लिए तैयार हो गया। ताक पर रख दी उसने अपनी रोटी और रोजी को और तैयार हो गया धरने के लिए लाठियों के वार सहने के लिए और जेल जाने के लिए। स्वेच्छाचारिता और निरकुश व्यवस्था न पहला आक्रमण कानूनी दावपेच के रूप म किया। औद्योगिक अदालत म हडताल को गैर कानूनी घोषित करवा दिया गया। आशय स्पष्ट था — या तो काम पर आओ या नौकरी से निकाले जाने को तैयार रहो। मजदूरों न सघर्ष–विकल्प ही चुना। अपने उठ हुए मस्तक को उन्होने खाली पेट की पुकार के आगे झुकाना पसन्द नहीं किया।

सभी श्रमिक पुरुष और महिलाए हाथ पर हाथ धरे बैठ थे। सारा काम ठप्प था। न खुदाई न ढुलाई और न माल की सप्लाई—कुछ नहीं। इधर भूख की व्यथा सता रही थी पर उधर व्यवस्थापकों की व्यवस्था भी चरमरा रही थी। सभाओं जुलूसों और नारों न मजदूर के आत्म बल को काफी बढा दिया था। उसने एक बार भय को जो छोडा तो पूरी तरह ही छोड दिया। 25 जून 1956 को प्रारभ हुई यह हडताल लगातार 35 दिनों तक चली। इसम तीन हजार मजदूरों न भाग लिया। गिरफ्तार होने वालों म व्यासजी के साथ जमाल शाह पीर और रहीम शाह भी थ। मजदूरों के साथ साथ जामसर की जनता न भी इसम भाग लिया। मजदूर परिवारों की सहायतार्थ बीकानेर से अनाज कपडे और रुपये भेजे गये। लोगों ने स्वेच्छा से सहायता की।

एक शक्ति झुकी पर वह मजदूर की शक्ति नहीं व्यवस्था की शक्ति थी। मजदूरों की सगठित शक्ति को पहली मान्यता उस समय मिली जब उनकी वेतन वृद्धि एव अन्य सुविधाओं की मागों को ट्रिब्यूनल म देना स्वीकार कर लिया गया। इस सफलता न मजदूरों को विपुल आत्म विश्वास दिया। बीकानेर की जनता के हृदय

म व्यासजी के प्रति और अधिक श्रद्धा का सचार भी हुआ । जन जन यह समझने लगा कि व्यासजी दलितो पीडितो एव शोषितो के पक्षधर है । अन्याय की हर ताकत का जबडा तोडने मे व्यासजी सदा आगे रहते हैं । ऐसी धारणाए बलवती हुई ।

दूसरी जबरदस्त हडताल 1958 मे हुई । द्वितीय आम चुनावो से सिर्फ एक वर्ष बाद । यह पहली हडताल से अधिक व्यापक और घनीभूत थी क्योकि यह दो महीना तक चलती रही थी । एक बार फिर मजदूरो ने अपने चूल्हे चक्की को दाव पर रख दिया था—और वह भी एक दिन के लिए नही पूरे साठ दिनो के लिए । इस बार मजदूर पहले से अधिक सगठित थे । उनकी यूनियन की सदस्य सख्या म भारी वृद्धि हो चुकी थी और उनके नेता साथी मुरलीधर व्यास विधायक बन चुके थे । हडताल को असफल करने के लिए पब धको ने हर सभव उपाय काम मे लिया । आर्थिक प्रलोभन तो पहले ही असफल हो चुका था । इस बार मार पीट का दौर चला जिसमे राधेश्याम गौड और गोपालसिंह चौकीदार के चोटें आई । दमन चलता रहा । व्यासजी गिरफ्तार कर लिये गये । मजदूरो ने लगातार भारी सख्या म गिरफ्तारिया देकर बीकानेर की जेल को भर दिया । श्री एन० जी० गोरे श्री अशोक मेहता और श्री नाथ प आदि प्रजा समाजवादी पार्टी के अनेक राष्ट्रीय स्तर के नेता बीकानेर आये और इस हडताल के मुख्य कारणो वेतनवृद्धि, बोनस छुट्टियो प्रोविडेण्ट फण्ड, काम की परिस्थितियो आवास आदि न्यायोचित मागो पर राष्ट्रव्यापी नजर पडी । निरन्तर गिरफ्तारियो व मजदूरो की अटूट एकता के कारण प्रशासन और जिप्सम मालिक घबरा गये और मजदूरो की सभी मागें न्यायाधिकरण के सामने पस्तुत करदी गई । मजदूर एकता को तोडने की जो भी कोशिश की गई वह निष्फल हुई ।

समाजवादी नेता एव सासद श्री नाथ प के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री एन जी गोरे ने भी हडताल के प्रसग मे महत्वपूर्ण काय किया । व्यास जी के 15 नवम्बर 1958 के पत्र के उत्तर मे श्री गोरे ने 18 11 1958 को लिखा कि वे भारत सरकार के श्रम मत्री से मिल कर इस प्रकरण म कार्यवाही करने के लिए कहगे । पत्र का एक उद्धरण "It would appear that inspite of all our efforts it has not been possible to make the Minister of Labour to take any concrete steps in regards to the Gypsum Mine workers strike Now that I am in Delhi I shall immediately contact the Labour Minister and see whether he can be persuaded to do something in the matter "

श्री नाथ के प्रयत्नों से श्रम मंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा के संसदीय सचिव श्री एल. एन. मिश्रा बीकानेर आए। उधर अजमेर से म. सी. लियरेंस अधिकारी को भी बीकानेर भेजा गया। श्री नाथ व, श्री एन. एल. मिश्रा तथा कन्सीलियेशन अधिकारी–तीनों की रिपोर्ट में इस बात पर जोर दिया गया कि मजदूरों की मांगों पर विचार करना अत्यावश्यक है। व्यास जी एवं श्री रमेश चन्द्र शुक्ला (मंत्री, जिप्सम मजदूर यूनियन) सहित सभी गिरफ्तार लोगों को जेल से रिहा कर दिया गया तथा मजदूरों की मांगों को ट्रिब्यूनल में देने का निर्णय लिया गया। इस प्रसंग में समाजवादी नेता श्री अशोक मेहता एवं श्रम उपमंत्री श्री आबिद अली की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। व्यास जी एवं रमेश चन्द्र शुक्ला वार्तालाप के लिए दिल्ली गये तथा श्री आबिद अली से मिले। 1960 में ट्रिब्यूनल ने जो अवार्ड दिया उस में मजदूरों की सभी महत्वपूर्ण मांगें मान ली गईं। 20 अगस्त 1960 को हुए दीर्घकालीन समझौते के अनुसार ग्रेड संशोधन, महंगाई भत्ते के निर्धारण तथा कार्यानुसार मजदूरी की दरों में परिवर्तन कर दिया गया। 1958 की हड़ताल में श्री राधेश्याम गौड़ सहित अनेक नेताओं को सेवा मुक्त कर दिया गया था। मामला सर्वोच्च न्यायालय तक चला और आखिर कम्पनी को समझौता करना पड़ा। तीन चौथाई भुगतान के आधार पर सभी को वापिस सेवा में ले लिया गया।

श्री बीरेन्द्र नाथ गुप्ता (सचिव, जिप्सम माइन्स वर्कर्स यूनियन) के अनुसार 1962 से 1966 तक व्यास जी यूनियन के संरक्षक रहे। इस बीच 1963–64 के सत्र में एक बार पुनः प्रदर्शन एवं गिरफ्तारियां हुईं। श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री, राजस्थान) के सामने प्रदर्शन करने के आरोप में जामसर यूनियन पदाधिकारियों सहित 21 श्रमिक गिरफ्तार किये गये। इनमें सर्वश्री राधेश्याम गौड़ (अध्यक्ष जिप्सम माइन्स वर्कर्स यूनियन) उम्मेद सिंह, सुन्दर लाल एवं ओमप्रकाश बंसल भी थे। रेल्वे मेन्स यूनियन सहित अनेक यूनियनों ने गिरफ्तारियों के विरुद्ध जन आन्दोलन में भाग लिया।

1966 एवं 1967 के यूनियन–चुनावों में व्यास जी को पुनः महामंत्री पद पर नियुक्त किया गया। इस बीच वैकल्पिक यूनियन के बन जाने से मजदूरों में फूट पड़ चुकी थी तथा स्थानीय प्रबंधक उस फूट का लाभ उठाकर व्यास जी द्वारा संचालित यूनियन की मान्यता समाप्त करना चाहते थे। वे इसमें सफल नहीं हो सके क्योंकि व्यास जी का प्रभाव इतना जबरदस्त था कि जब वे भाषण करते तो यूनियन छोड़कर जाने वाले मजदूर भी पश्चाताप करने लगते तथा पुनः मुख्य धारा में आ मिलते थे। उनके व्यक्तित्व के प्रभाव के आगे प्रलोभन अथवा अन्य उपाय चल ही नहीं सकते थे।

इस बीच दीर्घकालीन समझौता समाप्त हो जाने से नये दीर्घकालीन समझौते की तैयारियाँ प्रारम्भ हुई। यूनियन की तरफ से श्री रतनलाल एडवोकेट, कम्पनी की ओर से श्री आन द प्रकाश बरिस्टर सुप्रीम कोट तथा सरकार की ओर से श्रम आयुक्त श्री ए एन राय ने भाग लिया तथा अतत समझौता हो गया। चूकि समझौते मे लोडिंग श्रमिको को सम्मिलित नही किया गया था, अत 1967 म उनके पक्ष मे 15 दिनो की एक और हडताल हुई जो जामसर, धीरेरा, लूणकरणसर तथा सूरतगढ चारो स्थानो पर चली। श्रमिक 41 पसे प्रति टन की जगह 44 पसे प्रति टन की माग कर रहे थे। व्यास जी एव श्री वी एन गुप्ता वार्ता के लिए दिल्ली गये तथा श्री जयसुख लाल हाथी (श्रम म त्री, भारत सरकार) से विचार विमश किया।

मामला यायाधिकरण को सौंप दिया गया और तब जाकर हडताल समाप्त हुई। इससे व्यास जी द्वारा सचालित यूनियन की शक्ति और अधिक बढ गई। समझौते का एक लाभ यह भी हुआ कि उसके अनुसार भविष्य मे जब कभी विभागीय श्रमिको की वेतन वृद्धि होगी, उसका आनुपातिक लाभ लोडिंग श्रमिको को भी मिलेगा। परिणामस्वरूप 1967 म जो दर 44 पस थी वही आजकल 3 रुपये 50 पस प्रति टन है।

जामसर जिप्सम कम्पनी के मजदूर आदोलन की अनुगूज जन सभाओ के साथ-साथ राजस्थान विधान सभा तथा केन्द्रीय म त्रालयो के स्तर पर भी सुनाई देती थी। 1967 के आम चुनाव से पूव व्यास जी के नेतृत्व वाले मजदूर सगठन को शिथिल करने के लिए कई प्रयास किये गये। एक समाना तर सगठन—राष्ट्रीय जिप्सम कमचारी सघ बनाया गया। उसकी ओर से 12 सूत्री मागो का ज्ञापन देकर घोषणा की गई कि यदि मागें पूरी नही की जायेगी तो मजदूर जबरदस्त हडताल के लिए विवश हो जायेंगे। मागो के समथन म एक मजदूर को भूख हडताल पर बठाया गया। विधान सभा कायवाही के एक अश के अनुसार "हरिदेव जोशी (खनिज म त्री) से कोई बात करने आए। कहा, मागें इतने दिनो म पूरी नही होगी तो ऐसा करेंगे। भूख हडताल की घोषणा कर दी। भूख हडताल का मामला बिगडने लगा, जमा नही। तब क्या हुआ ? तार एक यहा से गया, चलो बात चीत हो गई है, भूख हडताल समाप्त कर दो और फैसला हो गया। सारी मागें म जूर हो गयी।'

इस माग पत्र के सिलसिले मे माडलगढ (भीलवाडा) के तत्कालीन विधायक श्री पुरोहित भी भूख हडताल पर बठे थे। व्यासजी ने तो आजीवन मजदूरो की

मागो का समथन किया ही था अत उन्होंने इन 12 सूत्री मागा के समथन म भी अपना वक्तव्य दिया और सरकार से माग की कि मजदूरा के साथ याय किया जाय। चार पाच दिना म ही श्री हरिदेव जोशी के आश्वासन के आधार पर भूख हडताल समाप्त कर दी गई तथा ऐसा प्रचारित किया गया कि सारी मागें म जूर हो गइ है और श्री हरिदेव जोशी को पच के रूप म नियुक्त किया गया है। श्री हरिदेव जोशी द्वारा प्रसारित नोटिस की भाषा इस प्रकार थी — 'बीकानेर जिप्सम कम्पनी लिमिटेड और राष्ट्रीय जिप्सम कमचारी सघ, बीकानेर के बीच म औद्योगिक विवाद के लिए उनके आपसी समझौते द्वारा मुझे पच नियुक्त किया गया है और उनका समझौता भारत सरकार के श्रम मन्त्रालय द्वारा भारत सरकार के गजट म उक्त धारा 3-10 (1) औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के अधीन प्रकाशित किया जा चुका है। औद्योगिक विवाद सम्ब धी सभी व्यक्तियो और कामगारा को सूचित किया जाता है कि अगर उनको इस सम्ब ध म कोई प्रतिवेदन देना है तो 8 6 66 तक अपने ऐतराज प्रस्तुत करें – हरिदेव जोशी"

व्यास जी ने जन सभाओ और विधान सभाओ म वस्तु स्थिति बताते हुए कहा कि यह सरासर गलत है कि नोटिस भारत सरकार के गजट म प्रकाशित किया जा चुका था। नोटिस पर 29 मई की तारीख है (जिसम लिखा है कि यह श्रम म त्रालय के गजट म प्रकाशित हो चुका है) पर गजट म 4 जून को प्रकाशित हुआ है। इस तरह म त्री महोदय ने गलत बयानी की है। उन्होंने कहा कि सारी मागें पहले स ही औद्योगिक विवाद के रूप म ट्रिब्यूनल के सामने हैं। फिर ट्रिब्यूनल से अपने आप लेकर पच फमले की बात करना कानून की अवहेलना है। कोई भी आरबिट्रेटर (पच) नियुक्त होने से पहले सबको मौका देना चाहिए फिर ऐतराज आने चाहिए और फिर मा यता हो तो उस सघ से बातचीत की जानी चाहिए।

नये सघ की मा यता तो है नही और श्री जोशी ने आरबिट्रेटर होना म जूर कर लिया। यह सारा दिखावा है - गर कानूनी काम है। एक भी माग म जूर नहीं हुई है।

व्यास जी ने इस सम्ब ध म भारत सरकार के तत्कालीन वरिष्ठ म त्री बाबू जगजीवन राम को पत्र लिखा। श्री जगजीवन राम ने अपने पत्र म लिखा कि–

As for recognition of the Gypsum Karmchari Sangh by the Management it has been explained to the Management that recognition granted to the Sangh without verification of member ship would not be regarded as recognition under the code of

discipline ' व्यास जी ने कहा कि बाबू जगजीवन राम ने लिखा है कि 'कानून राज्य सरकार का है पर किसी का पक्ष लेकर गलत काम किया गया है।" इस तरह उन्होंने सारी गलत कार्यवाही के खिलाफ लिखा है।"

व्यास जी ने एक और माग की चर्चा करते हुए कहा कि हमारी एक माग थी–ठेकेदारी प्रथा समाप्त करो। यह मामला ट्रिब्यूनल मे चल रहा था। श्री हरिदेव जोशी ने ट्रिब्यूनल के निर्णय की प्रतीक्षा किए बिना फसला दे दिया कि ठेकेदारी प्रथा रहनी चाहिए। पता नहीं वे इस कम्पनी के साथ क्यों सौदा करते हैं? जिप्सम कम्पनी की बलेंस शीट (1966) म खर्च के बारे मे लिखा है "Including advertisement published in the souvenir for Rs 5000 (five thousand only)" यह विज्ञापन सरकारी दल की स्मारिका म दिया गया है। कम्पनी के शेयर्स म 40 प्रतिशत शेयर सरकार के हैं। अत अपने दल को दिलाया गया यह चदा गैर कानूनी है। श्री मानिक चन्द सुराणा ने भी इसकी खिलाफत करते हुए कहा था 'इस अण्डरटेकिंग मे 40 प्रतिशत शेयर सरकार के हैं और 40 प्रतिशत शेयर होने के कारण भारत सरकार ने कहा है कि यह पब्लिक अण्डरटेकिंग की श्रेणी म आ जाती है। ऐसी पार्टी को सरकार स्वय चदा दे रही है जो सरकार की पार्टी है तो एक प्रकार से सरकार अपने आपको चदा दे रही है।' व्यासजी ने बताया कि अब तक जिप्सम कम्पनी ने पार्टी को 25 हजार का चन्दा दिया है जो गैर कानूनी है। इसी चदे के कारण मत्रिगण कम्पनी के पक्ष मे फसले दे देते हैं। व्यासजी जसे जागरूक जन नेता और मजदूर नेता न हर स्तर मजदूरो के हितो की परवी की। यहा तक के वकल्पिक समानान्तर तथा अमान्यता प्राप्त सघ की 12 सूत्री मांगो का भी (जो मजदूरो के पक्ष मे थीं) उन्होने तत्काल समर्थन किया पर समय आने पर उस 'सघ' के स्वरूप का पर्दाफाश भी किया।

मजदूर व्यास जी के साथ थे और साथ ही रहे।

जिप्सम माइन्स वर्कर्स यूनियन की एक विज्ञप्ति मे कम्पनी की अव्यवस्था मनेजिंग समिति की अक्षमता निरर्थक व्यय करने की प्रवृत्ति एव कम्पनी पर लाखो रुपया के अलाभकारी व्यय को लादने की आलोचना की गई। विज्ञप्ति न ठेकेदारी प्रथा पर भी प्रहार किया। विज्ञप्ति के अनुसार–कतिपय अधिकारी कम्पनी के लाभ की मोटी धनराशि नाना प्रकार के कुचक्र चलाकर हडप जाते हैं। माग उठी कि शीघ्रातिशीघ्र प्रब ध करके कम्पनी को अधिक हानि से बचाया जाय उसका लाभ बढाया जाय ताकि मजदूर वर्ग, जिसके खून पसीने की कमाई से इस कम्पनी का

सचालन होता है उसे अपने परिश्रम का उचित मुआवजा वेतन आदि के रूप म प्राप्त हो सके ।

विज्ञप्ति ने उन कुछ ठेका का वणन किया जो अधिकारिया द्वारा समय समय पर स्वीकृत किये गय । विज्ञप्ति म कहा गया कि समस्त निरथक एव अनुत्पादक खर्चो म आवश्यकतानुसार कटौतिया करके कम्पनी को लाभ म लाया जाय ताकि मजदूरो को वेतन वृद्धिया, बानस, प्राविडण्ड फण्ड आदि न्यायिक सुविधाए मिल सकें ।

दूध निकासी आदालन (1970) के दिनो मे जब व्यासजी गिरफ्तार हो गये और एक बार ऐसा लगा कि जनता का जोश कुछ ठण्डा पड रहा है, उस समय जामसर के जिप्सम मजदूरा ने ही गिरफ्तारिया देकर आदोलन को पुन गतिशील किया था । जामसर जिप्सम मजदूर नेता श्री वीरेन्द्रनाथ गुप्ता के अनुसार 'तीन चार दिनो तक कोई गिरफ्तारिया नही दी जा सकी । व्यासजी का (जेल से) लगातार यही सदेश आ रहा था कि गिरफ्तारिया दो । अनत मैंने अपने साथियों सहित जामसर सदेश भिजवाया कि जसे भी हो जितने भी हो, बीकानेर आओ गिरफ्तारिया देने के लिए, जुलूस निकालने का एलान कर दिया गया । मोहता के चौक म जुलूस का आयोजन किया गया । जुलूस का समय 11 बजे का था । एक बजे तक कोई व्यक्ति नही आया । बडी निराशा हो रही थी परन्तु मन म आत्म विश्वास था कि जामसर का मजदूर व्यासजी के आदेश को नही टाल सकता और हुआ भी यही । दो टका मे करीब 80 साथी जामसर से आ गये । श्रमिको मे उत्साह आ गया । मोहता का चौक नारा स गूज गया । सघष मे जान आगई ।

जामसर के मजदूर जिस प्रकार 1954 मे व्यासजी के प्रयासो से सगठित होकर खडे हुए थे उसी प्रकार 1970 म भी उनके साथ ही जुडे थे । 1954 1958 1966 एव 1967 के आदोलनो से व्यास जी के प्रति उनका विश्वास दढ से दढतर होता चला गया । 1971 म व्यास जी के निधन ने मजदूरो से उनका एक सवप्रिय नेता, एक पुरोधा एक योद्धा एव एक सघषशील रहनुमा छीन लिया ।

व्यासजी के अन य समथक एव सक्रिय कायकर्ता श्री गोकुल जी (घी वाले) ने भी आन्दोलनो के दौर म व्यासजी के नेतत्व कौशल की एव उनको मिलने वाले प्रबल जनसमथन की बातें बताई है । उनके अनुसार व्यासजी की चारित्रिक एव नतिक भावना इतनी प्रबल थी कि कोई भी आर्थिक प्रलोभन उनका विचलित नही कर सकता था । "व्यासजी ने जामसर जिप्सम कम्पनी के शोषण के खिलाफ मजदूरो को हडताल के लिए प्रेरित किया था । मजदूरो के साथ साथ नागरिको ने भी

गिरफ्तारियां दी। मुझे भी जामसर में गिरफ्तार किया गया था। श्री राधेश्याम गौड एवं श्री रहीम शाह जैसे नेताओं ने व्यासजी का साथ दिया। श्री बजरंग ओझा भी आंदोलनों में सक्रिय थे। लगातार होने वाली गिरफ्तारियों एवं मजदूरों की संघर्ष क्षमता को देखकर कम्पनी को झुकना पड़ा और मजदूरों के पक्ष में समझौता करना पड़ा।" आर्थिक प्रलोभनों की चर्चा करते हुए श्री गोकुल घी वाले ने बताया कि- "कम्पनी का एक ठेकेदार मेरी घी वाली दूकान पर आया। उसने बताया कि कम्पनी जीप देने को तैयार है। एक खाली चैक बुक भी व्यासजी के सामने रखी गई, लेकिन व्यासजी ने इस प्रलोभन को ठुकरा दिया। उन्होंने कहा कि यदि कम्पनी रुपये देना ही चाहती है तो मजदूरों को दे ताकि वे हड़ताल नहीं करें। मजदूरों को रुपया मिलेगा तो वे हड़ताल नहीं करेंगे। मेरा साथ छोड़ देंगे और कम्पनी को फायदा होगा।" बाद में व्यासजी ने आम सभाओं में इस प्रलोभन का जिक्र भी किया। श्री बाबूलाल ओझा के अनुसार–'व्यासजी को मालकों ने प्रलोभन दिया जो उन्होंने स्वीकार नहीं किया और उसकी खुले आम भर्त्सना की।" स्वर्गीय प्रेमनारायण वैद्य (एक समय में नगर कांग्रेस के अध्यक्ष) ने भी सुथारों की बड़ी गुवाड़ में आयोजित एक आम सभा में इस प्रलोभन की चर्चा की थी तथा कहा कि व्यासजी नैतिक मूल्यों के जबरदस्त हिमायती थे। श्री राधेश्याम गौड ने बताया कि कम्पनी ने 1956 की हड़ताल के समय व्यासजी को सम्पूर्ण चुनाव खर्च देने की पेशकश तक की थी पर उन्होंने सभी प्रलोभनों को तिरस्कार के साथ ठुकरा दिया।

आन्दोलनों की इस संघर्ष भरी संस्कृति में सच्चे और निष्ठावान नेता श्री व्यास बीकानेर के जनमानस पर छा गये। आगे आने वाले दो चुनावों में बीकानेर की जनता ने उन्हें विजयी बनाकर उनके प्रति अपने अगाध विश्वास को प्रकट किया।

सचालन होता है उसे अपने परिश्रम का उचित मुआवजा वतन आदि के रूप म प्राप्त हो सके।

विज्ञप्ति ने उन कुछ ठेको का वर्णन किया जो अधिकारियो द्वारा समय समय पर स्वीकृत किये गये। विज्ञप्ति म कहा गया कि समस्त निरर्थक एव अनुत्पादक खर्चो म आवश्यकतानुसार कटौतिया करके कम्पनी का लाभ मे लाया जाय ताकि मजदूरो को वेतन वृद्धिया बोनस, प्रोविडेण्ड फण्ड आदि न्यायिक सुविधाए मिल सकें।

दूध निकासी आदोलन (1970) के दिनो म जब व्यासजी गिरफ्तार हो गये और एक बार ऐसा लगा कि जनता का जोश कुछ ठण्डा पड रहा है, उस समय जामसर के जिप्सम मजदूरो ने ही गिरफ्तारिया देकर आदोलन को पुन गतिशील किया था। जामसर जिप्सम मजदूर नेता श्री वीरेन्द्रनाथ गुप्ता के अनुसार "तीन चार दिनो तक कोई गिरफ्तारिया नही दी जा सकी। व्यासजी का (जेल से) लगातार यही सदेश आ रहा था कि गिरफ्तारिया दो। अतत मैंने अपने साथियो सहित जामसर सदेश भिजवाया कि जैसे भी हो जितने भी हो, बीकानेर आओ गिरफ्तारिया देने के लिए जुलूस निकालने का एलान कर दिया गया। मोहतो के चौक म जुलूस का आयोजन किया गया। जुलूस का समय 11 बजे का था। एक बजे तक कोई व्यक्ति नही आया। बडी निराशा हो रही थी परन्तु मन मे आत्म विश्वास था कि जामसर का मजदूर व्यासजी के आदेश को नही टाल सकता और हुआ भी यही। दो ट्रको म करीब 80 साथी जामसर से आ गये। श्रमिको म उत्साह आ गया। मोहतो का चौक नारो से गूज गया। सघर्ष म जान आगई।"

जामसर के मजदूर जिस प्रकार 1954 मे व्यासजी के प्रयासो से सगठित होकर खडे हुए थे उसी प्रकार 1970 मे भी उनके साथ ही जुडे थे। 1954, 1958 1966 एव 1967 के आदोलनो से व्यास जी के प्रति उनका विश्वास दृढ से दृढतर होता चला गया। 1971 म व्यास जी के निधन ने मजदूरो से उनका एक सर्वप्रिय नेता, एक पुरोधा एक योद्धा एव एक सघर्षशील रहनुमा छीन लिया।

व्यासजी के अनन्य समर्थक एव सक्रिय कार्यकर्ता श्री गोकुल जी (घी वाले) ने भी आन्दोलनो के दौर मे व्यासजी के नेतृत्व कौशल की एव उनको मिलने वाले प्रबल जनसमर्थन की बातें बताई हैं। उनके अनुसार व्यासजी की चारित्रिक एव नैतिक भावना इतनी प्रबल थी कि कोई भी आर्थिक प्रलोभन उनको विचलित नही कर सकता था। "व्यासजी ने जामसर जिप्सम कम्पनी के शोषण के खिलाफ मजदूरो को हडताल के लिए प्रेरित किया था। मजदूरो के साथ-साथ नागरिको ने भी

गिरफ्तारियां दी। मुझे भी जामसर में गिरफ्तार किया गया था। श्री राधेश्याम गौड एवं श्री रहीम शाह जैसे नेताओं ने व्यासजी का साथ दिया। श्री बजरंग ओझा भी आंदोलनों में सक्रिय थे। लगातार होने वाली गिरफ्तारियों एवं मजदूरों की संघर्ष क्षमता को देखकर कम्पनी को झुकना पड़ा और मजदूरों के पक्ष में समझौता करना पड़ा।" आर्थिक प्रलोभनों की चर्चा करते हुए श्री गोकुल घी वाले ने बताया कि "कम्पनी का एक ठेकेदार मेरी घी वाली दूकान पर आया। उसने बताया कि कम्पनी जीप देने को तैयार है। एक खाली चैक बुक भी व्यासजी के सामने रखी गई, लेकिन व्यासजी ने इस प्रलोभन को ठुकरा दिया। उन्होंने कहा कि यदि कम्पनी रुपये देना ही चाहती है तो मजदूरों को दे ताकि वे हड़ताल नहीं करें। मजदूरों को रुपया मिलेगा तो वे हड़ताल नहीं करेंगे। मेरा साथ छोड़ देंगे और कम्पनी को फायदा होगा।" बाद में व्यासजी ने आम सभाओं में इस प्रलोभन का जिक्र भी किया। श्री बाबूलाल ओझा के अनुसार–'व्यासजी को मालकों ने प्रलोभन दिया जो उन्होंने स्वीकार नहीं किया और उसकी खुले आम भर्त्सना की।" स्वर्गीय प्रेमनारायण वैद्य (एक समय में नगर कांग्रेस के अध्यक्ष) ने भी सुथारों की बड़ी गुवाड़ में आयोजित एक आम सभा में इस प्रलोभन की चर्चा की थी तथा कहा कि व्यासजी नैतिक मूल्यों के जबरदस्त हिमायती थे। श्री राधेश्याम गौड ने बताया कि कम्पनी ने 1956 की हड़ताल के समय व्यासजी को सम्पूर्ण चुनाव खर्च देने की पेशकश तक की थी पर उन्होंने सभी प्रलोभनों को तिरस्कार के साथ ठुकरा दिया।

आन्दोलनों की इस संघर्ष भरी संस्कृति में सच्चे और निष्ठावान नेता श्री व्यास बीकानेर के जनमानस पर छा गये। आगे आने वाले दो चुनावों में बीकानेर की जनता ने उन्हें विजयी बनाकर उनके प्रति अपने अगाध विश्वास को प्रकट किया।

सिंह गर्जना का एक दशक

विधायक के रूप में एक जन प्रतिनिधि का कार्य क्षेत्र केवल क्षेत्रीय ही होता है लेकिन यदि वह अपने क्षेत्र से आगे बढ़कर पूरे प्रांत का प्रतिनिधित्व करने लगे और जनता उसको इस स्वरूप की मान्यता दे तो वह वस्तुतः जननायक बन जाता है। मुरलीधर व्यास केवल क्षेत्रीय विधायक नहीं थे। वस्तुतः वे जननायक थे। राजस्थान के किसी भी कोने में चले जाइये—उनके आज भी असंख्य प्रशंसक मिलेंगे। कोटा बूंदी हो या भीलवाड़ा, झालावाड़ हो या बांसवाड़ा, भरतपुर धौलपुर या अलवर हो जोधपुर, अजमेर अथवा ब्यावर हो बाड़मेर हो या जैसलमेर, रतनगढ़ हो या सांगानेर—हर स्थान पर, हर गरीब के हिमायती, हर समस्या के जागरूक चिंतक और हर हक के पहरेदार के रूप में श्री व्यास को लोगों ने अपने मन में सम्मान दिया, उन्हें अपना नेता माना। यही कारण था कि व्यासजी जब विधान सभा में सिंह गर्जना करते थे तो उनकी बात केवल बीकानेर परिक्षेत्र तक सीमित नहीं रह कर पूरे प्रांत की समस्याओं से जुड़ी रहती थी। एक राष्ट्रव्यापी राजनीतिक दल की राष्ट्रीय कार्य कारिणी के सदस्य होने के नाते उनकी बात और भी अधिक गंभीरता से ली जाती थी। यह सर्वविदित था कि वे प्रजा समाजवादी दल के 15 मुख्य नेताओं में से एक थे। राष्ट्रीय कार्यकारिणी के उनके साथी नेताओं में श्री एन० जी० गोरे, प्रेम भसीन, एस० एन० द्विवेदी मधु दण्डवते, नाथ पै तथा पीटर अल्वारिस जैसे तपे तपाये लोग थे। श्री व्यास जब विधानसभा में गर्जते थे तो स्वाभाविक हो था कि उनकी बात को सत्ता पक्ष एवं विरोधी पक्ष दोनों ही गम्भीरता से लेते।

राष्ट्रीय तथा प्रांतीय व्यक्तित्व होने के कारण समय का अभाव स्वाभाविक होता है। उन्होंने अपने विधानसभा क्षेत्र की इस कारण पहरेदारी में कोई ढील की हो इसकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। 1957 से 1966 तक दस वर्षों तक उन्होंने निरंतर बीकानेर की ज्वलंत समस्याओं को उत्तरदायी लोगों के सामने रखा तथा उनके समाधान का अनथक प्रयास किया। बीकानेर के निवासी जानते हैं कि कोट गेट के सामने रेल्वे फाटक की समस्या उनके लिए निरंतर सिरदर्द रही है। आज चाहे कुछ भी कहें या कोई भी दल इसे किसी भी तरह प्रस्तुत करे पर यह सच है कि व्यास जी ने विधानसभा का सदस्य बनते ही इस ज्वलंत समस्या पर मंत्रियों का ध्यान आकर्षित कर दिया था। उनकी एक विशेषता यह थी कि

वे अपने पूरक प्रश्नो द्वारा मन्त्री के मुह से सारी जानकारी लेने मे बडे निपुण थे। कभी कभी तो मंत्रियो के लिए जवाब देना कठिन हो जाता और टालमटोल वाली स्थिति आ जाती, पर व्यासजी लगातार पूरक प्रश्न पूछते जाते। एक विधायक के रूप मे वे कितने जागरूक थे तथा कितनी तत्परता से जानकारी लेते थे इसका एक उदाहरण 20 फरवरी 1959 की विधानसभा की कार्यवाही से दिया जा सकता है (पृष्ठ 495, 496, 497)

श्री मुरलीधर व्यास क्या मुख्यमन्त्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे ? क्या यह सच है कि केन्द्रीय सरकार कोटगेट बीकानेर के मुख्य बाजारो म पडने वाले दोनो रेल के फाटको को हटाने के लिए सचेष्ट है, पर राज्य सरकार इस हेतु अपने हिस्से की राशि नही दे पा रही है ?

राजस्व म त्री (श्री दामोदर लाल व्यास, मुख्यम त्री की ओर से) राज्य सरकार भारत सरकार से रेलवे लाइन को ही मुख्य बाजारो से हटान के विषय म बातचीत कर रही है। अतएव राज्य सरकार के सहयाग न देने तथा अपने हिस्से की राशि न दे पाने का अभी तक प्रश्न ही नही उठता।

श्री मुरलीधर व्यास बातचीत कब से कर रहे हैं ?

श्री दामोदर लाल व्यास तारीख तो मुझे मालूम नही है। इसकी प्रोग्रेस यह है कि राज्य सरकार के सुप्रिण्टेडिंग इ जीनियर और नादर्न रेलवे के जो इजीनियर है उनके बीच बातचीत चल रही है। गवनमट आफ इ डिया को आल्टरनेटिव सॉल्यूशन भेज दिया है और वह विचाराधीन है।

श्री मुरलीधर व्यास क्या भारत सरकार उसको हटाने के पक्ष मे नही है या राज्य सरकार ? भारत सरकार से इस बारे म किस प्रकार की बातचीत चल रही है ?

श्री दामोदर लाल व्यास बातचीत चल रही है। मेन बाजार से रेलवे लाइन हटा दें और दूसरी जगह लगा दें।

श्री मुरलीधर व्यास उसके लिए क्या सुझाव आप लोगो ने भारत सरकार के सामने रखे हैं ?

श्री दामोदर लाल व्यास ओवर ब्रिज या अण्डर ब्रिज के बजाय रलवे लाइन को दूसरी तरफ डाइवट करना चाहते हैं। मेन बाजार स दूर।

श्री मुरलीधर व्यास गवनमेण्ट आफ इण्डिया से तो पार्लियामेण्ट म एक प्रश्न किया गया था। उसक उत्तर म यह कहा गया कि राजस्थान सरकार ने अपने हिस्से का रूपया नही दिया है इसलिए काम रुका हुआ है। क्या यह सही है ?

श्री दामोदर लाल व्यास यह पुरानी बात है। ताजा बात मैं अज कर रहा हू।

श्री मुरलीधर व्यास ताजा बात क्या है ? आप ताजा बात बताइये।

श्री दामोदर लाल व्यास पहले यह प्रपोजल था कि ओवर ब्रिज या अण्डर ब्रिज बना दिया जाय। गवनमेंट आफ इण्डिया गवनमेण्ट आफ राजस्थान से हिस्सा चाहती थी तो गवनमेंट आफ राजस्थान ने कहा कि यह तो टम्परेरी सोल्यूशन है और 20 वर्षों बाद म वही डिफिकल्टी पन्न होने वाली भी है। परमानेण्ट सोल्यूशन यह है कि लाइन हटाकर दूसरी तरफ डाइवर्ट कर दी जाय और अण्डर ब्रिज या ओवर ब्रिज के लिए जो 20–25 लाख रुपया खर्च किया जाना है, वह बच जाता है तो बच जाय। इस बात को गवनमेण्ट आफ इंडिया के इंजीनियरिंग विभाग ने माना है और यह बात गवनमेण्ट आफ इंडिया का रफर कर दी गई है। अब फाइनल डिसीजन के लिए विचाराधीन है।

व्यासजी ने 1957 से ही इस समस्या को विधानसभा म उठाना शुरू कर दिया था पर हम देख रहे हैं कि फरवरी 1959 की स्थिति मे और आज की स्थिति मे कोई अ तर नही आया है। रलवे लाइन वही की वही है तथा फाटक उसी तरह अवरोध बने हुए हैं। भीड भाड अवश्य बढ गई है और उसी अनुपात म जनता की तकलीफें व परेशानिया भी बढी ही हैं। व्यासजी से कोई भी मत्री यह कह कर अपना बला नही छुडा सकता था कि बातचीत चल रही है। ऐसे उत्तर के सदभ म व अवश्य पूछते बातचीत कब से चल रही है ? उसकी क्या प्रगति है ? रुकावट है तो क्या है ? काम कब तक होने की आशा है ? दोषी कौन हैं ? विलब क्यो हुआ?' ऐसे जागरूक जन नेता स कोई भी सरकार सहज म ही गोल मोल उत्तर देकर नही बच सकती थी। यही कारण था कि व्यासजी क प्रश्नो का हमेशा गभीरता स लिया जाता था।

रेल फाटको पर ओवरब्रिज की समस्या को 6 माच 1963 को पुन उठाया गया। तत्कालीन विध नसभा सदस्य श्री मानिकच द सुराना के मूल प्रश्न के उत्तर मे जब श्री भवानीशकर नदवाना (मत्री राज सरकार) न कहा कि रेलवे फाटको को हटाने का प्रस्ताव रेलवे बोर्ड के विचाराधीन है तथा रेलवे विभाग एस्टीमेट तैयार कर रहा है तो श्री मुरलीधर व्यास न पूरक प्रश्न के माध्यम स जानकारी लेनी चाही कि मामला रेलवे बोड म कब स विचाराधीन है। सभा की कायवाही का आशिक उद्धरण इस प्रकार है

श्री मानिक चन्द सुराना एस्टीमेट बन चुका है। माननीय मत्री जानकारी करें ?

श्री भवानी शकर नदवाना नही बना है। जानकारी करके बता रहा हू।

श्री मुरलीधर व्यास   इस सम्बध मे क्या हो रहा है ? पाच साल से इस बारे मे पूछ रहे हैं ? इस समय राजस्थान सरकार ने क्या निणय लिया है ? बता दीजिये।

(इस बिन्दु के बाद अध्यक्ष महोदय ने सावजनिक सम्पक कार्यालय के लेखाओ के बारे म श्री भैरोसिंह को बोलन का निर्देश दिया पृष्ठ 1256 57 तारांकित प्रश्नोत्तर–6 माच 1963 विधानसभा की कायवाही का वृतात)

इस तथ्य से एक बात स्पष्ट होती है कि श्री मुरलीधर व्यास 1957 से ही इस प्रकरण को उठाते चले आ रहे थे। सरकार की ओर से प्राय यही उत्तर मिलता था कि एस्टीमेट तैयार हो रहे हैं, कि मामला रेलवे बोड के विचाराधीन है, कि राजस्थान सरकार ने भारत सरकार को कुछ सुझाव दिये हैं। आज भी स्थिति कुछ भिन्न नही है मामला वही है जहा 1957 मे या उससे भी पहले था।

व्यासजी किसी भी स्थान के बारे मे प्रश्न पूछते समय यह अवश्य ध्यान रखते थे कि उससे बीकानेर का कितना हित हो सकता है। बात चाहे जयपुर के बारे म पूछें पर क्षेत्रीय हितो म टकराहट न हो और अपने निर्वाचन क्षेत्र के हितो पर कुठाराघात नही होने पाये इस ओर वे सदव सतक रहते थे।

अपने एक प्रश्न (6 माच 1961 पृष्ठ सख्या 754) के उत्तर म जब उपमत्री शिक्षा श्री पूनमचन्द विश्नोई ने बताया कि महाराजा कालेज जयपुर से अग्रेजी, हिन्दी, सस्कृत की स्नातकोत्तर कक्षाओ को राजस्थान विश्वविद्यालय को देने का सरकार ने अभी निणय नही लिया है तो श्री व्यासजी ने जानना चाहा कि क्या राज्य सरकार ने यूनिवर्सिटी को कोई सिफारिश की है कि इस प्रकार की कक्षाए खोलनी चाहिये। सक्षिप्त उद्धरण इस प्रकार है—

श्री पूनमचन्द विश्नोई   खुद ही (यूनिवर्सिटी खुद ही) अगले सेशन म कुछ विषयो की पोस्ट ग्रेजुएट क्लासें खोल रही है।

श्री मुरलीधर व्यास   जो निणय लिया है क्या उसके अन्तगत है जयपुर म इस विषय की क्लासें खोलना ?

मुख्य मत्री (श्री मोहनलाल सुखाडिया)   अगर यूनिवर्सिटी अपने यहा पर क्लासें खोलती है तो महाराजा कालेज म कटी यू नही की जावेगी।

श्री मुरलीधर व्यास   पर बीकानेर म तो खोल दी जावेंगी—यह तो निश्चय हो गया है।

श्री मोहनलाल सुखाडिया   यूनिवर्सिटी पर निभर करता है कि वह क्या करती है ?

श्री मुरलीधर व्यास परेटमिय कौंसिल ने फैसला किया है कि जो इस तरह की क्लासेज हैं व यूनिवर्सिटी में आ जायेंगी।

श्री मोहनलाल सुखाडिया क्लासें ली जाने का प्रश्न नहीं है। जो क्लासें वे चालू करते हैं उन्हें महाराजा कालेज में भी चालू रखा जावे—यह नहीं होना चाहिए। यह गवर्नमेण्ट ने निर्णय ले लिया है। अब उनकी अपनी पॉलिसी के मुताबिक जो क्लासें वे शुरू करेंगे उनको हम कण्ट्रोल नहीं करेंगे।

श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर के सम्बन्ध में भी कोई निर्णय लिया है, पालीटिकल और साइंस की क्लासें खोलने का?

श्री मोहनलाल सुखाडिया बीकानेर का यहाँ यूनिवर्सिटी की क्लासें खोलने से इसका सम्बन्ध नहीं है।

बीकानेर के निवासी जानते हैं कि अन्ततः 1967 के आम चुनाव से पूर्व जन व छात्र आन्दोलन के माध्यम से ही कुछ कक्षाएं खोलने के लिए सरकार को विवश किया गया था। जो काम सरकार ने 1966 में स्वीकृत किया उसकी मांग श्री व्यास 1961 में ही कर चुके थे। सरकार 1961 में उस काम के लिए यह कहती थी कि "यह यूनिवर्सिटी पर निर्भर करता है कि वह क्या करती है।" उसी सरकार ने 1966 में निर्णय लेकर कक्षाएं खोलने की स्वीकृति दी।

बीकानेर नगर में फायर ब्रिगेड की आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुए श्री व्यास ने 27 मार्च 1962 को विधानसभा में मांग की थी। ऊन की प्रमुख व्यापारिक मण्डी होने के कारण बीकानेर को फायर ब्रिगेड में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मूल प्रश्न एवं उसके उत्तरों के उद्धरण इस प्रकार हैं (तारांकित प्रश्न पृष्ठ संख्या 2710, 2711)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) क्या गृह मन्त्री निम्न प्रश्न का उत्तर देंगे?

(1) क्या यह सत्य है कि बीकानेर में फायर ब्रिगेड की व्यवस्था न होने से शहर में आग लगने पर काफी नुकसान होता रहता है?

(2) बीकानेर में ऊन का व्यापार प्रमुख होने से सरकार आवश्यक समझती है कि वहाँ फायर ब्रिगेड की अविलम्ब व्यवस्था की जाय? यदि हाँ तो कब तक?

गृहमन्त्री श्री मथुरादास माथुर

(1) जी हाँ। ऐसी स्थिति राजस्थान के सामान्यतः सभी प्रमुख नगरों में है।

(2) प्रमुख नगरों के लिए ऐसी व्यवस्था के लिए भारत सरकार से अनुदान देने

की याचना की गई है। समुचित प्रावधान होने पर यन्त्र आदि उपकरण की व्यवस्था अगले वर्ष 62–63 मे होने की सभावना है ।

श्री मुरलीधर व्यास इसमे यह बात कह दी कि राजस्थान के प्रमुख नगरो म ऐसी स्थिति है। मेरा बीकानेर शहर के बारे मे पूछना है क्योकि वहा ऊन की बहुत बडी मण्डी है और इस तरह आग लग जाने से देश का बडा नुक्सान होता है। लास्ट ईयर भी ऊन की बहुत सी गाठें जल गई। ऊन राष्ट्रीय धन है। उसके जल जाने से राष्ट्र को नुक्सान होता है। इसलिए वहा फायर ब्रिगेड की सबसे अधिक आवश्यकता है।

श्री मथुरादास माथुर इस साल पैसा मिलेगा, भारत सरकार से, तो बीकानेर का पूरा ध्यान रखूगा ।

फायर ब्रिगेड की आवश्यकता का उल्लेख ऊन जैसे राष्ट्रीय धन के परिप्रेक्ष्य मे करना और मत्री से आश्वासन ले लेना कि (प्रमुख नगरो से प्राथमिकता देते हुए) "बीकानेर का पूरा ध्यान रखा जायेगा," यह बात श्री व्यास की निरन्तर तत्परता एव अपने क्षेत्र के हितो की रक्षा की सबल भावना को ही उजागर करती है।

श्री भीमसेन (काग्रेसी विधायक) के मूल प्रश्न के उत्तर मे श्री चन्दनमल बद (उद्योग मत्री) ने बताया कि लूनकरनसर मे प्लास्टर आफ पेरिस की फैक्टरी के लिए सम्बधित कम्पनी ने विदेशा म जाच करवाने के लिए सलोनाइट भेजा है, उसकी जाच स पता चलेगा कि क्या उससे प्लास्टर ऑफ पेरिस बन सकता है। श्री भीमसेन ने प्रश्न किया कि जब बीकानर मे उसी सलोनाइट से प्लास्टर आफ पेरिस बन रहा है तो लूनकरनसर मे क्या नही बन सकता है । श्री व्यास ने बीच मे बोलते हुए एक महत्त्वपूण सूचना दी। (विधान सभा की कायवाही दिनाक 6 अप्रेल 1962 के पृष्ठ सख्या 2713 के वृत्तान्त के अनुसार)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) फैक्टरी वाला न लीज लिया था तो उस लीज म यह बात थी कि प्लास्टर ऑफ पेरिस का कारखाना खोलेंगे। लीज को 15 वष हो गये पर अभी तक नही खोला है। लीज के अनुसार काम नही होता है तो उसकी लीज को खत्म क्यो नही किया जाता।

श्री चन्दनमल बद मुझे जानकारी नही है कि उनक लीज मे इस प्रकार की बात है।

श्री मुरलीधर व्यास लीज म है–आप देखें।

श्री मुरलीधर व्यास एकेडेमिक कौसिल ने फसला किया है कि जो इस तरह की क्लासेज हैं वे यूनिवर्सिटी के अ तगत ले ली जावेंगी।

श्री मोहनलाल सुखाडिया क्लासें ली जाने का प्रश्न नही है। जो क्लासें वे चालू करत हैं उ हे महाराजा कालेज मे भी चालू रखा जावे—यह नही होना चाहिए। यह गवनमेण्ट ने निणय ले लिया है। अब उनकी अपनी फेसिलिटी के मुताबिक जो क्लासें वे शुरू करेगें उनको हम कण्टी यू नही करेंगे।

श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर के सम्ब ध मे भी कोई निणय लिया है, पोलीटिकल और साइ स की क्लासें खोलने का ?

श्री मोहनलाल सुखाडिया बीकानेर का यहा यूनिवर्सिटी की क्लासें खोलने से इसका सम्ब ध नही है।

बीकानेर के निवासी जानते है कि अ तत 1967 के आम चुनाव से पूव जन व छात्र आदोलन के माध्यम से ही कुछ कक्षाए खोलने के लिए सरकार को विवश किया गया था। जो काम सरकार ने 1966 म स्वीकृत किया उसकी माग श्री व्यास 1961 मे ही कर चुके थे। सरकार 1961 म उस काय के लिए यह कहती थी कि यह यूनिवर्सिटी पर निभर करता है कि वह क्या करती है।" उसी सरकार ने 1966 म निणय लेकर कक्षाए खोलने की स्वीकृति दी।

बीकानेर नगर म फायर ब्रिगेड की आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुए श्री व्यास ने 27 माच 1962 को विधानसभा म माग की थी। ऊन की प्रमुख व्यापारिक मण्डी होन के कारण बीकानेर को फायर ब्रिगेड मे प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मूल प्रश्न एव उसके उत्तरो के उद्धरण इस प्रकार हैं (तारांकित प्रश्न पष्ठ सख्या 2710, 2711)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानर) क्या गह मन्त्री निम्न प्रश्न का उत्तर देंगे ?

(1) क्या यह सत्य है कि बीकानेर म फायर ब्रिगेड की व्यवस्था न होने से शहर म आग लगने पर काफी नुकसान होता रहता है ?

(2) बीकानर मे ऊन का व्यापार प्रमुख होने से सरकार आवश्यक समझती है कि वहां फायर ब्रिगेड की अविलम्ब व्यवस्था की जाय ? यदि हा तो कब तक ?

गहमन्त्री श्री मथुरादास माथुर

(1) जी हा। ऐसी स्थिति राजस्थान के सामा यत सभी प्रमुख नगरो म है।

(2) प्रमुख नगरो के लिए ऐसी व्यवस्था के लिए भारत सरकार से अनुदान देने

की याचना की गई है। समुचित प्रावधान होने पर यत्र आदि उपकरण की व्यवस्था अगले वर्ष 62–63 मे होने की सभावना है ।

श्री मुरलीधर व्यास इसमे यह बात कह दी कि राजस्थान के प्रमुख नगरो मे ऐसी स्थिति है। मेरा बीकानेर शहर के बारे म पूछना है क्योकि वहा ऊन की बहुत बडी मण्डी है और इस तरह आग लग जाने से देश का बडा नुक्सान होता है। लास्ट ईयर भी ऊन की बहुत सी गाठें जल गई। ऊन राष्ट्रीय धन है। उसके जल जाने से राष्ट्र को नुकसान होता है। इसलिए वहा फायर ब्रिगेड की सबसे अधिक आवश्यकता है।

श्री मथुरादास माथुर इस साल पैसा मिलेगा, भारत सरकार से, तो बीकानेर का पूरा ध्यान रखूगा ।

फायर ब्रिगेड की आवश्यकता का उल्लेख ऊन जैसे राष्ट्रीय धन के परिप्रेक्ष्य म करना और मत्री से आश्वासन ले लेना कि (प्रमुख नगरो से प्राथमिकता देते हुए) "बीकानेर का पूरा ध्यान रखा जायेगा," यह बात श्री व्यास की निरन्तर तत्परता एव अपने क्षेत्र के हितो की रक्षा की सबल भावना को ही उजागर करती है।

श्री भीमसेन (काग्रेसी विधायक) के मूल प्रश्न के उत्तर मे श्री चन्दनमल वद (उद्योग मत्री) ने बताया कि लूनकरनसर मे प्लास्टर आफ पेरिस की फक्टरी के लिए सम्बन्धित कम्पनी ने विदेशो म जाच करवाने के लिए सलोनाइट भेजा है, उसकी जाच से पता चलेगा कि क्या उससे प्लास्टर आफ पेरिस बन सकता है। श्री भीमसेन ने प्रश्न किया कि जब बीकानेर मे उसी सलोनाइट से प्लास्टर ऑफ पेरिस बन रहा है तो लूनकरनसर मे क्यो नही बन सकता है । श्री व्यास ने बीच मे बोलते हुए एक महत्वपूर्ण सूचना दी। (विधान सभा की कार्यवाही दिनाक 6 अप्रेल 1962 के पृष्ठ सख्या 2713 के वृतात के अनुसार)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) फक्टरी वालो ने लीज लिया था तो उस लीज म यह शर्त थी कि प्लास्टर आफ पेरिस का कारखाना खोलेंगे। लीज को 15 वर्ष हो गये पर अभी तक नही खोला है। लीज के अनुसार काम नही होता है तो उसकी लीज को खत्म क्यो नही किया जाता।

श्री चन्दनमल बद मुझे जानकारी नही है कि उनके लीज मे इस प्रकार की शर्त है।

श्री मुरलीधर व्यास लीज मे है–आप देखें ।

श्री व्यास इस प्रकार पूरे परिक्षेत्र के हितों के प्रति सदैव जागरूक रहते थे। फैक्टरियों ने क्या समझौता किया है, उसकी क्या क्या शर्तें हैं, शर्तों का पालन क्या नहीं हुआ आदि सभी बिन्दुओं पर उनकी जानकारी सटीक रहती थी। जिप्सम आंदोलन के साथ व्यासजी का नाम हमेशा ही जुड़ा हुआ रहता था। एक तरफ वे मजदूरों में जागृति फैलाना अपना कर्त्तव्य समझते थे तो दूसरी ओर बीकानेर में जिप्सम वाल बोर्ड की फैक्टरी लगवाने, उसे औद्योगिक लाइसेंस दिलवाने एवं उचित सुविधाएं उपलब्ध करने जैसे विषयों पर विधानसभा में निरंतर भाग करते रहते थे। ऐसे अनेक प्रसंगों में से एक प्रसंग विधानसभा की कार्यवाही से उद्धृत किया जाता है (पृष्ठ 1719 तारांकित प्रश्नोत्तर 245 दिनांक 18-10 62)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) क्या योजना मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे

(1) बीकानेर में वाल बोर्ड (Wall Board) का कारखाना खोलने के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार ने क्या सिफारिश की है? (2) इस कारखाने के खोलने के सम्बन्ध में अब तक सरकार की ओर से क्या कार्यवाही की गई? (3) यह कारखाना कब तक खुल जाने की संभावना है?

उपमंत्री योजना (श्रीमती कमला बेनीवाल) (1) बीकानेर में जिप्सम वाल बोर्ड का कारखाना खोलने के सम्बन्ध में भारत सरकार के उद्योग एवं वाणिज्य मन्त्रालय ने लाइसेंस कमेटी को निम्नलिखित सिफारिश की है

'In view of the utility of the material and its several advantages the Mineral Industrial Directorate recommends issue of the Industrial Licence applied for by the party provided

1 the terms of foreign collaboration would be subject to the approval of the Govt and

2 the concurrence of the Heavy Chemicals Directorate from the point of availability of Gypsum rock for the purpose is given'

(2) इस कारखाने को खोलने के लिए राज्य सरकार ने दिनांक 19-6-61 को भारत सरकार से औद्योगिक लाइसेंस प्रदान करने की सिफारिश की है तथा फैक्टरी लगाने के लिए उचित सुविधाएं उपलब्ध करने का आश्वासन भी दिया है।

(3) चूंकि अभी तक भारत सरकार द्वारा लाइसेंस नहीं प्रदान किया गया अतः इस सम्बन्ध में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

श्री मुरलीधर व्यास सन् 61 म भारत सरकार का इसके लिए लिखा गया, लेकिन अब तक भारत सरकार ने लाइसेन्स प्रदान नही किया। फिर से भारत सरकार को इस सम्बन्ध मे रिमाइण्ड किया गया है ?

श्रीमती कमला बेनीवाल लाइसेन्स कमेटी की मीटिंग 23–12–61 का हुई थी। कुछ पाबन्दी पार्टी पर लगाई थी। पार्टी ने उसे मानने को एग्री कर लिया है लेकिन जिस पार्टी के साथ कोलेबोरेशन चल रहा है, वह फाइनल हो जाने पर काम शुरु होगा।

प्रकरण कही का हो, उसम पूरी सूचना के साथ बोलना तथा अतत उसे अपने क्षेत्र की आवश्यकता से जोड लेना व्यासजी की कुशलता का अग था। दिनाक 6 माच 1961 का लालसोट को बिजली देने के प्रसग म श्री प्रभूलाल ने अपन क्षेत्र की आवश्यकता को प्रतिपादित किया तो मत्री श्री हरिश्चन्द्र ने आश्वासन दिया कि काय 1961 के सितम्बर अक्टूबर तक पूरा हो जायेगा। श्री प्रभूलाल के यह कहने पर कि 1953 मे भी ऐसा ही कहा गया था, व्यास जी ने बीच म बोलत हुए कहा कि 'इधर खभे हैं तो बिजली नही है और दूसरी तरफ बिजली है तो खभे नही हैं, इसका क्या कारण है ?' श्री हरिश्चन्द्र न अपने उत्तर म जब लालसोट क्षेत्र की चर्चा की तो बीकानेर के जागरूक प्रहरी ने बात को पलट कर अपने क्षेत्र से जोडते हुए कहा–'इसके पहले कई स्थानो पर खभे नही थे इसलिए बिजली नही दे सके और इधर खभे पडे रहे तो जब फसला हुआ तो खभे उधर क्यो नही लगाये ?

श्री हरिश्चन्द्र आप कौन सी जगह के लिए फरमा रहे हैं ?

श्री मुरलीधर व्यास सारे इलाके ऐसे ही हैं।

श्री हरिश्चन्द्र आप किसी पर्टीक्यूलर जगह के बारे म बतायें, कौन सी जगह है ?

श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर–चूरू क्षेत्र के अन्दर। यहा पर आप खभा की वजह से बिजली नही पहुचा सके।

लालसोट क्षेत्र म खभे इस विवाद मे अप्रयुक्त पडे रहे कि बिजली लालसोट से दौसा दी जाय या सवाई माधोपुर से गगापुर होती हुई लालसोट आये और 6 साल तक खभे इसी कसमकस मे बिना तारा के लगे रहे। व्यासजी जसे जागरूक व्यक्ति का यह कहना स्वाभाविक ही था कि बीकानेर–चूरू क्षेत्र म तो खभा की कमी के कारण बिजली नही मिलती है जबकि लालसोट मे 6–6 वर्षों तक खभे यो ही बेकार खडे रहते हैं। मामला कहीं का हो, उनका ध्यान बीकानेर पर तो रहता ही था। यही उनके नेतृत्व की विशेषता थी। बीकानर के लोग आश्वस्त थे कि

उनका पहरुआ पूरी तरह से जागरूक है अत जनहित के काय म इस क्षेत्र की उपेक्षा नही होन दी जायगी।

बीकानेर नगरपालिका क्षेत्र मे "स्लम क्लियरेंस एव सनीटेशन" के बारे म भी व्यासजी ने विधानसभा म समय-समय पर प्रश्न पूछे। जब उ हें ज्ञात हुआ कि जोधपुर नगर के लिए 10 लाख रुपये स्वीकृत किये गये है तो बीकानेर का हित तत्काल ही उनके सामने आया तथा उ होने जानना चाहा कि (1) क्या बीकानेर नगरपालिका ने 'स्लम क्लीयरेंस एव सनीटेशन' के लिए सरकार से कोई रकम मागी है तथा (2) क्या वह रकम उसे दी गई है। जब उत्तर नकारात्मक दिया गया तो उ होने समाचार पत्रो का हवाला देते हुए बताया कि जोधपुर के लिए 10 लाख रुपया की राशि स्वीकृत हुई है। मत्री के यह कहने पर कि 61-62 मे जोधपुर को कोई रकम नही दी गई, व्यासजी ने मामले को समाप्त किया। प्रमग जोधपुर का हो या जयपुर का प्रश्न-यह था कि जब जोधपुर, जयपुर के लिए रकम दी जा सकती है तो बीकानेर को उससे वचित क्यों रखा जावे। अगर नगरपालिका माग न भी करे तो भी जनप्रतिनिधि को तो अपनी ओर से प्रयत्न करके राशि का प्रावधान करवाने का प्रयास करना ही चाहिए (तारांकित प्रश्न 242 पृष्ठ 1709 18-10-62 की कायवाही से)

कही पर लाठी चाज हो या गोली चलाने की घटना हो, व्यास जी किसी भी घटना पर अत्य त उद्वेलित हो जाते थे और पूरे तथ्यो के साथ विधानसभा मे उस घटना क्रम पर बहस किया करते थे। कुचालगढ लाठी चाज एव वोरावड रतनगढ तथा झक्षेऊ म गोली काण्ड़ा की उ होने न सिफ भत्सना की पर तथ्यपरक भाषण भी दिये। झक्षेऊ गोली काण्ड सन् 1962 की ऐसी हृदयविदारक घटना थी जिसमे एक व्यक्ति की मृत्यु हुई तथा अनेक घायल हुए। झक्षेऊ मे विवाद सवर्णो एव अनुसूचित जाति वालो (मेघवालो) के बीच कुए पर जल भरने के बि दु पर था। घटनाक्रम ने ऐसा विस्फोटक मोड लिया कि उसकी परिणिति गोलीकाण्ड जसी नक्षास अमानवीयता के रूप मे हुई।

पुलिस का पक्ष था कि कुछ हरिजनो ने उनको सूचित किया था कि कुछ सवण लोग उनको कुए पर पानी नही भरने देते। इस पर छुआछूत एक्ट के अ तगत दिनाक 3 5 62 को मुकदमा दज किया गया। स्थिति को खराब होते देख एस० पी० पुलिस फोम एव मजिस्ट्रेट को बुला लिया गया। जब हरिजन कुए पर पानी भरने गये तो लगभग 500 600 सवर्णो न उनको भगाने के लिए पत्थर फकने शुरु कर दिय। जब पुलिस हरिजनो की सहायता के लिए आगे बढी तो भीड ने मारो-

मारो" कहते हुए पुलिस पर भी पत्थर फैंके। पत्थर से एक कान्सटेबल के सिर और नाक पर सगीन चोट आई। भीड मारो–मारो कहती आगे बढी और कान्स-टेबल को नीचे गिराकर मारने लगी तो पुलिस को आत्मरक्षा मे गोली चलानी पडी। मजिस्ट्रेट ने पहले अश्रु गैस फिर लाठी चार्ज का हुक्म दिया था तथा अन्त मे गोली चलानी पडी। पुलिस के अनुसार 410 बोर के 12 फायर किये गये। दो व्यक्ति गोली लगने से मौके पर ही गिर गये। पाच को गिरफ्तार किया गया। पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार मुलजिमान के पास लाठी, जेई, गडासे आदि हथियार थे।

श्री व्यास ने तथ्यपरक बिन्दुओ एव घटनास्थल के स्वय के निरीक्षण के बल पर जो बातें कही वे उसके बारीक विश्लेषण को प्रकट करने वाली थी। उनके अनुसार (1) यदि भीड के पास हथियार होते तो कान्सटेबल को नीचे गिराकर लाठी या गडासे से मारते। उसे पत्थरो मे क्यो मारते? (2) यदि पुलिस कान्स-टेबल को गिराकर लोग मारने लगे तो पुलिस उस अपराधी या अपराधियो को गोली से मार देती परन्तु 410 बोर के 12 फायर क्यो किये गये और कई लोग गोली के शिकार क्यो हुए? श्री व्यास ने घटना की भयावहता बताते हुए कहा कि–

(1) वहा ज्यादा से ज्यादा 100–150 आदमी थे। उधर पुलिस के भी 100 व्यक्ति थे। उनके पास अश्रु गैस के गोले आदि भी थे। घटनास्थल के किसी व्यक्ति को गोली लगने की बात तो समझ मे आती है पर मकान पर खडे आदमी को गोली क्यो लगी?

(2) उसके 12 वर्ष के बच्चे के भी गोली लगी। कान के बीच मे गोली लगने से उसका जबडा फट गया, दात टूट गये और बोलने से लाचार हो गया। उस बारह वर्ष के बच्चे एव 11 वर्ष की बालिका को क्यो गिरफ्तार किया गया? इन पर 307 के अन्तर्गत हत्या का अभियोग क्यो लगाया गया?

(3) जो सिद्ध मारा गया उसके घर की छत खून से लथपथ, कमीज खून से लथपथ थी। ऐसा क्यो? पुलिस की नृशसता इस हद तक थी कि फायरिंग के बाद उसकी लाश को बन्दूक की नोक पर लारी मे ले गये, छोटे छोटे बच्चो को गिरफ्तार किया।

(4) पुलिस के अनुसार पूरे राजस्थान मे उन दिनो 5 गोली काण्डो मे 74 आदमी मरे जबकि अकेले झझेऊ मे ही 16 आदमियो को गोली लगी थी।

(5) गोलिया जानबूझकर अधाधुध चलाई गई। यह इस बात से प्रकट होता है कि एक बारह साल की बच्ची के पेट के नीचे गोली लगी। एक स्त्री के स्तन पर गोली लगी तथा एक बच्चे के कान के पास गोली लगी।

(6) गोली लगने के बाद पुलिस घरो म गई आदमियो को बाहर निकाला तथा लाठी चाज किया ताकि बता सके कि लाठी चाज किया गया था। जाच करने पर मालूम होगा कि लाठी चाज बाद म किया गया, पहले नही किया गया था।

(7) घायलो के मुकम्मिल इलाज की व्यवस्था तक नही की गई। पत्रकारो तथा अ यो ने जब हास्पीटल म भरती करवाने का प्रब ध किया तो भी अत्याचार जारी रह। अस्पताल मे भी छोटे-छोटे बच्चो को हथकडिया म रखा गया। 100 घरो की बस्ती के 55 व्यक्तियो पर मुकद्दमा चलाया गया।

(8) हत्या के जुम म फसने के भय से लोग गाव छोडकर भागने लगे।

अपने भाषण के बीच उ होने बार बार कहा कि वे छुआछूत के खिलाफ है "मेरी समझ म नही आता कि एक दिन पूव रिर्पोट दज होती है और जब उ होने कहा कि पानी नही भरने दिया जाता तो पुलिस का काम था कि जो लोग इस काम मे रुकावट डाल रहे थे उनके खिलाफ कानूनी कायवाही करती। (पृष्ठ 1800 विधानसभा कायवाही 18 10 62) जहा तक छुआछूत का प्रश्न है म इसके पक्ष म नही हू। प्रश्न यह है और मैं जानना चाहता हू कि गोली क्यो चलाई गई ? मै उस कुए पर पहला आदमी हू जा जाने को तयार हू मगर कोई चले। (पृष्ठ 1817 वि० स० कायवाही 18 10 62) मविधान के अ तगत गहम त्री जी किसी *हरिजन को गाव-गाव कुआ पर चढाने के लिए चलेंगे तो मै गृहम त्री जी के साथ* गाव गाव चलने को तयार हू और चढने को तयार हू। (पष्ठ 1819 वि० स० कायवाही 18 10 62)।

इतना सब होते हुए भी श्री व्यासजी की मा यता थी कि गोलिया अकारण चलाई गई जबकि भीड की ओर से कोई उत्तजना नही थी। श्री व्यास ने इस प्रकरण मे *निर तर यायिक जाच की माग की तथा* विधानसभा सदस्या की सवदलीय समिति का मौके पर जाकर तथ्यो के अ वेषण करने की सुविधा देने के लिए कहा। श्री व्यास न जब यह प्रकरण विधानसभा म उठाया तो उनका साथ देने वालो मे सवश्री भरोसिह शेखावत मानिकच द सुराणा, योगे द्र हाडा, *अब्दुल जब्बार* श्रीउमरावसिंह मोहर्रसिंह राठोड एव श्री कुमारान द आदि के नाम उल्लखनीय है। इस छोटी सी बस्ती म अश्रुगस के 7 गोले छोडने 11 चक्र गोलिया चलाने व

401 मजकेरिंग के प्रयोग की सभी ने भर्त्सना की। गृहम त्री को भी मानना पडा कि गोली चलान की घटना से सरकार व्यथित है तथा पुलिस का निर्देश दे दिये गये हैं कि असाधारण स्थिति को छोडकर अन्य मामलो म गोली नही चलाई जावे।

यह था उनको जागरूकता का एक ज्वलत उदाहरण। जहा पुलिस के अनुसार घटनास्थल पर केवल 30 पुलिसमन भेजे गये थे तथा गोली काण्ड मे एक मृतक, दो घायल एव 5 को गिरफ्तार करना दिखाया गया था वहा श्री व्यास ने बताया कि एस० पी० सहित 100 पुलिस वाले अश्रुगस एव गालियो सहित वहा मौजूद थे तथा गोली काण्ड म एक मृतक, 24 घायल एव 55 व्यक्ति गिरफ्तार किये गये तथा छोटे छोटे बच्चो तक पर 307 के मुकद्दमे चलाये गये। जहा पुलिस ने *अत्यन्त सयम के प्रदशन के बाद आत्मरक्षा म गोली चलाने की विवशता बताई* वहा श्री व्यास ने कहा कि गालिया अधाधुध तथा अकारण चलाई गई। छत पर खडे व्यक्ति के शरीर को गोलियो से छलनी कर दिया गया। एक बच्चे के कान के पास, स्त्री के स्तन पर तथा बच्ची के पेट के नीचे गोली लगने से स्पष्ट होता था कि जिसने जो चाहा उसी दिशा मे गोली चला दी। निहत्थी जनता पर यह एक पाशविक बल प्रयोग था। पुलिस ने भीड को जइयो एव गण्डासा से युक्त बताया था पर श्री व्यास ने कहा कि यदि ऐसा होता तो भीड पत्थरो का प्रयाग क्यो करती गिरे हुए का स्टेबल पर जइयों व गण्डासो से ही वार करती। जहा पुलिस ने कहा कि हरिजनो पर वार किया गया वहा श्री व्यास ने कहा कि पूरे घटना क्रम मे एक भी हरिजन् के चोट नही लगी सभी सवण घायल हुए। विधानसभा की इस आक्षेपो भरी बहस मे गृह मन्त्री को मानना पडा कि वे न्यायिक जाच के लिए तैयार हैं। उन्होने यह भी कहा कि पुलिस को कठोर निर्देश दिये गये हैं कि असाधारण स्थिति क अतिरिक्त कही पर गोली नही चलावें।

मजदूरो की हडताल के प्रसग म श्री व्यास उस समय तक चुप नही बैठते थे जब तक कि सदन म उस पर चर्चा नही हो जाती। कोई भी सवाल हो और मूलत चाहे वह किसी भी सदस्य ने रखा हो, मजदूर नेता श्री मुरलीधर व्यास उस पर अपने विचार आग्रहपूवक व्यक्त करते तथा अपने पक्ष को निरन्तर पुष्ट करते रहते थे।

राजस्थान के एक लाख स भी अधिक मजदूरो ने माथुर कमेटी की अभिशसाओ को लागू करने के लिए 5 मई 1965 को साकेतिक हडताल एव 9 मई से पूण हडताल पर जाने का नोटिस दिया था। स्थगन प्रस्ताव श्री रामानन्द अग्रवाल न रखा पर उसे स्वीकार नही किया गया। विधान सभा का अन्तिम दिन

(16 4 65) होने के कारण विरोधी दलो के सदस्यो ने माग की कि इस महत्व पूर्ण मामले पर उसी दिन सदन म बहस की जाय। मजदूरो की 9 मागो म 5 00 रुपये के स्वीकृत महँगाई भत्ते का भुगतान करना, अ तरिम राहत देना तथा शत-प्रतिशत न्यूटलाइजेशन का सिद्धा त मानना आदि बातें सम्मिलित थी। स्थगन प्रस्ताव स्वीकार नही होने के बावजूद सवश्री रामान द अग्रवाल, योगे द्र हाण्डा मुरलीधर व्यास भैरोसिह, सतीश च द्र अग्रवाल एव प्रोफेसर केदारनाथ आदि ने निर तर माग की कि विधानसभा का अ तिम दिन होने के कारण उस बि दु पर तत्काल बहस की जाय अ यथा हडताल की स्थिति म उत्पादन पर जबरदस्त प्रभाव पडेगा अशा ति होगी तथा 100 मजदूर सघो के एक लाख से अधिक मजदूरो पर उसका असर पडेगा। अध्यक्ष न इनम से प्राय प्रत्येक सदस्य को बैठ जाने का आदेश दिया पर व बोलते रहे। अ त म सदन से बहिष्कार करके उ होंने अपना रोष प्रकट किया। श्री व्यास एव अध्यक्ष व म त्री के मध्य जो बहस हुई वह अविकल रूप से इस तरह है

(विधानसभा कायवाही 16 अप्रेल 1965 पृष्ठ सख्या 10026–10027)

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह एडजोनमेण्ट मोशन था इस पर मेरे भी हस्ताक्षर हैं।

श्री उपाध्यक्ष यह एडमिट ही नहीं हुआ है।

श्री मुरलीधर व्यास यह एक महत्वपूर्ण सवाल उठ रहा है, सारे मजदूरो की तरफ से सरकार को हडताल का नोटिस दिया गया है

श्री उपाध्यक्ष आडर प्लीज। माननीय सदस्य आप कुछ तो नियमो का पालन कीजिये, कुछ तो व्यवस्था रखें।

श्री मुरलीधर व्यास आज म बाद सदन की कायवाही नहीं आज सदन की काय वाही खत्म होने जा रही है। जो हडताल का नोटिस सारे मजदूरो ने दिया है यदि इस पर सरकार ने विचार नहीं किया और मजदूरो ने हडताल की तो इसका सारे राज्य पर बहुत बुरा असर पडेगा। मत्री महोदय ने इस सम्बन्ध म तयारी की है, इसलिए मैं अज करना चाहूगा कि इस पर वे इस समय उनके पास जितनी सूचना उपलब्ध है उसके आधार पर स्टटमेण्ट दें।

उपाध्यक्ष इज द मिनिस्टर गोइंग टू मेक ए रिपलाई ?

श्री मथुरादास माथुर नो सर।

श्री भरोसिंह (किशनपोल जयपुर) यह बहुत ही महत्वपूर्ण मसला है

श्री हरिप्रसाद शर्मा (पाटन) मजदूरो और राजस्थान के हित का प्रश्न है–

श्री मुरलीधर व्यास आज सदन की बैठक समाप्त हो जायेगी।

श्री उपाध्यक्ष जब यह एडमिट ही नही हुआ तो कसे मत्री महोदय को बाध्य कर सकते हैं ?

श्री मुरलीधर व्यास आप मत्री महोदय से जितनी जानकारी उनके पास उपलब्ध है, उसके आधार पर वक्तव्य दिला दें। मत्री महोदय से कुछ न कुछ वक्तव्य दिला दें। मत्री महोदय कुछ न कुछ वक्तव्य देंगे उससे लाभ होगा क्योंकि 5 रुपया बढोतरी की–वह भी इन लोगो को नही मिली। केजुअल लेबर 15 15 साल के हैं।

बीकानेर मे बाढ की स्थितिया बहुत कम आती हैं, पर फिर भी जब कभी औसत से अधिक वर्षा हो जाय तो निचले इलाको मे पानी भर जाता है। बीकानेर निवासी ऐसी भयावह स्थितिया के भुक्तभोगी बन चुके हैं। सूरसागर के पानी को खाई तोडकर उसमे भरना पडता है। गिनानी एव हनुमान हत्थे के लोग जल प्लावन से बीकानेर के अ य भागो से कट जाते है। यातायात अवरुद्ध हो जाता है तथा सैकडो मकान गिर जाते हैं।

1960 की बाढ के सदम मे (राजस्थान विधान सभा की कायवाही से उदधृत)
श्री मुरलीधर व्यास क्या इम्प्रूवमेण्ट बोड ने राज्य सरकार को इसके लिए सूचना दी है कि इतना नुकसान हुआ है और उसम इतने रुपयो की जरूरत है और इतने मजूर कर दिये जावें ?

श्रीसम्पतराम दी इम्प्रूवमेण्ट कमेटी हैज नाट रिकमेण्डेड बट द कलेक्टर एण्ड द कमिश्नर हेव सबमिटेड देअर प्रपाजलस ए ड दे आर अन्डर कसिडरेशन आफ द गवनमेण्ट।

श्री मुरलीधर व्यास मैं तो यह कहता हू कि सिटी इम्प्रूवमेण्ट बोड के पास जब कि 8 या 10 लाख रुपये हैं तो उनमे से भी कुछ रुपया खच करके लोगो को राहत पहुचाने की योजना बनायें।

श्री सम्पतराम मैंने कहा कि इसके लिए कमेटी बनाई गई है। 50 हजार रुपये की तुरन्त सहायता देने के लिए सरकार ने आदेश दे दिये हैं।

श्री मुरलीधर व्यास पुलिया टूट गई और इससे सारा पानी उसके टूटन से मोहल्लों में चला गया और मोहल्ला में 8 या 10 दिन तक खराब पानी भरा रहा। उसको रोकने के लिए प्रबंध नहीं होगा तो अगले साल भी यही स्थिति होगी और फिर बहुत से मकान टूट जायेंगे। क्या इसे रोकने के लिए निश्चित योजना बनी है?

श्री सम्पतराम द गवनमण्ट हैज आलरेडी एप्रीशियेटेड द व्यू एक्सप्लेंड बाई ऑनरेबल मेम्बर स्टेप्स हैव बीन टेकन बाई द गवनमण्ट। मनी हैज बीन सेंक्ट एण्ड द प्लान स्केल इज देअर।

व्यास जी ने जो बात 1960 के सदन में कही थी, वर्षों बाद वह अत्यन्त भयावह स्थिति के रूप में सामने आई। भयानक वृष्टि में निचले इलाकों में पानी भर गया, मकान कई दिनों तक जल प्लावित रहे सैकड़ों मकान गिर गये लोगों में आतंक व्याप्त हो गया तथा खाई का ताडकर जल की निकासी करनी पड़ी। उनके शब्द कितने सटीक थे।' उसको रोकने के लिए प्रबंध नहीं किया गया तो भी यही स्थिति होगी और फिर बहुत से मकान टूट जायेंगे।"

स्थिति वही की वही है। वही सूरसागर वही गिन्नाणी और वही हनुमान हत्था। हर साल पानी भर जाने और मकान गिरने की सभावना आज भी बनी हुई है। एक और दृष्टान्त देना उचित होगा जिससे यह ज्ञात हो सके कि नगर की जल समस्या के समाधान के लिए व्यासजी हमेशा कितने सजग एवं सक्रिय रहा करते थे।

(9 अप्रेल 1958 की विधान सभा की कार्यवाही से उद्धृत पृष्ठ 6815 6816)

श्री मुरलीधर व्यास क्या सार्वजनिक निर्माण मंत्री बताने का कष्ट करेंगे—

(1) क्या बीकानेर की जल व्यवस्था सुधारने सम्बंधी कोई योजना सरकार के विचाराधीन है?

(2) बीकानेर शहर में रिजरवायर निर्माण का जो आश्वासन दिया था उसका काय कब से प्रारम्भ होगा?

श्री मुरलीधर व्यास मेरे कहने का मतलब यह है कि क्या इस प्रकार का आश्वासन चुनाव के समय मुख्यमंत्रीजी ने दिया था कि आपके यहां पानी की समस्या हल होगी और जल्दी ही रिजरवायर बनाया जायगा?

श्री नाथूराम मिर्धा (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) मुझे ठीक से पता नहीं। बस मान सकते हैं कि आश्वासन दिया होगा तब ही विचाराधीन है।

श्री मुरलीधर व्यास कब से विचाराधीन है?

श्री नाथूराम मिर्धा पोर्डे अर्से से ।

श्री मुरलीधर व्यास कब तक पूरी कर दी जायगी ? यह पानी का मसला है, गंभीरता से उत्तर मिलना चाहिए । यह योजना कब तक पूरी होगी ?

श्री नाथूराम मिर्धा मैं निश्चित अवधि नहीं बता सकता क्योंकि 18–20 योजनाएं चल रही हैं जो तीन साल से चल रही हैं । आपके यहां की जो समस्या है उसमें समय लगेगा क्योंकि पहले योजना बनेगी फिर एस्टीमेट तैयार होगा । सैक्शन होगी । इसमें लाखों रुपयों का मामला होगा । धन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराना होगा । इसमें समय लगेगा ।

राष्ट्रीय समस्याओं पर जब कभी बहसें होती थी व्यास उनमें अग्रणी रहा करते थे । राष्ट्र प्रेम एवं राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के मामले में उनकी उत्कट देश प्रेम की भावना उनके ही बचपन से यहां उद्धृत हैं । ये सभी बातें उन्होंने समय समय पर विधान सभा के सदन में कही थी ।

पंचायत चुनाव के सदंभ में चुनाव की प्रणाली जिस तरह हमारे देश में चल रही है उसमें काफी धन खर्च होता है काफी समय भी खर्च होता है । बार बार चुनाव चलते रहते हैं । कभी पंचायतों के, कभी म्यूनिसिपल्टिी के, कभी आम चुनाव । यदि देश में नयी प्रणाली चलाते तो पंचायतों म्यूनिसिपलिटियां एवं आम चुनाव सब साथ हो जाते जिससे देश में नया वातावरण आता और देश की जनता का ध्यान भी बार बार न बटकर एक आम चुनाव की तरफ आ जाता । बाद में लोग दूसरे काम में लग जाते । चुनाव में भी यह लोगों को भान कराना चाहिए कि चाहे पंचायत के चुनाव हों या पंचायत समिति जिला परिषद एम एल ए या एम पी के चुनाव हों सब एक साथ हो जायें तो वोटरों को इससे भान होगा कि इन सबमें हमारा हाथ है । इससे यह होगा कि राजस्थान ने एक नई पहल की है तथा बार बार जो चुनाव में खर्चा होता है और बार बार जो चुनाव में बातें आती हैं वे भी समाप्त होती (विधानसभा कार्यवाही 31 अक्टूबर 1964 पृष्ठ 242 से 244 तक)

नागालैण्ड के प्रसंग पर व्यास जी के विचार—नागालैण्ड नाम से ऐसा लगता है कि नागाओं का अलग लैण्ड है, हिन्दुस्तान से अलग भूमि है । इस प्रकार से भी पता मालूम पड़ता है कि हमारे देश से जैसे अलग भूमि वाला प्रदेश है । जहां तक नाम का सवाल है—मैं तो समझता हूं कि यह नाम न होकर नागप्रदेश' हो जाये तो अच्छा है । नागा' भी हट जाये क्योंकि नागकन्या को अर्जुन जो वहां गये थे हमारा प्राचीन मेल भी है और नाम किसी लड़की के नाम पर नहीं होता,

बल्कि वहा रहने वालो के नाम पर होना है। अगर इसका नाम नागप्रदेश हो जाये तो यह नाम हमारी सस्कृति के साथ जुडता हुआ हो जाता है।"

चीन के आक्रमण के सम्ब ध मे व्यासजी के विचार—जिस समय हमारे देश पर कोई हमला करे, वहा पर बातचीत करना और शान्तिमय तरीका से बातचीत करने मे पहली बात तो यह है कि शाति से बात करने का मौका तो बाद का है। पहला मौका तो उनको अपनी सीमा से खदेड देने का है। वे हमारे ऊपर हमला करते हैं, हमारी चौकियो पर कब्जा करते जा रहे हैं तो मैं समझता हू कि शाति और समझौते की बात नही है बल्कि सारे देश को मिलकर इस देश क अ दर एक राष्ट्रीय भावना के आधार पर देश मे राष्ट्रीय सरकार इस मौके पर बनाई जा सकती है। जबकि दूसरा देश हम पर हमला करता है तो एक मौका आता है।

सारे भेद भावो को भुलाकर राष्ट्रीय सरकार की घोषणा करके राष्ट्रीय भावनाओ का सही तरीके से उपयोग करना चाहिए। सबसे पहला काम यह होना चाहिए कि हर आदमी पूरी ताकत लगाकर सद्भावना के साथ देश रक्षा का जो प्रश्न उठा है उसे पूरा करे। सब लोगो को मिलकर देश की एकता के लिए कधे से कधा मिलाकर आगे बढना चाहिए (विधानसभा कार्यवाही विवरण 22 अक्टूबर 1962 पृष्ठ 2020 से 2023 तक)

राजस्थान विधान सभा मे तत्कालीन वित्तमत्री श्री बालकृष्ण कौल ने जब यह कहा कि यह भी भ्रम वाली बात थी कि हमला (चीन का हमला) था या क्या था तो सभी विरोधी सदस्यो ने शोरगुल करना शुरू कर दिया। सभी ओर से माग की गई कि वित्त मत्री अपने शब्द वापिस लें। उनका कहना था कि जब तक वे शब्द वापिस नही लेंगे, आगे कार्यवाही नही चलने दी जायेगी। बहस मे भाग लेने वाले सदस्य थे श्री उमरावसिंह ढाबरिया मानिक च द सुराना भैरोसिंह शेखावत, मुरलीधर व्यास, विजयसिंह झाला योगेन्द्र नाथ हाडा श्रीमती नगेन्द्र बाला एव सतीशच द्र अग्रवाल आदि। सभी ने माग की कि वित्तमत्री महोदय सदन से माफी मागें। अन्तत सभापति को व्यवस्था देनी पडी कि मत्री महोदय आप अपने शब्द वापिस ले लें अन्यथा उनको एक्सपज कर दिया जायेगा'। श्री मुरलीधर व्यास ने जब जोर देकर कहा कि हमला हुआ या नही—यह मानते हैं या नही तो वित्तमत्री को कहना पडा 'हुआ है। मानता हू हमला है।' एक और स्थान पर जब व्यासजी ने कहा कि जब आसन की तरफ से व्यवस्था दी जा चुकी है तो आप अपने शब्द वापस ले लें। नही तो उन्ह एक्सपज किया जायगा। श्री कौल ने कहा कि—यह व्यवस्था हो चुकी है तो यह लिख लीजिए कि यह मेरा स्टेटमेन्ट गलत है तथा थोडी देर बाद मे कहा कि आसन की यह व्यवस्था है तो मैं शब्द वापिस लेता हू।

बहस के दौरान आगे जब श्री कौल ने कहा कि मैं मानता हू कि चीन का हमला हुआ था पर यह कौन से दिन हुआ यह मैं नही कह सकता तो फिर विवाद छिड गया। अन्त मुख्यमत्री महोदय ने यह कहा कि 'चीन ने हम पर 20 अक्टूबर को एग्रेशन किया है—इसम दो राय नही हो सकती है और न ही आगे मानने की तयारी रखते हैं मैं खुद उनसे (वित्तमत्री) से चाहूगा कि अगर उन्होंने ऐसा कहा है तो उनके लिए मोटे तौर पर उन्हे क्षमा याचना करनी चाहिए।" वित्तमत्री को कहना पडा कि अगर भारतीय जनता को ऐसा लगे कि मैंने उसे चीन का हमला नही माना है तो मै उसे वापिस लेता हूँ" (विधानसभा कार्यवाही 16 अप्रेल 1965 पृष्ठ 10119 स 10134)

इस प्रसग मे मन्त्रिमण्डल पर अविश्वास प्रस्ताव भी रखा गया तथा यह प्रबल माग की गई कि वित्तमत्री को हटा दिया जाय। श्री मुरलीधर व्यास ने कहा था, "हम लोगो ने प्रस्ताव रखा है उसम बहुत बडी ताकत है। राजस्थान की विधानसभा के विरोधी पक्ष के लोग या सरकारी पक्ष के लोग देश पर हमला होने की [illegible] के बारे म कोई शका करते है तो इतना जागरूक है कि इस प्रकार के [illegible] को फौरन बर्खास्त करना चाहिए, उसकी माग करता है। इसम [illegible] नही होता, बल्कि जागरूक होना है।"

अतत मुख्यमत्री के भाषण के उपरात उपाध्यक्ष ने [illegible] अविश्वास प्रस्ताव रखने की जो माग थी—उसे अस्वीकार कर दिया। [illegible] जी ने अपने भाषण म कहा कि वित्तमत्रीजी [illegible] कोई गलतफहमी नही फैले एव पोलिटिकल [illegible] उनको माफी मागने की सलाह दी गई थी।

यह सम्पूर्ण प्रसग विधायक के रूप म [illegible] की जागरूकता को भी प्रकट करता है। [illegible] पक्ष हो या विरोधी पक्ष [illegible] भावना से अनुप्रेरित होकर [illegible] ([illegible] 15 [illegible] के पृष्ठ सख्या 10170 स 1026[illegible])

का सवाल है, इस मामले के अन्दर क्या केन्द्रीय सरकार को उससे अवगत कराया है। यह भी सरकार कर रही है या नहीं और क्या कर रही है और क्या नहीं ? जैसा बाड़मेर से आने वाले माननीय सदस्य ने बताया कि स्थिति काफी खराब है । तो आप इस सिलसिले में क्या कर रहे हैं ? आप इस सिलसिले में जरूर बतावें । यदि इस सदन में नहीं बता सकते तो साथियों को कॉन्फीडेंस में लेकर बतावें '
(8 अप्रेल 65 की कार्यवाही से)

प्रजातन्त्र में कहीं पर पत्रकार पर हमला हो और जन प्रतिनिधि उस प्रश्न के लिए विधानसभा में अड़ नहीं जावे यह बात श्री व्यास के लिए सम्भव नहीं थी। पत्रकारों पर होने वाले एक ऐसे ही प्रकरण के प्रश्न में उन्होंने विधानसभा में एक स्थगन प्रस्ताव रखा था जिस पर सदन में बहस करने अथवा नहीं करने का निर्णय तो ले लिया गया था पर उसकी जानकारी सदन में नहीं दी गई थी। 6 मार्च 1961 को इस प्रश्न को लेकर काफी वाद विवाद हुआ। अध्यक्ष महोदय श्री व्यास को बार बार बैठने का निवेदन कर रहे थे पर श्री व्यास जानकारी लेने के लिए अडिग थे। उन्होंने बार बार कहा कि 'मैं बैठने को तैयार हूं पर इस प्रकार के स्थगन प्रस्ताव का जब मंत्री महोदय को सूचना दे दी जाती है पत्रकार को पीटा जाता है या आपने (बैठ जाने की) जो व्यवस्था दी है उसे मैं मानने को तैयार हूँ पर मैं यह जानना चाहता हूं क्या डेमोक्रेसी का इस प्रकार लगातार गला घोटा जाय और जवाब नहीं दिया जाय ।' उनके कई अधूरे वाक्य कार्यवाही में मिलते हैं। कार्यवाही का अंतिम अंश इस प्रकार है-

श्री अध्यक्ष आर्डर प्लीज। मैं फिर कहता हूँ कि माननीय सदस्य बैठ जायें वर्ना मुझे सारजेंट-एट-आम्स को आदेश देना होगा

श्री मुरलीधर व्यास डेमोक्रेसी का इस प्रकार लगातार गला घोटा जाय और जवाब नहीं दिया जाय

श्री अध्यक्ष आर्डर प्लीज। आप बैठ जायें। मैं सार्जेन्ट-एट-आर्म्स को आज्ञा देता हूं कि माननीय सदस्य को बाहर ले जायें।

श्री मुरलीधर व्यास यह गलत सिद्धान्त है आप इस तरह करते हैं

श्री अध्यक्ष आप कृपया सदन छोड़कर चले जायें।

श्री मुरलीधर व्यास हमेशा इस प्रकार की कार्यवाही की जाती है

श्री अध्यक्ष आर्डर प्लीज

(सारजेण्ट एट आर्म्स द्वारा कुछ प्रयास के बाद श्री मुरलीधर व्यास निष्कासित कर दिये गये) (विधानसभा कार्यवाही 6 मार्च 1961 पृष्ठ संख्या 796 से 799 तक)

कुशलगढ म दिनाक 30 अक्टूबर 1964 को नागरिको की पिटाई का मामला उठाकर श्री व्यास ने उपाध्यक्ष महोदय के माध्यम से सम्बन्धित मंत्री को आदेश दिलवाने मे सफलता प्राप्त की कि सम्पूर्ण तथ्य उसी दिन शाम तक इकटठे किये जावें। कार्यवाही का आंशिक उद्धरण इस प्रकार है

श्री मुरलीधर व्यास मुझसे कल ट्रंक काल पर बात हो गई। खेद इस बात का है कि मंत्री महोदय की बात नही हो सकी। मेरी इन्फोर्मेशन इस प्रकार है कि कई लोगो के सिर फोड दिये गये। उनको बेरहमी मे पीटा गया, हालत बुरी हो गई कुशलगढ मे हडताल है और उसके साथ साथ तीन आदमी गिरफ्तार कर लिये गये हैं। इतनी बडी बात हो जाने पर भी सरकार उसको दबाना चाहती है चीफ मिनिस्टर खुद को मन बता दिया। आपको रात का समय मिला सवेरे का समय मिला अगर आप अब भी नही बता सकते तो फिर स्थगन प्रस्ताव का मतलब क्या ? उपाध्यक्ष महोदय आप अपनी तरफ से व्यवस्था दें कि 12 बजे से 3 बजे तक यह जानकारी हम दी जाय।

श्री उपाध्यक्ष मंत्री महोदय शाम तक हो सके तो इस बारे मे तथ्य इकटठे करें' 30 अक्टूबर की घटित घटना की सम्पूर्ण जानकारी श्री व्यास को उसी दिन मिल जाना और 31 अक्टूबर को सदन म इस पर चर्चा का होना यह बताता है कि व ऐसे प्रकरणो मे अत्यन्त जागरूक रहते थे। (विधान सभा कार्यवाही 31 अक्टूबर 1964 पृष्ठ सख्या 4 से 5 तक)

शाम तक जानकारी जब नही मिली तो उन्होने उस प्रश्न को पुन उठाते हुए कहा 'मैं मुख्यमंत्री जी से मिला हू। मेरी उनसे बातचीत हुई है। जैसा पता लगा उसके अनुसार बात भी बताई है। क्या स्थिति है, क्या स्थिति नही है, इस का थोडा और स्पष्टीकरण करें। इस सदन के अन्दर माननीय उपमंत्री जी कह कि उनको पता नहीं है--जबकि आपने सवेरे यह व्यवस्था दी थी कि दिन भर म मालूम कर लें और दो तीन बजे तक स्पष्टीकरण करें। आपने खुद ने यह व्यवस्था दी थी। मुझे खेद है भील एरिया के अन्दर पुलिस के जरिये लोग मर जायें, गिरफ्तार कर लिये जाए बाजार बद रहे लोगो के सिर फोड दें और इन सब की जानकारी मुख्यमंत्री को हो और उपगृहमंत्री उन सबको छिपाने की बात करें। मैं समझता हू यह बुरी परम्परा है '

श्री निरंजननाथ आचार्य आपने कल एडजोर्नमेंट मोशन दिया। हमने टेलीफोन से जानने का प्रयत्न किया। हमे आशा थी कि कुछ सामग्री मिल जायेगी। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से भी कान्टेक्ट किया गया। अब मैं क्या कहू। यह आप मुझे

बतलायें कोई सामग्री नहीं मिल पाई है । अगर आप कह तो मैं खड़ा रहू (विधान सभा कार्यवाही 31 अक्टूबर 1964 पृष्ठ संख्या 293–294)

शिक्षा सम्बन्धी प्रश्नो पर श्री मुरलीधर व्यास सदा ही बड़े जागरूक रहते थे । गाधी जी के सिद्धान्तो के अनुसार उनका मानना था कि सभी को प्रारम्भिक शिक्षा, बुनियादी शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए । वे उच्च शिक्षा की तुलना म प्राथमिक शिक्षा पर अधिक जोर देते थे । जोधपुर एव उदयपुर मे विश्वविद्यालयो की स्थापना के बिल पर 1962 म उनके द्वारा व्यक्त विचार प्रकट किये थे शिक्षा के प्रति उनकी निष्ठा और दृष्टि को प्रकट करने वाले हैं । जितनी आबादी राजस्थान की है उतनी ही केरल की है । जिस स्थान (केरल) पर 90 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं वहा पर एक ही यूनिवर्सिटी काम करती है और जहा (राजस्थान) मे 15 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं वहा एक काम कर रही है, दूसरी बन रही है, तीसरी का बिल आ रहा है । आखिर इसके बन जाने पर क्या भार पड़ेगा ? आर्थिक बोझ सभलेगा या नही और यदि भार स्वरूप हो जाता है तो दूसरे क्षेत्र जिनका हम उत्थान करना चाहते है प्राथमिक शिक्षा वैसे ही पडी है प्राथमिक स्कूलो म बच्चो के बैठने के लिए चटाईया नही है और कोई साधन नही है जैसे मामूली गाव है । स्कूल खोलने के लिए कहा जाता है तो यह कहा जाता है कि साधन नही है । इसलिए आपको तुलनात्मक दृष्टिकोण से देखना पड़ेगा कि जो राज्य एक गाव मे प्राइमरी एजूकेशन के लिए स्कूल खोलने के लिए कहता है कि साधन के अभाव मे नही कर सकते वही राज्य सारे हिन्दुस्तान मे ढिंढारा पीटने के लिए राजस्थान म एक नही तीन तीन यूनिवर्सिटी बना रहा है । मैं निवेदन करना चाहता हू कि मन्त्री महोदय राजस्थान की वित्तीय स्थिति जनता के सामने रखें और बिल के साथ इसका ज्ञापन रखें कि इसका कितना खर्च होगा । तीसरी पचवर्षीय योजना मे हम प्राइमरी एजूकेशन के लिए यह चाहते है कि प्राइमरी एजूकेशन अनिवार्य हो । लेकिन जब प्राइमरी शिक्षा का प्रश्न आता है तो कहते हैं कि हमारे पास पैसा नही है । तीसरी पचवर्षीय योजना मे हम मानते हैं कि अनिवार्य शिक्षा हर छात्र के लिए करेंगे चौदह साल के बच्चो के लिए शिक्षा अनिवार्य हो जायगी । लेकिन इसके लिए पैसा कहा से आयेगा ? मेरा स्पष्ट मानना है कि राजस्थान मे हायर एजूकेशन पर इतना खर्च नही करना चाहिए । *आप राजस्थान म तीन तीन यूनिवर्सिटी* खोल दें, पर राजस्थान की माली हालत ऐसी हो कि प्राइमरी एज्यूकेशन के लिए आप एक कमरा नही बना सकते, बच्चो के लिए आप एक चटाई नही रख सकते सर्दी मे बच्चे सीमेन्ट के ऊपर बैठते हैं । इस प्रकार के सैकड़ो नही हजारो स्कूल मिलेंगे जहा बैठने के लिए चटाई तक

बनाले और जाच कराल शिक्षा मत्री (हरिभाऊ उपाध्याय) से निवदन करना चाहता हू कि आप गाधीजी के साथ भी काफी रह हैं। आपके मामले म कहा जाता है कि सत्य का जहा तक सवाल है उसे दबाना नही चाहत। आप इसम भी सत्य की जाच करना चाहते है तो 5 आदमियो की एक समिति की घोषणा करके इस मुद्दे पर जाच करवावें जो अपनी रिपोट सदन म रख सके। इतना मौका (अवश्य दें) ।'

श्री व्यास पूरे आग्रह एव तीव्र तत्परता के साथ अपनी बात रखा करते थे। उनका लक्ष्य रहता था कि किसी भी तरह स हो शिक्षा क्षेत्र की पवित्रता को बनाये रखा जाना चाहिए। उन दिनो (1964 म) श्री गुलजारीलाल नदा गृहमत्री भारत सरकार के भ्रष्टाचार उ मूलन के बहुचर्चित कदम उठाये जा रहे थ तथा भारत म एक प्रकार का शुद्धि आ दोलन जसा वातावरण दिखाई द रहा था। उस वातावरण का एव शिक्षा मत्री के व्यक्तिगत गुणो का हवाला दकर भी व्यासजी अपनी बात को मनवाने का हर सभव प्रयास किया करते थे।

मातृभूमि के प्यार एव सैनिको के कल्याण के प्रति भी श्री व्यास अत्य त सजग थ। 1964 म कच्छ के रन पर आक्रमण के साथ उ होने 29 सितम्बर 1965 को विधानसभा म कहा था,

सकटकालीन परिस्थिति म व्यक्तिगत दृष्टिकोण, दलगत दृष्टिकोण देश का दृष्टिकोण नही हो सकता आज जब देश को ऊचा समझते है तो इतना ही कहना चाहूगा कि आपको ही केवल मातृभूमि से प्यार है, आपस ज्यादा प्यार हम देश से है। हम इस मौके पर कहना चाहते है कि मत्रियो की सख्या मे कमी करे । जहा तक देश मे सकटकाल का सवाल है, हमारे सामने दृष्टिकोण वही रहेगा अपने देश के प्रति हम अपने कतव्य को पूरा करेगे। हमारा देश है। देश केवल किसी व्यक्ति या पार्टी का नही हो सकता ।' (विधानसभा कायवाही 29 सितम्बर 1965 पृष्ठ सख्या 1482 से 1486 तक)

सनिको के कल्याणकारी कार्यो के लिए विधानसभा म माग करते हुए श्री व्यास ने विधानसभा म कहा था सनिको को इस बात की प्रेरणा मिले कि सरकार जमीन द रही है और आसानी से दे रही है, इसलिए भूतपूव सनिको का जल्दी से जल्दी (जमीन) दने क नियम बनाकर सरकार अलाट क्यो नही करती है?" इस प्रश्न पर श्री रामप्रसाद लढ्ढा (उपमत्री राजस्व) ने आश्वासन दिया कि कालोनाइजेशन की पालिसी के निर्माण की बात पूरी होते ही यह काय जल्द ही कर दिया जायगा। (विधानसभा कायवाही 2 सितम्बर 1963 पृष्ठ सख्या 46)

इन दोनों दृष्टान्तों से यह सिद्ध होता है कि मातृभूमि के प्यार को पोर–पोर में लिए हुए श्री व्यास उन सैनिकों एवं भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण के प्रति भी अत्यंत सजग रहते थे जो मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व देने को हर पल तैयार रहते हैं। उनकी ये भावनाएं मात्र भावुकता की नहीं होकर यथार्थपरक थी। गोआ मुक्ति आंदोलन के समय पुर्तगाली सत्ता का सामना करने के लिए गोलियों की बौछार की संभावना के बीच भी श्री व्यास निहत्थे सत्याग्रहियों के एक नेता के रूप में वहां गये थे। अपने देश की अखण्डता एवं महानता में उनको दृढ़ विश्वास था। राजनीतिक लाभ की दृष्टि से संकटकालीन स्थिति में ऐसी कोई बात नहीं कहते थे जिससे शासक दल व्यर्थ की परेशानी में पड़े या जिससे विदेशी ताकतें बेजा प्रचार कर लाभ उठा सकें।

उद्योग धंधों को प्रोत्साहन देने एवं उनके लिए आवश्यक कच्चे माल की व्यवस्था करने सम्बन्धी संकल्प पर बोलते हुए श्री व्यास ने 9 अप्रेल 1965 को जो बातें कहीं वे उनकी अनुभव विपुलता एवं उद्योग विकास की प्रखर भावना को प्रकट करती है।' देश के विकास का एकमात्र साधन यदि कोई है तो वह साधन हमारी हस्तकला या गृह उद्योग है। उसको यदि प्रोत्साहन नहीं मिला तो चाहे हम देश में बड़ी से बड़ी इण्डस्ट्री को प्रोत्साहन देदें और उसके जरिये कई लोगों को काम देदें, पर मेरी यह मान्यता है कि सरकार जब तक इन छोटी हस्तकलाओं के लिए ग्राम और हर जगह साधन उपलब्ध करके इनके पास पहुंचायगी तो सही मानें में प्रति व्यक्ति आय बढ़ेगी और बेकारी की समस्या का समाधान होगा। गरीब देश में यदि हमने बड़ी इण्डस्ट्री में बहुत पैसा लगा दिया और हस्तकला उद्योग को प्रोत्साहन नहीं दिया तो देश बहुत पीछे रह जायगा आज छोटे उद्योग, हस्तकला को जो साधन देने चाहिए वे उनको नहीं मिलते। आज रंगाई के बारे में बताया गया कि 10 हजार लोग रंगाई का काम करने वाले राजस्थान में हैं। जहां पक्के रंगों का सवाल है जो कि इम्पोर्ट होकर आते हैं–वहां हमारे यहां पर ऐसे रंग नहीं है। उनको ठीक तरह से रंग नहीं मिल पाते। इसी तरह से हम देखते हैं कि दूसरी चीजों के मामले के अन्दर कि जो छोटे उद्योगों में रा मटिरियल मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाता है। आज बीकानेर में तपली (बर्तन) उद्योग है, पीतल के बरतनों का उद्योग है और दूसरे छोटे छोटे काम होते है। उनका सवाल है तो उनको रा मटिरियल नहीं मिलता है। रा मटिरियल आप बड़े बड़े उद्योगपतियों को दे देते हैं। वे लोग बाहर ही कुछ लोगों को ब्लैक में बेच देते है और जिन लोगों को रा मटिरियल मिलना चाहिए उनको नहीं मिलता है। 1961 तक जो रा मटिरियल का कोटा दिया

गया जो पीतल का स्टील का ताम्बे का कोटा दिया गया वह बड़े बड़े कपटलिस्टस को द दिया गया। उनके द्वारा इसका इस्तेमाल नही किया गया और वह कोटा उनक द्वारा बिक चुका है। नतीजा यह होता है कि छोटे छोटे लोग जो बरतन बनाने वाले हैं, दूसरी चीजें बनाने वाले है, लाहे की बाल्टी बनाने वाले हैं सिगडी बनाने वाले है--उनको कोटा नही द पाते हैं। कोटा बडे-बडे लोग हजम कर जाते है और उसका ब्लैक हो जाता है।"

श्री व्यास न कोटा देने, ब्लक वरन एव भ्रष्टाचार करने सम्ब धी एक प्रकरण विधानसभा म प्रस्तुत किया जो कलकत्ता के किसी व्यापारी से सम्ब धित था तथा जिसस कोटा परमिट क मामले म भ्रष्ट आचरण प्रकट होता था। विधान सभा के अ य विपक्षी सदस्यो सवश्री रामान द अग्रवाल योगे द्रनाथ हाडा आदि न भी उस प्रकरण म जाच की माग की।

एक स्थान पर उत्तेजित होकर श्री व्यास न यहा तक कहा कि "चारियो को मत छिपाओ। इसस देश बदनाम होता है (विधान सभा कायवाही पृष्ठ सख्या 8556 स 8572 दिनाक 9 अप्रैल 1965) श्री व्यास अपने कथनो की पुष्टि म एक स अधिक प्रमाण प्रस्तुत किया करत थ, कभी कभी तो विधानसभा म इसस खलबली जसी स्थिति पैदा हो जाती। समाचार पत्रो का इससे अपनी सुर्खिया मिला करती थी।

विधानसभा म व्यासजी न सावजनिक हित के प्रत्यक प्रकरण पर अपने विचार प्रकट करन का काम पूरी जिम्मेदारी एव दायित्व स निभाया। प्रकरण चाहे कसा ही हो, व उस पर पूण तथ्यगत जानकारी देने अथवा प्राप्त करन म सक्रिय रहत थ। उ होने समय समय पर जो बि दु उठाये उनम शिक्षको के फ्रिक्सेशन पी डब्लयू डी एव बागायन कमचारियो के प्रमाशा स वटरनरी कालेज तथा डूगर कालेज क निर्माण काय, सस्त अनाज की दुकानें खुलवान के प्रश्न पुलिस अत्याचार आदि अनक बातें सम्मिलित थी। व्यासजी के चुनाव अभियान (1962) के समय प्रकाशित बुलटिन पुस्तिका क पृष्ठ आठ पर अकित किय गये शब्द हैं--'यदि उनके भाषणो एव प्रश्नो का ब्यौरा प्रकाशित करें तो उमस एक बडी पुस्तक बन जायेगी। विधान सभा की अधिकृत काय विवरण की 500 पुस्तकें कार्यालय म हैं कोई भी नागरिक वहा पहुचकर उनके कार्यों का लखा जोखा द सकता है।' उसी पुस्तिका म एक दो शेर भी दिय गय हैं जो इस प्रकार हैं

यू ही दुनिया म काई दुज्जनो शोहरत नही पाता
बशर का खिदमत मुल्को वतन मुमताज करती है

मुरलीधर ही इ मानियत का वह नमूना है
कि जिस इ सान पर इ सानियत भी नाज करती है

इ सानियत जिस इ सान म अपनी पूणता की छवि देखेगी, उसी पर नाज करगी। अपने लघु जीवन म पूणता की स्थिति मे पहुच पाना सब के लिए तो लगभग असभव बात है, पर यदि काई व्यक्ति अपने ही दृष्टा ता एव उदाहरणो द्वारा जीवन के कुछ मानक तय कर ले कुछ प्रतिमानो को मूर्तिमत कर सके, अग्नि परीक्षाओ म कुदन बन कर बाहर आ सके--तो वह आने वाली पीढियो का माग दशक तो अवश्य बन सकता है। राजनीति क दलदल मे ता यह कहावत चरि ताथ होती है कि "काजल की कोटरी म काहु ही सयाने जाय एक लीक काजर की लागि ह प लागि है।" पर उसम से भी बेदाग निकल आना और "जस की तस धरि दीनी चदरिया" वाली स्थिति उत्पन्न कर देना कुछ विरल मनस्वी एव सत्यनिष्ठ लागा का ही काम है। आने वाली पीढिया जब इस पीढी के कार्यो पर अपनी निर्णायक टिप्पणी देंगी ता अवश्य कहगी कि यहा एक ऐसा इ सान था जो न तो प्रलोभन के आगे कभी डिगा, न भय स आतकित हुआ और न पद एव प्रतिष्ठा के मोह म अपन पथ स विचलित ही हुआ। वह अपन जीवन काल मे लोकनायक बन चुका था। मरने क बाद जनता न उसकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए स्वेच्छा से एव बिना किसी सरकारी वित्तीय सहायता के एक नही दो दो प्रतिमाए स्थापित करक उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की।

आज बीकानेर म जितनी भी मूर्तिया है उनम से जा राजा महाराजाओ एव सठो साहूकारा आदि की है--उनक लिए ता धन की समस्या का प्रश्न ही नही रहा। जो सरकार द्वारा निर्मित की गई हैं उनका पृथक इतिहास है, पर जन उमाव के साथ निधन से धनी तक सबके सहयाग से एव दलगत राजनीति से परे रहकर सभी वर्गो न श्री व्यास की प्रतिमाओ के निर्माण म जो सहयोग दिया वह अपने आपम एक अनूठी कहानी है।

विधानसभा के दस वर्षो म प्रति वष चार माह के न्यूनतम हिसाबसे भी 1000–1200 नियमित बठकें अवश्य हुई होगी। इतनी लम्बी अवधि तक श्री व्यास के व्यक्तित्व की छाप तत्कालीन विधानसभा के अधिवेशना पर बराबर बनी रही। उनम कई बार सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव आये, कई बहिगमन के किस्से हुए, कई बार उन्ह जबरन निष्कासित किया गया और कई बार वे स्वय वाक आउट कर गये। ऐसे भी मौके आये जब भ्रष्टाचार के किसी बिन्दु पर वे अकेले ही अड गये। वे दूसरा के सहयोग का स्वागत करत थे पर उसके लिए

प्रतीक्षा करना उनको रास नही आता था । जो बात उनको कहनी होती उसके लिए उस समय चलने वाली किसी भी बहस का सहारा ले सकते थे। अध्यक्ष उन का रोकते कि 'माननीय सदस्य जो बात कह रहे है वह बहस के बिन्दु से सदर्भित नहीं है," पर वे घूम फिर कर उसी बात पर आ जाते और कहते 'अध्यक्ष महोदय मैंने जो प्रश्न उठाया है वह इस बिन्दु के अन्तर्गत ही आता है। यदि भ्रष्ट आचरण चलता गया तो बताइये उक्त बिन्दु की पूर्ति कैसे हो सकती है।" अप्रासंगिक होने का खतरा उठाकर भी श्री व्यास अपनी बात तो कह ही जाते थे।

उनके वक्तव्य तथ्यपरक घटनापरक एव पुष्ट प्रमाणपरक होते थे। लाठी चार्ज अथवा गोली काण्ड के समय वे खून से लथपथ कपडे अथवा भिन्न भिन्न स्थितियो के चित्र लाना नही भूलते थे। अकाल के समय आदिवासियो द्वारा खाई जाने वाली घास की रोटियो तक विधानसभा मे लाने और प्रदर्शित करने मे वे नही चूकते थे। उनका व्यक्तित्व बीकानेर नगर तक सीमित न रहकर पूरे प्रात के साथ जुड गया था।

विरोधी नेताओ मे से जिन चन्द लोगो के नाम श्रद्धा से लिये जाते हैं—उनमे उनका नाम प्राय पहले क्रम मे ही आता था। इसका एक कारण भी है। विधानसभा के सदस्य बनने से पूर्व और पश्चात दोनो काल मे वे फक्कड ही रहे न घर का मकान न कोई उल्लेखनीय चल अचल सम्पत्ति और न चुनाव लड पाने जितनी धनराशि ही उनके पास रही। उन्होने किराये के जितने मकान बदले राजस्थान के किसी भी शीर्षस्थ नेता के जीवन मे ऐसी विभीषिका नही आई होगी। घर का कोई समारोह हो या कोई अन्य काम—लक्ष्मी की अकृपा तो उन पर बनी ही रही। चुनाव की गाडी तो जन सहयोग से चलती रही और यह फक्कड अलमस्त मसीहा गरीबी से सीधा जुडाव रखने के कारण गरीबो की समस्याओ पर बोलता रहा, प्रदर्शन व सभाए आयोजित करता रहा लाठियो के वार सहता रहा और जरूरत पडने पर गोआ आन्दोलन मे गोलियो का सामना करते हुए निहत्था निकलता रहा।

तभी तो वे अपने जैसी कई युगीन हस्तियो के होते हुए भी इतिहास पुरुष कहलाने की स्थिति मे आये। लोगो ने उन्हे जीवन काल मे भी सम्मान दिया और मरणोपरान्त अपनी आस्था का केन्द्र बना लिया। ऐसे पुरुष युगो—शताब्दियो मे नही तो कम से कम कई दशको मे जाकर ही पैदा होते हैं।

विजय का दशक विधान सभा के बाहर की गतिविधियाँ

जन समस्याओ को लेकर सघष करने वाले तप पूत श्री मुरलीधर व्यास ने आन्दो लनो के माध्यम से पूरे राज्य को जीवन्त बनाये रखा। समस्याएँ चाहे मजदूरो और किसानो की हो अथवा अल्प वेतन भोगी कमचारियो की, श्री व्यास उन्हे उजागर करने म सदव अग्रणी रहते थे । उन्होने न तो कभी जेल यात्राओ की परवाह की और न लाठी खाने की, न झूठे मुकदमो स व डरे और न किसी प्रलोभन से विचलित ही हुए। 1957 से 1966 तक विधान सभा की सिंह गजनाएँ तो उनके व्यक्तित्व को उद्घाटित करती ही है पर व्यापक एव विपद् जनमच पर उनकी भूमिका उससे भी ज्यादा रोमाचक है।

समाजवादी नेता श्री एन जी गोरे ने व्यासजी के इन्ही गुणा से अभिभूत होकर कहा है, "स्वर्गीय मुरलीधर जी का भूलना मेरे लिए मुमकिन नही। इन जसे दृढ हृदय और पक्के इरादो के साथी और कहाँ दिखाई देते है ? उन्होन अपने परिवार की चिन्ता की न खुद के स्वास्थ्य की। राजस्थान म उन्होन ही समाजवादी विचार धारा प्रस्तुत की। उनकी स्मति को बार बार प्रणाम।"

साम्यवादी (मा) नता श्री मोहन पुनमिया न व्यासजी के गुणा को इस प्रकार से याद किया है, 'साथी मुरलीधर व्यास प्रदेश के उन गिनती के चिन्तनशील और सघषरत अग्रणी कायकताओ म से थे जिन्होने राजस्थान के सामन्ती एव जातिगत वातावरण म समाजवाद व वामपक्ष की विचार धारा की अलख जगाई। एक चौथाई शताब्दी तक एक ही लगन और धुन से उन्होने बीकानेर क्षेत्र के ही नही वरन् पूर प्रदेश के समाजवादी आन्दोलन को विकसित करने का प्रयत्न किया था। उस क्षेत्र का ऐसा कोई जन आन्दोलन नही था जिसको उन्होने नेतृत्व प्रदान नही किया हो। व्यक्तिगत जीवन म सादगी, मित्रा के बीच मिलन सारिता, सावजनिक जीवन म निडरता तथा सिद्धान्तो की कट्टरता—एसे सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी साथी मुरलीधर व्यास की देश और प्रदेश को वतमान हालत म आज कितनी आवश्यकता है यह अपने अपने ढग स उसी काम म सलग्न हम साथियो को महसूस हो रही है।"

भारतीय जनता पार्टी (पूर्व म जनसघ) क नेता श्री भरो सिंह शेखावत के विचार से "स्व श्री व्यास एक निर्भीक, ईमानदार और निष्ठावान जन नेता थ। विधान सभा म मुझे भी उनके साथ विपक्ष म काय करन का अवसर मिला था। मैंने सदव उन्ह सिद्धा तो पर अटल रहने वाला व्यक्ति पाया। उनका अभाव सदव अनुभव किया जाता रहेगा।'

समाजवादी साम्यवादी एव भारतीय जनता पार्टी क उक्त तीन नेताओ क उद्गारो म एक बात समान रूप से कही गई है और वह यह है कि व्यासजी निर्भीक, ईमानदार निष्ठावान, दृढ हृदय एव पक्के इरादा वाले चि तनशील एव सघषशील जन नेता थ।

व्यासजी की 1957 से 1966 तक की गतिविधियाँ इन सभी विचारो की पुष्टि करन वाली है। 1957 के चुनावो म बीकानेर की जनता न मुरलीधर व्यास को अपना जन प्रतिनिधि चुना था। कुल 24000 मतदाताओ न मतदान किया। उनम से आध से अधिक अर्थात् 12500 लोगो ने उनके पक्ष मे मतदान किया। शेष 6 उम्मीदवारो को कुल मिलाकर 11500 मत ही मिल पाये। जागरूक जनता का निर्णय उनके प्रति जबरदस्त स्नेह का परिचायक था। 1962 के चुनाव पूव एक विवरणिका प्रकाशित की गई। उसके अ त म निम्न पक्तिया हैं जो व्यासजी के पूरे जीवन की नुमाय दगी करती हैं—

> 'यू ही दुनिया मे कोई इज्जतो शोहरत नही पाता
> बशर को खिदमते मुल्को वतन मुमताज करती है
> मुरलीधर ही इ सानियत का वह नमूना है कि जिस
> इ सान पर इ सानियत भी नाज करती है।"

विधायक बनन के अगले ही वर्ष अर्थात् 1958 मे उ होंने जामसर जिप्सम मजदूरो के आदोलन का नेतृत्व किया तथा निर तर 60 दिना तक चलने वाली शानदार हडताल की अवधि म मजदूरो के मनोबल को बनाये रखा। हडताल इतनी कामयाब रही कि उसे उच्चतम स्तर तक गभीरता से लिया गया। तत्कालीन श्रममत्री श्री गुलजारी लाल नदा ने अपने ससदीय सचिव श्री एल एन मिश्रा को जामसर भेजा। उधर समाजवादी नेता श्री एन जी गोरे, नाथ पाई और अशोक मेहता भी बीकानेर आय। व्यासजी के सफल नेतृत्व म मजदूरो की सभी मार्गे ट्रिब्यूनल म देन के बाद मानली गई। यह अपने आप मे आदोलनो के इतिहास की एक घटना बन चुकी है। पूववर्ती अध्याय म जामसर आदोलन का विस्तृत वणन हो चुका है। यहा तो 1958 की गतिविधियो के सदभ मे इसका उल्लेख भर कर रहे है।

1957 एव 58 म विधान सभा म बीकानेर मे मेडिकल कालेज की स्थापना की माग को व्यासजी ने पुरजोर शब्दा मे रखा तथा उसे तत्काल प्रारभ करन की बात कही। उधर मेडिकल कालेज के निर्माण काय म व्याप्त भ्रष्टाचार का उन्होने जन मचो पर डटकर विरोध किया तथा नीव के काम म ली गई कच्ची इटा का कच्चा चिटठा जनता की अदालत म प्रस्तुत किया। भारत के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने एक अप्रेल 1959 को मेडिकल कालेज का शिला यास किया था। 19 अप्रेल 1959 को नव—गठित नागरिक स्वतत्रता समिति की एक विशाल सभा म भाषण देते हुए श्री मुरलीधर व्यास (विधायक) ने कहा, "मेडिकल कालेज की नीवो म कच्ची इटा को लगाकर भ्रष्टाचार किया गया है। मैंने खुद दो प्रतिष्ठित व्यक्तियो की मौजूदगी म मेडिकल कॉलेज की इटा की जाच पडताल की। हाथ म इटो का पकड कर दबाते ही वे टूट गई। उनम धूल थी जिससे यह साबित हो गया कि इटें कच्ची थी और उनको लगाकर ठेकेदार ने सरकार को धोखा दिया है।" श्री व्यास ने आगे कहा कि इस काण्ड का पर्दाफाश करने वाले समाचार पत्र "इन्कलाब" के दो पत्रकारो को हथकडिया लगाई गई 'यदि इन्कलाब म ठेकेदार का भ्रष्टाचारी और कच्ची ईटें लगान वाला कहने पर हथकडिया पहनाई गई है तो मैं भी कहता हूँ कि मेडिकल कालेज की नीवो मे कच्ची ईटे लगा कर भ्रष्टाचार किया गया है। मैं राजस्थान सरकार स कहता हूँ कि वह मुझे भी हथकडिया पहना—दे या फिर उस हथकडी लगावे जिसन भ्रष्टाचार किया है।"

श्री मानिक चद सुराणा के सयोजन म गठित नागरिक स्वतत्रता समिति की सव दलीय सभा मे प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए श्री व्यास ने पूरे काण्ड की निष्पक्ष जाँच की माग की थी जिसे उपस्थित जन समुदाय ने हाथ उठाकर अपनी स्वीकृति प्रदान की। सभा म सवश्री मानिक चद सुराणा रघुवर दयाल गोयल, रावतमल कोचर, सत्य नारायण पारीक, ताराचद सीपाणी, मदनसिंह, मूलचद पारीक, शिवकृष्ण आचाय आदि नेताओ ने अपने विचार प्रकट किय। व्यासजी ने इस काण्ड को 15 अप्रेल 1959 को विधान सभा म भी प्रस्तुत किया तथा बीकानेर म पत्रकारो के साथ अमानवीय और गर कानूनी पुलिस व्यवहार की निन्दा की। स्पीकर के यह कहन पर कि मसला विचाराधीन है, व्यासजी ने वाक आउट करके अपने विरोध को प्रदर्शित किया। प्रस्ताव के पक्ष म बोलने वाला म सवश्री गिरधारी लाल भोबिया एव सतीश चन्द्र अग्रवाल प्रमुख थे।

बीकानर म रेल्वे कमचारियो के प्रमुख आदोलन जब भी हुए सभी राष्ट्र व्यापी आदोलनो के सदभ म ही हुए थे। ऐसे दो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं–पहला 1960 मे और दूसरा 1968 मे। 1960 का आदोलन केन्द्रीय कमचारियो की राष्ट्र-व्यापी

हडताल के प्रसग म था जिसम रेल्वे, सचार, परिवहन एव अन्य केन्द्रीय विभागो के कमचारी सम्मिलित थे। 12 जुलाइ 1960 से 17 जुलाई 1960 तक चलने वाली इस हडताल ने देश की अथ व्यवस्था एव सामान्य जन जीवन को प्रभावित करके रख दिया। स्वतत्र भारत म वह अपने प्रकार की पहली बडी हडताल थी। हडताल का प्रभाव बीकानेर म पडना ही था। उत्तरी रेल्वे का प्रमुख केन्द्र होने के नाते यहा की हडताल और भी ज्यादा मुकम्मिल और असरदार रही। व्यासजी का रेल्वे कमचारियो के साथ प्रगाढ सम्ब ध था। उनके चुनावो एव अन्य जन आ दोलनो म रेल्वे कमचारी प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से हमेशा ही उनके साथ रहे। अत यह स्वाभाविक था कि ऐसे विशाल आदोलन म व्यासजी का सहयोग एव माग दशन उनको मिलता। नॉदन रेल्वे मेन्स यूनियन की वकशॉप शाखा के तत्कालीन मत्री श्रीयुत् श्रीनारायण ने उन दिनो मे व्याप्त कमचारी-असतोष एव जबरदस्त आन्दोलन का वणन इन शब्दो म किया है, ' 1960 म पहली हडताल हुई। मैं सचिव था। व्यासजी हमारे परम सहयोगी थे। मैंने भूमिगत रह कर हडताल का सचालन किया लेकिन सारा काम व्यासजी के परामश पर होता था। शहर मे धारा 144 लगी थी। डागा बिल्डिंग के पास व्यासजी को गिरफ्तार किया गया। उस समय उनके साथ दु व्यवहार भी किया गया था। बाल पकडे गये-घसीटा गया-बन्तमीजी की गई। व्यास जी ने अधिकारियो से कहा कि इस अभद्र व्यवहार की सजा तुमको भुगतनी होगी। हडताल अवधि म कुल 650 लोग गिरफ्तार किये गय जिनम 562 रेल्वे कमचारी थे। शेष अ य केन्द्रीय कार्यालयो के लोग थे। गिरफ्तार होने वालो म कामरेड श्रीकृष्ण, हरिराम कश्यप, भरतसिंह सैगर जब्बर अली आदि मुख्य थे। उन दिनो सभाओ पर प्रतिबध था-राष्ट्रपति के अध्यादेश से हडताल को अवध घोषित कर दिये जाने से हम अपने पर्चे भी छपा नही सकते थे। 'साइक्लोस्टाइल्ड' प्रतियो से ही काम चलाना पडता था। हमारी हडताल म व्यासजी द्वारा दिये गये सहयोग को हम भुला नही सकते। रेल्वे कमचारियो की उन्होने सहायता की और कमचारियो ने उनका साथ दिया। मजदूर दिवस (एक मई) और यूनियन स्थापना दिवस (26 जून) को प्रतिवष हम लोग उन्हे बुलाते और भाषण करवाते। हम उनकी चुनाव सभाओ की व्यवस्था करते और जुलूसो मे सम्मिलित होते थे।'

1958 को जामसर मजदूरो की हडताल, 1959 मे मेडिकल कॉलेज भ्रष्टाचार काण्ड तथा 1960 म केन्द्रीय कमचारियो की के सदभ मे व्यासजी की भूमिका से स्पष्ट हो जाता है कि वे मजदूरो और अल्प वेतन भोगी कमचारियो के प्रबल समथक और हितैषी थे। भ्रष्टाचार के किसी भी प्रकरण को किसी भी हालत म बरदाश्त नही करते चाहे उनको उसके लिए कितना ही सघष क्यो न करना पडे। प्रतिकूल

परिस्थितियाँ उनके पौरुष को निखारती थी, चुनौतियां उनको और अधिक दृढ बनाती थी और संघर्ष उनके व्यक्तित्व के पोर पोर को उद्घाटित करता रहता था। राज्य, धन और धर्म ये तीन सत्ताएँ होती है। व्यासजी को न तो राज्य सत्ता डिगा सकी और न धन की ताकत ही उन्हें विचलित कर सकी। धर्म का अर्थ उनके लिए केवल कर्त्तव्य था। 'ड्यूटि' के प्रति वे सदैव सतर्क थे और जन सेवा का व्रत ही उनकी जीवन पर्यन्त 'ड्यूटि' रही। जन सेवा ही उनका धर्म था। धर्मान्धता की अन्धी ताकतें उनके आगे टिक ही नही सकती थी। एक नही ऐसे अनेक उदाहरण है जब एक एक करके या सम्मिलित रूप से ये ताकतें उनके आगे परास्त हुई है। दिन-हीन एवं गरीबो के नेता व्यासजी जीवन पर्यन्त जन जन की आकाक्षाओ के प्रतीक बने रहे।

व्यासजी की चेष्टा रहती थी कि नारी जाति को जागृति की मुख्य धारा से जोडा जाए। वे जानते थे कि उपेक्षित, उदासीन और तिरस्कृत महिलाएं समाज में अपना वर्चस्व कभी भी नही रख सकती। यदि उन्हे अपना स्थान बनाना है तो आगे आना ही होगा। यही कारण है कि व्यासजी अपने हर आदोलन में महिलाओ को साथ लेकर चले। उनके एक सहयोगी श्री मोहनलाल सारस्वत (रतनगढ) का मत है कि व्यासजी ने जिस प्रकार रतनगढ आदोलन चलाया और नारी शक्ति को जागृत किया वह अपने आपमें एक उदाहरण बन गया है। उनके शब्दो में "स्वर्गीय व्यासजी का मुझसे निकट सबध रहा है। उनके साथ मैं राजस्थान विधान सभा में 1957 से 1962 तक रहा। उनसे मिलना जुलना तथा पारिवारिक सबध थे। रतनगढ में सन् 1960 मे जो जन आन्दोलन चला था उसका नेतृत्व श्री व्यासजी ने ही किया। उस समय हम सब जेल में थे। उन्होने इस आन्दोलन का नेतृत्व करके जिस प्रकार महिलाओ मे जागृति लाये वह अविस्मरणीय है। वे रात-दिन दीन हीनो की सेवा में लगे रहते थे। वे वास्तव में गरीबो के नेता थे। उनकी सब से बडी विशेषता थी कि जहा कही अत्याचार हो, उनको सूचना मिलते ही पहुँच जाते थे और निर्भीकता से उन परिस्थितियो का सामना करते थे। चुरू जिले के प्रत्येक आन्दोलन का उन्होने सचालन किया। घेराव किये और बार बार गिरफ्तारिया दी।"

देखा जाय तो 1955 से 1960 तक का समय व्यासजी की प्रान्त-व्यापी लोकप्रियता, नेतृत्व कुशलता एव सजगता का काल है। अपने दल के प्रातीय मत्री तो वे 1955 से पूर्व ही बन चुके थे। पूरे राजस्थान मे दल की चुनावी गतिविधियो का सचालन उनके नेतृत्व मे ही होता था। फिर चाहे वे ग्राम पचायतो के चुनाव हो नगरपालिकाओ के हो अथवा विधान सभा के।

बूदी के म्यूनिसिपल चुनाव में श्री व्यासजी ने 16 जनवरी 1955 को वहाँ की आम सभा में कहा "जनतत्र मे चुनाव नियमो का उल्लघन अनैतिकता की पराकाष्ठा है।

राजस्थान के चुनावो म भी नियमा का खुल कर उल्लघन हो रहा है। इा चुनावा मे सरकारी कमचारिया का दुरुपयोग, लाल फीताशाही का दवाव, सत्ता वल एव धन-वल का प्रयोग तया निर्धारित चुनाव राशि से तीस पच्चास गुाा अधिक खच आदि की यदि निष्पक्ष जाच की जाय तो हर चुनाव अनियमित सावित हो सकता है। विराधी दला के पास धन का इतना अभाव है कि इन सव के खिलाफ 'इलक्शन पिटीशन' नही कर सकते। फिर भी नागरिका को इस विरोध म जागरूक होकर लडना अत्य त आवश्यक है। तारीख 15 जनवरी को मन जव वूदी के म्यूनिसिपल चुनावा को देखा तो मुझे वडा आश्चय हुआ। इन छोटे चुनावा म राजस्थान के मत्रिया का जमघट, वल प्रयोग और धन प्रयोग जिस तरह स हुआ उसे देखकर हर नागरिक दाँतो तले अगुली दवा सकता है। राष्ट्रीय झण्ड लगी हुई मोटरें घूमती रही। घर-घर जाकर नागरिका को दवाया गया। एक डिप्टी मिनिस्टर ने आम सभा म कुरान की आयतें पढकर कहा कि हुकूमत का साथ देना हमारा मजहव सिखाता है। यह जनतत्र की हत्या ही नही, विचारो की हत्या है।"

उसी दिन (16 जनवरी) दोपहर को कोटा नगर म एक वृहद तागा जुलूस भी निकाला गया था जिसका नेतृत्व प्रातीय मत्री, श्री मुरलीधर व्यास ने किया। यह जुलूस मोटर स्टेण्ड से कथूनी पोल टिपटा, पाटन पोल, वजाज खाना, रामपुरा, लाडपुरा होता हुआ कलेक्टर की कोठी तक पहुचा। जुलूस म कोटा वूदी परिक्षेत्र के सभी महत्वपूण नता सवश्री हीरालाल जन, महावीर प्रसाद शर्मा, मदनलाल पाटनी, कालिचन्द्र जन आदि सम्मिलित थे। श्री मुरलीधर व्यास ने अपने प्रेरणाप्रद भाषण म तागो इक्का का राजस्थान व्यापी सगठन वनान का आह्वान किया। कोटा शहर मे तागा का इतना लम्वा और सगठित जुलूस पहले नही निकला था।

उसी साल 26 जनवरी से भरतपुर म किसान सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ जिसका नेतृत्व राजस्थान समाजवादी पार्टी के सयुक्त सचिव श्री राम किशन ने किया। इसम दस गावा के भूमिहीन किसाना ने 'वजर भूमि पर हल चलाओ' माग के अ तगत जमीन पर ईख उगान क अभियान का सूत्रपात किया। सघप समिति के आह्वान पर एक हजार से अधिक स्वय सवका की भरती की गई। दल के प्रातीय नेताओ न भरतपुर आ दोलन का गति दन क लिए किसानो को उदवोधित किया। श्री मुरलीधर व्यास उनम अग्रणी थे।

1958 एव 1960 मे प्रजा समाजवादी पार्टी ने दो प्रान व्यापी आ दोलन किये जिनम हजारा व्यक्तिया न भाग लिया तथा सकडा व्यक्ति जेला म भेजे गये। य आ दोलन जनता की समस्याओ को लकर किय गय। हीरालाल जन (सस्थापक,



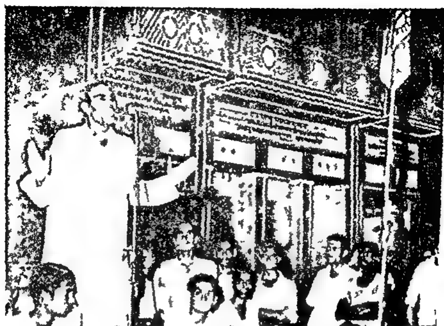
लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास फड बाजार बीकानेर म एक महती चुनाव सभा म जनता का आह्वान कर रहे है।
दूर दूर तक अपार जन-समुदाय तालियो की गडगडाहट से व्यासजी की जय जयकार कर रहा है।



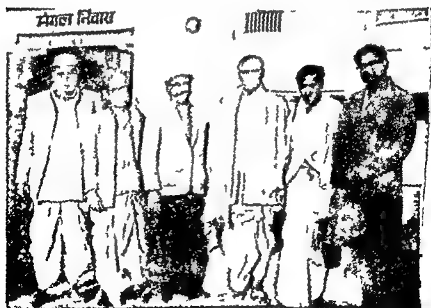
लोकनेता श्री व्यास के नेतृत्व में बीकानेर के सिंहद्वार कोटगेट के आर-पार जन समुदाय के जुलूस का एक दृश्य

सरदारशहर जनसभा मे मच पर भोमपांडियों के लोक चेतनात्मक गीतो का आनन्द लेते हुए दलबल सहित स्व श्री मुरलीधरजी व्यास प्रबुद्ध श्रोता मुद्रा मे तल्लीन ।

सरदारशहर की एक महती जनसभा को सबोधित करते हुए लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास। पास मे बैठे है श्री सोहनलाल डागा ।



लोकनेता स्व. श्री मुरलीधर व्यास प्रजा समाजवादी पार्टी सरदारशहर द्वारा आयोजित महती चुनाव सभा में युवा जनता को संबोधित कर रहे हैं।

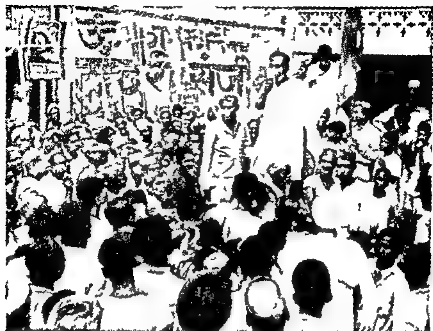


लोकनेता स्व. श्री मुरलीधर व्यास सरदारशहर में (सन् 1967)। सर्वश्री सोहनलाल डागा, भगवानदास साकल, अक्षयचन्द्र घानवी, नीमपाड़िया एवं सत्यनारायण पुरोहित पास में खड़े हैं।

लोकनेता स्व. श्री मुरलीधर व्यास साथी माणकचन्द सुराणा के साथ अकाल में मजदूरों को रोटी रोजी और रोजगार की माग को एक महती रैली का नेतृत्व कर रहे है।

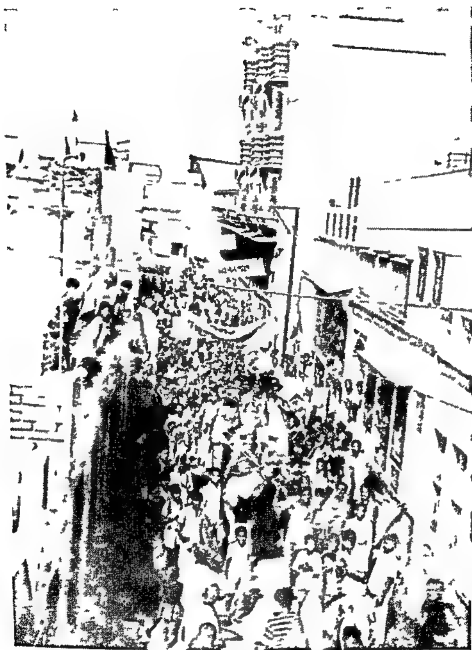


श्री दविया महाराज व्यास व्यायाम शाला मे लोकनेता स्व. श्री मुरलीधर व्यास का स्वागत करते हुए। पास में खड़े है श्री सुरेन्द्र शर्मा।



रतनगढ रेलव स्टशन पर एक महती जनसभा को सबोधित कर रहे है श्री मगनलाल बागडी
और साथ मे है लोकनेता स्व मुरलीधरजी व्यास

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास सरदारशहर म एक महती
जनसभा को सबोधित करत हुए।

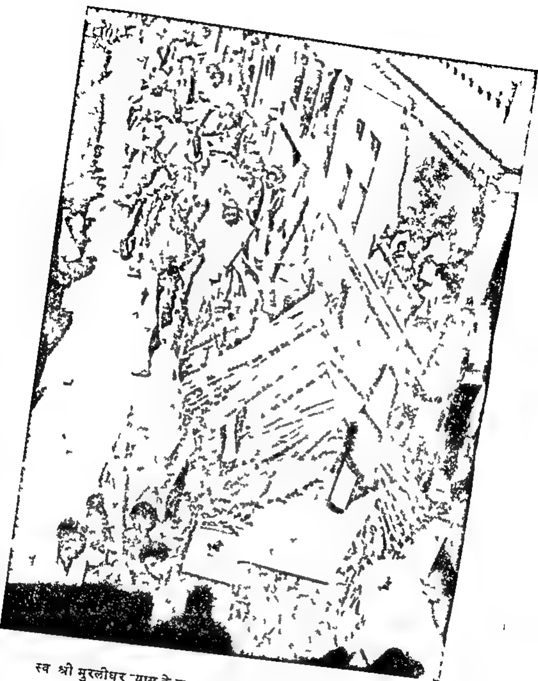


बीकानर नगर म लाकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास के एक चुनाव अभियान का लम्बा जुलूस जन जागरण की अलख जगाता हुआ आगे बढता दिख रहा है ।





जामसर मजदूर आदोलन के सदम म जेल के सीखचा म जननता स्व
श्री मुरलीधर व्यास की एक क्रातिकारी झाकी



स्व श्री मुरलीधर व्यास के चुनाव अभियान की एक भव्य शोभा यात्रा।
प्रिय चुनाव चिह्न झोपडी का आह्वान।



जामसर मजदूर आदोलन के सदर्भ म जेल के सीखचा म जननेता स्व
श्री मुरलीधर व्यास की एक क्रातिकारी झाकी



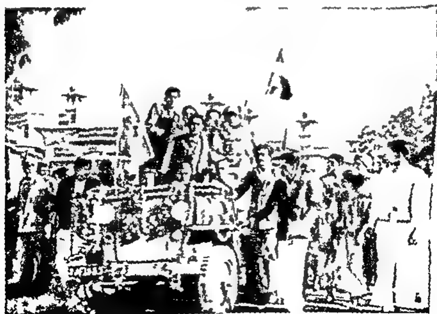
स्व श्री मुरलीधर व्यास के चुनाव अभियान की एक भव्य शोभा यात्रा।
प्रिय चुनाव चिह्न झोपड़ी का आह्वान।

श्री मुरलीधर व्यास के साथ समाजवादी दल के कुछ सक्रिय सदस्य ।
बायें से श्री शिवकिशन बिस्सा, श्री नेमीचंद बिस्सा, स्व श्री शंकरलाल सुथार,
श्री मुरलीधर व्यास, श्री ईश्वरकुमार व्यास तथा श्री बालकृष्ण आचार्य ।



ऊपर (खड़े हुए) सर्व श्री मूलचंद पारीक, मुरलीधर व्यास, प्रभुदयाल रंगर तथा
मध्य (बायें से) सर्व श्री कालूराम हटीला, अभयचंद्र शर्मा एवं द्वारकाप्रसाद पुरोहित

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास के नेतृत्व म जामसर जिप्सम मजदूर यूनियन के नेता हाथो मे हथकडियाँ खनखनाते नाचते गाते अपनी मागो को पुरजोर बुलदी से अभिव्यक्त कर रहे है। साथ म है श्री राधेश्याम गौड।



बीकानेर रलव स्टेशन पर श्री नाथ प का भव्य शोभा यात्रा आग बढ रही है। जीप चालक स्वय लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास जीप को आग बढा रहे हैं।

श्री मुरलीधर व्यास के साथ समाजवादी दल के कुछ सक्रिय सदस्य ।
बायें स श्री शिवकिशन बिस्सा, श्री नेमीचद बिस्सा, स्व श्री शकरलाल सुथार,
श्री मुरलीधर व्यास, श्री ईश्वरकुमार व्यास तथा श्री बालकृष्ण आचाय ।



बायें स (खडे हुए) सव श्री मूलचद पारीक, मुरलीधर व्यास प्रभुदयाल रगर तथा
दूसरी पक्ति म (बायें से) सव श्री कालूराम हटीला, अभयचद्र शर्मा एव द्वारकाप्रसाद पुरोहित



एक निश्छल गभीर मुद्रा म युवा जननेता श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर क शिखरचद सुराना के सग्रह स प्राप्त)



स्व श्री मुरलीधर व्यास गणवेश म



लाकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास गणवश म सलामी लत हुए



स्व श्री मुरलीधर व्यास एक भाव मुद्रा म

राजस्थान समाजवादी दल) ने 'लोक जीवन' जयपुर के गणतन्त्र विशेषांक (1965) में इन आन्दोलनों का वर्णन किया है।

बीकानेर के आंदोलनों के इतिहास में 1958 की 29 दिवसीय हरिजन हड़ताल भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। हड़ताल का प्रारंभ भ्रष्टाचार के एक प्रकरण से हुआ। एक सफाई इन्सपेक्टर के भ्रष्ट आचरण के प्रश्न को लेकर हरिजन नेता एवं म्यूनिसिपल कर्मचारी श्री चांदाराम अपने 6 साथियों सहित भूख हड़ताल पर बैठ गये। सफाई इन्सपेक्टर को मुअत्तल नहीं किये जाने पर दिनांक 23 जुलाई 1958 में नगरपालिका के समस्त कर्मचारियों एवं हरिजनों ने हड़ताल करदी। पूरा शहर सड़ांध से ग्रस्त हो गया, बीमारियां फैलने लगी और जनजीवन दूभर हो गया। मोहल्ला समितियों, सेवादल के स्वयं सेवकों एवं जोधपुर व अजमेर से आये हुए सफाई कर्मचारियों के प्रयत्न भी स्थिति में कोई मूल भूत अन्तर नहीं ला सके।

श्री ज्वाला प्रसाद, तत्कालीन अध्यक्ष नगर पालिका अजमेर, अपने साथ हरिजनों का दल एवं उपकरण लेकर आये। सफाई शुरु होते ही हरिजन महिलाएँ ट्रैक्टरों के आगे लेट गईं—कहा, ट्रैक्टर चलाना हो तो हमारी छातियां पर से चलाओ। इस क्रम में कइयों के साथ मारपीट और दुर्व्यवहार भी हुआ।

1 अगस्त 1958 को दाँती बाजार में आयोजित आम सभा में विधायक मुरलीधर व्यास ने कहा "नगर की सफाई का दायित्व नगर पालिका पर है वह उसे निभाने में सर्वथा असफल रही है। एक भ्रष्ट अधिकारी को मुअत्तिल करने के स्थान पर उसने शिकायत कर्त्ता को ही मुअत्तिल कर दिया। वह अनियमित तथा निंदनीय है।"

सरकार ने हड़ताल को अवैध घोषित कर दिया था। नगरपालिका कर्मचारी संघ की मान्यता रद्द कर दी गई एवं 37 कर्मचारी हिरासत में ले लिये गये। व्यासजी ने कर्मचारियों के विरुद्ध दमनकारी कदमों की निंदा की। अन्य प्रमुख नेता और संघर्ष समिति के सदस्य थे सर्वश्री मानिक चंद सुराणा, पूर्णानंद व्यास, ताराचंद सीपानी, रोशन लाल, चांदरतन आचार्य, प्रकाश गुप्ता एवं भंवर लाल स्वर्णकार। 20 अगस्त' 58 के तत्कालीन सांसद पन्नालाल बारूपाल एवं कन्हैया लाल बालमीकि के प्रयत्नों से हड़ताल समाप्त हुई। सभी गिरफ्तार साथी छोड़ दिये गये। मुकदमे उठा लिये गये, सफाई इन्सपैक्टर का किसी अन्य पद पर स्थानान्तरण करके जांच प्रारंभ कर दी गई तथा हड़ताल अवधि का वेतन आर्थिक सहायता के नाम पर स्वीकृत कर दिया गया। दोनों सांसदों ने भी अपनी विज्ञप्ति में वही बातें कही जो संघर्ष समिति के नेता कहते आये थे।

चुनाव पूर्व वर्ष 1961 में विभिन्न प्रत्याशियों के दावों एवं उनको मिल सकने वाले जन समर्थन का जायजा लेने के लिए सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री अशोक मेहता बीकानेर आये। उन्होंने सम्भावित प्रत्याशियों एवं उनके समर्थकों के अतिरिक्त विभिन्न प्रतिनिधि मण्डलों व सामान्य जनों से बातचीत की तथा निर्णय किया कि श्री मुरलीधर व्यास ही ऐसे प्रत्याशी हैं जिन्हें आगामी चुनाव (1962) में विजय प्राप्त हो सकती है। उन्हें प्रबल जन समर्थन प्राप्त है। श्री अशोक मेहता की अनुशंसा के आधार पर प्रजा समाजवादी दल की राष्ट्रीय समिति ने श्री व्यास को प्रत्याशी बनाये जाने पर अपनी स्वीकृति प्रदान की और उधर व्यास ने अपने प्रबल प्रतिद्वन्दी कांग्रेसी प्रत्याशी श्री मूलचंद पारीक को हरा कर अशोक मेहता के निर्णय की सार्थकता को सिद्ध कर दिखाया।

व्यासजी को बीकानेर का जन प्रतिनिधित्व करने के लिए 26 फरवरी 1962 को एक और अवसर मिला। लगातार दूसरी बार विधायक चुनकर बीकानेर की जनता ने उनके प्रति अपना स्नेह एवं विश्वास प्रकट किया।

बीकानेर विधान सभा क्षेत्र के निर्वाचन अधिकारी का प्रमाण पत्र अविकल रूप से दिया जा रहा

I Returning officer for Bikaner Assembly constituency in the State of Rajasthan hereby certify that I have on the Twenty Sixth day of February 1962 declared SHRI MURLIDHAR VYAS of BENISAR WELL BIKANER to have been duly elected by the said constituency to be a member of the Legislative Assembly and that in token thereof I have granted to him this certificate of election

Sd/-

Place Bikaner — Returning officer
Date 26 2 62 — SEAL — for the Bikaner Assembly Constituency

इस प्रमाण पत्र को यहां देने का मुख्य आशय एक और भी है। व्यास जी ने इस प्रमाण पत्र को भी सजावट की तरह कहीं नहीं रखा उसे कहीं फाइल में डाल दिया। फिर उसी की पीठ पर विधानसभा में उठाये जाने वाले बिन्दुओं का सारसंक्षेप लिख लिया। उनके हाथ से जो बिन्दु इस पर लिखे गये हैं उनमें हनुमानगढ़ में फर्टीलाइजर प्लांट चलाना, सिंचाई जल व्यवस्था कृषि विश्वविद्यालय गंगानगर छोटे कम

चारियो को लाभ, तीसरी योजना की प्राथमिकताए, प्रति व्यक्ति आय आदि कई वि दु हैं। उनकी पंजिकाओ म तथा इधरे बिखरे पन्नो मे ऐसे अनेक पन्ने मिल जायेगे जिन पर आगे पीछे उनके हाथ से ऐसे कई वि दु लिखे हुए है। इससे यह जाहिर होता है कि व्यास जी हर समय व्यस्त रहते थे जहा जो याद आया उसे वही उसी क्षण लिख लिया। चिट पर, कागज पर फाइल पर यहा तक कि महत्वपूर्ण दस्तावेज के आगे पीछे कही पर भी वे जरूरी बात लिख कर रख लेते और फिर उसे पूरे जोर से सभाओ म जुलूसो म आपसी बातचीत म और विधानसभा मे उठाते।

व्यासजी ने निष्ठावान कार्यकर्ताओ का एक विशाल समूह तयार किया था। ये कार्यकर्ता बिना किसी लाग लपेट अथवा स्वार्थ के उनके लिए रात दिन तत्पर रहते थे। चुनावो से पूर्व रात रात भर जागकर पोस्टर चिपकाना मचो की व्यवस्था करना घर घर जाकर प्रचार करना, प्रतीक स्वरूप छोटी छोटी झोपडिया (चुनाव चि ह) बनाकर जगह जगह रखना, लोगो की जेबो पर बिल्ले लगाना, लाउड स्पीकर से दिन भर प्रचार करना और अपना काम धधा छोडकर पूरे समय सम्पूर्ण निष्ठा से काय करना इन कार्यकर्ताओ की विशेषता थी। व्यासजी भी अपने कायकर्ताओ पर जान योछावर करते थे। किसी का भी कही भी किसी भी परिस्थिति मे कोई काम पड जाए, वे आधी रात को भी उसके लिए तयार रहते थे। उ होने कभी ना करना नही सीखा। इक्के तागे वाला हो व्यापारी हो या सरकारी कमचारी सभी के लिए हर समय तत्पर रहने वाले व्यासजी ने अपने व्यवहार से ही सबको 'अपना' बना रखा था।

राजस्थान के पूर्व गृहमत्री प्रो केदारनाथ के अनुसार व्यास जी को कायकताओ से प्रगाढ स्नेह था। उ होने निष्ठावान कायकर्ताओ का एक मजबूत समूह तयार किया जो जन जागृति के अभियान म हमेशा उनके साथ रहा। वे विशेषत साधारण परिवारो के लडको को कायकर्ता बनाते थे। उनके सामने जो समाज था उसम अधिकाश लोग अनपढ, धम व म के खाचो मे विभाजित एव पुरानी विचारधारा के लोग थे। व्यासजी ने ऐसे पारम्परिक समाज म जागृति पैदा करके उसे राष्ट्र की मुख्य धारा से जोडा। बीकानेर नगर का यह उनकी बहुत बडी देन है।

व्यासजी अपने सम्पूर्ण क्षेत्र के विकास के लिए अत्यधिक सजग एव क्रियाशील रहते थे। 7 अप्रेल 1962 को उ होने जन प्रतिनिधियो की एक विशेष बठक म भाग लिया जो तत्कालीन सासद डा करणीसिहजी की अध्यक्षता म सम्प न हुई थी। बठक म गगानगर कृषि विश्वविद्यालय की माग का पुरजोर समथन किया गया। गगा-

नगर मे कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए जो ठोस आधार दिये गये वे निम्नानुसार है —

1 गगानगर म गगनहर भाखरा एव राजस्थान नहर से जलआपूर्ति होती है अत सिंचाई एव उत्पादन की दृष्टि से यह जिला राजस्थान म अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

2 गगानगर के सूरतगढ म राजकीय कृषि फाम पहले से ही स्थित है जिसके विस्तार की प्रबल सभावनाए है।

3 प्रयोग एव शोधकर्ताओ के लिए इस क्षेत्र म सभी सुविधाए उपलब्ध है और पशुओ के फाम एव दुग्ध शालाओ की स्थापना के लिए भी यह जिला एक आदश स्थल है।

4 राजस्थान के अ य क्षेत्रो मे विकास होता रहा है अत पूरे राजस्थान के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि गगानगर म कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय।

सभागियो म डा करणीसिंहजी एव मुरलीधर व्यास के अतिरिक्त मोहरसिंह राठौड (विधायक चुरू) मानिक च द सुराणा, केदारनाथ (गगानगर) फतहसिंह हरिशकर लक्ष्मणसिंह रूपाराम, जुगल एव रामकिशन आदि सम्मिलित थे।

बठक म यह माग की गई कि बीकानेर लूनकरनसर क्षेत्र मे प्रस्तावित सुरक्षा सेनाओ क प्रयोग क्षेत्र *(आर्टीलरी रेंज) को अ यत्र निर्धारित किया जावे क्योंकि बीकानर* जस विकासमान शहर की आवश्यकताओ एव राजस्थान नहर के कारण कृषि उत्पान्न क्षेत्र म विकास के कारण यह क्षेत्र सुरक्षा प्रयोगो के लिए अनुपयुक्त है। बठक म स्पष्ट किया गया कि सुरक्षा के प्रश्न को सभी सभागी उच्चतम महत्व देते है पर इसके लिए जोधपुर जिले के आतरिक क्षेत्र एव मध्यप्रदेश के कई क्षेत्र अत्य त उपयुक्त है। बीकानर जस पिछडे हुए जिले म राजस्थान नहर के कारण विकास की जो सभावनाए बनी है उसका निर्बाध लाभ उसे मिलना ही चाहिए। दोनो प्रस्तावो पर बीकानेर, चुरू एव गगानगर क जन प्रतिनिधियो एव महत्वपूण नेताओ न हस्ताक्षर किय थे पर सबसे ऊपर दो हस्ताक्षरकर्ता थ डा करणीसिंहजी (सासद) एव मुरलीधर व्यास (विधायक)

एक तरफ सभाओ और जुलूसो म सक्रिय नेतृत्व करना, दूसरी ओर विधान सभा म जनता के व्यापक हित क प्रश्नो को पूरी शक्ति से उठाना और तीसरी तरफ जन प्रतिनिधियो को एकत्रित करके अपन क्षेत्र के विकास क लिए तत्परता दिखाना- ये सभी व्यासजी के बहु आयामी व्यक्तित्व के हिस्से थे। विधान सभा म प्रामाणिक

जानकारी रखने के लिए व्यासजी को पूरा 'फीड बक' मिलता था। पलाना कोलरी मजदूर यूनियन के अध्यक्ष श्री अर्जुनराम का 4 सितम्बर 1963 का पत्र दृष्टव्य है। "आज सवाद पत्रो से यह जानकारी प्राप्त हुई कि आपने पलाना खान म काम म ली जा रही कच्ची पक्की ईंटा का मामला ध्यान दिलाव प्रस्ताव के अतगत विधान सभा म रखा था परन्तु अध्यक्ष ने विस्तारपूवक कायवाही के लिए इट पेश करने की अनुमति नही दी। इस सम्ब ध मे विधान सभा म जो कुछ बहस हुई उसकी रिपोट की प्रतिलिपि यदि आप लौटती डाक स यहा भेज सकें तो हमारे लिए यह सभव होगा कि हम उन सारी बातो को ध्यान म रखते हुए आपके पास विस्तार-पूवक रिपोट भेज सके। इसके लिए आप लौटती डाक से हम कायवाही की नकल भिजवाए। आपने हाउस म जो कुछ प्रयत्न किया है, उसकी हम कद्र करत ह।' (पी सी एम यू। 591। बी। 2078। 63 दिनाक 4-9-63)

विधानसभा म जन प्रतिनिधित्व करते हुए भी व्यासजी मजदूरो के व्यापक हित म कितने रुचिशील थे-इसका एक उदाहरण सिंदडी फर्टीलाइजस फील्ड वकस यूनियन जामसर के श्री एम एल गुप्ता के पत्र के निम्नाकित उद्धरण है-

'एक पत्र आपको पहले भी दिया था। आशा है मिला होगा। कृपया तकलीफ करके पता करें कि केस रफरे स का क्या हुआ और गवनम ट इस विषय म क्यो उदासीन है? क्या हम फिर हडताल करनी होगी? अगर ऐसा है तो कृपया लिखें कि कब तशरीफ ला रह हैं ताकि तयारी शुरू करें हम सब की ओर स चरण व दना' विधान सभा के सदस्य होते हुए भी वे केवल सदन की कायवाहियो तक सीमित नही रहते थे। व तो सदा सक्रिय राजनीति म विश्वास रखते थे। जनता की मागा क लिए सघष करन म और आवश्यक हो तो आ दोलन करने और जेल जाने म विश्वास करते थे। फिर चाहे वह बीकानेर का आ दोलन हो या चूरू, गगानगर अथवा प्रात के किसी भी हिस्स का हो— व्यासजी उसके सचालक के रूप मे कमान अपने हाथो म ले लेते थ। सितबर-अक्टूबर 1964 का चूरू का व्यापक जन असतोष एव उसम उनका नेतृत्व इस बात का ज्वलत उदाहरण है। वे उस समय तक चन नही लते थे जब तक जनता की समुचित मागे नही मान ली जाय अथवा आ दोलना म होने वाले बबर व्यवहार की जाच की व्यवस्था नही की जाय।

3 अक्टूबर 1964 चूरू का पूरा जन जीवन अस्त यस्त हो चुका था गत दिनो हुए लाठी चाज के कारण पूण हडताल विशाल जुलूस जिलाधीश कार्यालय की ओर बढ रहा था। नेतृत्व कर रहे थे श्री मुरलीधर व्यास। दस हजार लोगो के इस विशाल जुलूस का सम्बोधित करते हुए उ होने जिलाधीश कार्यालय के सामने आयोजित सभा म कहा—

'यह भण्डा देश के गणराज्य की निशानी है। भारत के संविधान म हमे बुनियादी अधिकार दिये है कि हम अपने याय सगत अधिकारो के लिए आ दोलन करें, बोल और लिखें। कानून को आप स्वय ही तोडते है। निहत्थी भीड पर आपकी पुलिस ने लाठी चाज किया। किसी न पत्थर नही मारा। हम इसकी यायिक जाच की माग करते हैं। (युवक, रतनगढ 6-10-64)

व्यासजी के नेतृत्व म महिलाए भी जल जाने अथवा किसी भी जुल्म का प्रतिकार करने मे आगे रहती थी। जुलूस म महिलाओ का जत्था भी था। विशाल जन समुदाय गगन भेदी नारे जत्थो म गिरफ्तारिया नगर म आम हडताल व्यासजी के साथ हाथापाई जनरोष म उबाल दूसरे दिन हडताल का और अधिक व्यापक प्रसार एव अतत व्यास, जी की गिरफ्तारी। गिरफ्तार होने वालो म मुरलीधर व्यास, चौधरी नरेन्द्रपाल सिंह एव चपालाल उपाध्याय प्रमुख थे। लगभग 150 कायकर्ता भी गिरफ्तार किये गये। श्री माणकचद सुराणा की रहनुमाई म आ दोलन बल पकडता रहा। अतत जाच की माग माननी पडी। 6 अक्टूबर 64 को राज्य सरकार के विशेष आदेश से व्यासजी और उनके साथ राजगढ और चुरू जेल म बद अ य लोगो को बिना शत रिहा कर दिया गया।

1964 म पोकरण तहसील म नमक क्षेत्र के 30 से 90 एकड तक भूमि के आवटन का प्रश्न सामने आया। पूववर्ती जागीरदारो को इस नमक बहुल समृद्ध क्षेत्र म ठेके के आधार पर भूमि का आवटन किया जाने लगा। इससे ग्राम सलार बाप और पोकरण के गरीब निवासियो के हितो पर कुठाराघात हो रहा था। व्यासजी न इस आवटन को नयी जागीर प्रथा की शुरुआत की सजा दी तथा गरीब निवासियो के हितो म माग की कि 5 से 10 एकड के छोटे छोटे भू खण्ड छोटे और मध्यम दर्जे के नमक उत्पादको को आवटित किये जावे तथा उनको इस काय के लिए ऋण भी दिये जावें। भू-खण्ड उसी को मिलना चाहिये जो आवेदन के क्रम म वरीयता म आता हो। इससे गरीब ग्रामीणो को रोजगार के अवसर प्राप्त होग।

व्यासजी न श्री रतनलाल पुरोहित एडवोकेट जोधपुर के साथ इस प्रसग पर तत्कालीन उद्योग मत्री राजा हरिश्चद्र से मुलाकात की तथा बाद म इस प्रकरण को विधान सभा म भी उठाया। राजस्थान के मुख्य मत्री एव भारत सरकार के नमक आयुक्त को भी पत्रो द्वारा अवगत रखा गया तथा सासद डा करणी सिंहजी से आग्रह किया गया कि वे छोटे एव मध्यम श्रेणी के नमक उत्पादको के हितो की लोकसभा मे पैरवी करें।

चौधरी हरदत्त सिंह के स्वर्गवास से रिक्त हुई भादरा नोहर विधान सभा सीट के लिए विरोधी दलों के आग्रह पर 4 अप्रेल, 1965 को एक आम सभा भादरा में आयोजित की गई जिसे व्यासजी ने सम्बोधित किया। सभा में श्रीयुत् श्री भगवान बिरानी, सूरजमल यादव (पूर्व प्रधान भादरा पंचायत समिति) सत्यनारायण सर्राफ तथा रामसिंह बाबू (पूर्व विधायक) आदि लोगों के भी भाषण हुए तथा विरोधी दलों की ओर से संयुक्त रूप से एक ही उम्मीदवार के चयन पर विचार किया गया। इसी तरह व्यासजी ने भादरा निवासियों की जल समस्या को जन सभाओं और विधान सभा में उठाया। श्री सूमरमल अध्यक्ष, नगरपालिका भादरा ने पत्रों द्वारा केन्द्रीय स्तर तक यह प्रकरण भेजा था पर उसे व्यासजी के सहयोग से ही बल मिल सका। श्री सूमरमल ने अपने 26-2-65 के पत्र में लिखा था 'प्रस्तुत पत्र के साथ कस्बा भादरा के नागरिकों को जो पानी पीने के लिए मिलता है, उसका एक नमूना भेज रहा हूं। कृपया इसका एक घूंट पान करने का कष्ट करें। पीने पर ज्ञात होगा कि जिस पानी को पशु भी पीना पसन्द नहीं करते उसे भादरा के 15 हजार लोग सेवन करने के लिए विवश हैं।'

प्रकरण कहीं का हो, व्यासजी उसके लिए अपने प्राण पण से जुट जाते थे तथा उस समय तक चैन नहीं लेते थे जब तक उसकी पूर्ण जांच नहीं हो जाती और उपचारात्मक उपाय नहीं किये जाते।

1965 में बीकानेर परिक्षेत्र में भयंकर रूप से चेचक का रोग फैल गया। व्यासजी ने इस क्रम में चिकित्सा अधिकारियों और सरकार का ध्यान दिलाया तथा अनेक जन सभाओं में आह्वान किया कि नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए इस रोग की शीघ्र रोक थाम जरूरी है। सरकार की ओर से इस बात की जांच करने के लिए श्री पी एल ऋषि, सचालक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की गई। समिति को यह देखना था कि चेचक की रोकथाम के लिए समय पर कार्यवाही की गई या नहीं। भविष्य में चेचक नहीं फैले, इस संबंध में भी उसे अपने सुझाव देने थे। श्री ऋषि के 2 मार्च, 1965 के पत्र के आधार पर व्यासजी ने सभी संबंधित लोगों से मुलाकात करके अपने सुझाव दिये तथा बताया कि चेचक के उन्मूलन के लिए शहर में व्याप्त गंदगी का हटाया जाना अत्यावश्यक है। अपने पत्र में श्री ऋषि ने व्यासजी को लिखा था "मुझे कमेटी की तरफ से आपको इस काम के लिए खास तौर पर निमन्त्रित करने का आदेश मिला है। अतः आप कृपया कमेटी को इसमें सहयोग देकर कमेटी को कृतार्थ करें।'

संयुक्त समाजवादी दल के अध्यक्ष श्री एस एम जोशी के जयपुर आगमन के अवसर

पर माणकचौक म आयोजित रली म व्यास जी न समाजवादी ताकतो को बिखरन से बचाने व एकीकृत करने पर बल दिया। (लोकजीवन, 2 अप्रेल 1965)

"राज्य विधानसभा म ससोपा दल के नेता श्री मुरलीधर व्यास ने समाजवादी समाज की स्थापना को जीवन का लक्ष्य मानकर काम करने की सलाह देत हुए कहा कि समाजवाद राजनतिक नारा नही है। श्री व्यास ने कहा कि देश म समाजवादियो की यह भारी विजय है कि आज साम्प्रदायिक और प्रतिक्रियावादी दल भी अपने अपने विशेषण लगाकर किसी न किसी रूप मे समाजवाद का स्वीकार करते जा रहे है। उ होने कहा कि देश का उज्ज्वल भविष्य समाजवाद म ही निहित है। सभा मे मास्टर आदित्ये द्र एव चौधरी नरे द्रपालसिंह के भाषण भी हुए।"

व्यासजी के एक और अ यतम साथी एव स्वत त्रता सेनानी श्री सत्यनारायण सर्राफ (भादरा) राजनीतिक घटनाक्रम म उनके निकट सम्पक म रहे। 24 माच 1965 के पत्र म उ होने अपनी भूख हडताल के सबध मे विवरण दिया है। उनकी ही भाषा म ये विचार इस तरह है-"सुखाडिया को जो आपने नगा किया उसके लिए बहुत ध यवाद। कृपया एक नकल सुखाडिया के खिलाफ जो आवेदन पत्र आप राष्ट्रपति को भेज रहे है, मुझे भेजे तथा विधान सभा की एक छपी किताब इस सबध में विधान सभा म सुखाडिया क विरुद्ध जो मसाला पेश किया और उस पर जो बहस हुई भी भेजे। मेरा व भाई थिरानी का भूख हडताल करने का इरादा है। या तो भारत सरकार जाच आयोग बिठावे नही तो हम लोग भूख हडताल करेगे।'

तत्समय मे सुखाडिया राजस्थान की राजनीति म एक 'मिथ' की तरह थे और उसे तोडना अत्यावश्यक था। इस प्रसग पर सुप्रसिद्ध विचारक चि तक श्री न दकिशोर आचाय ने सुखाडिया के मिथ' को तोडन म व्यासजी का प्रमुख भूमिका का इस प्रकार रूपायित किया है भारतीय राजनीति मे डा लोहिया की सब से महत्वपूर्ण देन थी नेहरू क ' मिथ को तोडना। भारतीय लोकतत्र को पुष्ट करने के लिए यह आवश्यक था कि इसे व्यक्तिवाद से बचाया जाए—इसी दृष्टिकोण से डा लोहिया ने भारतीय राजनीति पर नेहरू के बढते जा रहे सम्मोहनीय प्रभाव का—विशेषत अ य वरिष्ठ नेताओ के देहावसान के बाद—लगातार विरोध किया। इस प्रदेश म ठीक यही भूमिका श्री मुरलीधर व्यास की रही। राजस्थान एक साम तवादी प्रदेश था और आजादी के बाद श्री सुखाडिया के नेतृत्व म धीरे धीरे यहो साम तवादी प्रवृत्ति काग्रेस शासन म भी असर दिखाने लगी थी। स्व व्यास ने आरम्भ से ही यह महसूस कर लिया था कि इस सामा तवादी प्रवृत्ति वाले प्रदेश म नवजात लोकतत्र को यदि ठीक दिशा मे विकसित करना है तो उसे नव सामन्तवादी प्रवृत्तियो स बचाना होगा। यही

कारण है कि उन्होंने प्रारंभ से ही सुखाडिया के "मिथ" को तोडने के प्रयत्न किये और उनके शासन की भूलो और अनुचित कार्यों पर कठोर प्रहार करने की नीति अपनाई। यही कारण रहा कि श्री सुखाडिया का जितना विरोध राजस्थान के समाजवादी खेमे द्वारा हुआ उतना अन्य किसी वर्ग द्वारा नही हो सका। इस दृष्टि से राजस्थान मे स्व व्यास जी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जायेगी।

"मिथ" तोडने वालो म यद्यपि व्यासजी अकेले नही थे, पर अग्रणी अवश्य थे यह बात दिनाक 22 अप्रेल 1965 को प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को दिये गये ज्ञापन से स्वत ही प्रमाणित हो जाती है जिसम 17 प्रमुख व्यक्ति (विधायक एव अन्य नेता सम्मिलित थे पर सब से ऊपर श्री मुरलीधर व्यास का नाम अंकित है। नेताओ म व्यासजी के अतिरिक्त सवश्री मानिक चद सुराणा, उमरावसिंह ढाबरिया, हीरा भाई, विट्ठल भाई, प्रो केदार नाथ, नत्थी सिंह, मुकुट विहारी लाल गोयल जय नारायण सालोदिया, मानधाता सिंह, नाथू लाल करोल, उदी लाल बोरिडया, मोरा भाई, दुर्गाराम योगेन्द्र नाथ हांडा (सभी विधायक) मास्टर आदित्येन्द्र, अध्यक्ष, राजस्थान सयुक्त समाजवादी दल तथा देवी सिंह सासद आदि प्रमुख थे। अपने प्राक्कथन म इन नेताओ ने आरोपो की पृष्ठभूमि के सदभ म कहा कि 'हम राजस्थान विधान सभा और उसके बाहर के विभिन्न प्रतिपक्षी दलो के प्रतिनिधिगण राजस्थान क मुख्य मन्त्री के अनुचित कार्यों, भ्रष्टाचार के स्पष्ट कृत्यो, घोर कुशासन और पक्षपात के नग्न नत्या से पीडित होकर उनके विरुद्ध आरोप पत्र प्रस्तुत करते हैं। एक राज्य के मुख्य मन्त्री को जिसने काग्रेस हाई कमाण्ड को राज्य के 'दस वर्षीय शानदार और स्थिर शासन' से विस्मित करने मे सफलता प्राप्त की है, भ्रष्ट कार्यों मे सक्रिय रूप से भाग लेते देखते रहना हमारे लिए असहनीय है। जिन्होने इस स्थिर शासन को देखा है वे जानत हैं कि इसकी प्राप्ति सावजनिक धन को बलि चढा कर हुई है। यह स्थिरता जडता म परिवर्तित हो गई है। इस तथाकथित स्थिर शासन ने अनेक गठ बधन देखे हं तथा इस प्रक्रिया मे व्यक्ति पूजा के विकास को अवसर मिला है पद और सत्ता के दुरुपयोग से मुख्यमन्त्री एव उसके निकट सम्बन्धियो साले बहनोई, दामाद आदि ने जिनके पास पहले कुछ नही था, विशाल सम्पतिया अर्जित की हैं। भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री हीरालाल शास्त्री, श्री टीकाराम पालीवाल, स्व श्री जयनारायण व्यास और भूतपूर्व प्रदेश काग्रेस अध्यक्ष और अब इस अरोप पत्र पर हस्ताक्षरकर्त्ता श्री आदित्येन्द्र आदि शीर्षस्थ काग्रेसी नेताओ ने भी भ्रष्टाचार और पक्षपात के आरोपो से काग्रेस हाई कमान को अवगत कराया था। यह कहना प्रसगानुकूल होगा कि सलग्न आरोप राजस्थान विधान सभा म कई बार व्यक्त किये गये किन्तु परिणाम नही निकला। मुख्य मन्त्री जी उपेक्षा करते रहे।"

आरोप पत्र में 42 आरोप लगाये गये। भाड़े में गमग म ग्रामीणों के अतिरिक्त बताया गया है कि मुकदमों में राज्य के पूर्व श्री गुलाम जिला अदा मालिक गांधी। रात व्यक्ति ध पर तु मत्री बनने के उपरान्त और यह कानूनी साधना का उपयोग करते हुए सम्पत्ति का संग्रह करना आरम्भ कर दिया। उनके बार बार अपनी सम्पत्ति की सार्वजनिक घोषणा की मांग की गई पर वे इससे इनकार करते रहे। सम्पत्ति सबंधी प्रकरण 10 अगस्त 1964 को श्री उगम सिंह डावरिया द्वारा विधान सभा में भी उठाया गया था। भूमि पर अधिकृत कब्जे में उदयपुर निवासियों के पास से साढ़े तेरह बीघा भूमि या भूखण्ड का अजाद करने की बात उठाई गई। इसके लिए एक छोटे से गाजीनगर श्री पाटरी को राज्य कोष में भारी मुआवजा तथा पुनर्वास अनुदान दिलाया गया और एक छोटी सी धनराशि देकर उनकी कृषि योग्य भूमि हथिया ली गई।' अपने संबंधियों के नाम बड़े भारी भूखण्ड राजस्थान के बूंदी जिले में आवंटित कराये गये जिनका मूल्य लाखों रुपए होता है। इन संबंधियों में कुछ तो अवयस्क ही थे। ये भूखण्ड भूमिहीन किसानों को दिये जाने थे पर आवेदन पत्र प्रस्तुत किये जाने पर भी उनको भूमि नहीं दी गई।

मक्का और चावल के प्रतिबंधित निर्यात को खाद्यान्न संकट के बावजूद खोल दिया गया तथा व्यापारियों से अवैध धनराशि प्राप्त की गई। पानरवा जंगल का ठेका अपने अन्तरंग मित्र श्री गुलाम अब्बास को साधारण रकम में दिया कर राज्य कोष को अपार हानि पहुँचाई गई। 1957 में जो ठेका 18000 रुपया पर छोड़ा गया उसके लिए डेढ़ लाख रुपया प्रतिवर्ष की बोलियाँ अन्य व्यक्तियों की थी पर उन पर विचार नहीं किया गया। 29 जनवरी, 1965 को ठेका समाप्त होने पर करार के अनुसार जो चार लाख रुपया की लकड़ी कटी पड़ी थी वह राज्य सरकार की सम्पत्ति होनी थी लेकिन निश्चित तारीख के बाद भी ठेकेदार को लकड़ा उठाने की स्वीकृति दे दी गई। इस तरह राज्य कोष का भारी हानि हुई। 1964 के राज्य प्रशासन की आडिट रिपोर्ट में स्पष्ट लिखा है कि केवल 1954 से 1957 तक ही राज्य कोष को दस लाख रुपये की सीधी हानि हुई है।

जयपुर उद्योग लिमिटेड को 60 लाख रुपया के ऋण की स्वीकृति के पीछे व्याप्त भ्रष्टाचार के प्रश्न को स्वयं श्री जयनारायण व्यास ने उठाया था। जांच द्वारा जांच आयोग के सम्मुख उपस्थित सभी संबंधित पक्षों ने भी स्वीकार किया था कि इस प्रक्रिया में दो लाख 51 हजार रुपये लिये गये। इस उद्योग को अन्य अग्रदेय (Advances) भी दिये गये जिनको बाद में 'जमा-खर्च' कर दिया गया अथवा विज्ञापनों पर व्यय के रूप में बता दिया गया।

अन्य आरोपो मे कोटा परमिट दिये जाने, एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को कालान्तर म प्रशासनिक अधिकारी के पद तक पहुँचाने तथा सम्बन्धियो को धन और पद की सुविधा देने की बातें थी। विशेष कर श्री जाय का मामला उठाया गया जो चालीस रुपये माहवार के तुलवारिया (चतुर्थ श्रेणी पद पर) थे, पर जिन्हे आबकारी और कर विभाग का सहायक उपायुक्त बना दिया गया। सम्बन्धियो द्वारा भूमि की धांधली एव बीमा एजेन्सियो की प्राप्ति के अन्तगत "अधिक अन्न उपजाओ आदोलन" के नाम पर लाखो रुपयो की सकडो बीघा भूमि आवटित करने तथा बीमा एजेन्सियो के नाम पर लाभ कमाने की बातें कही गई है। एक सम्बन्धी को कोटा मे स्ट्रा बोड फक्टरी लगान तथा 14 पसे प्रति क्विटल की मामूली दर से दो लाख मन घास काटने का अधिकार देने की बात भी आराप पत्र म है। पूरे कोटा परिक्षेत्र मे यही एक मात्र ऐसा जगल था जिस लीज पर दिया गया तथा इस तरह राज्य कोष को नुकसान पहुँचाया गया।

अभ्रक की खानो म रायल्टी की कमी की घोषणा करके खनिज स्वामियो का लाभ दिया गया और उसके बदले काग्रेस द्वारा आम चुनाव के लिए धन प्राप्त किया गया। आरोप पत्र मे अजन्ता होटल उदयपुर, स्वदेशी काटन मिल उदयपुर एव विनेयल कमिकल लि कोटा क प्रसग मे की गई अनियमितताओ का भी उल्लेख है। नीम का थाना म लाइम स्टोन का एकाधिकार देने नहरू अवाड के नाम पर राजनीतिक लाभ लेने के लिए कुछ जमीदारो को अनुचित मुआवजा दिलाने, उदयपुर, भीलवाडा एव गगानगर के बस मार्गों के राष्ट्रीयकरण को बार बार स्थगित करके अपने सम्बन्धी बस मालिका को लाभ पहुँचाने आदि के ब्योरेवार उदाहरण दिये गये है। यह भी बताया गया कि जय सम द झील के मछली भडारो के ठेके को निरन्तर पन्द्रह वप तक केवल 50 हजार रुपये प्रतिवप के हिसाब से स्वीकृत किया जाता रहा। यह अत्यन्त अनियमित था क्योकि यदि यह ठेका नीलाम किया जाता तो इससे छ गुना राशि मे नीलाम होता।

अन्य बिन्दुओ म फिजिकल ट्रेनिंग कॉलेज, जोधपुर के भवन क्रय म अनियमितता, कोटा वितरण म धाधलेबाजी, बारह हजार बीघा भूमि का चार बडे पूजीपतियो म वितरण, गर कानूनी मुआवजा कुछ शक्षणिक सस्थाओ क प्रति पक्षपात, कम्पनिया से चदा, विधान सभा के सदस्या का भ्रष्ट करन के प्रयास प्रशासन का भ्रष्ट करने क निणय तथा सामान्य व्यक्तिया को अपन राजनीतिक लाभ के लिए मत्री पदा पर नियुक्तिया आदि प्रमुख है।

यह ज्ञापन 22 अप्रेल 1965 को तत्कालीन प्रधान मत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को दिया गया। प्रस्तुत करने वाल थे सव श्री मुरलीधर व्यास, मानिकचद सुराणा

उमरावसिंह ढाबरिया, मानधाता सिंह तथा देवीसिंह मामद। व्यासजी ने पूरे राजस्थान में घूम घूम कर जन सभाओं के माध्यम से उक्त आरोपों की चर्चा की तथा उनके विरोध में जनमत तैयार किया। उनके भाषणों में व्यक्तिगत दुर्भावना न होकर राज्य के व्यापक हितों की बातें ही हुआ करती थी।

फरवरी 1966 के प्रथम सप्ताह में व्यासजी बड़हिया (मुंगेर बिहार) में अपने दल के सम्मेलन में भाग लेने गये। पांच दिवसीय सम्मेलन की समाप्ति पर दिनांक 6 फरवरी 1966 को वे कलकत्ता पहुँचे। पैदा हुई नई राजनीतिक स्थिति में दल के लिए ससाधन एकत्रित करने व अतिरिक्त बिहार-बंगाल के वरिष्ठ नेताओं से सम्पर्क करना भी इस यात्रा का एक उद्देश्य था। श्यामजी थानवी और श्यामजी आचार्य भी उन दिनों कलकत्ता में थे। कलकत्ता स्थित अपने शिष्यों, सहयोगियों और सहकर्मियों की सहायता से ससाधन संबंधी कार्य तो हुए ही, वरिष्ठ नेताओं से मंत्रणाएं भी हुई।

दिनांक 6 फरवरी को प्रातः 11 बजे अपर इण्डिया से स्यालदाह स्टेशन पर पहुँचने पर उनका शानदार स्वागत किया गया। फूल मालाओं से उन्हें लाद दिया गया, गुल्दस्ते दिये गये तथा शेरे व्यासजी जिन्दाबाद के नारों से प्लेटफार्म गूंज उठा। व्यासजी के आगमन से पूर्व प्रसारित एक विज्ञप्ति में कहा गया था– 'जन क्रांति के अगुआ, प्रजा समाजवाद के महान् स्तम्भ राष्ट्रीय समिति के सदस्य राजस्थान के प्रसोपा एम एल ए, राष्ट्रीय नेता श्री मुरलीधर व्यास का विराट वीरोचित स्वागत किया जाय। जिले के तमाम केन्द्रों व वार्ड सचिवों से ही नहीं समस्त प्रजा सोशलिस्ट सदस्यों के साथ बंगाल में रहने वाले तमाम राजस्थानी बंधुओं से भी अपील की गई कि ज्यादा से ज्यादा तादाद में स्टेशन पर पहुँच कर स्वागत करें। हम नाज है व्यासजी पर। वे यू पी, सी पी व बिहार का दौरा करते हुए जिला पश्चिमी कलकत्ता प्रसोपा के विशेष अनुरोध पर कलकत्ता पहुँच रहे हैं।'

व्यासजी की इस यात्रा के साथी श्री हनुमान दास आचार्य के अनुसार— वहां पर मोहम्मद अली पार्क में एक आम सभा हुई। वह इतनी जबरदस्त हुई कि बंगाल के लोगों ने राजस्थान के शेर की गर्जना को सराहा तथा इसने सुभाष की याद को ताजा कर दिया।

राजस्थान लौटने पर व्यासजी पुनः अपने विविध सेवा कार्यों में जुट गये। शिक्षा संबंधी प्रश्नों पर वे अपने ही ढंग से सोचते थे। शिक्षकों के लिए सेवा नियमों के सम्बन्ध में उनकी मान्यता थी कि इसमें यांत्रिकता और जड़बद्धता नहीं होनी चाहिए। आयु एवं अनुभव के साथ ही शिक्षक का ज्ञान परिपक्व होता है, अतः

उसके लिए सेवा म प्रवेश की आयु 40 वप तक मान लेनी चाहिए तथा उसे सेवा-निवृति म भी कुछ वर्षों की छूट मिलनी चाहिए। इस बि दु पर उ होने निर तर प्रयास किये। उनके एक पत्र के उत्तर म दिनाक 29 माच 1966 को तत्कालीन शिक्षा मत्री श्री व्रज सु दर शर्मा न लिखा —"अध्यापको की नियुक्ति हेतु 40 वप तक की आयु के प्रावधान को जन सेवा आयोग ने स्वीकार नही किया है। अभी इस विषय मे सरकार और आयोग के बीच विचार विमश चल रहा है। वहा की स्वीकृति के पश्चात् यह निणय पूण रूप ग्रहण कर सकेगा।" उप शासन सचिव (शिक्षा) ने भी व्यासजी के प्रयासा के सदभ मे लिखा कि 'आयु सीमा को बढाने मे कुछ वधानिक कठिनाइया उपस्थित हुई है जिनके निराकरण करने की कायवाही की जा रही है। जब तक निराकरण नही हो जाता तब तक भर्ती वतमान नियमा के अनुसार होती रहेगी। इन अडचना को हटाने के बारे मे कायवाही की जा रही है। आशा है कि इनका निराकरण भी शीघ्र हो जायगा।"

राष्ट्रपति ज्ञानी जलसिंह ने गत वप शिक्षको की सेवा निवृति 60 वप की आयु मे करने का जो सुझाव दिया था वह व्यासजी की मूल प्रस्तावनाओ से मेल खाता है। अनेक स्थानो पर व्यासजी न कहा कि शिक्षको के सेवा-प्रवेश एव सेवा निवृति की आयु सीमा मे छूट मिलनी चाहिए। काला तर मे राजस्थान सरकार ने समय-समय पर इस प्रकार की छूटो की घोषणा भी की और इस तरह उनके प्रयत्नो को यत्-किंचित सफलता मिली।

मजदूरो की कई मागो को लेकर 31 माच 1966 को राज्य व्यापी बद का आह्वान किया गया था। इसम समस्त विरोधी दल एव ट्रेड यूनिय स के नेता सम्मिलित थे। बीकानेर मे भी इसका व्यापक प्रभाव पडा। ब द के निर्धारित दिन स दो दिन पूव 29 माच को साकेतिक हडताल रखी गई। सभावित अशा ति की आशका से प्रशासन ने दिनाक 29 3 66 को प्रात 4 बजे स एक सप्ताह क लिए धारा 144 लगा दी और तीन भूख हडताली नेता सवश्री हुक्मा राम, भारत भूषण एव पूर्णान द को गिरफ्तार कर लिया। मुरलीधरजी जस सजग एव मजदूर हितषी नेता इस सारे परिप्रेक्ष्य म मौन दशक बन कर नही रह सकते थे। उन्होने धारा 144 को भग करने की सावजनिक घोषणा की। उन्होने कहा—'यह हमारे प्रजातान्त्रिक अधिकारा का दमन है तथा सविधान विरोधी कृत्य है—हम इसे सहन नही कर सकत।' इस आदोलन म व्यासजी सहित कई समथक गिरफ्तार हुए। जल म व्यास जी न भूख हडताली मजदूर नेताओ के नतिक समथन मे स्वय भी भूख हडताल की। उनका कहना कि सभावित अशान्ति की आशका मात्र स एक शातिमय आदोलन

को कुचलना सरासर गलत है। प्रशासन ने भी इस स्थिति को समझा और 31 मार्च को धारा 144 उठाते हुए व्यासजी एव अन्य नेताओ को रिहा कर दिया।

मई दिवस (1 5 1966) को व्यासजी ने मजदूरो की एक विशाल सभा को सम्बोधित किया। इससे पूर्व एक मशाल जुलूस स्थानीय रेल्वे म स यूनियन के कार्यालय से निकल कर मुख्य जनपथो से होता हुआ सभा स्थल (रतन बिहारी पार्क) पहुचा श्री हरि किशन शर्मा की अध्यक्षता म आयोजित सभा म ससद सदस्य श्री प्रियरजन गुप्ता, श्री मुरलीधर व्यास एव श्री मानिकचद सुराणा मुख्य वक्ता थे। श्री व्यास ने मजदूरो के अभाव अभियोगो पर बोलते हुए कहा "यह शर्म की बात है कि दौलत पैदा करने वाले मजदूर भूखो मर रहे हैं तथा उनके कार्य से उत्पन्न पूजी चन्द निठल्ले लोगो की तिजोरियो म जा रही है। हम सगठित होकर इस स्थिति का मुकाबला करना है।" व्यास जी प्रतिवर्ष मई दिवस की सभाओ मे बोलते थे और मजदूरो के साथ उनका आत्मीय तादात्मय सबध भी था।

फलौदी नगर पालिका के चुनावो के बार बार स्थगन से विक्षुब्ध स्थानीय जनता ने उसका विरोध किया और प्रशासन को ज्ञापन आदि दिये लेकिन उसका प्रभाव नही होता देख कर प्रभावोत्पादक कार्यवाही के लिए व्यासजी को बुलाया गया। 12 मई 1966 को निर्धारित चुनाव 12 जून तक स्थगित कर दिये गये थे। व्यासजी ने 10 जून 1966 को फलौदी म आयोजित सभा म कहा "चुनाव म सीधी हार अनुभव करने वाले चन्द उम्मीदवारो की माग पर सरकार ने चुनाव स्थगित करके समाज विरोधी कार्य किया है। यह अप्रजातात्रिक, अवधानिक एव निन्दनीय है। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए हम कल फलौदी बद रख कर जोरदार प्रदर्शन करने चाहिए ताकि बुरे इरादो पर रोक लग सके।"

11 जून 1966 को फलौदी बन्द के आह्वान पर बाजार बद रहे। प्रात 9 बजे एक विशाल जुलूस एस डी ओ के निवास स्थान पर पहुँचा तथा चुनाव तिथि घोषित करने की जोरदार माग की। सायकाल नयी तिथि की घोषणा कर दी गई। चुनाव म व्यासजी समर्थित श्री डूगरदास छगाणी एव उनके साथी विजयी हुए तथा बाद मे अध्यक्ष पद पर भी श्री डूगरदास छगाणी ही निर्वाचित हुए। इस पूरे प्रकरण म प्रदर्शनो, सभाओ एव जन जागृति अभियान मे जयजवान जय किसान के सम्पादक श्री भीमपाडिया उनके साथ थे।

जून 66 म व्यासजी अपने दल के प्रातीय सम्मेलन म भाग लेने बूदी गये। 25 एव 26 जून को आयोजित इस अधिवेशन मे दल के पार्लियामेन्टरी बोर्ड की बैठक सम्पन्न हुई। इसी म आगामी चुनाव (1967) के सदर्भ म प्रत्याशियो का चयन भी किया गया। प्रातीय सचिव होने के नाते व्यासजी के पास सभावित प्रत्याशियो के पत्र निरन्तर आते रहते थे

बूदी म उन दिनो माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा 747 छात्रो के परीक्षाफल रोकने के विरुद्ध एक छात्र आदोलन चल रहा था। छात्रो ने 2 जून को मशाल जुलूस और पुतला दहन का कार्यक्रम रखा। 9 जून को पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किये जाने पर 10 जून को 'बूदी बद' का आह्वान किया गया तथा पूरा जन जीवन प्रभावित हुआ। 25 व 26 जून का प्रसोपा के राष्ट्रीय नेताओ के बूदी आगमन पर पुन छात्रो की विशाल सभा हुई जिसे व्यासजी सहित अनेक नेताओ ने सम्बोधित किया तथा छात्रो की वाजिब मागो का अपना समर्थन दिया।

चुनाव कार्यों के सुव्यवस्थित सचालन के लिए प्रातीय स्तर पर एक दो वाहनो का होना नितान्त आवश्यक था, पर सवाल यह था कि साधन कहा से आवे। न तो दल के पास अतिरिक्त साधन थे और न व्यासजी के पास कोई सम्पत्ति ही थी। जन सहयोग ही एक मात्र आधार था। यह कार्य भी अन्तत जन सहयोग से ही पूरा हुआ इसमे कलकत्ता के प्रवासी भाइयो के साथ साथ बाबू जयप्रकाश नारायण का सहयोग भी मिला उन दिनो विधायको (एम एल ए एव एम एल सी) के लिए प्रतिरक्षा मत्रालय की पुरानी जीपो का आवटन सस्ते दामो पर किया जा रहा था। अधिकृति पत्र के आधार पर कोई भी विधायक वह जीप ले सकता था। डिलीवरी की अन्तिम तारीख 30 जून 66 थी और उधर साधनो का नितात अभाव था। जसे तसे साधनो की समस्या सुलझी तो जीप लेने की व्यवस्था सभव हो सकी। डिलीवरी लेने जाने वालो मे मोटर वाहनो के जानकार एव लक्ष्मी मोटर वर्क्स के प्रोप्राईटर श्री जेठमल भी थे। उन्होंने मिलिट्री कन्टीन की अनेक जीपो म से छाट कर एक जीप व्यासजी के लिए दी तथा उसकी मरम्मत अपनी कम्पनी मे करवा कर चुनाव कार्यों के योग्य बनाया। इस कार्य म दल के वरिष्ठ नेता श्री सुरेन्द्र मोहन का भी सहयोग रहा। उसी एक जीप के बल पर व्यासजी ने प्रातीय चुनाव का कार्य सम्पन्न किया। बाद म एक और पुरानी जीप भी प्राप्त की गई। विराट राज्य शक्ति का विरोध करने के लिए मात्र ये दो साधन ही थे, लेकिन साथ म एक विशाल *जनबल अवश्य था इसी के सहारे व्यासजी आगे बढते रहे।*

बीकानेर म छात्रो की एम एस सी कक्षाओ की न्यायोचित माग के समर्थन म व्यासजी ने पूर्ण सहयोग दिया। इस आन्दोलन के सदर्भ म कई गिरफ्तारिया हुई और शहर मे धारा 144 लगा दी गई। श्री हनुमानदास आचार्य के अनुसार-
व्यासजी सच्चे लोकतत्र के हामी थे अत धारा 144 को सरे आम धज्जिया उडाते थे। उन्होंने इसे कभी भी बर्दाश्त नही किया। दाती बाजार का दृश्य उस दिन सनिक छावनी जसा नजर आ रहा था। हाथ म झण्डा लिए सशस्त्र पुलिस पट्रोलिंग कर रही थी। तत्कालीन डी एस पी श्री एम एन धवन कई थानेदारो को लिए किसी

थे वृद्ध रहे थे। लोगों की अपार भीड़ डी एस पी श्री धवन व्यासजी को गिरफ्तार करना चाहते थे, लेकिन करें तो क्या करें। आखिर व्यासजी के पास आकर अपने सिर से टोपी उतार कर कहा मैं आपको गिरफ्तार कर रहा हूँ। आपने धारा 144 का उल्लंघन अपने साथियों सहित किया है।" व्यासजी ने स्नेहपूर्ण मुद्रा में कहा "गिरफ्तार कर लीजिए। हम तो आये ही इसके लिए हैं हम अपना कर्तव्य कर रहे हैं आप अपना कीजिए' उस स्थान पर गिरफ्तार होने वालों में व्यासजी के अलावा हनुमानदास आचार्य, नारायणदास रंगा, गोकुल घी वाला और सत्यनारायण पुरोहित थे। बाद में जब छात्रों की मांगें मान ली गई तो सभी को रिहा कर दिया गया। इस आंदोलन में विभिन्न दलों के नेता एवं छात्र नेता जेलों में डाले गये थे जिनमें श्री मानिक चंद सुराणा, भीम पाण्डिया, हीरा लाल आचार्य, अशोक आचार्य, मास्टर सुन्दर दास, पत्रकार राम नारायण, एन डी प्रकाश बिहारी मतवाला आदि मुख्य थे।

व्यासजी का जीवन घटना बहुल और त्याग की ऊर्मियों से भरा हुआ है। निश्छल, निस्वार्थ एवं नितान्त निर्भीक जीवन यापन करने वाले व्यासजी ने अपना स्थान लोगों के दिलों में बनाया। आज उनके निधन को 14 वर्ष हो चुके हैं पर वे अमर हैं, और अमर रहेंगे।

मार्च 1966 में राजस्थान विधान सभा के सामने आयोजित भूख मार्च सारे प्रांत में चर्चित हुआ। 18 3 1966 को विधान सभा भवन के आगे जलेबी चौक में राजस्थान प्रजा समाजवादी पार्टी के कार्यकर्त्ताओं द्वारा व्यास जी के नेतृत्व में भूख मार्च का प्रदर्शन हुआ जिसमें हजारों प्रदर्शनकारी सम्मिलित थे। इसमें श्री मुरली धर व्यास, श्रीमती भगवती देवी (जयपुर) श्री जोरावर मल बोडा (जोधपुर) श्री भवर लाल आर्य, श्री माधव शर्मा (चूरू) श्री नारायण दास रंगा श्री हनुमान दास आचार्य (बीकानेर) को भी गिरफ्तार किया गया।

भूख मार्च ने राजस्थान में व्याप्त अकाल की विभीषिका के मध्य जीने वाले करोड़ो प्रांतवासियों की भुखमरी का सजीव दिग्दर्शन हुआ। जिला स्तरों पर ऐसे अनेक आयोजनों के माध्यम से जन जागृति का वातावरण बना तथा राजस्थान भर के पत्रों ने भूख मार्च तथा उससे जुड़े हुए अन्य प्रदर्शनों का विवरण प्रकाशित किया।

श्री हनुमान दास आचार्य के अनुसार—'व्यासजी ने कभी जन विरोधी हरकत को बरदाश्त नहीं किया। उस समय भयंकर महगाई और बेराजगारी व्याप्त थी तथा कानून व्यवस्था बिगड़ चुकी थी। राजस्थान विधान सभा में राज्यपाल के भाषण पर

आपत्ति करने वाले लोकनायक व्यासजी ने इन सभी बातो के लिए शासन पर करारा कोडा फटकारा तथा विधान सभा की कार्यवाही नही चलने दी। फलत उन्हे विधान सभा से निलंबित कर दिया गया। जनता के बीच रहने वाले विधायक श्री व्यासजी विधानसभा की चार दीवारी तक ही अपनी बात नही कहते थे। अपनी धुन और लगन के सच्चे नेता ने तभी जयपुर शहर म 18 मार्च 1966 को एक भूख-मार्च का आयोजन किया। प्रात के कोने कोने से कार्यकर्त्ता वहा जमा हुए तथा प्रसोपा संसदीय दल के तत्कालीन नेताश्री एस एम द्विवेदी भी जयपुर आये। श्री द्विवेदी ने आम सभा म मत्रियो को चेतावनी देते हुए कहा 'व्यास हमारी पार्टी का शेर है।

'जब भूख मार्च जयपुर की सडको पर आगे बढ रहा था तो जयपुर के लोग दाँतो तले अगुली दबा रहे थे कि आज तक के इतिहास म जयपुर शहर म इतना अनुशासित, इतना लम्बा जुलूस नही देखा गया। जलेबीचौक म बन्दूकधारी पुलिस तथा घुड सवार पुलिस तैनात थी। प्रदर्शनकारियो पर घोडे दौडाये गये, लाठिया चली आसू गैस छूटी, जिससे कई महिलाओ और वृद्धा को चोट आई। बहिन भगवती देवी अचेत होकर गिर पडी। श्री व्यासजी, भगवतीजी, नारायण दास रंगा सहित मुझे भी गिरफ्तार किया गया। इस प्रदर्शन को लेकर विरोधी दलो के सदस्यो ने विधान सभा म जोरदार जनरोष प्रकट किया।"

1966 म व्यास जी ने स्वय पर सारे आरोपो का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेते हुए तत्कालीन गृहमत्री श्री गुलजारी लाल नदा को लिखा कि यदि ये आरोप गलत सिद्ध हुए तो वे (व्यासजी) दण्डित होने को तयार है। पत्र का अविकल रूप म यहा दिया जा रहा है--"राजस्थान के मुख्यमत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया के खिलाफ स्व प्रधान मत्री श्री लाल बहादुरशास्त्री को भ्रष्टाचार के अभियोग पत्र का ज्ञापन देनेवाला म मैं भी एक हूँ। ससद म आप द्वारा एव उप गृहमत्री द्वारा दिये गये वक्तव्यो को मैं चुनौती देना चाहता हूँ। उप गृह मत्री जी ने अपने वक्तव्य म कहा है कि यदि कोई व्यक्ति पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ अभियोगो को सिद्ध करने के लिए तयार होगा तो उसकी न्यायोचित जाच होगी। मैं उसके लिए पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ अपने आपको आफर करता हूँ। यदि अभियोग सिद्ध नही हुआ तो उसके लिए मुझे दण्डित किया जावे।' (13 5 66)

व्यासजी या तो आरोप लगाते नही थे और यदि लगाते तो उसके लिए किसी भी सीमा तक जाने और गलत होने पर दण्डित होने को तयार रहते थे। वे राजनीति म 'लुका-छिपी' या 'लुक मीचणी' का खेल नही खेलते थे। जो भी कहते "खुले धाडे' रहते थे और उसके लिए व्यापक जनमत भी तयार करते थे।

को ढूढ रहे थे। लोगो की अपार भीड डी एस पी श्री धवन व्यासजी को गिरफ्तार करना चाहते थे, लेकिन करें तो कसे करें। आखिर व्यासजी के पास आकर अपने सिर से टोपी उतार कर कहा मैं आपको गिरफ्तार कर रहा हू। आपने धारा 144 का उल्लघन अपने साथियो सहित किया है।" व्यासजी न स्नेहपूण मुद्रा मे कहा "गिरफ्तार कर लीजिए। हम तो आये ही इसके लिए हैं हम अपना कतव्य कर रहे है आप अपना कीजिए "उस स्थान पर गिरफ्तार होने वालो म व्यासजी के अलावा हनुमानदास आचाय, नारायणदास रगा, गोकुल घी वाला और सत्यनारायण पुरोहित थे। बाद म जब छात्रो की मागें मान ली गई तो सभी को रिहा कर दिया गया। इस आदोलन मे विभिन्न दलो के नेता एव छात्र नेता जेलो म डाले गये थे जिनम श्री मानिक चद सुराणा, भीम पाण्डिया हीरा लाल आचाय, अशोक आचाय, मास्टर सुदर दास, पत्रकार राम नारायण, एन डी प्रकाश विशन मतवला आदि मुख्य थे।

व्यासजी का जीवन घटना बहुल और त्याग की ऊर्मियो से भरा हुआ है। निश्छल, निस्वाथ एव नितान्त निर्भीक जीवन यापन करने वाले व्यासजी ने अपना स्थान लोगो के दिलो मे बनाया। आज उनके निधन को 14 वष हो चुके हैं पर वे अमर हैं, और अमर रहेंगे।

माच 1966 मे राजस्थान विधान सभा के सामने आयोजित भूख माच सारे प्रात मे चर्चित हुआ। 18 3 1966 को विधान सभा भवन के आगे जलेबी चौक मे राजस्थान प्रजा समाजवादी पार्टी के कायकर्ताओ द्वारा व्यास जी के नतृत्व मे भूख माच का प्रदशन हुआ जिसमे हजारो प्रदशनकारी सम्मिलित थे। इसमे श्री मुरली धर व्यास, श्रीमती भगवती देवी (जयपुर) श्री जोरावर मल बोडा (जोधपुर) श्री भवर लाल आय, श्री माधव शर्मा (चुरू) श्री नारायण दास रगा श्री हनुमान दास आचाय (बीकानेर) को भी गिरफ्तार किया गया।

भूख माच ने राजस्थान मे व्याप्त अकाल की विभीषिका के मध्य जीने वाले करोडो प्रातवासियो की भुखमरी का सजीव दिग्दशन हुआ। जिला स्तरो पर ऐसे अनक आयोजनो के माध्यम से जन जागृति का वातावरण बना तथा राजस्थान भर के पत्रो न भूख माच त था उससे जुडे हुए अन्य प्रदशनो का विवरण प्रकाशित किया।

श्री हनुमान दास आचाय के अनुसार—' व्यासजी ने कभी जन विरोधी हरकत को बरदास्त नही किया। उस समय भयकर महगाई और बेराजगारी व्याप्त थी तथा कानून व्यवस्था बिगड चुकी थी। राजस्थान विधान सभा म राज्यपाल के भाषण पर

आपत्ति करने वाले लोकनायक व्यासजी ने इन सभी बातो के लिए शासन पर करारा कोडा फटकारा तथा विधान सभा की कार्यवाही नही चलने दी। फलत उन्हे विधान सभा से निलबित कर दिया गया। जनता के बीच रहने वाले विधायक श्री व्यासजी विधानसभा की चारदीवारी तक ही अपनी बात नही कहते थे। अपनी धुन और लगन के सच्चे नेता ने तभी जयपुर शहर मे 18 मार्च 1966 को एक भूख-मार्च का आयोजन किया। प्रात के कोने कोने से कार्यकर्ता वहा जमा हुए तथा प्रसोपा मसदीय दल के तत्कालीन नेताश्री एस एम द्विवेदी भी जयपुर आये। श्री द्विवेदी ने आम सभा मे मत्रियो को चेतावनी देते हुए कहा "यास हमारी पार्टी का दौर है।'

जब भूख मार्च जयपुर की सडको पर आगे बढ रहा था तो जयपुर के लोग दाता तले अगुली दबा रह थे कि आज तक के इतिहास म जयपुर शहर म इतना अनुशासित, इतना लम्बा जुलूस नही देखा गया। जलेबीचौक म व दूकधारी पुलिस तथा घुड सवार पुलिस तनात थी। प्रदर्शकारियो पर घोडे दौडाय गय, लाठिया चली, आसू गस छूटी, जिससे कई महिलाओ और वृद्धो को चोट आई। बहिन भगवती देवी अचेत होकर गिर पडी। श्री व्यासजी, भगवतीजी, नारायण दास रगा सहित मुझे भी गिरफ्तार किया गया। इस प्रदर्शन को लेकर विरोधी दलो के सदस्यो ने विधान सभा मे जोरदार जनरोष प्रकट किया।"

1966 मे व्यास जी ने स्वय पर सारे आरोपो का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेते हुए तत्कालीन गृहमत्री श्री गुलजारी लाल नदा को लिखा कि यदि य आरोप गलत सिद्ध हुए तो व (व्यासजी) दण्डित होने को तयार है। पत्र का अविकल रूप म यहा दिया जा रहा है—"राजस्थान के मुख्यमत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया के खिलाफ स्व प्रधान मत्री श्री लाल बहादुरशास्त्री को भ्रष्टाचार के अभियोग पत्र का ज्ञापन देनेवाला म मैं भी एक हूँ। ससद म आप द्वारा एव उप गृहमत्रीद्वारा दिय गय वक्तव्यो को मैं चुनौती देना चाहता हूँ। उप गृह मत्री जी ने अपन वक्तव्य म कहा है कि यदि कोई अपन पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ अभियोगो को सिद्ध करने के लिए तयार होगा तो उसकी यथोचित जाच होगी। मैं उसके लिए पूर्ण उत्तरदायित्व क साथ अपने आपको आफर करता हूँ। यदि अभियोग सिद्ध नही हुआ तो उसके लिए मुझे दण्डित किया जावे।" (13 5 66)

व्यासजी या तो आरोप लगाते नही थे और यदि लगाते तो उसके लिए किसी भी सीमा तक जान और गलत होने पर दण्डित होने को तयार रहते थे। वे राजनीतिक 'लुका-छिपी' या 'लुक मीचणी" का खेल नही खेलते थे। जो भी कहते "चौड़े धाड़े" कहते थे और उसके लिए व्यापक जनमत भी तयार करते थे।

व्यासजी की ईमानदारी एव सच्चरित्रता की छाप उनके विरोधियो के मनो म भी अकित थी। वे जानते थे कि प्रतिकूल परिस्थितिया या अभावग्रस्त पारिवारिक स्थितिया भी व्यासजी को ईमानदारी म विमुख नही कर सकती। कोई भी प्रलोभन उनको अपने सत्य पथ से डिगाने म समर्थ नही था। यह बात जामसर मजदूरो की हडताल को तोडने के कुचक्र म व्यवस्थापको द्वारा दिये गये प्रलोभन की असफलता से सिद्ध हो चुकी थी। इसका एक अन्य दृष्टान्त उस समय मिला जब व्यासजी को 1967 के आम चुनाव से पूर्व के वर्ष म चना काण्ड म लिप्त करने एव उनकी ईमानदारी को सदिग्ध बनाने का एक और असफल प्रयास किया गया।

व्यासजी के सहयोगी श्री बुलाकी दास (बूला महाराज) के अनुसार चने के चढते हुए भावो से थके ताग वालो का जीवन दूभर हो गया था। बाजार म 4 रुपये साढे चार रुपये प्रति किलो के भाव से चना खरीदना उनकी सामर्थ्य म नही था। उधर सरकारी व्यवस्था परमिट पद्धति स एक रुपये के दो किलो चने देने की थी। चना डिपुओ म आना और काले बाजार म चला जाता। चारो तरफ हाहाकार मचने लगा था। इक्के ताग वालो की मान्यता प्राप्त एव बहुमत की यूनियन के समानान्तर एक अन्य यूनियन खडी की गई पर वह चल नही सकी। तत्कालीन जिलाधीश श्रीमती ओतिमा बोर्दिया ने दोनो यूनियनो के प्रधान से पता लगा लिया था कि प्रबल बहुमत की यूनियन व्यासजी के नेतृत्व म चलती है। इक्के तागे वालो का आरोप था कि बहुत सारे लोगो के नाम परमिट नही बने है। परमिटो का काम 1962 के रजिस्टरो के आधार पर किया गया था जो पुराने पड चुके थे। प्रश्न था कि इस बात का सत्यापन कौन करे कि परमिट वास्तव म बने या नही बने। जिलाधीश श्रीमती ओतिमा बोर्दिया ने यह काम व्यासजी पर छोडते हुए कहा कि वे जिस किसी के लिए परमिट की सिफारिश करेगे उसे परमिट दे दिया जायगा।

व्यासजी के सामने दो प्रश्न थे–एक तो सही सत्यापन करना तथा दूसरे डिपोधारियो को भ्रष्ट तरीके अपनाये जाने से रोकना। डिपुओ के लोग जानते थे कि इस काय मे एक बोरी के पीछे एक रुपये का घाटा है वे घाटे की पूर्ति काले बाजार के माध्यम से करने लगे थे। व्यासजी के विशेष आग्रह करने पर भी उनके कुछ सहयोगी (जो डिपो भी चलाते थे) चने का काय लेने म आनाकानी करने लगे। अन्तत उन्होने श्री बुलाकीदास (बूला महाराज) को चने का डिपो लेने के लिए मनाया तथा ताकीद करदी कि किसी भी परिस्थिति म बेईमानी नही होनी चाहिए।

श्री बुलाकीदास (बूला महाराज) का कथन है कि इस सारे काय म उनको 1500) रुपया का घाटा हुआ, पर उन्होने किसी भी परिस्थिति म काले बाजार की प्रवृत्ति

को नही पनपने दिया। व्यासजी ने परमिटो की जाच का काय इक्का तागा यूनियन के सचिव श्री राधेश्याम गोड को दिया। श्री गोड स्थल पर जाकर जाच करते, घोडो के रग तागा नम्बर चरने के ठाण एव घोडो के मालिका के बारे म पूरा पता लगाते तथा यदि परमिट नही बना हुआ होना तो उसकी रिपोट व्यासजी को देते। व्यासजी उस प्रतिवेदन पर अपनी टिप्पणी देते हुए लिखते कि 'मैंने अपने सूत्रो से तथ्यो का सत्यापन करवाया है। सरकार का चाहिए कि अपन स्तर पर जाच करवाकर सतुष्ट होने पर परमिट जारी कर दे।"

व्यासजी से राजनीतिक प्रतिद्वद्विता रखने वालो ने बूला महाराज को जाँच मे फसाने की चेष्टा की। पृथक पृथक तागे वालो से 250 काडस इक्ट्ठे करके भ्रष्टाचार निरोधक विभाग के माध्यम से अचानक छापा डलवाकर जाच करवाई पर सभी मामलो म काडों की प्रविष्ठियो से रजिस्टर की प्रविष्ठिया मिल गई अत मामला आगे नही बढ सका। अनत एक प्रकरण ध्यान मे आया जिसम रजिस्टर म प्रविष्टि तो थी पर काड मे प्रविष्टि न होन से सदिग्ध स्थिति बनती थी। सम्बधित काड वाले तागे वाल ने अपने बयान म बताया कि उसे चना मिल गया है—हो सकता है काड मे प्रविष्ट करने म भूल रह गई हो। इतना सब होते हुए भी कभी भ्रष्टाचार निरोधक विभाग से जाच का और कभी डी आई आर म गिरफ्तारी का भय दिखाया जाता रहा। उद्देश्य यही था कि श्री बुलाकीदास यह बयान दे दे कि चने काण्ड क कथित भ्रष्टाचार म मुरलीधर व्यास का हाथ है।

व्यासजी उन दिनो बम्बई गये हुए थे। आने पर जब उन्हे सारी स्थिति का ज्ञान हुआ तो वे तत्काल जिलाधीश कार्यालय गये। तत्कालीन डी एस ओ को बुलाया गया। डी एस ओ के यह कहन पर कि व्यासजी ने जानबूझ कर कई ऐसे लोगो को परमिट दिला दिया है जिनके पास पहले से परमिट थे व्यासजी ने हर आवेदन पत्र पर अपनी टिप्पणी दिखाई जिसमे लिखा था कि 'मने अपने सूत्रो से तथ्यो का सत्यापन किया है, सरकार को चाहिए कि अपने स्तर पर जाच करवाकर सतुष्ट होने पर परमिट जारी करे।" ईमानदारी और आवेश म एक प्रकार का चिरतन सम्बध है। जब जब भी ईमानदारी पर चोट होती है, ईमानदार आदमी आवेश म आ जाता है। व्यासजी कह उठे 'जिस दिन मुझ डी आई आर म रखेगे भारत की राजनीति चौराहे पर होगी वे बोले—मने लिखकर दिया था कि आप जाच करवाइए, सही हो तो परमिट दीजिए, आपने जाच करवाई क्या ?' और फिर फाइल म से एक कागज खीचते हुए वे बोले मैं राजनीतिक षडयत्र क इस मामले को विधान सभा मे उठाऊ गा।' जिलाधीश श्रीमती बोर्दिया वास्तविकता को समझ

ई और व्यासजी को शात किया। उधर श्री श्यामसुन्दर गोस्वामी की जाच म भी श्री बुलाकीदास के विरुद्ध कोई आरोप सिद्ध नही हुआ।

कालान्तर म राजनीतिक घटनाचक्र के प्रसग म एक प्रतिनिधि मडल इसी बना काण्ड को लेकर मुख्यमत्री मोहनलाल सुखाडिया से उदयपुर मे मिला। प्रतिनिधि मण्डल ने जब व्यासजी को डी आई आर म गिरफ्तार करने की माग की तब श्री सुखाडिया मुस्कराये और कहा ऐसा मत कहो इससे कुछ भी नही होगा। मैं जाच भी करवा दूगा पर जिस तरह शक्कर पर मल छटकर अलग हो जाती है, व्यास जी एकदम निर्दोष निकल जायेंगे। वे एक ईमानदार आदमी है। बेईमान लोग तो मेरे पाव पकडते है। व्यासजी का कमजोर करना हो तो उनकी शक्ति को कम करो। उनके आदमियो को अपने म मिलाओ। तो ये थे प्रबल राजनीतिक विरोधी के प्रति उस समय के प्रमुख राजनेता के विचार ईमानदारी और मुरलीधर व्यास पर्याय थे और जीवन भर पर्याय ही बने रहे।

श्री बुलाकीदास व्यास के अनुसार 'एक बार मुझ से व्यासजी की उपस्थिति मे पूछा गया कि यदि म (श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित) व्यासजी के खिलाफ खडा होऊ तो तुम किसका साथ दोगे। मैने इस प्रश्न को टालने की कोशिश की पर जब वे अड गये तो मैने कहा--जहा तक व्यक्तिगत प्रश्न है--जहा आपका चरण पडेगा, मेरा सिर रहेगा जहा आपका पसीना बहेगा मेरा खून बहेगा पर जहा तक चुनाव का सवाल है, चुनाव मे अगर मेरा बाप भी व्यासजी के खिलाफ खडा हो जाये तो भी म व्यासजी का साथ नही छोडूगा।' व्यासजी क साथियो की इस अटूट आस्था के कारण ही व दा बार विधानसभा म जीत पाये थे। यह आस्था व्यासजी की मृत्यु के पश्चात् भी उसी प्रकार बनी रही। मृत्यु के इतने वर्षों पश्चात् भी व्यासजी का नाम बीकानेर की राजनीति को प्रभावित करता रहता है। जनता क परम हितैषी व्यासजी की चुनाव सभाओ के दृश्य बडे ही रोमाचक हुआ करते थे। ऐसा लगता था कि यह चुनाव व्यासजी नही उनकी ओर से उनके सारे समर्थक या यो कहे कि बीकानेर की अधिकाश जनता स्वय लडती थी। एक अथक जोश रहा करता था माहौल म। जन सभाओ म हजारो हजारो की भीड को आकर्षित करने वाले व्यासजी रात को साढे ग्यारह बारह बजे बोलने खडे होते और लगभग दो-ढाई बजे तक बोलते रहते उनके खडे होते ही शेरे व्यासजी जिन्दाबाद के नारो से वायु मण्डल गूज उठता था। व्यासजी के अनन्य समर्थक श्री बालचद साड के अनुसार-- 'उनकी भावना बडी तीव्र थी। हर व्यक्ति उनके शब्दो पर विश्वास करता था। वह जानता था कि व्यासजी जो भी कह रहे हैं वह सच्चाई की आवाज है। उनका बोलने का तरीका

इतना साफ और स्पष्ट था कि हर श्रोता चाहे बच्चा हो या वृद्ध औरत हो या मर्द अच्छी तरह से समझ जाता था।

"इधर श्रोताओं का यह हाल था कि सभा स्थल खचाखच भरा रहता था। लोग आज भी उन सभाओं की याद करके कहते है कि ऐसी मीटिंगें बीकानेर मे फिर होनी ही नही है। जनवरी फरवरी की कडाके की सर्दी म लोग ओढ आढ कर मफलर आदि लगाकर तयार होकर आते थे क्योकि वे जानते थे कि व्यासजी की मीटिंग तो दो-ढाई बजे तक चलनी ही है।"

"व्यासजी का चुनाव जन-चुनाव यानि स्वय जनता द्वारा लडा जाने वाला चुनाव था। लोग चला चला कर उनको अपने यहा सभा करने के लिए आमंत्रित करते थे। छोटे-छोटे चौकों म दिन के समय तथा बडे बडे मोहल्ला मे रात के समय सभाए हुआ करती थी। दोपहर को भी लोग उनकी बात सुनने पहुँच जाते थे। रात की सभाओं म व्यासजी को इतनी अधिक मालाए पहनाई जाती कि उनको कई कई बार उतार कर मच पर रखना पडता था। अगर नही उतारें तो चाहे मालाओं मे दब जाय। उनका एक फोटो भी है जिसम मालाओं के कारण व्यासजी की एक आख तक बद हो गई है। फूलो की सकडो मालाओ के बाद शुरु होता था रुपयो की मालाओं का सिल सिला। मोहल्ले वाले 101 रु से लेकर 501 तक अपनी अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनको रुपयो की मालाए पहनाते थे। लोग जानते थे कि व्यास जी के पास अपने साधन तो है नही, उनको तो जन सहयोग से ही चुनाव लडाया जा सकता है।"

अपने विधान सभा चुनावो से पूर्व वे कलकत्ता एव अन्य स्थानो की यात्रा भी किया करते थे। लोगो म उनके प्रति एक सहज श्रद्धा एव अटूट विश्वास की भावना थी। समर्थको एव शुभ-चिंतको से उन्हे हमेशा प्रबल समर्थन मिला। वे उनके जनाधार तो थे ही, चुनाव के लिए वाछित साधनो की व्यवस्था भी वे ही किया करते थे। व्यासजी की कलकत्ता (पश्चिमी बगाल), एव तेजपुर, सिल्चर, शिलौंग और गोहाटी (असम) की यात्राओं के प्रसग म श्री बालचद साड ने बताया—"कलकत्ता के लोग चुनाव के समय व्यासजी का आत्मीयता स सत्कार किया करते थ। उनके 10 12 साथी तो उन दिनो अपना काम धधा छोड कर चुनाव के लिए धनराशि एकत्रित करने म जुट जाते थ। लहरचद मुकीम अपने मामा डा बेगानी से कह देता था कि 'व्यासजी आ गये हैं-पाच साल म एक बार ही तो काम पडता है चुनाव का अब 15 दिना तक मे दुकान पर नही आऊगा'—यह बात एकदम स्पष्ट थी कि 15 20 दिनो तक कुछ लोग अपने धधे पर ध्यान तक नही देते थे। व्यासजी के कार्यक्रमो

म सक्रिय रूप स रुचि लेन वाला म सर्वश्री म नूलाल पारस, मोतीलाल मालू गोपाल चद बोथरा, भवरलालजी सावणसुखा, दूलीचन्दजी डागर, चादमलजी अभाणी झवरलाल भण्डावत लहरचद मुनीम जयचदलाल पारस, धनराज कोठारी, भवर लाल सेठिया, सत्यनारायण पुरोहित, मोहनलाल पुरोहित, आदि लोग प्रमुख थे।" श्री बालचन्द साड स्वय तो सक्रिय रहते ही थे।

"अपराह्न तीन चार बजे उनके समर्थक एक जगह पर इकट्ठा हो जाते तथा रात को आठ बजे तक गद्दी गद्दी म जाकर उनके लिए धन सग्रह करते। चूरू, लाडनू, जसलमेर, गगाशहर, भीनासर, एव नापासर के प्रवासी राजस्थानी भी (चाहे वे कलकत्ता म हो अथवा असम म) व्यासजी को सहायता देने म अग्रणी रहते थे। बीच–बीच मे सभाए भी होती रहती।

"व्यासजी अलग अलग समूहो व लोगो से मिलने एव छोटी छोटी राशियो म धन सग्रह को अधिक महत्त्वपूर्ण समझते थे। उनका कहना था कि इससे व्यापक जन–सम्पर्क हो सकता है। बडी–बडी राशियो वाली जगह तो सीमित होती है–अधिक स अधिक लोगो को समाजवादी अभियान म लाने का अवसर तो तभी मिल सकता है जब सब से मिला जाय, फिर वे चाहे ग्यारह ग्यारह रुपये दें या इक्कीस–यह महत्व–पूर्ण नही है, महत्वपूर्ण है उनका समर्थन, उनका सहयोग उनका अटूट विश्वास।"

कलकत्ता के व्यवसायी बधुओ के सहयोग से चुनाव अभियान को गति मिलती थी। लोग इस प्रकार स्वेच्छा से 201 रु से लेकर 501 रु तक की धन राशि लिख पाते और इस प्रकार व्यासजी के प्रति अपनी श्रद्धा को व्यक्त किया करते थे। उनका कलकत्ता प्रवास चहल पहल एव गहमा-गहमी से भरा रहता–कभी श्रमिक नेता ब्रजमोहन व्यास की तरफ से मोहम्मद अली पार्क म मीटिंग होती तो कभी लिलुआ वाले साथियो की तरफ से लिलुआ म कभी अग्रसेन भवन म होती तो कभी किसी अन्य स्थान पर। कलकत्ता म उपलब्ध राष्ट्रीय एव प्रातीय स्तर के समाजवादी नेता भी व्यासजी के सम्मान मे आयोजित सभाओ म बराबर भाग लेते थे। अपनी सजातीय लोगो को एक सभा मे जब व्यासजी मानव धर्म, मानव प्रेम एव सर्वधर्म सद्भाव की बातें कही तो उनके व्यापक विचार फलक एव विश्वजनीन भावनाओ से लोग अत्यन्त प्रभावित हुए। व्यासजी के व्यक्तित्व को जातिगत खाचा म बाधा ही नही जा सकता था। एक विशाल दृष्टिकोण एव जन–जन के प्रति आत्मीयता का भाव लेकर ही वे अपने पथ पर आगे बढे और उसी का निर्वाह उन्होने जीवन पर्यन्त किया। उनका चुम्बकीय व्यक्तित्व सब को अपनी ओर आकर्षित करता था—उनकी बेलाग निश्छलता सब को प्रभावित करती थी एव उनकी त्यागवृत्ति सब के लिए उदाहरण प्रस्तुत करती थी।

व्यासजी फक्कड वृत्ति के तो थे ही, अपने पास जरूरत से ज्यादा पसा रखते ही नही थे। ऐसे म अनेक अवसर आए जब उनके पास कुछ भी नही था पर अपनी जनसवा अपनी निराली मस्ती को उन्होने कभी नही छोडा। फक्कडपन के साथ-साथ भुलक्कडपन भी उनम था–एक बार खगरा पटटी स धमतल्ला जान क लिए टक्सो म तो वठ गये पर उनको खुद को मालूम नही था कि उनकी जेब म पस तक नही है। चाहे जो हो, उनका विश्वास था कि उनका काम कभी नही रुक सकता–अपन म, अपने साथियो म, अपन समथको और साधारण जनता म इतना अधिक विश्वास रखने वाले विरले ही होते हैं और विरले ही ऐसे लोग होते हैं जिनको इतना व्यापक जन समथन मिलता है। कलकत्ता के प्रवास के समय उनके साथी हर समय इस बात का ध्यान रखते थे कि व्यासजी को कोई तकलीफ न हो। वसे उनके बडे, भाई साहब स्व यशोधरजी व्यास भी उन दिनो कलकत्ता (धमतल्ला) म ही रहा करते थ। अत साथियो के साथ साथ परिवार वालो का सम्पक भी बराबर बना रहता था। व्यासजी के काय म लोग उत्साह से, रुचि से सहयोग दते। सभी लोग अपने अपने प्रकार स सहयोग देते थे। उदाहरणाथ, सन् 1962 के चुनाव के लिए निर्मित रवर पर झोपडी के निशान का लालरंग का बिल्ला श्री भवरलाल सेठिया और जयच न्दलाल पारख के सहयोग से बना था। मामला भावना का था–जिसस जो समन्न म जो आ जाय वह उसी प्रकार स सहयोग द दिया करता था।

असम के लोगो के हृदया म भी व्यास जी क प्रति अपार स्नेह आत्मीयता बोध एव श्रद्धा के भाव थे। यह बात उनकी तेजपुर सिल्चर, गोहाटी एव शिलोग की यात्राओ से प्रकट हुई।

व्यासजी की असम यात्रा एक निश्चित् प्रयोजन के सदभ म थी आगे आने वाले चुनावो मे राजस्थान से समाजवादी दल के 16 प्रत्याशियो को खडा होना था। राष्ट्रीय कायकारिणी के सदस्य होन एव प्रातीय महाम त्री होन के कारण दल के लिए साधन इकट्ठा करना व्यास जी का काम था। उ ह धन सग्रह करना था–केवल अपने लिए नही वरन् दल के सारे प्रत्याशियो के लिए। इसके लिए कलकत्ता हो अथवा तजपुर, डिब्रूगढ हो अथवा गोहाटी–उ ह सभी स्थानो पर जाना था। इन यात्राओ म भी उनका लक्ष्य व्यापक जन सम्पक का था, वित्तीय सहायता जो भी और जितनी भी दे दे, वे उस सहप स्वीकार करने को तयार करते थ। उनकी मा यता थी कि छोटी छोटी राशियो के माध्यम से अधिक स जन सम्पक हो सकता है।

कलकत्ता से वे और उनके दो साथी–श्री बालच द साड एव लहरच द मुकीम हवाई जहाज स गोहाटी गये। उनके पहुचने स पूव ही कलकत्ता म रहने वाले श्री झवर-

लाल बोथरा ने अपने भाई श्री कंवरलाल बोथरा को व्यासजी आगमन की सूचना दे दी थी। कंवरलाल बोथरा गोहाटी में धनराज सुराणा के यहां रहते थे। धनराज सुराणा ने अपने सभी साथियों को व्यासजी के आगमन के बारे में बताया तथा कहा कि वे राजस्थान के सशक्त विरोधी नेता तो हैं ही, अपने बीकानेर के भी हैं। हम उनका तहदिल से स्वागत करना है।" प्लेन से उतर कर व्यासजी जब बस द्वारा डिपो पर पहुंचे तो उनके स्वागत में श्री धनराज सुराणा, कंवरलाल बोथरा एवं अनेक राजस्थानी प्रवासी-बंधु डिपो पर खड़े थे। उसमें बीकानेर के अतिरिक्त नापासर, गंगाशहर, भीनाशहर तथा लाडनूं तक के प्रवासी बंधु सम्मिलित थे। व्यासजी एवं उनके दोनों साथियों को एक होटल में ठहराया गया। भोजन की व्यवस्था सुराणा जी के यहां थी पर अनेक लोगों के आग्रह के कारण उन्हें भिन्न भिन्न स्थानों पर भोजन के लिए जाना होता। अपने गोहाटी प्रवास काल में व्यास जी को अपने दल के कार्यालय (जिसे असमी में माटी कहते हैं) में भी भाषण दिया। देश के प्रख्यात समाजवादी नेता श्री हेम बरुआ भी उस मीटिंग में उपस्थित थे। गोहाटी में व्यासजी का शानदार स्वागत तो हुआ ही, सभी सहयोगी बंधुओं ने आर्थिक सहयोग भी दिया। यह उनके प्रति जबरदस्त श्रद्धा भावना एवं सम्मान व विश्वास का परिचायक था। गोहाटी यात्रा में श्री तुलसीराम स्वामी का सहयोग भी सराहनीय था।

गोहाटी से प्रस्थान से पूर्व ही श्री धनराज सुराणा ने तेजपुर के रहने वाले श्री रमेशचंद बोथरा को फोन से व्यासजी के आने की सूचना दे दी थी। श्री बोथरा एवं उनके साथियों ने व्यासजी का आत्मीयता पूर्ण भावभीना स्वागत किया। उन्हें अपने निवास स्थान पर ठहराया करीमगंज से व्यासजी को बोमडिला के उस ऐतिहासिक स्थल को दिखाने ले गये जहां बर्बर चीनी सैनिकों की गोलियां से भारतीय सैनिक हताहत हुए थे। वृक्षों और दीवारों पर गोलियों के निशान उस बर्बरता की साक्षी दे रहे थे। अपनी स्मरणीय यात्रा के अंत में वे सिलचर से हवाई जहाज द्वारा पुनः कलकत्ता लौट आये। सब श्रीयुत् चतुर्भुजजीदास बोथरा किस्तूरचंद दजीशाह बोथरा तथा भीनासर के श्याम स्टोर वाले मोतीलाल जी डागा आदि ने व्यासजी का हार्दिक स्वागत किया। उनके पास श्री भँवरलाल सुखाणी का पत्र था जिसमें उन्होंने व्यासजी के आगमन की सूचना दी। श्री भँवरलाल सुखाणी ने अपने समधी को लिखा था कि "व्यासजी वहां आवे तो आप यही समझना कि स्वयं भँवरलाल सुखाणी ही आये हैं। मैं व्यासजी का इतना आदर करता हूँ और व्यासजी आसाम में आ रहे हैं, अतः उनका यथोचित सत्कार करना है।' रात को व्यासजी के सम्मान में एक प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमें मारवाड़ी

समाज के 200-250 व्यक्तियो ने भाग लिया। व्यवस्था इतनी त्वरित थी कि व्यासजी एव उनके साथी अपराह्न तीन बजे तो तेजपुर पहुचे थे और रात को 9 बजे प्रीतिभोज की व्यवस्था करदी गई थी। एक प्रकार से पूरी मारवाडी पटटी ही उस अवसर पर वहा विद्यमान थी। व्यक्तिगत स्वागत सत्कार म तो भोजन के समय दस पाच आदमी ही बुलाये जाते पर वह तो एक सामूहिक सत्कार था। पाच दिना तक लगातार स्वागत होते रहे-कभी गणेश स्टोर वाले बुलात तो कभी हिन्द मोटर स्टोस वाल, कभी बछराज दूगड लाडनू वाले आमत्रित करत तो कभी आस करण चतुभज किस्तूर च दजी शाह बोथरा आग्रह पूवक निमत्रण देते। बछराज दूगड का सहज स्नेह सभी को आकर्षित करता था-यहा तक कि बाबू जयप्रकाश नारायण भी जब कभी तेजपुर जाते, श्री दूगड के यहा ही ठहरते थ। तेजपुर म भी व्यवसायी बधुआ ने व्यासजी एव उनके दल के प्रत्याशियो के लिए आर्थिक सहायता दी। व्यासजी एव उनके दो साथी तजपुर से गोहाटी होते हुए कार द्वारा शिलोंग गये। इस प्रवास म देश नोक के श्री इ द्र चद गुलगुलिया उनके साथ थे शिलोंग म उनका भव्य स्वागत हुआ जिसम श्री युत् श्री कृष्ण सिंहानिया एव गिरधर लाल सुराणा की प्रमुख भूमिका थी। वहा स श्री मगनमल गुलगुलिया के साथ वे करीमगज गये। गरम जोशी का स्वागत और भावभीना आदर सत्कार तो होना ही था। तोलाराम पुगलिया एव श्री सठिया (डूगरगढ) के अतिरिक्त सवश्री भवरलाल वरडी चम्पालाल भूरा आदि अनेक गणमा य प्रवासी ब धुओ ने राजस्थान के जन नेता की अगवानी की-उ हे समु चित सम्मान दिया। 1957 से 1967 की अवधि व्यासजी का यायावरीय जीवन निर तर गतिशील रहा। राष्ट्रीय सम्मेलना म भिन्न भिन्न स्थानो पर तो वे जाते ही रहत थे राजस्थान म उनका भ्रमण इतना व्यापक था कि वे प्राय हर जिले के लोगा से सम्पक म रह सकते थे। व्यक्तिगत सम्ब धा का निर्माण, निर्वाह तथा उनका सामाजिक प्रतिफलन ही उनकी सफलता का मूल मत्र था। स्थान कोई भी हो, व्यासजी की उपस्थिति एक अथ रखती थी। उनकी उपस्थिति मात्र स ही वह सम्मेलन, अधिवेशन और अवसर महत्त्वपूण बन जाता था। अकाल के दिनो मे गाव-गाव म उनका परिभ्रमण, पीडितो से व्यक्तिगत सम्पक, जन धन की हानि का स्वयमेव जायजा और विधान सभा म उसकी अनुगूज-लोगो को आज तक याद है। तथ्यो को रखने से पहले वे उनका प्रामाणीकरण अवश्य करते थे।

प्रोफेसर केदार नाथ ने अपने सस्मरणो म ऐसी कई यात्राओ का उल्लेख किया है। जसलमेर और बाडमेर की यात्राआ मे तो वे व्यासजी के साथ ही थे। वहा से सग्रहीत तथ्यो-रेगिस्थान के फलाव, अकाल की स्थिति, राहत कार्यों की शिथिलता-आदि बि दुआ को विधान सभा म रखने से ये यात्राए अत्य त महत्त्वपूण बन गई थी।

व्यासजी इन परिक्षेत्र के निकटवर्ती स्थानो पर भी आते रहते थे पोकरण फलोदी और शिव की यात्राए भी प्रसिद्ध है। श्री गोकुल धो वाल न फलोदी और जसलमर के अतिरिक्त दासा, भरतपुर, जोधपुर एव चूरू की यात्राओ का वणन किया है। भीलवाडा की यात्रा म श्री बुलाकी दास व्यास एव गोवा एव वम्बई क अधिवेशनो म श्री भीमपांडिया उनक साथ थे।

कही पर कोई अधिवेशन हो रहा है तो कही पर कायकारिणी की बठक। कही पर किसी राष्ट्रीय नेता का कायक्रम है और कही पर कुछ और प्रसग कोई भी हो, उन्ह राजस्थान के भिन्न भिन्न भागो म जाना पडता था। प्रातीय महामन्त्री होन क नात वे उन समस्त स्थानो पर गये जहा से प्रजा समाजवादी अथवा समाजवादी घटको क उम्मीदवारो ने चुनाव लडा था। मित्र दलो के सयुक्त अभियानो म भी उनको जाना पडता था। और फिर कही पर भी आदोलन हो, गोली काण्ड अथवा लाठीचाज हुआ हो, लम्बी भूख हडताल अथवा श्रमिक अनशन क प्रकरण हो अथवा जुलूसो एव सभाओ के माध्यम से जन जागरण करना हो अपन दल द्वारा शुरू किय गये ऐस किसी भी अभियान म वे जरूर जाते थे। प्रातीय गतिविधियो की रिपोट उन्हे राष्ट्रीय कायकारिणी को देनी होती थी। इस प्रसग म उनकी जसलमेर से भरतपुर एव श्री गगानगर स उदयपुर तक की यात्राओ को रखा जा सकता है।

व्यासजी के एक निकट सहयोगी श्री मोहनलाल पुरोहित ने उनकी निस्पृहता, त्याग वृत्ति एव समाजसेवा का सजीव चित्रण किया है। श्री पुरोहित के अनुसार गभीर अथ सकट के बीच म रहने वाले व्यासजी ने अपनी सेवाओ और कतव्यो की आहुति कभी नही दी। अथ सकट भल ही हो, उनके पाव कभी नही डगमगाये। अपन कथन की पुष्टि म श्री पुरोहित ने कुछ उदाहरण दिय हैं –

1 वे अपनी जीवन बीमा की पालिसी का रुपया की कमी के कारण चालू नही रख सके। किश्तो के लिए नियमित धनराशि कहाँ से आती? अतत पालिसी ही बद हो गई।

2 वे आशा देवी क भक्त थ। वहा तक जान म दो सौ रुपयो का खच था। वे वहा मा के दशन तथा जात तक नही दे सके।

3 वे अपनी धम पत्नी क तमाम जेवर (दो चार हजार का जेवर) बिक्री कर क बाकी दो चार हजार रुपय और मिलाकर आठ दस हजार रुपया का मकान नही खरीद सक।

4 साधनो क अभाव के कारण इच्छा रखत हुए भी लोकसभा का चुनाव नही लड सके।

5 दस साल तक निरन्तर विधानसभा के सदस्य रहने पर भी उनके पास दवाई तथा घर खर्च चलाने लायक पर्याप्त पैसा कभी नहीं रहा। उन्होंने विधानसभा के दसवर्षीय कार्यकाल में कभी भी दवाई के पर्चे के आधार पर सरकारी कोष से रुपये नहीं लिये।

6 घर में खाना खर्चा तक चलाना उनके लिए कठिन था, क्योंकि अन्य साधन उनके पास नहीं थे। बीमार रहने लगे, बीमारी बढ़ती गयी अच्छी देखभाल और चिकित्सा व्यवस्था नहीं मिली जन सेवा की दौड़-धूप जारी रखी और शरीर की चिन्ता नहीं की। और अंत में इसी निर्धनता और बीमारी की चपेट में आकर असमय में ही संसार से विदा भी हो गये।

व्यासजी के जीवन प्रसंगों में श्री भीमपांडिया का साथ काफी घनिष्ठ रहा है। भीम पांडिया वह व्यक्ति है जिन्होंने अनिवार्य शिक्षण शालाओं में रहकर भी व्यासजी द्वारा संचालित आन्दोलनों में भाग लिया, उनके साथ राजनीति में सक्रिय भागीदारी की, लूणकरणसर क्षेत्र से विधानसभा का चुनाव लड़ा, जयपुर एवं गंगानगर आन्दोलनों में भाग लिया तथा पूरे देश का परिभ्रमण किया। सभाओं में अपनी चंग ध्वनि और लोकप्रिय कविताओं से वातावरण बनाने वालों में वे अग्रणी रहे हैं।

व्यासजी के साथ अपने जीवन प्रसंगों की एक झलक देते हुए श्री पांडिया ने लिखा है कि व्यासजी लोक शिक्षक, लोक नेता, लोक गायक और लोक कवि भी थे। वे हमेशा दुराचार, भ्रष्टाचार और तस्कर व्यापार के विरोधी रहे। नगर ही नहीं, दूर दराज के गांव-कस्बों में भी वे संकटों का समाधान ढूंढते फिरते थे। मुझे तो उनके साथ अनेक राज्यों की राजधानियां नगरों-कस्बों मे जाने का सौभाग्य मिला है। मेरी चंग व्यासजी के साथ सदा बजती रही और मेरी कविताएं मंचों पर झूमती रहीं। मैं उनके साथ जुड़ा ही रहा। व्यासजी में संगठन की अपूर्व क्षमता थी। कविता से भी उनका हार्दिक लगाव था। मैंने उनके साथ रेगिस्तान से अरब सागर तक की यात्राएं की। गोवा की राजधानी पंजिम (पणजी) मे भी उनके साथ जनसभा में चंग बजा कर आया।"

अपने राजनीतिक जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना के प्रसंग मे भी श्री भीमपांडिया ने व्यासजी का स्मरण किया है। साथ ही कर्मचारी आंदोलन एवं छात्र आंदोलनों में उनके सक्रिय सहयोग एवं मार्ग दर्शन का भी उल्लेख किया है। उनके अनुसार—
'1958 में म्यूनिसिपल बोर्ड की ऐतिहासिक हड़ताल हुई। मैं कर्मचारियों की सहानुभूति में उनके साथ था। व्यासजी के इण्डस्ट्रियल ऐक्ट में मुझ पर भी मुकदमा चला। व्यासजी ने अनिवार्य शालाओं के कर्मचारियों के संकटों का निवारण करने

हेतु भुग र मभर महयाग दिया—विधानसभा क प्रागण म। सचिवालय की फाइला म ।। विद्यार्थियो की एम एस सी व एल एल एम की शिक्षा व्यवस्था की न्यायोचित माग पर जब सरकार न लाठियाँ बरसाई तो 1 दिसम्बर 1966 का धारा 144 का दमन भी विरोध किया—फलस्वरूप व्यासजी क साथ बीकानेर जल म रहन का सौभाग्य मिला। हमारी पीढ़ाए एकाकार थी।"

1967 के विधानसभा चुनाव म मुझ भी लूणकरणसर विधानसभा क्षेत्र स प्रसो पाई उम्मीदवार बनाया गया जिसका एकमात्र अभिशसात्मक श्रय श्री व्यासजी को ही है। हम पूर राजस्थान म प्राय प्रसोपाई उम्मीदवारो क निर्वाचन क्षेत्रो म समर्थन म घूमे, किन्तु पार्टी क आतरिक खिचाव एव टूटन क कारण भारी क्षति हुई। कुछ ऐसे लोगा क घातक प्रहार पार्टी को सन्न न लिए ल बठे।'

व्यासजी का नाम प्रसोपा क शीर्षस्थ नताओ म था व अपने दल क राजनीतिक प्रभा मण्डल के दैदिप्यमान नक्षत्र थ। उनका प्रयत्न रहता था कि ऊर्जावान एव योग्य कार्यकर्ता भी राजनीतिक पटल पर उभरें तथा जन नतृत्व का भार ग्रहण करें। इसी विचार धारा स वे अपन विश्वस्त साथियो का महत्त्वपूर्ण अवसरो पर साथ रखते थ। श्री भीमपांडिया न अपन गोवा प्रवास का वर्णन इन शब्दो म किया है- प्रजा समाजवादी पार्टी की बठक 24 मई 1966 स 26 मई 1966 तक कम्प कोलवा बीच गोवा म हुई। मैं उस अवसर पर व्यास जी क साथ गोवा गया था (दर्शक रूप म)। मेरा परिचय सव श्री एन जी गोरे त्रिलोकीसिंहजी, वसावन सिंहजी स हरभजन सिंहजी अनुत लिमये पीटर अलवारिस हरि विष्णु कामथ, प्रेम भसीन एस सिवप्पा मधु दण्डवत बेनीप्रसाद माधव, एम रामचन्द्रराव, सूरज नारायण सिंह, लखनलाल कपूर रामचन्द्र शुक्ल, नाथ प, सुरेन्द्र मोहन नाना अगले आदि से हुआ। गोआ क केन्द्र पजिम (पणजी) म सावजनिक सभा म व्यासजी का भाषण और चग पर मेरी कविताए हुई। इसी यात्रा प्रसग म सह्याद्रि–मसूर–पूना–बम्बई आदि स्थाना पर भ्रमण का भी अवसर मिला। सभी स्थाना पर व्यास जी के प्रति लोगा म भारी आकर्षण था। वड ही आदर भाव स लोग व्यास जी को अपने परिवार का सदस्य ही मानते थ। व्यासजी भी उनसे पूरा स्नह रखते थे।

अगर प्रत्याशी अकला हो, दल का पूरा सम्बल हो, आर्थिक धरातल मजबूत हो और पर्याप्त समय हाथ म हो तो कोई भी प्रत्याशी अपनी पूरी शक्ति चुनाव म लगा सकता है। पर व्यासजी क साथ यह स्थिति नही थी। अपन दल के एक मात्र प्रत्याशी तो व थ नही–व ह तो प्रान्तीय स्तर पर भिन्न भिन्न स्थाना स खडे दल के प्रत्याशियो को भी साथ देना होता था। सभी चाहत थे कि चुनाव प्रचार के लिए

व्यासजी स्वय आवें। दल के ससाधन सीमित थे और जा कुछ थे वे अधिकाशत व्यासजी के प्रयत्नो स ही एकत्रित हो पाते थे। कभी जोधपुर तो कभी सोजत कभी भीलवाडा तो कभी रामगज मण्डी, कभी लूणकरणसर तो कभी चूरू चुनाव प्रचार के लिए घूमने वाले इन अलमस्त फक्कड को अपने चुनाव की ही नहीं, सबके चुनाव की फिक्र रहती थी। सन् 1967 म व्यासजी की पराजय को इसी परिप्रेक्ष्य म देखना होगा।

10 जनवरी 1967 को दल के ससदीय बोर्ड द्वारा जिन प्रत्याशियों का चयन किया गया उन्हे बीकानेर से मुरलीधर व्यास के अतिरिक्त जोधपुर, लूणकरणसर, नोखा करणपुर भादरा, डूगरगढ, सरदार शहर, साडवा सोजत किशनगज (जयपुर), हकलेरा भीलवाडा, पिडावा, रामगज मण्डी झालरापाटन डीग चूरू, छापर जोमिया, जसलमेर, बनेडा, निम्बाहेडा, वल्लभनगर, बूदी और टोक स कुल 26 प्रत्याशियों का चयन किया गया था। उम्मीदवारो मे जोरावरमल बोडा (जोधपुर) माधव शर्मा (साडवा), प्रदीप शर्मा (चूरू) बशी लाल (वल्लभनगर), भीम पाण्डिया (लूणकरणसर) शेख मोहम्मद (टोक), कन्हैयालाल अचलवशी (जसलमेर), गुरुदयाल सिंह (करणपुर), प्रेम देवी (भीलवाडा) एव नानूराम जाय (छापर) आदि सम्मिलित थे।

व्यासजी अत्य त व्यस्त रहते-बीकानेर की कमान तो उनको सभालनी ही थी पूरे राज्य म घूम घूम कर दल का प्रचार भी करना था। 3 जनवरी 67 को गाधी चौक बीदासर की आम सभा म उ होने भाग लिया जहा नानूराम जाय के समथन म आयोजित हुई थी। चूरू की सभा म श्री प्रदीप शर्मा का समथन करते हुए श्री व्यासजी ने कहा स्वच्छ एव स्वस्थ प्रशासन स ही जनहित सफल होता है। जनता सुयोग्य, ईमानदार और सेवाभावी उम्मीदवारो को विधान सभा म भेजे। इसीस हम वतमान म फैले भ्रष्टाचार और मनमानी को दूर कर सकेंगे।"

राज्य के महत्वपूर्ण चुनाव क्षेत्रो म बीकानेर का नाम अग्रणी था। सबका ध्यान इस क्षेत्र के चुनाव परिणामो पर केद्रित था। कुछ कारणो से श्री मुरलीधर व्यास मुख्य मत्री सुखाडिया के प्रमुख राजनीतिक विरोधी मान जाने लग थे। सुखाडियाजी की पूरी शक्ति इस बात पर लगी थी कि येनकेन प्रकारेण श्री व्यास को पराजित किया जाव। साले की होली की आम सभा म श्री सुखाडिया न कहा भी था एक नहो सकडो व्यास भी आ जाव तो भी मेरा कुछ नहीं बिगाड सकते। वे दीवारो स सिर टकरा कर रह जाय तो भी कुछ नही हो सकता।' व्यासजी को इस निर्णायक राज्य सत्ता से टक्कर लेनी थी अल्प ससाधनो, लेकिन प्रबल जनमत के सहारे वे आश्वस्त थे कि बीकानेर की जनता उन्हे ही चुनेगी।

यहने को मतान म एक दजा से ज्यादा उम्मीदवार थे, पर उनम महत्व क प्रत्याशी कांग्रेस प्रजा समाजवादी एव जनसघ न ही खडे किय थे। प्रमुख मुकाबला श्री मुरलीधर व्यास (प्रसोपा) एव गोकुल प्रसाद (कांग्रेस) क बीच था। सभाओ म हजारो श्रोता आते दोनो तरफ क आरोपो क जवाब अगले दिन की सभाओ म दिय जाते मालाएँ रुपयो की मालाए नारे जुलूस घर घर प्रचार सभी कुछ होते। चुनाव अवधि म व्यासजी क पक्ष म लोगो न कई गीत एव कविताए बनाई। य गीत सभाओ के प्रारभ और बीच बीच म गूजते रहत थे। कुछ लोकप्रिय गीतो क अश इस प्रकार है —

(अ) झालादेवे झूपडी थे वोट दीज्यो जो, पाच बरस म पग पग म्हारी सवा लीज्यो जी

झाला देवे झूपडी

बीस बरस बीताया कागा सुखरी घडी न लाया रे आजादी न राख अडाणे दुख रा बादळ छाया रे मिनख जिना वळधा री जोडी बसमे पडी, झाला दवे

—भीमपाण्डिया

(आ) बला वाला मेळा कर के मत ना खाजो खोपडी बीकाण म जीतला आ मुरलीधर री झोपडी
बीस बरस म सुणज्यो भाया सत्ता पाकर काम कियो भारत री धरती दीनी और अवमूल्यन रो नाम कियो
दे विकास रा थोथा नारा कर्जो लीनो रोकडी बीकाण म जीतेला आ मुरलीधर री झोपडी

—बुलाकी दास व्यास

(इ) ओ तो मजदूरा रा प्यारो झूपडली रा बेटा थारो आवे गाव सू न्यारो मुरली वाल न। हो मुरली वाल न जो तो सगला र मन भाव,जनता ई ने सारी चाव बच्चा बूढा जवान ध्याव मुरली वाल न

—रूप नारायण पुरोहित

(ई) डिक्टेडर का कटटर दुश्मन है य बीकानेर सारा बीकानर सत्य की रहा है माला फेर

डिक्टेटर का कटटर

और भी अनेक कविताएँ थी अनेक गीत थे मच पर गायक गाते थे और साथ साथ हजारो श्रोता समवत स्वरा म गाया करते थे। एक विस्मयजनक नजारा होता था

वह। हजारो कठो की एक ही आवाज थी–"बीकाण म जीतेला आ मुरलीधर री झूपडी'। प्रत्यक्षदर्शी जानते है कि लोगो म कितना जबरदस्त उत्साह था। ठडी रातो म सभाए होन क बाद बडे तडके तक नार गूजत रहते थ।

1967 का चुनाव परिणाम इसीलिए तो लोगो को अप्रत्याशित लगा था। इसीलिए उन्हे सहज मे विश्वास तक नहीं हो रहा था कि व्यासजी पराजित हो गये है। वे यह तो जानते थे कि इस चुनाव म राज्य सत्ता और धन की सत्ताए व्यासजी के खिलाफ हैं, पर वे यह नही सोच पाये थे कि व्यासजी कभी हार भी सकते हैं। खैर, आखिर वही हुआ जो होना था। बीकानेर क्षेत्र का 10 वर्षों तक अनवरत प्रतिनिधित्व करन वाल श्री मुरलीधर व्यास 12213 मत लेकर भी पराजित हो गये। यदि उन्हे 2200 मत और मिल जाते तो जीत सकते थे। उनके प्रतिद्व दी श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित का 16581 मत मिले थे। कहन को तो मैदान म एक दजन स अधिक प्रत्याशी थ पर जनसघ (7058 मत) तथा एक निर्दलीय श्री गोवि द नारायण वैद्य (1759 मत) को छोड कर सभी पराजित प्रत्याशी 1000 स कम मत ले पाये थे। उनम एक का तो मात्र 75 मत ही मिले थ। दो का सौ स कम, तीन को दो स कम, एक का तीन सौ स कम एक को चार सौ स कम तथा एक को एक हजार से कम मत मिले थे।

व्यासजी की पराजय अप्रत्याशित थी पर वीतरागी व्यासजी ने उस भी सहज भाव से स्वीकार किया।

वे चार वर्ष

सार्वजनिक राजनीतिक क्षेत्र म वे लोग जो केवलचुनावी राजनीति तक सीमित रहते है—चुनाव म पराजय स ऐसे कई नताआ के राजनीतिक जीवन का अत हो जाता है। उनम से कई ऐसे होते है जो कालान्तर म राजनीतिक जीवन से विलुप्त ही हो जाते है। जनता उनकी इस तरह भूल जाती है कि मानो वे राजनीति के पटल पर कभी आये ही नही थे। उनका कोई नाम लेवा तक नही रहता। इसके विपरीत कुछ ऐस भी होते हैं जो वोटा की गणित म चाहे पिछड़ जायें पर जनमानस पर पूरी तरह छाये रहते है कभी-कभी तो उनकी चुनावी पराजय को जनता अपनी पराजय मानने लगती है। श्री मुरलीधर व्यास ऐसे ही नेता थे। उनकी पराजय को जनता ने अपनी पराजय माना और उ ह पहले स भी अधिक सम्मान दिया। सन् 1967 स आगे के चार वर्ष इस बात के साक्षी हैं कि जन साधारण ने मजदूरा, निष्ठावान ईमानदार सरकारी कर्मचारिओ और हर मेहनतकश व्यक्ति ने उनको आदर दिया। उनके निर्देश पर लोग जुलूस म सभाआ म जाते लाठिया भी खाते जेल म जात और न जाने कितन कष्ट सह कर भी अपन प्रिय नेता का साथ दते विरोधी दल क नेता का साथ देने म क्या लालच हो सकता है? न कोई प्रलोभन, न कोई पद न परमिट, न ठेका, न लाइसेंस और न सरकारी सरक्षण पर फिर भी लोग उनको पलका पर उठाये रहे। केवल उनको ही अपना पहरुआ अपना नेता अपना मार्ग-दर्शक मानते रहे। आम चुनाव म हार कर भी व्यासजी आम जनता म तो विजेता ही रहे।

सन् 1967 के राजनीतिक परिदृश्य को व्यापक दृष्टि स देखने वाले जानते हैं कि पूरे राष्ट्र म उस समय भूचाल-सा आया हुआ था। कई राज्या म सविद सरकारें बनी। कई स्थानो पर दल बदल की राजनीतिक भ्रष्टाचार की घटनाए सामने आईं। महारावल लक्ष्मणसिंह न जो उस समय राजस्थान विधानसभा क विरोधी दल के नेता थ एक वक्तव्य म उस समय की स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया है "पिछल आम चुनाव म कांग्रेस कई प्रांता म हारी है और वहां गैर-कांग्रेसी सरकारें गठित हुई हैं। राजस्थान म कांग्रेस स्पष्ट रूप स हार गई उस राजस्थान विधान-सभा की 184 सीटा म से केवल 87 स्थान प्राप्त हुए हैं। उसके बाद भ्रष्टाचार, प्रलोभन, अनुचित दवाव तथा राज कर्मचारियो की सहायता स विरोधी पक्ष क कई



स्व श्री मुरलीधर व्यास के पूज्य पिता स्व श्री सूरजकरणजी व्यास

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास अपने नन्हे मुन्नो के साथ। परिवार के स्नेहिल क्षणो की एक भावपूर्ण झांकी। साथ मे हैं सत्यनारायण सांवरा, शकुन्तला थानवी, घनश्याम, विमला, कांति, चन्द्रशेखर आजाद, शांति आदि।

स्व श्री मुरलीधर व्यास अपने पुत्र घन   पुत्री

वाहिक यज्ञ-वेदी पर सपत्नीक लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास व श्रीमती सावित्रीदेवी कन्यादान के मंगल संकल्प में भावविभोर है।



व्यासज[illegible] (खड़े हुए) क्रमश: श्री शिवनारायण बिस्सा [illegible] पुरोहित और श्री नेमीचंद बिस्सा। (बैठे हुए) श्रीमती बरजीदेवी (सास) तथा श्री आसकरण बिस्सा (ससुर)।

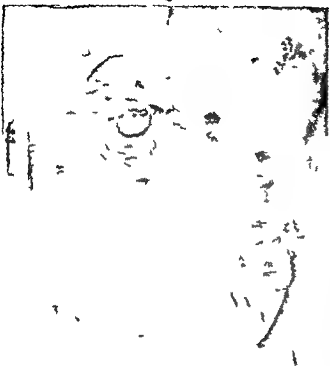
स्व. श्री व्यासजी व पुत्र श्री घनश्याम व्यास व श्रीमती तारा व्यास तथा ज्येष्ठ पौत्र श्री बसंत कुमार, संतोष कुमार और पौत्री कु. भारती व्यास।

स्व. श्री व्यासजी की पुत्री मंजुबाला एवं दामाद श्री पन्नालाल आचार्य के पाणिग्रहण संस्कार पर सौभाग्य की कामना करते हुए
[illegible]

लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास के दामाद श्री सुन्दरलाल जगाणी और पुत्री विमला।



लोकनेता मुरलीधरजी व्यास के दामाद श्री दामोदर गोपा एवम् पुत्री शान्ति।



- - - श्रीमती तारा व्यास तथा

लोकनेता व्यासजी के पुत्र चन्द्रशेखर एवं पुत्री मंजु के शुभ विवाह के अवसर पर तत्कालीन उप महानिरीक्षक आरक्षी श्री भागीरथ राय विश्नोई द्वारा आशीर्वाद ।

लोकनेता स्व. श्री मुरलीधर व्यास के पुत्र चन्द्रशेखर एवं पुत्री मंजु के विवाहोत्सव पर तत्कालीन जिलाधीश श्री डॉ. एन. उपाध्याय द्वारा आशीर्वाद ।

लोकनेता श्री मुरलीधरजी व्यास के दामाद शिवकुमार थानवी और पुत्री कांति

[illegible] श्री पुरुषोत्तमजी व्यास के पुत्र श्री चन्द्रशेखर 'आजाद और
पुत्रवधू श्रीमती कृष्णा व्यास।

लोकनेता व्यासजी के पुत्र चन्द्रशेखर एवं पुत्री मंजु के शुभ विवाह के अवसर पर तत्कालीन
उप महानिरीक्षक आरक्षी श्री भागीरथ राय विश्नोई द्वारा आशीर्वाद।

लोकनेता स्व. श्री मुरलीधर व्यास के पुत्र चन्द्रशेखर एवं पुत्री मंजु के विवाहोत्सव पर
तत्कालीन जिलाधीश श्री डी. एन. उपाध्याय द्वारा आशीर्वाद।

वैवाहिक सदभ म सग सम्बन्धी (श्री गोपाजी) का स्वागत करते हुए व्यासजी के बडे भाई
श्री बंशीलालजी व्यास और लोकनेता श्री मुरलीधरजी व्यास।



लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास की पुत्रियाँ एव नातिनें। क्रमश शान्ति, कृष्णा पानवी
मंजु मीनू पानवी आदि। पीछे खडी हैं कल्पना एव वंदा।

नताओ को गिरफ्तार किया गया, जनता पर गोलियां चलाई लाठियां बरसाई तथा अश्रुगैस का प्रयोग किया। इस तरह आतंकवाद का सहारा लेकर राजस्थान मे कांग्रेस ने अपने प्राकृतिक अल्प मत को कृत्रिम बहुमत मे बदल लिया लेकिन जो सरकार बनी है वह विशुद्ध कांग्रेसी सरकार नही है 'कही की ईंट कहीं का रोडा भानुमति ने कुनबा जोडा' की कहावत चरितार्थ होती है।

व्यासजी इस परिदृश्य के साक्षी ही नही, सक्रिय भागीदार भी थे। उस समय उनको भी जयपुर बुलाया गया था। विरोधी पक्ष की ओर से विशाल जुलूस का आयोजन रखा गया था। तत्कालीन राजा, महाराजा, रानियां जुलूस म पदल चल रही थी विरोधी पक्ष के सभी दिग्गज नेता थ हजारो-हजारो लोग नारे लगाते हुए चल रहे थ, जसे पूरा जयपुर ही उमड पडा हो। फिर गिरफ्तारियां हुई, अश्रुगैस छूटी गोलियां चली, लोग हताहत हुए, कर्फ्यू लगा जयपुर म आतंक की स्थिति बनी और इस तरह राजनीति का कारवा ऊबड खाबड रास्त से आगे बढा। राष्ट्रपति शासन की घोषणा कांग्रेस का राज्य प्रदेश म बनाये रखने का राज्यपाल का प्रच्छन्न आदेश और फिर दल बदल आदि सभी ने मिलकर राजनीति म ऊंच नतिक मूल्यो की लगभग समाप्ति कर डाली।

सन् 1967 म विधान सभा चुनाव म अपनी पराजय के एक दिन बाद ही व्यासजी ने कोटी बाजार, बीकानेर म जो सभा रखी वह स्मरणीय रहगी। सभा म पग रखने तक की भी जगह नही थी। व्यासजी लगभग एक घण्टा बोले। उद्वेलित लोगो ने उनकी जय जय कार की। व्यासजी ने कहा—'राजनीति म जय पराजय चलती रहती है लेकिन इससे मेरी सेवा भावना कम नही हो सकती। मैं पहले भी आपका सिपाही था आज भी हूँ और आगे भी रहूँगा।' सभा के बाद हजारो लोग नारे लगाते हुए उनके पीछे पीछे चले। यह था उनके प्रति लोगो का आदर भाव। चुनाव म पराजित नेता जनता के लिए तो अब भी उसका प्रतिनिधि ही था। वह चाहे विधान सभा म न गया हो पर जनसभा म तो वही उनका जन प्रतिनिधि था। जनता की अदालत ने पराजय के बावजूद जसे मार्ग दर्शन के क्षेत्र म उनके पक्ष म ही निर्णय किया था।

व्यास जी ने सन् 1967 से 1971 तक श्रमिको, मजदूरो एव जन साधारण की समस्याओ पर पूरे दमखम स वक्तव्य दिय तथा प्रदर्शनो का नतत्व किया। उन चार वर्षों म एक दिन के लिय भी वे सुस्ताय नही वरन् पहले से अधिक उत्साह स कार्यरत रहे। श्रम क प्रति अपनी दृढ आस्था व्यक्त करत हुए उन्होने 21 दिसम्बर 1967 को नादनरलव वकशाप श्रमिक शिक्षा शिविर म जो वक्तव्य दिया वह युग-

युग के सत्य को उजागर करने वाला था। व्यासजी ने कहा—'हम देश के अर्थशास्त्र को समझने के लिए कुछ बुनियादी बातों को समझना होगा। जो देश श्रम की ताकत से जितनी ज्यादा दौलत पैदा करेगा, उतना ही उन्नत होगा। देश की दौलत रुपया पैसा नहीं बल्कि श्रम है। सरकार तथा देश के नेताओं को अपने हर कदम में श्रम का मूल्यांकन करना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो देश की दौलत बढ़ेगी तथा औद्योगिक क्षेत्रों में शांति रह सकेगी। मजदूरों की सुविधाओं के लिये तथा उन्हें उचित पारिश्रमिक देने के लिए कुछ प्रगतिशील कानून तो बने हैं, पर आज की पूंजीवादी व्यवस्था उस पर इतनी हावी हो गई है कि लम्बे अर्से तक मजदूरों को उसका लाभ नहीं मिला यदि सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत क्षेत्रों में ज्वायंट मैनेजमेंट कौंसिलों का निर्माण हो तथा बोर्डों में मजदूरों को भी प्रतिनिधित्व मिले तो मालिक और मजदूर अपने अपने उद्योगों की आर्थिक स्थिति समझ सकेंगे तथा मिल कर उसके विकास का प्रयत्न करेंगे।'

श्रमिक शिक्षण शिविर में श्रम एवं पूंजी की महत्ता का एक अत्यंत ही संक्षिप्त विश्लेषण व्यास जी ने किया जो श्रम सम्बन्धों की बुनियाद बन सकता है।

रेलवे कर्मचारियों की समस्याओं के प्रति व्यासजी अत्यंत सजग एवं संवेदनशील थे। 31 जुलाई, 1967 को नादर्न रेलवे मैन्स यूनियन की सैन्ट्रल कौंसिल के निर्णयानुसार बीकानेर के मण्डल अधीक्षक कार्यालय के सम्मुख भी चौबीस घन्टे का उपवास रखा गया था। रेल क्रांति पाक्षिक ने 16 अगस्त, 1967 के अंक में इस प्रसंग को निम्नानुसार प्रस्तुत किया—'यह उपवास सरकार, कर्मचारियों व जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया था कि सरकार रेल्वे कर्मचारियों को महंगाई भत्ता बढ़ाने में आनाकानी कर रही है तथा रेल्वे खर्च में कमी के नाम पर रेल्वे कर्मचारियों पर काम का बोझ अधिक बढ़ाया जा रहा है और उनके तरक्की के साधन रोके जा रहे हैं। उसी दिन शाम को डी. एस. आफिस के सामने एक सभा हुई जिसमें साथी पूर्णानन्द व मुरलीधर व्यास के भाषण हुए। रेल कर्मचारियों की मांगों का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा कि वेज फ्रीज जिन प्रगतिशील देशों में लागू है वहां बाजार के भाव भी नियत रहते हैं जिसके कारण कर्मचारियों को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। यहां तो चीजों का भाव बढ़ाना या घटाना पूंजीपतियों के हाथ में है।

ऊपर के दोनों वक्तव्य श्रम की महत्ता, श्रम द्वारा दौलत के उत्पादन, श्रम के मूल्यांकन की आवश्यकता, औद्योगिक क्षेत्र में शांति की उपादेयता, व्यवस्था समितियों में

श्रमिकों के प्रतिभागित्व, वेज फ्रीज के साथ रेटस फ्रीज [भाव स्थिरीकरण] आदि अनेक ज्वलत बिन्दुओं पर व्यासजी के चिंतन का प्रतिनिधित्व करते है।

व्यासजी इस बीच राजनीतिक राष्ट्रीय धारा से भी बराबर जुड़े रहे। उन्होंने 9 नवम्बर 1967 को प्रजा समाजवादी दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में भाग लिया जो अहमदाबाद मे श्री एन जी गोरे की अध्यक्षता म सम्पन्न हुई थी। बैठक म प्रमुख नेताओं म सवश्री प्रेम भसीन सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी मुल्का गोविन्द रेड्डी मधु दण्डवते, मुरलीधर व्यास पीटर अल्वरिस एव नाथ प जसे व्यक्ति सम्मिलित थे। बैठक म विदेशी सूत्रों स मिले धन की सी बी आइ रिपोट प्रकाशित करने की माग की गई। उत्तरप्रदेश, बिहार और पश्चिमी बगाल की सविद सरकारो के प्रजा समाजवादी मन्त्रियो के अक्टूबर अधिवेशन की रिपोट पर विचार किया गया। चर्चा के उपरान्त यह निणय लिया गया कि उन मन्त्रियो को निर्देश दिये जावे कि वे दल द्वारा निर्धारित 11 सूत्री बिन्दुओं के क्रियान्वयन के लिए अपनी अपनी सरकारो पर जोर डालेंगे। जो अन्य प्रस्ताव स्वीकृत किये गये उनमें डाक्टर राममनोहर लोहिया की मत्यु पर शोक प्रस्ताव, उडीसा के समुद्री तूफान पर सवदना एव सावजनिक/साम्प्रदायिक दगो पर क्षोभ के प्रस्ताव सम्मिलित थे। देश की राजनीतिक स्थिति का दिग्दशन करवाने वाला एक अन्य प्रस्ताव भी स्वीकृत किया गया जिसमें कहा गया कि यद्यपि भारत के आधे से ज्यादा राज्यो म गैर काग्रेसी सरकारें है पर नयी सामाजिक व्यवस्था के निमाण अथवा सबल विकास की स्थितिया अभी नही बनी है। अपने 11 सूत्री बिन्दुओं म दल ने भू राजस्व बन्द करने कृषि कर लगाने भूमिहीन कृषकों के सभी कर माफ करने, भूमिहीनो को कृषि भूमि देने नव सिंचित भूमि पर सिंचाई कर नही लगाने प्रति परिवार कृषि के लिए पन्द्रह एकड स अधिक भूमि नही देने, भ्रष्टाचार के खिलाफ जाच आयोग गठित करने गरीबो को सस्ते मूल्य पर धान व दालें देने चावल एव गेहू के एकाधिकार वाले क्रय की व्यवस्था करने 1800 रु वार्षिक आय तक अभिभावकों के बच्चो से ट्यूशन शुल्क न लेने, गुप्त मतदान से बहुमत के आधार पर कर्मचारी यूनियनो को मान्यता देने एव गेहूँ तथा चावल की मिलो को सहकारी क्षेत्र म लेने की बातें कही थी। इस राष्ट्रीय नीति का निर्माण करने वाले 15 व्यक्तियो म व्यासजी भी एक थे।

बीकानेर स्थित अपने दल की बैठकों म भी व्यासजी बराबर भाग लेते थे। 25 मई 1967 की एक बैठक के वृतात जो स्थानीय समाचार पत्रों म छपे है, के अनुसार बैठक म अनाज की समस्या डिपो आवटन मे होने वाली दुविधाए जल वितरण की स्थिति नगर मे कानून एव व्यवस्था के विघटन की स्थिति नगर परिषद् के करों के

निर्धारण आदि समस्याओं पर विचार किया गया तथा आवश्यक कदम उठाये जाने की माग की गई।

राष्ट्रीय मच पर व्यासजी की छवि त्यागी, सघर्षशील और जनता का सबल प्रतिनिधित्व करने वाले जन नेता के रूप म थी। यह छवि वर्षों के त्याग का ही प्रतिफल था।

सन् 1968 का वर्ष व्यासजी के लिए राष्ट्रीय व प्रातीय धरातल पर घटना प्रधान वर्ष था। वर्ष के प्रारम्भ से ही उन्होंने फरीदनगर (कानपुर) म आयोजित अपने दल के चार दिवसीय नवें राष्ट्रीय सम्मेलन म भाग लिया। इसी सम्मेलन म प्रसिद्ध सात सूत्री कार्यक्रम 'दल के सामने काम' स्वीकृत किया गया था। व्यासजी को एक बार पुन राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य के रूप म चुना गया। उस कार्यकारिणी म श्री एन जी गोरे अध्यक्ष तथा प्रेमभसीन महामन्त्री के रूप म निर्वाचित हुए। सदस्यों म सर्वश्री पीटर अल्वारिस हेम बरुआ नाथ प, ममर गुहा, सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी बृजमोहन तूफान सनत महता, एच वी कामथ हर भजन सिंह मधु दण्डवते मुल्का गोविंद रेड्डी मुरलीधर व्यास सूरज नारायण सिंह सुब्रमण्यम प्रो मुकुट विहारी लाल यमुना प्रसाद शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। साप्ताहिक हिन्दुस्तान दिनांक 3 जनवरी 1968 के अनुसार सप्त सूत्री कार्यक्रम म क्रांतिकारी भूमि सुधारों तथा सर्वांगत मूल्य नीति पर अमल के लिए शांतिपूर्ण जन सघर्ष का आयोजन और साम्प्रदायिक भावनाएं भडकाने एवं विघटनकारी प्रवृत्तियों को बल देने वाली अराजकता की शक्तियों से सघर्ष की बात भी शामिल है। प्रस्ताव म यह सुझाव दिया गया कि विशिष्ट विषयों पर समान विचार वाली शक्तियों के सहयोग म सगठित रूप म कार्यवाही की जाय और अतत समाजवादी एकता की स्थापना हो। अन्य कार्यों म ये बातें शामिल हैं—चुने हुए क्षेत्रों म दल के जनता पक्ष को और व्यापक बनाया जाए ससदीय ढग से समाजवाद के लिए लडा जाए दल के कार्यकर्ताओं को असगठित मजदूरों का सगठित करने म सक्रिय सहायता की जावे आदि। सम्मेलन म व्यासजी सहित महत्त्वपूर्ण नेताओं के भाषण हुए एवं कुछ विशिष्ट निर्णय लिये गये। यह तय पाया गया कि सविद सरकारों म सम्मिलित प्रजा समाजवादी मन्त्री कुछ और समय तक मन्त्रीमण्डलों म बने रहेंगे क्योंकि उन्हें जनता को दिये आश्वासनों को अभी पूरा करना है। एक करोड टन के खाद्य भण्डार बनाने की माग भी इस अवसर पर की गई। व्यासजी ने अपने दल की राष्ट्रीय नीति के निर्धारण म अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया तथा राजस्थान की राजनीतिक स्थिति से भी प्रतिनिधियों को अवगत किया।

अखिल भारतीय प्रसोपा सम्मेलन म भाग लेने के बाद व्यासजी अपने दल के सदस्यो के विशेष आग्रह पर कलकत्ता गये। उस समय प्रचारित एक पम्पलेट के अनुसार – 'राष्ट्रीय प्रसोपा की काय समिति के सदस्य, राजस्थान के वीर समाजवादी क्रांति क अजय प्रहरी, निर्भीक योद्धा, भूतपूव राजस्थान असेम्बली का प्रसोपा विधायक श्री मुरलीधर व्यास अखिल भारतीय प्रसोपा अधिवेशन, कानपुर म भाग लेकर जनता व पार्टी के विशेष आग्रह पर कलकत्ता पधार रहे हैं' विज्ञप्ति की भावनानुसार व्यासजी का वहा अभूतपूव स्वागत हुआ तथा उनके सम्मान म 10 जनवरी, 1968 को अग्रसेन स्मृति भवन कलाकार स्ट्रीट, सत्य नारायण पाक के सामने एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता ससद सदस्य प्रा समर गुहा न की। सभा म मुरलीधर व्यास, बृजमोहन पुरोहित एव रामचन्द्र शर्मा आदि नेताओ न भाषण दिये। व्यासजी न विशेषकर राजस्थान की राजनीति पर प्रकाश डालते हुए चुनावोपरान्त राष्ट्रपति शासन, दल बदल, गोली काण्ड आदि की चर्चा की तथा सविद सरकारो की भूमिका एव राष्ट्रीय नीतियो पर प्रकाश डाला।

कलकत्ता से लौटकर व्यासजी पुन अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओ को उजागर करने एव उनके समाधान ढूढने की दिशा मे कायरत हो गये। 13 फरवरी, 1968 को रतन बिहारी पाक, बीकानेर, मे एक विशाल आम सभा हुई जिसम विरोधी दल के नेताओ न देश की बदलती हुई राजनीतिक परिस्थितियो पर प्रकाश डाला। साप्ताहिक सत्य विचार (दिनाक 15 फरवरी, 1968) के अनुसार–'सभा म भारतीय क्रांति दल के प्रदेश महामन्त्री श्री दौलतराम सारण, ससोपा नेता श्री माणिकचन्द सुराणा, विधायक श्री चुन्नीलाल इदलिया, प्रसोपा के श्री मुरलीधर व्यास आदि न भाषण दिये नगर के भूतपूव विधायक श्री मुरलीधर व्यास न कहा कि कानून की आड म भयकर घोटाले किये गये है। श्री व्यास न कहा कि राजस्थान नहर काय को पुन प्रारम्भ कराने के लिए हम जन सघष के लिए तयार होना होगा। आपने कहा कि फड बाजार जो जिले की सब स बडी मण्डी है, वहा पर सडक सुधार का आश्वासन देकर भी पूरा नही किया जा रहा है। पलाना थमल पावर का काय भी अधूरा पडा है तथा मजदूर बेरोजगार हो गये है। व्यासजी न उस सभा म दल परिवतन की भत्सना, गेहूँ के भाव की बढोतरी स जन आक्रोश, सडक निर्माण काय म विलम्ब आदि अन्य बिन्दुओ की भी चर्चा भी की।

आज इतने वर्षो बाद भी जब फडबाजार की टूटी सडके, भीड भरी एव कीचड सनी जिन्दगी देखते हैं और जब पलाना थमल पावर के काय को अधूरा लटका पाते हैं तो दूर द्रष्टा व्यासजी की बरबस याद आ जाती है। राजस्थान नहर के लिए जिस जन सघष तक की उपादेयता व्यासजी न प्रतिपादित की वह तो अतत निर्माण की

मंजिलें पार करता हुए बीकानेर अब आगे बढ़ रहा है तथा जैसलमेर को धरा को शस्य श्यामला बनाने के लिए और आगे बढ़ रहा है।

अप्रैल 1968 में बीकानेर में आयोजित प्रजा समाजवादी दल की एक सभा में प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता श्री ममनलाल बागडी ने, जो उस समय तक कांग्रेस में सम्मिलित हो चुके थे, कहा कि 'बीकानेर को जब राजस्थान का भाग्य बनाने का अवसर मिला तो उसने राजस्थान का भाग्य बिगाड़ दिया।' श्री बागडी का आशय श्री मुरलीधर व्यास की पराजय से था। कांग्रेसी नेता होते हुए भी भूतपूर्व समाजवादी श्री बागडी ने प्रजा समाजवादी दल की सभा में भाषण दिया तथा कहा कि 'मैं कांग्रेस का हूँ पर देश में सब भाई भाई हैं तथा इन झगड़ों के भेद को मैं जला कर समाप्त कर देना चाहता हूँ।' दल परिवर्तन मात्र से दिल परिवर्तन नहीं होता-इस बात का यह एक प्रत्यक्ष उदाहरण था। जिन बागडी जी ने गहूँ निकासी आन्दोलन के समय व्यासजी का भरपूर सहयोग दिया था वे वर्षों बाद दल छोड़ देने पर भी व्यासजी के दल की आम सभा को सम्बोधित करने आए।

सन् 1968 में ही राजस्थान उच्च न्यायालय का एक महत्वपूर्ण निर्णय सामने आया। तत्कालीन मुख्यमन्त्री के विरुद्ध दायर की गई चुनाव याचिका को अस्वीकृत करते हुए भी न्यायालय ने नियमों की अवहेलना में चुनाव से पूर्व उदयपुर में करवाये गये पांच लाख रुपये के निर्माण कार्य सस्ती कीमतों पर जमीन के पट्टों के वितरण बिना स्वीकृति के सड़कों तथा सार्वजनिक नलों के निर्माण आदि कार्यों को नियम विरुद्ध घोषित किया तथा चुनाव के अवसर पर किये गये इन कार्यों को अनुचित बताया। न्यायालय ने आदेश दिया कि मुख्यमंत्री को मुकदमे का खर्च भी स्वयं ही वहन करना होगा। विरोधी दलों के अनेक नेताओं ने इस निर्णय के परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन राष्ट्रपति डा जाकिर हुसैन से मुलाकात करके तत्काल उचित कदम उठाने की मांग की ताकि सार्वजनिक जीवन का शुद्धिकरण किया जा सके।

इसी वर्ष प्रजा समाजवादी दल का प्रांतीय अधिवेशन बीकानेर में आयोजित किया गया। इसमें दल के अध्यक्ष श्री एन जी गोरे आल इण्डिया रेलवे मेन्स फेडरेशन के अध्यक्ष श्री पीटर अल्वारिस, राष्ट्रीय सेवा दल के संचालक श्री नाना डेंगल एवं प्रांतीय अध्यक्ष श्री जोरावरमल बेडा के अतिरिक्त सर्वश्री भगवानदास, रतनलाल पुरोहित एवं मौलवी चांद खां जैसे प्रतिष्ठित नेताओं ने भाग लिया। सितम्बर 1968 में आयोजित इस सम्मेलन के अवसर पर श्री एन जी गोरे का बीकानेर स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया तथा उन्हें एक विशाल जुलूस के साथ नगर के विभिन्न भागों में ले जाया गया। जगह जगह पर स्वागत द्वारों के निर्माण एवं मालाओं से

स्वागत समितियों द्वारा नोटों की मालाओं के सम्मान में वह रायकम और भी अधिक आकर्षक बन गया। श्री गोरे ने प्रांतीय अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि सामाजिक न्याय एवं लोकतन्त्र परम्पराओं के लिए संघर्ष को और तेज करना होगा। उन्होंने कहा आज भारत की जनता राजनीतिज्ञों से ऊब गई है। जाति धर्म और सन्ताप का सारा गुब्बारा समाप्त हो चुका है। प्रारम्भिक समस्याएं हल नहीं होने के कारण जनता में निराशा की भावना पलना स्वाभाविक है तथा बाद में हमने गलत फैसला किया। हाजीपीर और करगिल जो हमारा ही क्षेत्र था हमारी सेनाओं ने भारी कुर्बानी देकर उन्हें जीत लिया था वापिस लौटा क्यों दिया।

उन्होंने कहा कि समान विचार वाले दलों के साथ एक राय हो सकती है पर बिना सिद्धान्त के ऊपरी एकता हम नहीं चाहते।'

राष्ट्र युवा दल के सचालक श्री नाना डंगल ने कहा कि देश का नव निर्माण मानवीय समाजवादी आधार पर ही हो सकता है। आज जब विश्व भर में मानवता की एकता की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है साम्प्रदायिक भावनाओं का उभारना किसी भी हालत में बुद्धि संगत नहीं है। मौलवी चांद खान ने भी राष्ट्रीय एकता एवं इन्सानियत को जिन्दा रखने के लिए कुर्बानी की आवश्यकता पर बल दिया। सम्मेलन के अवसर पर आयोजित आम सभा में सर्वश्री रतनलाल पुरोहित जोरावरमल बोड़ा मुरलीधर व्यास, भगवानदास, दुलारी दास बोहरा, हनुमानदास आचार्य एवं नारायण दास रंगा के भी भाषण हुए। स्वागताध्यक्ष श्री सुगनचंद पुरोहित ने गोवा मुक्ति आन्दोलन के प्रमुख समाजवादी नेता श्री एन जी गोरे एवं आल इण्डिया रेल्वे मैंस फेडरेशन के अध्यक्ष श्री पीटर अल्वारिस के आगमन को बीकानेर के लिए सौभाग्य की बात बताया।

सम्मेलन में पारित एक प्रस्ताव में चकोस्लावाकिया की जनता के साहस की सराहना की गई। राजस्थान की विषम आर्थिक स्थिति, श्रम शक्ति के संगठन की आवश्यकता एवं स्थानीय पत्रकार पर किए गए हमले की भर्त्सना सम्बन्धी कुछ अन्य प्रस्ताव भी पारित किए गए। इस सम्मेलन में वयोवृद्ध समाजवादी नेता श्री रतनलाल पुरोहित (जोधपुर) को प्रांतीय अध्यक्ष एवं श्री मुरलीधर व्यास को प्रांतीय मन्त्री निर्वाचित किया गया तथा एक इक्कीस सदस्यीय प्रदेश कार्यसमिति का भी सर्व सम्मति से गठन किया गया।

सितम्बर 1968 में श्री मुरलीधर व्यास ने रतन विहारी पार्क में रेलवे मैंस यूनियन द्वारा आयोजित एक आम सभा में कर्मचारियों के समक्ष बोलते हुए कहा कि—'अध्यादेश लोकतंत्र की हत्या है और इससे मजदूरों में तनाव बढ़ेगा। 19 सितम्बर, 19(

वे चार वर्ष

की प्रस्तावित हड़ताल राष्ट्रपति व अध्यादेश द्वारा अवैध घोषित कर दी गई थी। उसी प्रसंग म श्री व्यास न य उद्गार व्यक्त किय थ। उ होन आशा व्यक्त की, कि 'समय रहत सरकार का चाहिए कि वह केन्द्रीय कमचारियो की बुनियादी मांगें स्वीकार कर।' उ होने कहा कि 'वह दिन दूर नहीं कि जो लोग आज रल का चक्का जाम करन की बात रहत हैं व हकुमत के चक्क भी जाम करन की बात कहग।'

अकाल की विभीषिका क बार म जिलाधीश, बीकानेर, को दिय गय अपन एक ज्ञापन म दल की ओर स कहा गया कि करीब एक माह स बीकानेर म अकाल की स्थिति भयकर हो गई है। पानी की आशा म समय बीत गया है तथा किसान और उसका पशुधन काल क मुह म चला गया है। महगाई न जन जीवन को इस कदर घर लिया है कि उसके लिए रहे-सहे पशुधन को बचाना भी कठिन हो गया है।' ज्ञापन म निवेदन किया गया कि बीकानेर के समस्त गावो को अकालग्रस्त मानकर राहत काय शुरु किय जाए। यह चेतावनी भी दी गई कि यदि यह काम एक सप्ताह में नहीं किया गया तो गावो स मर हुए पशुओ ढेर के ढेर लग जायगे और इन्सान भी इस धरती पर मरते हुए नजर आयगा'।

अकाल के प्रश्न पर श्री व्यास निरन्तर सघष करत रह। उन्होन उत्तरदायी लोगो स सम्पक करके इस समस्या के समाधान क लिए अनवरत प्रय न किय। 30 नवम्बर, 1968 को राजस्थान के खाद्य एव अकाल राहत मन्त्री श्री परसराम मदेरणा को लिख गय एक पत्र म उन्होन कहा कि सव प्रथम हम बतलाना चाहते हैं कि बारबार सरकार का ध्यान आकर्षित करन क बावजूद राहत काय अत्यन्त मदगति स चल रह हैं। राज्य म बहुत तादाद म पशुधन और गायें मर चुकी है। अब स्थिति यह हो गई कि कोलायत तहसील म समय पर राहत व अनाज मजदूरी एव पौष्टिक खाद्य नहीं मिलने स सकडो लोग मर चुके है। कुछ ग्रामीणो के नाम जाच के लिय दे रहा हूँ। 1 द्वारिका औरत गाव उदट 2 मीरा पत्नी कानाराम गाव केलनासर 3 चूनाराम मेघवाल गाव माणिकसर। इसके अतिरिक्त कोलायत कस्ब म जो लोग अनाज के अभाव म मर है उनकी जाच कर रिर्पोट अखबारो म प्रकाशित हो चुकी है।

इस तरह स्पष्ट है कि 1968 म व्यासजी ने राष्ट्रीय नीति के परिप्रेक्ष्य म तो महत्व पूर्ण भूमिका निभाई हो, प्रातीय एव स्थानीय समस्याओ को भी उजागर किया। राष्ट्रीय सम्मेलन हो अथवा प्रातीय सम्मेलन आयोजित करन का सवाल, रेलवे कमचारियो क आन्दोलन को सम्बल देने की बात हो या अकाल की विभीषिका म जनधन एव पशुधन के विनाश के विरुद्ध आवाज उठान की बात अथवा विरोधी दलो की सम्मिलित आम सभाओ को सम्बोधित करन का सवाल—एस अनेक काय थ

जिन्हें गिनाये तो एक लम्बी तालिका तैयार हो जाएगी। व्यासजी अनथक अविरल, संघर्षमय जीवन के प्रणेता थे। एक भी आंख में जब तक एक भी आंसू रहे वे अपने वक्तव्य से विमुख होकर आराम नहीं कर सकते थे। चिलचिलाती धूप हो या कडकडाती सर्दी, वे रात दिन आठों याम लोगों की सेवा के लिए तत्पर रहते थे।

इसी भावना के साथ उन्होंने अकाल के प्रसंग में जन हानि एवं पशु हानि की बात पूरे दमखम के साथ रखी। उनके वक्तव्य सभी महत्वपूर्ण पत्र पत्रिकाओं में सुर्खियों के साथ छपा करते थे। जनता की पीडा के प्रति उनकी केवल शाब्दिक सहानुभूति मात्र नहीं थी। उसके लिए उन्हें लाठियों के प्रहार भी सहन पडे। 1969 का वर्ष इस बात का साक्षी है कि एक जन हितैषी के साथ कितना निर्मम व्यवहार किया गया था। उस अमानुषिक पाशविकता के प्रदर्शन पर चारों ओर से निन्दा एवं भर्त्सना के स्वर भी गूंजे थे। यह घटना 7 अगस्त, 1969 की है। ग्रोसडी की आवाज (13 अगस्त, 1969) अनुसार घटना का वृतान्त इस प्रकार है। 'जन नेता मुरलीधर व्यास ने दिनांक 5 अगस्त, 1969 को मोहता के चौक की आम सभा में यह घोषणा की थी कि मुख्यमन्त्री श्री सुखाडियाजी जो 7 अगस्त को बीकानेर आ रहे हैं, को ज्ञापन प्रस्तुत कर मांग की जायगी कि बीकानेर में दूध निकासी बन्द की जाए, अकाल राहत कार्यों में व्याप्त भ्रष्टाचार समाप्त किया जाए, राहत कार्य जो बन्द किये गये हैं उन्हें चालू किया जाए। इस घोषणा के अनुसार सारे मुद्दों को लेकर 7 अगस्त को श्री व्यास के नेतृत्व में एक जुलूस शहर के प्रमुख भागों में प्रदर्शन करते हुए सर्किट हाउस पहुँचा। वहां पर प्रदर्शनकारी शांतिपूर्ण तरीके से सर्किट हाउस के बाहर आम सडक पर खडे थे। श्री मुरलीधर व्यास ने सडक पर तांगे के उपर खडे होकर अपना भाषण आरम्भ करते हुए कहा कि हम जनता के दुःख तकलीफों को लेकर आये हैं और हम अपना ज्ञापन पेश करेंगे। सर्किट हाउस में अकाल राहत मन्त्री श्री परसराम मदेरणा एवं पी डब्लू डी मन्त्री श्री अमीनुद्दीन लुहारु नवाब थे।

श्री व्यास ने कहा कि हम अपना ज्ञापन देंगे, हमें अन्दर जाने दिया जाए तभी सर्व प्रथम प्रसोपा के युवा नेता श्री नारायण दास रंगा पर लाठी प्रहार किया गया। परिणामतः उनका सिर फूट गया। इस पर श्री व्यास तांगे से फौरन नीचे उतरे और मुकामी अफसर एस पी से कहा कि यह सरासर अन्याय है इतने में ही श्री व्यास पर लाठियों से ऐसा जबरदस्त वार किया गया कि वे अचेत होकर गिर पडे। इतना ही नहीं उनकी अचेतावस्था में भी लाठी प्रहार बन्द नहीं किया गया। नगर परिषद् के भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री शिव किसन आचार्य (कजल सा) उनके उपर हो गये जिससे उनके भी काफी चोटें आई। उन्होंने तथा श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा विष्णु उर्फ नू व कजलीदास ने श्री व्यास को उठाया व सर्किट हाउस

व अन्दर ले जाया गया। श्री व्यास रात को दो बजे तक अस्पताल में बेहोश रहे और उनका खून बहता रहा ।'

अपने पर किये गये निर्मम लाठी प्रहार के प्रसंग में व्यासजी ने स्वयं एक वक्तव्य प्रसारित करते हुए कहा कि साधारण परिस्थिति में यह क्या षड्यंत्र था यह तो जांच से ही सिद्ध होगा, पर मैं इतना कह सकता हूँ। कि जिस अमानुषिक तरीके से मुझ पर प्रहार किया गया वह मुझे जान से मार डालने का षड्यंत्र था। मुझ पर प्रहार हुआ है इसलिए मैं उस पर अधिक नहीं कहना चाहता, पर लोकतंत्र में विरोध को दबाने के लिए ऐसे ओछे हथियारों का इस्तेमाल कर हत्या की नीति अख्त्यार की गई तो यह देश के लोकतंत्र, कानून व न्याय के राज्य को समाप्त कर देगी तथा किसी राजनीतिक व्यक्ति का जीवन खतरे से बाहर नहीं होगा।'

श्री व्यास ने सरकारी विज्ञप्तियों के बारे में टिप्पणी करते हुए कहा कि सर्व-प्रथम लाठी चार्ज हो जाने के बाद बीकानेर के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने 7 अगस्त की रात्रि को जन सम्पर्क कार्यालय द्वारा जो विज्ञप्ति प्रकाशित करवाई है उसमें कहा है कि सर्किट हाउस में जबरन प्रवेश करने की स्थिति में मेरे तथा अन्य कुछ साथियों व सिपाहियों के चोटें आई। उस वक्तव्य में कहीं भी प्रदर्शनकारियों के साथ काले झण्डे, घेराव तथा मेरी और किसी की गिरफ्तारी का कोई चर्चा नहीं था। दूसरी ओर राजस्थान पत्रिका, जयपुर में सरकार द्वारा 8 अगस्त को प्रसारित अधिकृत सूचना में कहा गया है कि 6 अगस्त को प्रसोपा ने काले झण्डे के प्रदर्शन एवं घेराव की घोषणा की तथा 7 अगस्त को प्रदर्शन लेकर सर्किट हाउस गये। वहां प्रदर्शनकारियों को पुलिस ने रोका तो उन्होंने काले झण्डों के लिए लाए गये बांसों से पीटना शुरू कर दिया तथा पुलिस ने बचाव किया। इसके अतिरिक्त कोई भी अखबार अथवा प्रत्यक्षदर्शी पत्रकार नहीं कहता कि प्रदर्शनकारियों ने लाठियां चलाई तथा मुझे गिरफ्तारी से रोकने के प्रयत्न में चोटें आई। खेद तो इस बात का है कि जब न्यायिक जांच की मांग की जाती है तो गृहमंत्री कहते हैं कि लाठी चार्ज नहीं किया गया तथा मुझे व प्रदर्शनकारियों के चोटें इसलिए आई कि मेरी गिरफ्तारी को प्रदर्शनकारी रोकने लग गये थे मैं यह स्पष्ट कर देता हूँ कि सरकारी विज्ञप्ति और सदन में दिये गये वक्तव्य में एक भी तथ्य सही नहीं है। मैं अपने पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ कहता हूँ कि प्रदर्शन में सभी पार्टी फ्लेग तथा जनता की मांगों के पोस्टर थे। प्रदर्शन में कहीं भी एक भी काला झण्डा नहीं था। घेराव की बात पूर्णतः गलत है गिरफ्तार करने पर प्रदर्शनकारी रोक रहे थे यह बात भी गलत है। यदि मैं गिरफ्तार होता तो अस्पताल में कमरे के आगे पुलिस की गार्ड होती तथा अस्पताल के अधिकारियों को भी सूचना होती पर ऐसा नहीं हुआ।'

व्यासजी पर किये गये लाठी प्रहार की पूरे राजस्थान में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। स्थान स्थान पर लोगों ने प्रस्ताव पारित करके न्यायिक जांच की मांग की। अखबारों के सम्पादकीय लेखों में लाठी चार्ज की भर्त्सना की गई तथा राजस्थान विधान सभा में स्थगन प्रस्ताव के माध्यम से इस बिन्दु पर तीव्र बहस हुई। आक्रोश से भरे हुए विरोधी दल के नेताओं ने इस काण्ड को जनतंत्र पर किये गये निर्मम प्रहार की संज्ञा दी। सरकारी पक्ष को प्रस्तुत करते हुए गृह मन्त्रालय के राज्य मन्त्री श्री हीरालाल देवपुरा ने कहा कि 'प्रसोपा नेताओं ने धमकी दी थी कि जब श्री सुखाडिया बीकानेर के सर्किट हाउस में आयेंगे तो उनका घेराव किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री सर्किट हाउस नहीं गये, लेकिन प्रसोपाई प्रदर्शनकारी जिनका नेतृत्व श्री मुरलीधर व्यास कर रहे थे, ने पुलिस का घेरा तोड़ने की कोशिश की, जो कि सर्किट हाउस के दरवाजे के बाहर थे और हिंसक रूप धारण कर लिया। जब पुलिस ने श्री व्यास को गिरफ्तार करना चाहा तो प्रदर्शनकारियों ने रोका। उन्होंने पथराव तथा झण्डों के बांसों से पुलिस कर्मचारियों को चोटें पहुँचाई। श्री व्यास को उस समय जख्म हुआ जब पुलिस जनता को काबू कर रही थी। 6 पुलिस कर्मचारियों एवं कतिपय प्रदर्शनकारियों के भी चोटें आई।'

मन्त्री के वक्तव्य से असन्तुष्ट विरोधी विधायकों ने इसे असत्य कहते हुए अपना तीव्र आक्रोश व्यक्त किया। श्री रामकिसन (ससोपा) ने कहा कि सार्वजनिक निर्माण मन्त्री और अकाल राहत मन्त्री सर्किट हाउस में थे। वे शिष्ट मण्डल से नहीं मिले जो उनसे अकाल राहत कार्य के सम्बन्ध में बात करने आया था। श्री रामानन्द अग्रवाल के अनुसार 'श्री व्यास पर किया गया वार निर्दयता पूर्ण एवं अन्यायपूर्ण था। सर्किट हाउस के अन्दर एवं बाहर काफी संख्या में पुलिस कर्मचारी थे। यह लाठी चार्ज श्री व्यास को जान से मार डालने का षडयन्त्र था।' स्वतन्त्र पार्टी के नेता लक्ष्मणसिंह ने लाठी चार्ज को इरादतन बदले की भावना बताया। श्री भैरोसिंह शेखावत (जनसंघ) ने कहा कि पुलिस ने बिना किसी आदेश के लाठी चार्ज किया। पुलिस ने तब भी उन पर वार किये जब श्री व्यास गिर चुके थे। वे श्री व्यास को मार डालते यदि निजि तौर पर उनका बचाव नहीं करते। श्री कुन्दनलाल इदलिया ने इसे प्राण घातक हमला बताते हुए कहा कि पुलिस ने श्री व्यास के तांगे से नीचे उतरते ही इस प्रकार वार किये जैसे कि उनको जान से ही मार डालना हो। गृहमंत्री ने घटना को दुःख पूर्ण बताते हुए कहा कि घेराव बर्दाश्त नहीं किया जायगा। उन्होंने इस षडयन्त्र में पुलिस का हाथ होने से इन्कार किया तथा कहा कि श्री व्यास के चोट पुलिस के टकराव से ही आई है जब कि प्रदर्शनकारी उन्हें गिरफ्तार होने से रोक रहे थे। न्यायिक जांच की मांग ठुकराये जाने पर सभी विरोधी सदस्यों ने सदन से बहिर्गमन करके अपना रोष प्रकट किया।

श्री व्यास का जुझार स्वरूप निरन्तर बना रहा 'गणतंत्र के गले में अध्यादेशों का फन्दा' शीर्षक से व्यासजी ने वक्तव्य को छापते हुए 'झोपडी की आवाज' ने अपने 29 जनवरी 1970 के अंक में लिखा है कि 'भूमि सुधारो की मांग रखने वाले सत्याग्रहियों पर जेलो में अत्याचार किये जा रहे हैं। उनको नाना प्रकार की यातनाए दी जा रही है जिनके कारण कई सत्याग्रही तो जेलो में मर रहे हैं। निर्ममता पूर्वक गालियों की बौछारे हो रही है। परिणामतः प्रजा परिषद् के समय के जंग जम्हूरियत के सिपाही श्री काशी राम और बख्शीससिंह आज भी सरकार की हठधर्मी के कारण भारत माता की गोद में हमेशा के लिए सो गये हैं।' गोली काण्ड की जाच के आश्वासन के सिलसिले में श्री व्यास ने कहा कि उसमें यह कही नही कहा गया है कि सागरिया भादरा में हुए गोली काण्डो की जाच उच्च न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा करवाई जाएगी व रिपोर्ट में पाये गये दोषियो को दण्डित किया जाएगा।'

23 जनवरी 1970 को बीकानेर नगर में दो ऐतिहासिक कार्यक्रम हुए थे उनमें से एक था सीमान्त गाधी खान अब्दुल गफ्फार खा का बीकानेर आगमन व दूसरा रामपुरिया कालेज में बीकानेर के रियासती शासन के समय के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के अभिनन्दन का कार्यक्रम। सीमान्त गाधी ने स्टेडियम की महती सभा को सम्बोधित करते हुए कहा था कि महात्मा गाधी के जन्म शताब्दी वर्ष पर वह यह देखने के लिए आये हैं कि क्या भारतवासी उस महान् नेता के पद चिह्नों पर चल रहे हैं या नही। लगता है भारतवासी आज गाधीजी को भूल गये हैं और महात्मा बुद्ध के रास्ते से भी हट गये हैं। उन्होंने काका कालेलकर के शब्दो को दोहराते हुए कहा कि जापानी लोग कहते है कि यह देश आजादी के 22 साल बाद भी अपना पेट भरने के लिए अनाज पैदा नही कर सकता वरन् आस्ट्रेलिया जैसे छोटे देशों से अनाज और पैसे की भीख मागता है।' बादशाह खान के भाषणो से दो बाते स्पष्टतः सामने आती हैं—गाधी जी के रास्ते से भटकाव और गरीबी की व्यापकता। व्यासजी ने अपने राजनीतिक जीवन में गाधीजी के रास्ते का अनुगमन किया व गरीबो के हितो की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहे। व्यासजी इस बात से क्षुब्ध थे कि गाधी अथवा बादशाह खान की आकाक्षाओ के अनुरूप आचरण करने वाले अब विरले ही रहे हैं। रामपुरिया कालेज में आयोजित स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियो के स्वागत समारोह में उन्होंने जो भाषण दिया था उसमें आजादी के दीवानो के कार्यों की सराहना की गई। सभा में अभिनन्दित होने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में सर्वश्री रघुवरदयाल गोयल, दाऊदयाल आचार्य गगादत्त रंगा, श्रीराम आचार्य रामनारायण शर्मा, गोमतीदेवी, शेराराम सतीबाई कृष्ण गोयल गुट्टड महाराज, सुरेन्द्र शर्मा, चम्पालाल उपाध्याय, चिरजीलाल सोनार एव नानीराम स्वामी आदि कई नेता थे। व्यासजी

ने राजनीतिक मतभेदो को दूर रखकर इन सभी नेताओ के 1947 से पहले के त्याग की प्रशंसा की थी। अन्य वक्ताओ म सवश्री हीरालाल आचाय, भवानी शकर शर्मा, सत्य नारायण पारीक, ललित आजाद आदि सम्मिलित थे।

अक्टूबर 1970 म बीकानेर नगर परिषद् के चुनावो म व्यासजी द्वारा समर्थित कई साथी पापदो के रूप म चुने गये। इनम श्री किसन गोपाल पुरोहित, श्री विष्णुदत्त उफ नू पहलवान, श्री सम्पत लाल खजान्ची आदि मुख्य थे। 28 10 70 को विरोधी पापदो की एक सभा लोकतात्रिक समाजवादी नागरिक मार्चे के नाम से व्यासजी के सयोजन म सम्पन्न हुई जिसम एक स्पष्ट सयुक्त योजना व कायक्रम पर विचार किया गया। सभा म विभिन्न राजनीतिक दलो व स्वतत्र पापदो को आमन्त्रित किया गया था। सभा मे अन्य लोगो के अतिरिक्त सवश्री भँवरलाल कोठारी, किसन गोपाल पुरोहित, रफीक अहमद, राम नारायण शर्मा महेशसिंह, विष्णुदत्त नू व दाऊ दयाल भादाणी ने भाग लिया। व्यास जी प्रजातात्रिक सगठनो म जन प्रति निधित्व के प्रश्न पर सदा जागरूक रहते थे। यही कारण था कि उनके आह्वान पर कई महत्वपूण पापदो ने सभा म भाग लिया था। बाद मे अशोक आचाय आदि के सम्मिलित हो जाने से मोर्चे की शक्ति और अधिक बढ गई।

सन् 1970 के माच म साथियो व प्रातीय नेताओ के विशेष आग्रह पर व्यासजी ने राज्य सभा म सदस्य के रूप म अपना मनोनयन पत्र भरा। अपनी विज्ञप्ति मे व्यास जी ने कहा था 'यह आपको विदित ही है कि राजस्थान से राज्य सभा के उम्मीदवार के रूप म मैं खडा हुआ हूँ। लोकतान्त्रिक समाजवाद की परम्पराओ तथा आदर्शों को यथा शक्ति पूण बल पहुँचाना मेरे जीवन का लक्ष्य है। इस दिशा म मेरे द्वारा सवथा निष्ठा के साथ किए गए सतत प्रयत्न के बारे मे कुछ कहने की आवश्यकता नही है।'

मतदान 28 माच 1970 को प्रात 10 बजे स 4 बजे अपराह्न तक राजस्थान विधान सभा भवन मे हुआ, पर जो होना था वह तो पहले से स्पष्ट ही था। जनता के पुरोधा और योद्धा को राज्य सभा म भेजने मे वे सारी शक्तियां एक बार फिर बाधक बनी जो राजनीति को अपने निजी हितो या दलीय हितो म सयोजित करने म सिद्धहस्त थी। एक बार फिर छिछले समूहवाद एव सत्तापरस्त राजनीति के हाथो त्याग की कथित पराजय हुई पर कसौटी पर बार बार चढने वाला यह त्याग जन सेवा के क्षेत्र म तो पूववत अविजित ही रहा।

व्यासजी ने 1970 म दो महत्वपूण अधिवेशनो मे भी भाग लिया। उनम पहला अधिवेशन बडौदा म आयोजित किया गया था। अपने दल के इस अधिवेशन म

्यासजी ने 2 फरवरी, 1970 से 7 फरवरी, 1970 तक भाग लिया एवं महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चाएँ की। इसी प्रकार प्रजा समाजवादी दल के साकरवाडी अधिवेशन में वे 31 दिसम्बर 1970 से 3 जनवरी 1971 तक सम्मिलित हुए थे। यह अधिवेशन 1971 में आयोज्य संसद के चुनावों को दृष्टिगत रखते हुए अत्यन्त महत्व का माना गया था। साकरवाडी (जिला अहमदनगर, महाराष्ट्र) में सम्पन्न हुए इस सम्मेलन से पूर्व व्यासजी जोधपुर होते हुए बम्बई पहुँचे थे तथा अपने साथी रतन लाल पुरोहित (प्रांतीय अध्यक्ष) के आमंत्रण पर वे वहां पर आयोजित वकीलों के सम्मेलन में भी उपस्थित हुए।

अगस्त 1970 में अर्थात् अपने निधन से मात्र 9 महीने पूर्व व्यासजी ने बीकानेर में दूध निकासी के विरोध में आंदोलन का सूत्रपात किया। 9 अगस्त 1970 को प्रारम्भ किये गये इस आन्दोलन के बारे में स्व. दादा गवरचन्द आय ने समाजवादी सूचना प्रसारण केन्द्र की एक विज्ञप्ति में कहा था कि बीकानेर में 9 अगस्त 1970 से प्रारम्भ दूध निकासी बन्द करो आन्दोलन किसी व्यक्ति या किसी जाति की अथवा संगठन की आवाज नहीं बल्कि यह आवाज है उन छोटे छोटे मासूम बालकों की जिन्हें विशालकाय भारत की बागडोर संभालनी है। यह आवाज है उन माताओं की जो अपने बच्चों को इस बढ़ती हुई महंगाई में दूध नहीं दे सकती। यह आवाज है उस गरीब जनता की जो दूध के बदले में अपने को और अपने बच्चों को चाय पर ही गुजारा करने को मजबूर होती है बल्कि यह आवाज है बीकानेर के हर नागरिक की जो बढ़ती हुई महंगाई में इतना महंगा दूध खरीदने के लिए मजबूर है। इस प्रकार की परिस्थितियों से विवश होकर जन नेता श्री मुरलीधर व्यास ने आह्वान किया कि अब जुल्म बरदाश्त करने की पराकाष्ठा हो गई है और बीकानेर की जनता अन्याय के खिलाफ आवाज बुलन्द करने में अग्रणी रही है

दूध निकासी बन्द करो की मांग को लेकर 9 अगस्त से बीकानेर के जिलाधीश के समक्ष एक ज्ञापन प्रस्तुत किया गया जिसके फलस्वरूप मुरलीधर व्यास, सुरेन्द्र कुमार शर्मा, आत्माराम महर्षि, देवी दत्त, नारायण दास रंगा, राधे श्याम, पंजाबी दास हर्ष आदि कार्यकर्ताओं को घर और दुकान पर बैठा को गिरफ्तार कर लिया गया। इस प्रकार की कार्यवाही से यह आन्दोलन रुकने वाला नहीं बल्कि और द्रुत गति से चला। बीकानेर की जनता यह बर्दाश्त करने के लिए कदापि तैयार नहीं थी कि यहां के बच्चों का दूध के लिए तरसाया जाए तथा दूध जयपुर और दिल्ली भेजा जाए। इस दूध का उमा स्थिति में बाहर भेजने की अनुमति भी जा सकती है जब यहां के लोगों को सुगमता रूप से दूध मुहैया हो सके।

अपने निधन से मात्र नौ दस माह पूर्व भी व्यासजी ने अपने नेतृत्व में बीकानेर की जनता के संघर्ष के उबाल को बरकरार रखा। जेलों में भेजे जाने वाले नेताओं और कार्यकर्त्ताओं में युवा लोग व महिलाएं भी सम्मिलित थी।

मार्च 1970 में व्यासजी ने सफाई मजदूर कर्मचारियों की लम्बी हडताल के समय उनकी मांगों का प्रबल समर्थन किया। राणावत कमीशन द्वारा प्रस्तावित वेतनमान लागू करने की मांग को लेकर एवं अधिकारियों द्वारा समझौता भंग करने के विरोध में कर्मचारियों ने हडताल की थी। हडताल के बाईसवें दिन प्रसारित अपनी विज्ञप्ति में व्यासजी ने कहा था कि बीकानेर में सफाई मजदूरों की हडताल का आज बाईसवां दिन है। शहर में जगह जगह गंदगी के ढेर लगे हैं। गंदगी के ढेरों की सफाई नहीं होती, परन्तु कुछ प्रमुख सडकों पर अवश्य सफाई होती है गलियां बुरी तरह से सड रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में भयंकर महामारी फैल जायगी। कर्मचारी पूर्ण शांति बनाए हुए है। नगर परिषद् ने जो सफाई व्यवस्था की है कर्मचारी उसमें कोई बाधा नहीं पहुँचा रहे है। हमने मांगों के लिए हडताल की है गंदगी फैलाने के लिए नहीं अधिकारियों को दिनांक 9 मार्च को विधिवत हडताल का नोटिस दिया जा चुका था तब वे 15 दिनों तक क्या सोते रहे कर्मचारियों की प्रमुख मांग राणावत कमीशन की सिफारिशें लागू करने की है। परिषद् ने स्वयं राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजा था कि ये सिफारिशें परिषद् के कर्मचारियों पर लागू की जावे श्री गंगानगर के कर्मचारियों ने जब हडताल की तो श्रम आयुक्त के हस्तक्षेप से परिषद् ने राज्य सरकार की स्वीकृति लिये बिना ही सिफारिशें लागू कर दी थी। उदयपुर तथा जयपुर में भी यही हुआ इसी आधार पर बीकानेर के कर्मचारियों ने भी अपना आंदोलन शुरु किया मांग पत्र प्रस्तुत किये, सांकेतिक हडताल रखी तथा प्रदर्शन किये। पर बीकानेर नगर परिषद् ने उनकी मांग नहीं मानते हुए सांकेतिक हडताल के दिन का वेतन काट लिया। इससे कर्मचारियों में रोष भडका है फिर भी वे अपना आंदोलन शांति से चला रहे है।

कर्मचारियों के हितों मे सदैव तत्परता से रहनुमाई करने वाले श्री व्यास अन्याय और उत्पीडन के खिलाफ आवाज उठाते हुए भी शांति और व्यवस्था के पक्षधर थे तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों में विश्वास रखने वाले थे। वे कभी भी तोड फोड के लिये लोगों को नहीं उकसाते थे और न हिंसा की गतिविधियों का समर्थन ही करते थे। शांति और दृढता उनके जीवन के सभी आंदोलनों की मुख्य धारा रही थी।

5 मई 1970 को व्यासजी ने जिलाधीश को तांगा यूनियन की ओर से एक ज्ञापन देते हुए कहा था कि तत्कालीन जिलाधीश श्रीमती ओतिमा बोर्दिया के समय स्टेशन

पर स्थायी तागा स्टण्ड की व्यवस्था का आश्वासन दिया था, पर वह आज तक क्रियान्वित नही किया गया है। तागे वालो को कभी बस स्टेण्ड (उस समय का बस स्टण्ड स्टेशन के पास के मदान म था) पर खडे रहने को कहा जाता है तो कभी गगाशहर के टेक्सी स्टेण्ड के पास रहने के आदेश होते है। इस अव्यवस्था को तत्काल दूर किया जाए।'

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि 1970 का वष भी व्यासजी के लिए अत्यन्त सक्रियता एव जन नेतृत्व का वष सिद्ध हुआ। माहवार विवेचन किया जाय तो जनवरी 1970 म उ होने स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो के अभिनन्दन समारोह को सम्बोधित किया फरवरी म अपने दल के बडौदा अधिवेशन म भाग लेने के साथ साथ बीकानेर म विरोधी दलो की सभा म भू सुधार को लेकर श्रीगगानगर जिले के आदोलन का समथन किया। माच म उ होने राज्य सभा की सदस्यता का अभियान चलाया, बीकानेर म चल रहे सफाई मजदूर कमचारियो की हडताल के प्रसग म अपने स्पष्ट एव तकपूण वक्तव्य भी दिये। मई म तागा यूनियन के प्रस्तावो की पैरवी अगस्त मे दूध निकासी व द करो आदोलन की अगुवाई अक्टूबर म नगर परिषद् के चुनावो के सदभ मे विरोधी एकता की पहल तथा दिसम्बर म अपने दल के साकरवाडी मे आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन म सिरकत आदि बाते स्पष्ट बताती है कि व्यासजी अत्य त बुलदी के साथ जय पराजय से प्रभावित हुए बिना, निर तर आगे बढते जा रहे थे। चरवति चरवेति उनके जीवन का एकमात्र सिद्धा त था।

अपने महा प्रयाण वष (1971) म व्यासजी द्वारा लोक सभा के चुनाव म महाराजा डाक्टर करणी सिह का समथन करना व उनके लिये वातावरण बनाना महत्वपूण घटना है। व्यासजी काग्रेस का समथन कर नही सकते थे तथा सबल विरोध के प्रत्याशी एव सत्ता के विकल्प के रूप मे केवल डा करणी सिह की विजय ही आशा की किरण जगाने वाली थी। अ य विरोधी प्रत्याशियो की विजय न केवल सदिग्ध थी अपितु सवथा असभव प्रतीत होती थी। 31 जनवरी 1971 को लक्ष्मीनाथ जी के मदिर म आयोजित सभा स डा करणीसिह ने अपने चुनावी अभियान का श्रीगणेश किया। उ होने अपने आपको जनता का सिपाही बताते हुए जनता की भलाई के लिए प्राण प्रण स काय करने का विश्वास दिलाया। सगरिया चूरू तथा बीकानेर के गोली काण्डो की निंदा करते हुए डा करणी सिह न कहा कि जनतत्र का गला घोटने वालो का डट कर मुकाबला किया जाएगा।

विरोधी दलो की एकता के अभियान के अ तगत श्री मुरलीधर व्यास न महाराजा डॉ करणी सिह का साथ देना इसी शत पर स्वीकार किया कि व (डा करणी सिह)

समाजवाद म आस्था रखते हुए जनहित के काय करगे। 31 जनवरी, 1971 की को श्री माणिक चद सुराणा की डॉ करणी सिह से वार्ता भी इसी सदभ म हुई थी। समाजवादी नेताओ की इस रणनीति पर कुछ क्षेत्रो मे आश्चय भी व्यक्त किया गया, पर व्यासजी न जिस प्रकार इस मामले को जनता के सामने रखा उससे लोग आश्वस्त हो गय कि तत्कालीन परिस्थितिया म उनका निणय सही था।

1971 म लाक सभा के प्रत्याशी डॉ करणी सिह के भाषण भारतीय ससद म विरोधी दलो के मान्य सैद्धान्तिक/क्रियात्मक बिदुओ पर ही आधारित थे। अत विकल्प स्वरूप सबल विरोध को सत्ता म लाने के लिए विजय प्राप्त करने योग्य प्रत्याशियो का समथन आवश्यक था। व्यासजी ने यही किया। सभी प्रमुख विरोधी दलो के नेताओ के भाषणो मे मुख्य बिदु थे आजादी एव सत्ता के कुछ हाथो म केद्रीयकरण म से एक को चुनना है कुर्सीवादी सत्तापरस्त एव जन विरोधी ताकतो को हराना है, गाली-काण्डों की जाच, सशक्त विरोध का निर्माण, राष्ट्रवाद की परवो, सविधान की पवित्रता की रक्षा एव एकाधिनायकवाद का विरोध करना है आदि आदि। व्यासजी द्वारा डा करणी सिह को दिया गया समथन इसी परिप्रेक्ष्य म देखा जाना चाहिए।

मध्यावधि चुनावो म जनता न एक बार फिर काग्रेस को सत्ता म आने का अवसर दिया। अपनी मृत्यु से केवल दो माह पूव व्यास जी इस विषय म चिंतित थे। डा श्रीचद जसलमेरिया न अपने 25 माच 1971 के पत्र मे प्रजा समाजवादी पार्टी के राज्य मत्री श्री मुरली धर व्यास को लिखा भी था– 'भारत म हुए मध्यावधि चुनावो के बाद जो स्थिति प्रत्यक्ष रूप स हम सब के सामने उपस्थित है उस पर राजस्थान व्यापी विचार करने के लिए राज्य समिति की एक आवश्यक बठक बुलाना मेरी राय म आवश्यक है और आप भी मरी राय से इत्तफाक रखते ही होग। आशा है आप मरी राय के पूण समथक होगे (कृपया) पार्टी की कायकारिणी समिति की बठक शीघ्र बुलाने की कृपा करेंगे'

व्यासजी न अपन निधन म पूव राजकीय वूलन मिल वकस यूनियन की मागो को भी अपना नतिक समथन दिया था। अपन 7-सूत्री माग पत्र मे यूनियन ने राणावत कमीशन के आधार पर वेतन का बकाया चुकाना बोनस का भुगतान करना वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नतिया देना चिकित्सा सुविधा देना, मिल म होन वाली चोरिया की जाच करवाना, ओवर टाइम का भुगतान करना आदि की मागे रखी थी। उनके कायक्रमानुसार 1 मई 1971 को मिल के गेट के बाहर सभा का आयोजन 2 मई को मशाल जुलूस तथा 7 मई को पूण हड़ताल की बातें लागू की जाने वाली थी।

इस बीच व्यासजी का स्वास्थ्य निरंतर गिरता रहा तथा चिकित्सा के लिए उन्हें स्थानीय पी बी एम हॉस्पिटल में भरती होना पड़ा। उनके गिरते हुए स्वास्थ्य की खबर उनके सभी हितैषियों शिष्यों एवं समर्थकों को मिल चुकी थी। कलकत्ता प्रवासी एवं व्यासजी के समर्थक श्री सत्य नारायण पुरोहित ने अपने एक पत्र में उन्हें लिखा 'आज बालचंद मेरे घर आया था। आपके स्वास्थ्य के बारे में जो समाचार उसने मुझसे कहा है उससे बड़ी चिंता तथा निराशा हुई तथा मैंने भगवान से प्रार्थना की कि वह आपकी सेहत को ठीक रखे। मैं समझता हूँ भगवान मेरी इस प्रार्थना पर अवश्य विचार करेंगे। आप जानते हैं कि आपकी जिंदगी आपके घर वालों के अलावा समाज तथा देश की जिन्दगी है। आपको अपने शरीर का पूरा ख्याल रखना चाहिए। देश तथा समाज को आप जैसे सपूतों की बड़ी जरूरत है ।'

दिनांक 30 5 1971 के अपने पत्र में श्री सम्पतलाल खजाची ने अपने अंतरंग मित्र श्री बालचंद को लिखा 'व्यासजी हास्पिटल में भरती हैं। मैं खुद मिल कर आया हूँ। कमजोरी काफी है। व्यासजी कहते हैं कि लिवर की खराबी है। इलाज ले रहे हैं। लोग-बाग कहते हैं कि व्यासजी को जलधर हो गया है। पेट थोड़ा-सा फूला हुआ है लेकिन कोई ऐसी चिंता की बात नहीं लग रही है। इलाज हो जाएगा टाइम लगेगा। आगे तो ईश्वर ही जान सकता है ।'

वास्तव में ईश्वर ही नियति को जानता था। जिस तारीख (30 5 71) को श्री खजाची ने उक्त पत्र लिखा उन्हें क्या पता था कि वही दिन व्यासजी के जीवन का आखिरी दिन होगा। श्री राजा जी तो आश्वस्त थे कि चिंता की कोई बात नहीं है। इलाज हो जाएगा। थोड़ा सा टाइम तो लगेगा। पर इधर नियति अपना क्रूर चक्र चलाने में व्यस्त थी। 30 मई 1971 की रात्रि को 11 30 बजे व्यासजी अपनी पार्थिव देह के बंधन से मुक्त हो गये। जिसने भी यह समाचार सुना वह अवाक् रह गया। देखते ही देखते पूरा शहर इस बात से अवगत हो गया कि व्यासजी अब इस संसार में नहीं हैं। एक वेदना एक नहीं मिटने वाली टीस सबके चेहरों पर थी। जंगल की आग की तरह यह समाचार फैला और दूसरे दिन प्रातःकाल सारे शहर पर उसकी कालिमा छाया देखी जा सकती थी।

श्री सम्पतलाल खजाची ने श्री बालचंद साह के लिए एक अन्य पत्र में इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है— व्यासजी की अर्थी सोमवार को सुबह 7 बजे उन्हीं के घर से निकली थी। रविवार की रात को 11 30 बजे यह दुखद घटना घटी थी। व्यासजी की अर्थी के साथ हजारों आदमी थे। सात-आठ हजार आदमी निश्चित थे। सारा बाजार अपने आप बंद रहा। किसी को कहने की जरूरत नहीं थी। सारे आफिसर थे। कलक्टर भी वहां पहुंचा था। कलक्टर साहब बार बार

हास्पिटल भी गये थे। कांताजी, द्वारका प्रसादजी पुरोहित गोपाल जी जोशी भी दाह--संस्कार म साथ थे। श्री गोकुल प्रसाद एम एल ए अर्थी के साथ नही थ। लोगो का कहना है कि वे उस दिन बीकानेर म नही थे लेकिन तेवे म वे गये थ। घन श्याम को भी कहा कि मेरे लायक कोई काय हो तो अवश्य कहना लेकिन घन श्याम ने कहा कि बस आपका आशीर्वाद चाहिए और कांता जी तो जिस टाइम चिता जलाई गई उसको देखते ही बेहोश हो गई। एम्बूले स म उ ह अस्पताल ले जाया गया। दो-तीन घटो बाद होश आया और सारा बीकानेर शोकाकुल था।'

30 मई का घटना चक्र बडी तेजी से घूम चुका था। कलकत्ता प्रवासियो को व्यासजी के स्वास्थ्य से बराबर अवगत रखा गया। 30 मई को बीमार होने की सूचना तार से श्री बालचन्द साड को कलकत्ता दी तथा उ ह तुर त आने के लिए आग्रह किया। श्री बाल चद जी के भाई श्री लालचद साड न भी उसी दिन व्यासजी के स्वास्थ्य की गभीरता की तार स सूचना भेजी पर इससे पहले कि आना सभव हो उसी रात्रि (30 मई 1971) को ही व्यासजी न अपना नश्वर शरीर छोड दिया तथा सभी को शोकाकुल करके व इस भौतिक माया-जाल से मुक्त हो गये।

व्यासजी के निधन पर पूरे देश म शोक व्यक्त किया गया। 31 मई 1971 को मध्याह्न एक बजे एव दो बजे की हिन्दी एव अग्रेजी बुलेटिनो म आकाशवाणी न प्रजा समाजवादी दल की राष्ट्रीय कायकारिणी के सदस्य श्री व्यास के निधन का समाचार दिया तथा राष्ट्रीय कायकारिणी की बठक म व्यक्त श्रद्धाजलि की भी सूचना दी। स्थान स्थान पर शोक सभाए आयोजित की गई। दिनाक 6 जून 1971 को कलकत्ता म जन भवन कलाकार स्ट्रीट म भी एक शोक सभा रखी गई जिसम कई सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इन सस्थाओ म वीर मण्डल जन मित्र मण्डल आदीश्वर जन मण्डल जन सभा, माहेश्वरी सभा श्री पुष्टिकर सभा, काशी विश्वनाथ सेवा समिति कलकत्ता किरायदार सघ पुष्टिकर सेवा समिति ब्रह्म बगीचा शिव टम्पल टस्ट बीकानेर नागरिक सभा राजस्थान भारती समाज प्रगति सघ शाकद्वीपी ब्राह्मण सभा शाकद्वीपी मित्र मण्डल राजस्थान कला केन्द्र तथा विजयपोल सुधार समिति के नाम उल्लेखनीय हैं। शोक सभा के लिए प्रसारित विज्ञप्ति म कहा गया कि 'गत दिनाक 30 5 71 को राजस्थान के भूतपूर्व विधायक एव विरोधी के दल के मजबूत नेता एव जनप्रिय कमयोगी श्री मुरलीधर व्यास का निधन बीकानेर म हो गया। देश भर म हुई ऐसी शोक सभाओ तथा श्रद्धाजलियो का विवरण के आगे अध्यायो म है। श्रद्धाजलि सभा का सामूहिक कायक्रम स्थानीय जन भवन कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता म दिनाक 6 6 71 को दिन के एक बजे रखा गया है।

सम-सामयिकों की दृष्टि में

मगण और जीवन्तता सिद्धान्त प्रियता और त्याग, नि स्वार्थ सेवा और साधना के ताना बाना से बुना व्यास जी का दीप्त जीवन विगत इतिहास का अग बन चुका है। इतिहास न तो व्यक्तियो और घटनाओ की कब्रगाह है और न अभिलेखागारो का निर्जीव निष्पन्द लेखा जोखा ही है। वह विगत की धारदार यात्रा का सजीव वृत्तान्त है भविष्य की यात्रा की सकेतिका है और वर्तमान के पांवो की गति है। वह त्रिकालदर्शी भी है और त्रिकालगामी भी। व्यास जी इतिहास के उन पृष्ठो म आज भी जीवित है जो तीनो काला म वही परिक्रमा स वही गतिशीलता से और वही भावी जीवन की निर्माण सारणिया मे लिखे गए हैं।

व्यासजी के बारे म इतने अधिक लोगो से इतने अधिक विचार आए हैं जो पूरे के पूरे लिखे जाएँ तो एक हजार पृष्ठो का एक पृथक ग्रथ तयार हो जाए। इनम राष्ट्रीय दलो के पदाधिकारी समाजवादी विचारक सासद और विधायक राज्य के महत्वपूर्ण नेतागण सामाजिक कायकर्ता शिक्षाविद्, मजदूर नेता साहित्यकार, पत्रकार एव साधारण जन आदि सभी सम्मिलित है।

जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर से ही शुरुआत की जाए। उनके अनुसार—
'श्री मुरलीधर व्यास ने आजीवन एक निष्ठावान जन सेवक के रूप म नि स्वार्थ भाव से स्वतन्त्रता सघर्ष और समाजवादी आन्दोलन के लिए भारी यातनाए सही। उन्होंने बराबर जुल्म और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई। तरुणाई के दिनो म सेवाग्राम वर्धा मे प्रशिक्षित हुए और उन पर गाधीवादी आचरण का गहरा प्रभाव पडा अत विनम्रता सच्चरित्रता, सादगी, अपरिग्रह उनके स्वभाव के अग बन गए थ।'

'प्रजा मण्डल के आन्दोलन म श्री व्यास लोकतत्र की स्थापना के लिए लडे और सन् बयालीस की अगस्त क्राति म भी सक्रिय रह कर जेल गये। मजदूर आदोलन का बराबर नेतृत्व करने के कारण भी उनको स्वतन्त्र भारत म कारावास सहना पडा। वास्तव मे पुलिस की बबर हिंसा के कारण ही उनके प्राण गये।'

'श्री व्यास बेधडक और प्रभावी वक्ता थ और विधान सभा म उन्होंने जनता क सवालो को बराबर पेश किया। मैं उनको श्रद्धाजलि देता हूँ।'

य हैं एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल के अध्यक्ष के विचार। सच म व्यास जो स्वतत्रता सग्राम सेनानी, समाजवादी विचारक, सघर्षशील जन नेता, प्रभावी वक्ता, सच्चरित्र व्यक्ति एव सतत् आन्दोलनकारी जन सेवक थ।

जनता पार्टी के भूतपूर्व सासद एव वर्तमान महामत्री श्री सुरेन्द्र मोहन के शब्दो म— 'श्री मुरलीधर व्यास एक प्रबुद्ध स्वतत्रता सेनानी, निष्ठावान समाजवादी नता और प्रभावशाली विधायक थे। श्री व्यास ने बीकानेर एव पडोसी इलाको म मजदूरा और किसाना को पूरी लगन के साथ सगठित किया और वे उनके सघर्ष का नतृत्व करत हुए ही शहीद हो गय। उनकी जीवन गाथा तप-त्याग और अथक-अविरल जन-सवा की प्रेरणा भरी कहानी है।'

और आज के पाठक व कल के नागरिक को इस तप-त्याग और अथक अविरल जनसेवा की प्रेरणा भरी कहानी की ही तो आवश्यकता है।

इन दोना दिग्गजो के विचारो मे व्यासजी के निष्ठावान, त्यागपूर्ण, सघर्षमय एव उत्प्रेरक जीवन की सराहना की गई है। उनके लिए जन सेवा का विकल्प कुछ भी नहीं था। उनकी साधना, सघर्ष और साहसिक क्रियाएँ सभी जनसवा के लिए समर्पित थी।

जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य, सुप्रसिद्ध समाजवादी चितक और नताजी सुभाष चन्द्र बोस के अनुयायी प्रो समर गुहा ने श्रद्धाजलि देते हुए कहा है— मैं मेरे मित्र मुरलीधर व्यास जी को राजस्थान मे जन आदोलन के निर्विवाद नेता के रूप मे याद करता हूँ। वे एक ऐसे स्वतत्रता सेनानी थे जो 'भारत छोडो' आदोलन क दौरान कई वर्षों तक जेल मे रहे। स्वतत्रता आन्दोलन की दीक्षा तो उन्हे तभी मिल गई थी जब वे वर्धा मे एक छात्र के रूप म अध्ययनरत थे। उन्ह बचपन म ही भारत के उन महान् नेताओ के दर्शन का सौभाग्य मिला था जो महात्मा गाधी स मिलने उनके वर्धा आश्रम मे आया करते थे। — इनम विशेष उल्लेखनीय थ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, जय प्रकाश नारायण एव सरदार बल्लभ भाई पटेल। अनेक अन्य महान् नेताओ के दर्शन का भी उन्ह सुअवसर मिला।'

बाद म वे दिग्गज समाजवादी नताओ—आचार्य नरेन्द्र दव, जयप्रकाश नारायण, अशोक महता, राम मनोहर लोहिया, एस एम जोशी, एन जी गोरे आदि के सम्पर्क म आए। इन नेताओ की प्रेरणा स ही उन्हा ने काग्रेस समाजवादी दल म प्रवेश लिया तथा चौथ दशक क प्रभावशाली युवा नेता के रूप म स्वतत्रता सग्राम म सिरकत की।'

चपा पगर उ ा ि ।ा महात्मा गांधी द्वारा म र्गा ित स्वतत्रता आन्दोलन की रा अधा ।। था । ब्यास जी न इस उत्तेजनापूर्ण वातावरण म विकसित होन तथा म ा् ताओ ा दशन व उ स मिलन रा सौभाग्य मिला । सन् 1944 म जल स छूट न वाद उन्हा । बीकानर ना अपनी गतिविधियो का मुख्य केन्द्र बनाया । सन् 1947 के बाद जब काग्रेस क हाथो म राज्य मत्ता आई, व्यास जी न समाजवादी दल म रहना ही पस द किया । उन्होने आचाय नरेन्द्र देव एव जय प्रकाश नारायण क नेतृत्व म काम किया । काग्रेस न उ हे अपन म मिलान क कई बार प्रयास किय । यदि व एक साधारण किस्म क अवसरवादी राजनीतिज्ञ होत तो अवश्य ही काग्रेस म जाकर अपन 'भविष्य' का बना सकत थ, लकिन व तो एक एस निष्ठावान समाजवादी थ जो जन साधारण की सवा म रह कर उस दरिद्रता, निरक्षरता एव पिछडपन स मुक्ति दिलाना चाहत थ । यही कारण था कि व विपक्ष म रह ।'

'राजस्थान पिछड हुए राज्यो म स एक था । स्वतन्त्रता स पूर्व इस पर सामतशाही का दिरजा रहा था । व्यास जी न किसानो, मजदूरो एव जनजातियो क लोगो को जगान का सकल्प लिया । नतीजा स्पष्ट था । काग्रेस एव उसके सहयोगी (राजा महाराजा तथा पूजीपति) लोग उनस नाराज हो गय । व्यास जी जस निर्भीक नता न किसी की धमकी की परवाह किय बिना किसानो और मजदूरो को सगठित किया तथा उन्ह अपनी मागो को मनवाने क लिए सबल बनाया ।'

साधारण जनता के लिए किय गय सघर्षो के कारण व्यास जी को स्वतत्र भारत म भी कई बार जेलो की यातनाए भोगनी पडी । व जनता क लोकप्रिय नेता थ । अत उन्हे चुन कर दो बार राजस्थान विधान सभा का सदस्य बनाया गया । व्यास जी न राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमत्री स्व मोहनलाल सुखाडिया के सोना घोटाले काण्ड का पर्दाफाश किया—इसी का परिणाम था कि उन्ह 1967 के चुनाव म पराजित होना पडा । श्री सुखाडिया न व्यासजी को हराने के लिए क्रूर, घिनौन एव दुराचरण क सभी उपाय किय ।'

व्यास जी एक महान् स्वतत्रता सेनानी, एक महान् समाजवादी नेता और एक महान् सघर्ष धर्मी व्यक्ति थ । व एक सुप्रसिद्ध लखक एव पत्रकार भी थ । व्यास जी न सादा जीवन बिताया । वे हर प्रकार स जनता के 'आदमी' थे । उन्होने अपन राजनीतिक वचस्व म कभी गव नही दिखाया । मुझे विश्वास है कि स्वभाव स मृदु तथा गरीबो व पीडितो के हितैषी श्री व्यास सब के लिए एव विशेषकर के युवा पीढी के लिए सदव प्रेरणा के स्रोत बन रहग ।

प्रा समर गुहा ने व्यास जी को स्वतन्त्रता आ दोलन व निर्भीक नेता समाजवादी चि तक, किसान–मजदूरो के हितपी, नि स्वार्थ जनप्रिय विधायक, सघर्षशील व्यक्ति, महान् सगठन–कर्मी, दृढ सकल्पवान, वक्ता एव अच्छे पत्रकार के रूप म याद किया है। एक ही व्यक्तित्व के इतने प्रखर कोण हो तथा हर कोण उस महानता की ओर ल जाए–ऐसा कम ही देखन–सुनने को मिलता है। व्यास जी लीक स हट कर चलन वाले नेताओ म स थ जिनको अपनी सूखी रोटी का सुख शाही व्यजना स अधिक प्रिय था।

राष्ट्रीय कायकारिणी मे उनके पूववर्ती साथियो म आज कई लोग एसे है जा राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर अत्य त दीप्त एव चर्चित व्यक्तियो म माने जाते है। य है सवश्री अनन्तराम जायसवाल, एस जयपाल रड्डी, मधु दण्डवते जाज फर्नाडीस, रामकृष्ण हगडे, सुरेन्द्र मोहन, एम एस गुरुपादस्वामी श्री मती मृणाल गोर, प्रोफेसर समर गुहा, डा सरोजिनी महिषी एव हर भजन सिंह आदि। इनम स कुछ एक तो तत्कालीन समय म व्यास जी स राजनीतिक रूप स काफी कनिष्ठ थ। आज यदि व होते लेकिन जब ई ही नही तो क्या बात करे।

महाराजा डॉ करणी सिंह ने बीकानेर परिक्षेत्र का 25 वर्षों तक लोक सभा म प्रति निधित्व किया। उनका व्यास जी स एक निजी, आत्मीय एव घनीभूत सम्ब ध था। यह सम्ब ध झोपडी और राज महल की दूरियो का नही अपितु मानवीय गुणो का समर्पित दो व्यक्तियो का था। महाराजा डॉ करणी सिंह के शब्दो म– स्वर्गीय श्री मुरलीधर व्यास मानवता के पुजारी, दीन–दुखियो के सहारे और सच्चे निष्ठावान जननेता थ। समाजवाद म उनकी दृढ आस्था थी। वे जन समस्याओ के लिए सघर्ष करन और अधिकारो के लिए जनता को आ दोलित करने म अग्रणी रहते थ।'

'सच्चाई की रक्षा के लिए वे किसी भी सीमा तक जा सकते थे। उ हे न तो सत्ता का भय विचलित कर सकता था–और न कोई लाभ ही डिगा सकता था। वे निरन्तर जागरूक, निरन्तर गतिशील एव निरन्तर सघर्षशील नेता थे। उनका छोटा लकिन ऐतिहासिक जीवन जन जन के लिए आस्था एव विश्वास का एक अध्याय है।'

सासद के रूप म मेरे पच्चीस वर्ष के कायकाल मे श्री व्यास दस वर्षों तक विधायक रहे। मुझसे उनका निर तर सम्पर्क बना रहा। जन समस्याओ के निराकरण म व तत्परता से सहयोग देत थ। यही कारण है कि उनके माध्यम स विधान सभा म और मेरे माध्यम स ससद तक बीकानेर की वाणी निरन्तर गूजती रहती थी।'

'उनका निधन बीकानेर के लिए तो एक अपूरणीय क्षति था ही, मेरे लिए एक निजी आघात क समान था। उनके शिष्य, सहयोगी और प्रशसक जिस ग्रथ प्रकाशन का पुनीत काय कर रहे हैं, उसके लिए मेरी शुभ कामनाए।'

सच्चाई की सीमा जहां से शुरू होती है वहीं से खतरे की सीमा भी शुरू हो जाती है। सच बोलने, सच्चा काम करने और यहां तक कि सत्ता पक्ष की सच्ची व बेलाग आलोचना करने तक के अपने अलग अलग खतरे हो सकते हैं। खतरे की सीमा रेखा से पार जाकर कबड्डी कबड्डी बोलने, विरोधियों को आउट करने तथा श्वांस बचाकर पुनः अपने सुरक्षा घेरे में आने वाले को पग पग पर विरोधी (चक्र) व्यूहों की कुचालों से अपने 'मरने' का खतरा सामने दिखाई देता है। वैसे भी तो आखिर वहां तक। अपने (सत्ता) घेरे के रक्षक एक अकेले विरोधी को हर तरह से पटकी देने तथा उसे 'मार गिराने' की कला भी जानते हैं और कलाबाजी भी। व्यास जी ने इन व्यूहों की कभी भी परवाह नहीं की—चाहे अकेले ही हों, उनके घेरों में घुस, एक साथ कई कई महारथियों को 'आउट' किया तथा जब तक 'अभिमन्यु' की तरह पूरी तरह कुचालों का शिकार नहीं हो गये, जूझते ही रहे। महाराजा डा. करणीसिंह का यह कहना कितना सार्थक है कि—'सच्चाई की रक्षा के लिए वे किसी भी सीमा तक जा सकते थे। उन्हें न तो सत्ता का भय विचलित कर सकता था और न कोई लोभ ही डिगा सकता था।' ऐसे व्यक्ति कभी कभी ही पैदा होते हैं और जब भी पैदा होते हैं, अपने गरिमामय जीवन से वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों को आलोकित ही करते हैं।

राजस्थान की राजनीति में एक ऐसा समय भी आया जब सन् 1977 में कांग्रेस के एक को छोड़ कर सभी उम्मीदवार लोक सभा का चुनाव हार गये। 25 में 24 प्रत्याशी पराजित हुए थे—एक मात्र सफल उम्मीदवार थे श्री नाथूराम मिर्धा। श्री मिर्धा ने कांग्रेस में रह कर कभी केबिनेट स्तर के मंत्री के रूप में तो कभी संगठन के अध्यक्ष के रूप में अपनी प्रभाव पूर्ण भूमिकाओं का निर्वाह किया। अब वे विरोधी पक्ष में हैं तथा लोकदल (ब) के प्रदेशाध्यक्ष एवं राजस्थान विधान सभा में लोकदल विधायकों के नेता हैं। वे दस वर्षों तक व्यास जी के साथ विधायक रहे—व्यास जी विरोधी दल के नेता थे और श्री मिर्धा केबिनेट स्तर के मंत्री। श्री मिर्धा के शब्द विचारणीय हैं—' मैं और श्री मुरलीधर व्यास राजस्थान विधान सभा में एक साथ रहे थे। जितना मेरा उनके बारे में ज्ञान है, उससे लगता है कि वे बड़े कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। अपने सिद्धान्तों और विचारों के बड़े पक्के थे और अपनी बात को बड़े ठोस तरीके से कहने में समर्थ थे। उन्होंने अपने जीवन काल में गरीबों की सेवा की। विधान सभा में मैं इनके भाषणों को अच्छी तरह सुनता था। जब वे विरोध पक्ष में बैठते थे, मैं सरकारी बेंचों पर बैठता था और प्रायः वे लोगों के कामकाज के सिलसिले में मिलते रहते थे और मैं उनकी गरीबों के प्रति निष्ठा देखकर अपनी तरफ से हर तरह की मदद करने की कोशिश करता था। व्यक्तिगत मुलाकातों में उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा रहता था। वे एक सूझ-बूझ वाले बुद्धिमान व्यक्ति

थे। सामाजिक कार्यकत्ताओ की यादगार बनाये रखनी चाहिए, इस मे मानता हूँ। इसलिए आप सब मित्रा का उनके बारे म एक बहुत ही अच्छा काम है। जो कोई उस पढेगा वह उससे कुछ प्रेरणा ही ग्रहण करेगा। यही मेरे विचार ह–उनके जीवन के बारे म।'

श्री मिर्धा का मानना है कि व्यास जी सिद्धान्ता और विचारा के पक्के थे और अपनी बात ठोस तरीके से कहते थे, इतना सब कुछ होते हुए भी व्यक्तिगत व्यवहार और निजी सम्बन्धो म व हमेशा प्रिय बने रहे। श्री सुखाडिया तक इस बात के कायल थे। व्यास जी न 'घरेलू' या निजी आदमियो के काम नही करवाये, गरीबो के लिए दौड–धूप की। जब भी मिल, जहा भी मिले–किसी गरीब की समस्या लेकर मिले। उनका यह व्यक्तिगत मिलन हमेशा गरीबा के हित म रहा।

व्यास जी के सघर्षों के साथी प्रजा समाजवादी दल के तत्कालीन प्रदेश सयुक्त मत्री एव सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री रामशरण अन्त्यानुप्रासी ने मुरलीधर व्यास को बीकानेर के लोक गीता म चर्चित लोक नेता बताया है। व्यास जी क्या थे, क्या नही थ, इस बिन्दु को उठाते हुए श्री अन्त्यानुप्रासी न कहा है कि–'व्यास जी लाहियावादी नही थ–आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारा को उन्हाने स्वभावत स्वीकार किया था। गाधी के दर्शन स भले ही कही-कही उन्ह असहमति रह हा किन्तु आदर्श और आचरण की साम्यता म व्यास जी पूर गाधीवादी थे। 'व्यास जी की पहचान कथन से नही काम स होती थी। उनका कदम कुछ भी हो, अन्याय के वे विरुद्ध है– (ऐसा माना जाता था) इस प्रकार उनका जीवन एक साधना का प्रतीक बन गया था।'

'प्रदेश के लाखा छोट किसान, भूमिहीन मजदूर, ग्रामीण दस्तकार, उपेक्षित अल्प-सख्यक, हरिजन, आदिवासी, कारखाना, खदाना, सार्वजनिक निर्माणा, रेल-जेल, डाक तार और सरकारी दफ्तरा के कार्यरत श्रमिको और कर्मचारिया का समुदाय और शोषण का शिकार नारी समाज व्यास जी के सृजन, सगठन और सघर्ष के भरोस 'मुक्ति सघर्ष' म आग बढता रहा।'

बीकानेर की गली मोहल्ला की छता और फुटपाथा स' शेर व्यास जी! जिन्दाबाद!! की आने वाली आवाजे ऐसा प्रमाण देती थी कि जनमन' पर व्यास जी का पूरा आधिपत्य था। क्या महिलाए, क्या बुढ्ढे–बच्चे, व्यास जी को देवता मानत थे।' बिना सुविधा के इस सत न राजस्थान की धरती को पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक नापा था। मरु प्रदेश का कोई भी आन्दोलन व्यास जी के बिना अधूरा था।'

'हिगनघाट और वर्धा आश्रम स बीकानेर पर सोशलिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद् के सम्मलन म प्रथम बार व्यास जी स मेरा साक्षात्कार हुआ था। तब हि द सेवा दल के दल प्रमुख 'व्यास जी' न केवल राजनीतिक मच पर अपनी प्रतिभा को मुखरित करते थे वरन् अपने सेवादल के माध्यम से जहाँ उ होंने बडे भोजा, दहेज विरोधी अभियानो को गति दी वहाँ रोग–निवारण शिविर लगाकर पीडित मानवता की सेवा भी की।

विशाल राजस्थान को पहली लोकप्रिय शास्त्री सरकार ने जब जन–सुरक्षा कानून लागू किया, तब इस काले कानून के विरुद्ध व्यास जी न जन आ दोलन छे़डा दिया आ दोलन का उनका तरीका एव भावात्मक प्रेरणा देने वाला था। 'लोकतत्र क शिशु की हीरा लाल शास्त्री (मुख्यमत्री, राजस्थान) सुरक्षा कानून का छुरा घोप कर हत्या कर रहे है।'

'बीकानेर का एतिहासिक कणक निकासी विरोधी आ दोलन जिस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करत हुए भारत के महान् सघर्षशील नेता राम मनोहर लोहिया ने कहा था– चल डन बीकानेर 'म इस आ दोलन म बीकानेर गया था। प्रात की पहली रेलगाडी जो जोधपुर स बीकानेर पहुँची थी–मैं स्टेशन पर ही रुका। दूसरी गाडी आई दिल्ली से–इस रेल स आय ये श्री मगन लाल बागडी। अपार जन–समूह और प्रशासन द्वारा शहर म धारा 144, क्या करे ? सामूहिक रूप स धारा 144 का उल्लघन किया गया तीन बजे रतन बिहारी पार्क म आमसभा की तब राजाची बिल्डिग की छत पर खडे समाजवादी नेता सादिक अली ने कहा था
'आज जनता का सगठित आक्रोश इतना बलशाली है कि मुरलीधर व्यास चह कि सरकार को उखाड फेंको तो देर नही लग।' यही था व्यास जी का प्रभावशाली व्यक्तित्व।

बीकानेर म लम्बे काल तक निरन्तर हडताल–अनुशासित आन्दोलन ठीक 3 बजे बिना किसी सूचना क रतन बिहारी पार्क म प्रतिदिन सभा होती थी। व्यास जी और स्थानीय नेता सत्य नारायण पारीक, रामश्वर पाडिया, भवरलाल स्वणकार, भवर लाल महात्मा माणिक च द सुराणा आदि ब दी बना लिय गय थ। प्रसिद्ध समाजवादी नेता प्रो कन्हैयालाल अपन गगानगर के जत्थे क साथ गिरफ्तार हो चुके थे। बाहर म अकेला था, रतन बिहारी पार्क की आम सभा को सम्बोधन के बाद आह्वान करता था–रात के राही थक मत जाना, सुबह की मजिल दूर नही है।'

चार धाती–चार बनियान चार चद्दरें और कुर्तों की सम्पदा का बटवारा व्यास जी म चार जगह कर रखा था। एक तन पर एक अटैची म, एक बा 10 रूम एम

एल ए क्वार्टर म तथा एन बीकानेर म। गृहस्थी थे, घर था पर अपना नही, घर जाना नही, खाना नही, जनता को समर्पित यह व्यक्तित्व हर कही सडक–चौराहे पर आसानी स उपलब्ध हो जाता था।'

और यह व्यक्तित्व राजस्थान विधान सभा के सम्पूण विरोधी दल के सशक्त नेता का था। श्री अत्यानुप्रासी के विचारा को इतनी लम्बाई स उद्धृत करने के पीछे आशय यही है कि इनसे व्यास जी का व्यक्तित्व कई कोणा स उद्घाटित हो सकता है। व्यास जी के साथी होन के कारण इन विचारा की प्रामाणिकता निर्विवाद बन जाता है।

और अब प्रजा समाजवादी दल के तत्कालीन प्रदशाध्यक्ष श्री रतन लाल पुरोहित के विचारा स बात को आगे बढाया जाए। विचार किसी के हो, उसका मूल स्वर प्राय एक ही रहता है–निष्ठा, ईमानदारी, सच्चरित्रता, साहस, दरिद्रनारायण की सेवा, सकल्प की दृढता और एस ही अनेक अन्य गुण सभी के विचारा म बिखरे मिलत हैं।

श्री पुरोहित व्यास जी को अपना राजनीतिक गुरु मानत है। व्यास जी से उनका सम्पर्क 1957 से शुरू हुआ जब व बीकानेर अधिवेशन म राजस्थान प्रजा समाजवादी दल के अध्यक्ष चुन गये। उनके अध्यक्ष काल म ही सुप्रसिद्ध जामसर श्रमिक आन्दोलन चला था जिसम व्यास जी के धारदार व्यक्तित्व न शोषित मजदूरा म एक नई चेतना का सचार किया था।

श्री पुरोहित के लम्बे लख के आशिक उद्धरण इस प्रकार है – म अपन राजनीतिक गुरु आदरणीय व्यास जी के साथ देश की प्रजा समाजवादी पार्टी की मीटिंगा मे भी खास निमत्रण आन पर गया। उनके साथ एसी ही एक मीटिंग म माइसोर (मसूर) गया म उनके साथ माइसोर स रामेश्वर, मद्रास व बम्बई, पूना आदि कई जगह गया। सब जगह प्रजा समाजवादी पार्टी म आदरणीय व्यास जी का भारी सम्मान देख कर चकित रहा। उन्हान देश के सब नताओ और साथिया स मेरा यथोचित परिचय कराया जिसके कारण म उनकी मृत्यु के पश्चात् भी जब भी बम्बई, दिल्ली आदि गया तो पार्टी के नताओ ने मुझे पूण सम्मानित किया।'

व्यास जी का रेल्व मजदूरा के आन्दोलन से निकट का सम्पर्क था। उ होने अखिल भारतीय आन्दोलना म रेल मजदूरा का सफल नतृत्व किया तथा कारावास की यातनाए भोगी। नॉदन रेल्व मैन्स यूनियन के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री टी एन

वाजपेयी ने व्यास जी के प्रति श्रद्धावनत होते हुए उनके गुणों की चर्चा इन शब्दों में की है 'स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर स्वतन्त्र भारत की राजनीति में जिस ढंग से (व्यास जी ने) समाज सेवा की, ऐसे उदाहरण भारतीय राजनीति में विरले ही मिलते हैं ट्रेड यूनियन आन्दोलन में राजस्थान हिन्द मजदूर सभा के संस्थापक सदस्य और बाद में कर्मठ कार्यकर्ता एवं नेता के रूप में स्वर्गीय मुरलीधर व्यास का नाम आता है। राजस्थान में जहां भी मजदूरों ने संघर्ष का बिगुल बजाया वहाँ वे अगुवा रहे। नार्दन रेल्वे मैन्स यूनियन तथा आल इण्डिया रेल्वे मैन्स फेडरेशन भी हमेशा उनका कृतज्ञ रहा। उन्होंने 1960 तथा 1968 में रेल कर्मचारियों के समर्थन में जेल यातना भी सही तथा हड़ताल के बाद प्रताड़ित रेल्वे कर्मचारियों की सहायता में स्वयं को कार्यरत रखा जब कभी भी बीकानेर क्षेत्र में रेल कर्मचारियों ने संघर्ष किया, मुरलीधर जी हमेशा अग्रणी रहे। अधिकारियों की दृष्टि में भी वे सम्मानित रहे। जब कभी कोई मामला वे इन अधिकारियों के सामने रखते तब वे अधिकारी आश्वस्त रहते कि यह मामला अवश्य ही उचित एवं सत्य है।'

'मेरा मुरलीधर व्यास से व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा है। जब कभी मैं बीकानेर जाता, उन्हें मिले बिना ऐसा प्रतीत होता कि बीकानेर की यात्रा अधूरी रह गई है।' उनका जीवन राजनीति से लेकर ट्रेड यूनियन तक शिक्षाप्रद रहा। ऐसे व्यक्ति समाज में बिरले ही पैदा होते हैं। स्वर्गीय साथी जय प्रकाश नारायण स्वर्गीय साथी राम मनोहर लोहिया तथा साथी डी डी वशिष्ठ की दृष्टि में मुरलीधर जी सम्मानित रहे।'

जो व्यक्ति दिग्गज समाजवादी नेताओं की दृष्टि में सम्मानित' हो, अधिकारियों की दृष्टि में 'सच्चे एवं उचित मामले लाने वाला व्यक्ति हो, मजदूर नेताओं की दृष्टि में प्रेरणा पुरुष हो तथा साधारण जनता की दृष्टि में शुभचिन्तक हो—उसके बहुआयामी व्यक्तित्व के लिए 'युग पुरुष' से अच्छा और क्या टाइटल दिया जा सकता है? वाजपेयी जी के शब्दों में शब्द मिला कर हम भी यही कह सकते हैं कि ऐसे व्यक्ति समाज में विरले ही होते हैं।

और अब कुछ साथियों के विचारों का मंथन करें। ये साथी चाहे उनके स्वयं के दल के हों या दूसरे दलों के, प्रांतीय स्तर के नेता हों या स्थानीय निष्ठावान नेता/कार्यकर्ता या फिर व्यास जी के प्रबल समर्थक अथवा कट्टर विरोधी ही क्या न हों, सब के विचारों में थोड़ी—बहुत समानता अवश्य मिलेगी। पूर्ववर्ती अध्यायों में प्रसिद्ध समाजवादी नेता तथा इंग्लण्ड में भारत के पूर्व हाई कमिश्नर श्री एन जी गोरे,

राजस्थान के पूव मुख्यमत्री श्री भैरो सिह शेखावत, पूव गृहमत्री प्रो केदारनाथ, पूव वित्तमत्री श्री माणिक चद सुराणा, स्व विधायक श्री गोकुल प्रसाद, सुप्रसिद्ध काग्रेसी नता श्री मूलचद पारीक, आदि के विचारा के उद्धरण दिय जा चुके हैं। अब प्रस्तुत हैं कुछ और महत्वपूण विचार। (इनमे स्थानीय, प्रातोय अथवा राष्ट्रीय का कोई आग्रह नही है)। सुप्रसिद्ध समाजवादी नता श्री सत्य नारायण पारीक के अनुसार 'व्यास जी की जि दादिली गजब की थी। कसी ही मुसीबत क्या न आ पडे उनके सदा हसमुख चेहरे पर कोई शिकन नही। जीवन के साथ हसते हसते कठिनाइया को झेलना और युवा पीढी को अपने दृढ और सकल्पपूण चरित्र स प्रेरित करना उनका आदश था उनकी शिक्षा वर्धा म गाधी जी के आश्रम के एक प्रख्यात आश्रमवासी और शिक्षाविद् आचाय आयनायकम् और वर्धा कार्मशियल कालेज के प्राचाय और बाद म गुजरात के राज्यपाल स्व श्रीयुत् श्रीम नारायण अग्रवाल के सान्निध्य म हुई। उमी काल म उ ह काग्रेस के अध्यक्ष नेताजी सुभाष च द्र बोस से स्वय सवक दल म राष्ट्रीयता की दीक्षा मिली थी जमनालाल बजाज के छोटे लडके श्री रामकृष्ण बजाज और सरहदी गाधी खान अब्दुल गफ्फार खा के लडके श्री वली खा उनके सहपाठी थे। महाराष्ट्र क हिंगणघाट कस्बे म आज भी उनका नाम बडे आदर और स्नह से याद किया जाता है। पिछल दिनो वहा के एक सज्जन से जब उनका प्रसग आया तो सजल नेत्रा से कहा था—'अरे! मुरली तो बस मुरली ही था।'

सन् 1953 के ऐतिहासिक गेहूँ निकासी आ दोलन मे व्यास जी की भूमिका बडी शानदार रही। मिश्रा की जोड भी गजब की थी। हालांकि बीज रूप म आ दोलन की शुरुआत तो श्री श्रीनिवास थिरानी ने की पर व्यास जी न अपनी स्वाभाविक पकड से उस एक आ दोलन का रूप दे दिया गेहूँ निकासी आ दोलन के बाद गोआ सत्याग्रह तथा जाममर आ दोलन व्यास जी की कीर्ति म चार चाद लगाने वाल आ दोलन सिद्ध हुए। गोआ सत्याग्रह म जहां उनकी उत्कृष्ट देशभक्ति की भावना के दशन हुए वही उ हे राष्टीय नेताआ के सम्पक म आने का मौका भी मिला। जामसर और रेल्वे मजदूर आ दोलन के कारण व्यास जी का व्यक्तित्व एक मजदूर नेता के रूप म लोगो के सामने आया व्यासजी मेरे निकट के सहकर्मी थ मित्र थ। कभी कभार कुछ मतभेद जरूर हुए पर मन–भद कभी नही और मत–भेद भी किसी स्वाथ को लेकर नही हुए शुद्ध सद्धा तक आधार पर।' (झोपडी की आवाज, 1 जून 1984) श्री सत्यनारायण जी पारीक यासजी के अतरग मित्रा और सहकर्मिया म स रहे हैं अत उनक विचार काफी महत्वपूण बन जाते है।

इसी क्रम म सुप्रसिद्ध साहित्यकार, समीक्षक एवम् शिक्षाविद् श्री अक्षय च द्र शर्मा क विचारो का जायजा लिया जाए तो उपयुक्त होगा। यास जी के चिरपरिचित फक्कडपन पर टिप्पणी करत हुए श्री अक्षच द्र शर्मा का कहना है कि जब भी श्री

मुरलीधर व्यास को देखता—बीकानेर की सड़कों में, गलियों में, पैदल, रात में, दिन में, धूप में, लू में—वे सदा एकसे ही दिखाई देते—सघर्षरत, विशेष तेवरी मुद्रा सदा खुश, उत्साही और घर—फूंक तमाशा देखने वाले भाई फक्कड़। मस्त कबीर के दल में शामिल होने वाले—

कबीरा खड़ा बजार में लिये लुकाटी हाथ।
जो घर फूंके आपना, चले हमारे साथ॥

कबीर तो अकेले ही आवाज लगाते खड़े रहते हैं—उनके साथ कभी—कभी लोग शामिल होते हैं—उन शामिल होने वालों में एक नाम है—मुरलीधर व्यास!

व्यास जी किस पार्टी में थे—यह प्रश्न ही गलत है। हर एक पार्टी में आराम पसद लोग होते हैं, अपने त्याग का सौदा करते हैं दूसरों के कंधों पर बन्दूक चलाते हैं। हर एक पार्टी में ऐसे लोग भी रहते हैं—बात कम करते हैं—जो खुद को लुटा देते हैं—अपने को निःशेष कर देते हैं। फिर भी न शिकायत न उलाहना न कोई पछतावा! व्यास जी अपने को लुटाने वाले ऐसे ही कार्यकर्त्ता थे।'

'व्यास जी यह भी अवश्य जानते होंगे कि जो पीड़ित व्यक्ति अपनी दास्तान सुना रहा है—बढ़ाकर सुना रहा है, कुछ बातें छिपा रहा है अपने को निर्दोष साबित कर रहा है पर व्यास जी को इसे तोलने मापने, परखने की फुरसत कहां थी। वे पीड़ा के साथी थे, हमदर्द थे—कहना चाहिए—वे स्वयं वही बन जाते थे। इसीलिए सारी जनता—उनको अपना समझती है याद करती है और श्रद्धा से झुकती है।

फक्कड़पन और परदुःखकातरता के गुणों से वशीभूत व्यास जी का शब्दचित्र इन पंक्तियों में उभरता है वह शायद उनके निरालेपन का सबसे रोचक व सटीक रूप है। साहित्यकार श्री शर्मा की कलम की रवानी ने इस स्वरूप को और अधिक सशक्त ढंग से उजागर किया है।

बीकानेर में समाजवाद के पुरोधाओं के बारे में सोचें और श्री रामेश्वर प्रसाद पाड़िया का नामोल्लेख नहीं करें—यह कदापि सम्भव नहीं है। श्री पाड़िया राजनीति, साहित्य एवं शिक्षा की त्रिवेणी का साथ—साथ अवगाहन करने वाले व्यक्ति हैं। राजस्थान बाल भारती के प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद सम्प्रति बीकानेर प्रौढ़ शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष हैं। वे भारतीय विद्या मंदिर में भी सबधित रहे हैं अतः बाल, युवा एवं प्रौढ़ तीनों शिक्षा क्षेत्रों से उनका निकट का सम्बन्ध रहा है। श्री पाड़िया के अनुसार बीकानेर के समाजवादी नेताओं में व्यास जी का परिचय श्री मगनलाल बागड़ी ने करवाया। यह बात सन् 1948 की है। पार्टी सगठन में

प्रवेश से लेकर मृत्युपर्यन्त आप (व्यास जी) समाजवादी चेतना के प्रचार और प्रसार म एक कमठ सिपाही की तरह लगे रहे। गोआ मुक्ति आ दोलन, रोशनीघर मजदूर आन्दोलन आदि सभी मघर्पा के समय एव सजग, सक्रिय साथी के रूप म सहयोग भरा नेतृत्व देकर मजदूरो की आवाज को वल पहुँचाते थ। ठेला यूनियन, तागा यूनियन, बजरी वेमल यूनियन, पम्मान यूनियन आदि सभी दलितवग के लोग व्यास जी के व्यक्तित्व की छाया म निभय होकर अपने उचित अधिकार की रक्षा की लडाई लडत थे। व्यास जी जिधर से भी निकलते 'मुरलीधर व्यास जि दाबाद गरे व्यास जि दाबाद' के जय घोप सुनन को मिलते थ।'

'व्यास जी के व्यक्तित्व म दुलभ गुण थे। अ य नेताओ की तरह 'जाओ और काम करो' की बात न वह कर 'आओ और काम करें' का महामत्र सुनाकर उत्साह का सचार कर देत थे। परदु ख सवेदनशीलता उनके व्यक्तित्व की बहुत बडी विशेषता थी। सौहादता हमेशा उनके पास थी। व्यासजी के साथ कभी-कभी पार्टी सगठन के पक्ष को लकर वचारिक मतभेद भी रहता था कि तु मतभेद कभी व्यास जी के मन पर सवार नही हुआ। जब भी मिलते सौहादता, निश्छलता, भाईचारा एव सद्भावनापूण वातावरण मे तथ्यात्मक बातें होती थी।

'जादू वह जो सब के सिर पर चढकर बोल। व्यास जी का व्यक्तित्व छोटे-बडे, गरीब-अमीर सभी को प्रभावित करता था। उनकी सेवा-परायणता कमठता, पर-दु ख कातरता तथा ईमानदारी ने देश के बडे से बडे नेता का मन जीत लिया था। लोकनायक जय प्रकाश नारायण डॉ राम मनोहर लोहिया श्री मगनलाल बागडी, बाबू गगाशरण सिंह श्री नाथपाई, श्री एन जी गोरे आदि सभी के साथ उनके गहरे आत्मीय सम्ब ध थे। आप की उदात्तता व प्रखर वक्तृत्व कला का लोहा तो विरोधी पार्टियो के लोग भी मानते थ। राजस्थान क मुख्यमत्री श्री मोहन लाल सुखाडिया व्यास जी की प्रखरता व स्पष्टवादिता स बहुत प्रभावित थे और उनके लिए श्रद्धा और प्रेम रखत थे। इस श्रद्धा और प्रेम को सुखाडिया जी ने व्यास जी के मरणोपरा त भी निभाया।'

श्री रामेश्वर पाडिया ने व्यास जी को दु खियो के हमदद, मजदूर आ दोलन के सम्बल, समाजवादी चेतना के प्रसारक, पर-दु ख सवेदनशील जुझारू व्यक्तित्व के धनी सरल हृदय मित्र कष्ट सहिष्णु साथी के रूप मे याद किया है।

व्यास जी और पाडिया जी तो एक ही दल म थ विरोधी दल के राजनेताओ के हृदया म भी व्यास जी के प्रति समादर भाव था। यह बात स्व गोकुल प्रसाद पुरोहित एव श्री मूलचद पारीक द्वारा व्यक्त विचारो से (जो इसी ग्रथ मे अ यत्र

हैं) भात हो जाती है। राजनीति म कम पर लोर सवा म अधिर रुचिशील प्रखर वक्ता एव तत्कालीन भारतीय जनसघ के नेता श्री भवर लाल कोठारी व्यासजी क प्रति सम्मान एव श्रद्धा रखत रहे हैं। व्यास जी की स्टेशन ग्राउण्ड स्थित प्रतिमा की निर्माण व्यवस्था एव स्थापना म उनकी महती भूमिका सवविदित है। श्री कोठारी ने व्यास जी को पीडितो का मसीहा बताया है। उनके शब्दो म उद्धरण इस प्रकार है – 'स्व श्री मुरलीधर व्यास बीकानेर के सर्वाधिक लोकप्रिय जन नेता थ। व गरीब शोषित व पीडित के हिमायती और उसके सुख दुख क भागीदार थे।

दस साल तक विधायक रह कर भी व उनसे एकात्म बने रहे, उनकी आवाज बुलद करते रहे। सदा सवेदनशील रहे। इसी कारण व जन-जन के प्रिय और पीडितो क मसीहा बन गये।

'उनका व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे आदश शिक्षक और योग प्रशिक्षक थे। जन चेतना क प्रखर अभिव्यक्ता थे। श्रमिको के हित रक्षक थ। कला-प्रेमी और सवा प्रेरक थ। बीकानेर के जन जीवन पर उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप थी।'

आज भी उनका व्यक्तित्व जीवन्त है। स्मृति अक्षुण्ण है। बीकानेर के नागरिको न रेल्वे स्टेशन के सामने उनकी आदमकद प्रतिमा स्थापित करके उनके प्रति आन्तरिक सौहाद का प्रदशन किया है। नेपाल के पूव प्रधान मत्री श्री एम पी कोइराला द्वारा प्रतिमा का शिलान्यास और लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा उसका अनावरण उनके राष्ट्रीय व्यक्तित्व का परिचायक है। लोकतन्त्र के सजग प्रहरी के रूप म राष्ट्र उनका सदा स्मरण करता रहेगा।'

श्री कोठारी ने व्यास जी के राष्ट्रीय व्यक्तित्व का प्रभावशाली शब्दो मे वणन किया है। साथ ही उनके व्यक्तित्व के बहुआयामी पक्षो को भी उजागर किया है। जब कोई व्यक्ति राजनीति क साथ साथ शिक्षा कला, लोक सवा आदि म समान रूप स रुचिशील और गतिशील हो तो उसकी प्रखर सवेदना स्वत ही प्रकट हो जाती है। व्यास जी इसी प्रकार चेतना के मूर्तिमन्त व्यक्ति थे। जनता जनाधार ही उनकी सम्पत्ति था।

व्यास जी के परम स्नेही सरदार शहर निवासी श्री सोहन लाल डागा ने व्यास जी को स्वय सर्जित व्यक्तित्व के धनी एव आदश कर्मयोगी' माना है। श्री डागा के अनुसार 'व विचारो स बचपन मे ही समाजवादी थे। समाजवादी दशन का उनका अध्ययन अत्यन्त व्यापक था। उन्होने अपने अध्ययन तथा ज्ञान व कम की कसौटी पर एक विराट् कायक्रम अपने हाथ म लिया। वे राजनीति मे उतर पडे। उतर ही नही, जनता के साथ घुल मिल गय।'

जिस आदर और गरिमा से लोकनायक व्यास को जनता ने चुना, उन्होंने विधान सभा में जन प्रतिनिधित्व का दायित्व उतनी ही निष्ठा, लगन बहादुरी और साहस के साथ निभाया—यह विधान सभा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायगा।'

'व्यासजी एक औलिया पुरुष या फक्कड़ व्यक्ति थे। वे सर्वथा निस्पृह थे। पद लोलुपता, अर्थाकांक्षा और यशोलिप्सा से वे कोसों दूर थे। उन्हें केवल एक ही चिन्ता थी—जनता के कष्ट कैसे दूर हों, जनता स्वतन्त्रता का सच्चा सुख कैसे प्राप्त करे। उनकी निस्पृहता तो यहां तक थी कि जो कुछ उनके पास होता वे साथियों के लिए खुशी खुशी खर्च कर देते थे। उनकी जेब में दस बीस रुपयों से अधिक की राशि हमने तो कम ही देखी।

'व्यासजी की प्रकृति में जहां सहज सुकुमारता और मृदुलता थी वहां उनके जीवन का दूसरा पक्ष था जिसमें वे वज्र के समान कठोर थे। अन्याय अनीति और अनौचित्य से लड़ते समय उनके योद्धा रूप को जिन्होंने देखा है वे भलीभांति जानते हैं कि उनके साहस का पार नहीं था। वे संघर्षों में कभी नहीं घबराये एकाकी डट गये, अनेकों के सामने और पर्वत की तरह निश्चल हो गये। अड़ गये। वे तेजस्वी प्राणी थे और कभी हार न मानने वाले जीवट के धनी थे।'

'व्यासजी जहां बहुत बड़े खिलाड़ी व्यायामी और प्रबल राजनेता थे वहां बड़े ही भावनाशील व्यक्ति भी थे। संगीत से उन्हें सदैव प्यार रहा। संगीत सीखने का जीवन में अवसर नहीं पा सके लेकिन संगीत सुनने में बड़ा रस लेते थे। बातचीत के बीच अक्सर कहा करते थे, 'संगीत जीवन के लिए आवश्यक है, इससे जीवन में सरलता और मधुरता का समावेश होता है।' व्यास जी मुझे कई दफा तानपुरा पकड़ा देते और सामने बैठ जाते। मैं गाता और वे सुनते। मुझे उन्हें गीत एवं कविताएँ सुनाने के अनेकों अवसर मिले। उन अवसरों को जब याद करता हूँ तो भावविह्वल हो जाता हूँ।'

सामन्तशाही के खिलाफ संघर्ष करने, बीकानेर से निष्कासित किए जाने, और जीवनपर्यन्त समाजवाद की अलख जगाने का श्रेय जिन व्यक्तियों को मिला है उनमें से एक हैं श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा। 72 वर्षीय श्री शर्मा समाजवादी दल में व्यासजी के प्रबल समर्थक रहे हैं। श्री राम मनोहर लोहिया की प्रेरणा से उन्होंने अपने विद्यार्थी काल में बम्बई में वानर सेना में भाग लिया तथा अशोक मेहता के नेतृत्व में स्वदेशी नमक बेचने तथा विदेशी माल का बहिष्कार करने के लिए दुकानों पर पिकेटिंग की। इस अपराध में उन्हें कई बार पुलिस थाने ले जाया गया। स्व. जयनारायण व्यास के आदेश पर वे बीकानेर आये तथा प्रजातन्त्र की तिथि

म सक्रियता से भाग लेना शुरू किया। महाराजा गंगासिंह जी की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर वायसराय को काले झण्डे दिखाने की योजना के मदद् में पहले तो उन्हें कारावास में डाल कर यातनाएँ दी गई और बाद में देश निकाला दे दिया गया। आजादी के बाद शर्मा समाजवादी दल में आ गये। श्री शर्मा के अनुसार 'समाजवादी दल के राष्ट्रीय सम्मेलन (1948) के अवसर पर मगनलाल बागड़ी ने मुरलीधर व्यास का परिचय देते हुए कहा था कि 'मैं बीकानेर का एक ऐसा अनमोल हीरा देता हूँ जो बीकानेर का ही नहीं, राजस्थान और भारत का नाम चमकाएगा जिप्सम श्रमिक आंदोलन के समय जिप्सम माइंस के डायरेक्टरों ने मुरलीधर व्यास की ईमानदारी को खरीदने के लिए बड़े बड़े प्रलोभन दिये लेकिन उन्होंने उसको ठोकर मारी। यही उनकी ईमानदारी की सबसे बड़ी जीत है।'

'व्यास जी एक बार दिल्ली गये हुए थे। मोहनलाल सुखाडिया भी दिल्ली आये हुए थे। दिल्ली में सुखाडिया जी ने महाराजा करणी सिंह जी से सम्पर्क कर व्यासजी को बुलवाया। सुखाडिया जी और व्यासजी में बातें करवाई गईं। सुखाडिया जी ने कहा– व्यास जी, आपका हर काम हो जाएगा, कृपया आप विधान सभा में या पब्लिक प्लेटफार्म पर मेरी आलोचना नहीं करें।' व्यासजी ने महाराजा साहब के सामने कहा– मेरी सुखाडिया जी से कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है। मैं जन प्रतिनिधि हूं। जनता ने मुझे अपनी बात रखने के लिए चुना है, उसकी आवाज बुलन्द करना मेरे लिए आवश्यक है। व्यक्तिगत आलोचक न तो मैं कभी रहा हूं, न कभी आगे रहूंगा।' सभी जानते हैं कि सुखाडिया जी व व्यास जी के रास्ते सर्वथा पृथक पृथक रहे लेकिन उनमें व्यक्तिगत मनमुटाव नहीं आया।

भारतीय साम्यवादी दल के नेता एवं प्रसिद्ध पत्रकार (जन जन के सम्पादक) श्री हीरालाल आचार्य ने व्यासजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार प्रकट करते हुए कहा है कि 'साहस और संकल्प के धनी, शान्त स्वभावी तथा संवेदनशीलता को संजोये गम्भीर मुखमण्डल की आभा के अन अपेक्षित लोकप्रिय जन नेता थे–मुरलीधर व्यास। उनकी उत्पीडन से छुटकारा दिलवाने की कसमसाहट ग्रस्त दृष्टि की गहनता उस हिलोरे लेने वाले विशाल सागर सी अनुभूत होती थी मानो आने वाले किसी तूफानी उफान से पूर्व की सूचक हो। इस महान प्रतिभा को जनता ने अपने बीच के संघर्षों के दौर में तपाया, निखारा और अपने नेतृत्व की बागडोर का हकदार घोषित किया था।

'राजनीतिक रिक्तता की बदौलत बीकानेर क्षेत्र को ऊपरी नेतृत्व द्वारा कठपुतलीनुमा प्रतिनिधित्व थापने की हरकत से जन अपेक्षाओं की उपेक्षा के फलस्वरूप जन

मानस उद्वेलित हो उठा था। अतएव क्रान्तिकारी शौकत उस्मानी तथा साहसी राजनेता बाबू मुक्ताप्रसाद, बाबू रघुवरदयाल और बाबा मघाराम की धरती ने ऊपरी नेतृत्व को ललकारा और समूचे प्रदेश और राष्ट्र को अवज्ञा कर रख दिया। प्रख्यात 'अनाज निकासी आन्दोलन' ने सिद्ध कर दिया कि यह मरुधरा बांझ नहीं है। 1953 के इसी स्वतः स्फूर्त गेहूं निकासी आन्दोलन की जनता स्वयं ने अग्नि परीक्षा से क्षेत्रीय नेतृत्व को संजोया—संवारा और मुरलीधर व्यास, माणिक सुराणा, मदन आजमानी तथा सत्यनारायण पारीक आदि अनेक नेतृत्वकारी प्रतिभाओं को जन अपेक्षाओं का प्रहरी घोषित किया। 1957 के विधान सभा चुनावों में प्रवासी अहमद बख्श सिन्धी की भारी शिकस्त देकर क्षेत्रीय नेता मुरलीधर व्यास के प्रति जनता ने अपनी आस्था व्यक्त की।'

'स्व. व्यास जी ने जन-अपेक्षाओं के अनुरूप बीकानेर क्षेत्र के गरीब पिछड़े मेहनतकशों की संजीदगी के साथ रहनुमाई की। लोहा कूटने वाला गाडिया लुहार हो, मिट्टी के बरतन बनाने वाला कुम्हार हो अथवा जिप्सम श्रमिक या जर्जर जीवन भुगतने वाला बजरी खनिक, उन सभी मेहनतकशों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर व्यासजी संघर्षरत रहे।'

'अकाल पीड़ित क्षेत्र में अन्न पानी व चारे के लिए मानव पशु तड़फ-तड़फ कर कष्टमय जीवन व्यतीत करते रहे थे, उस क्षेत्र में सरकार की बेमिसाल लापरवाही की हरकतों में व्यासजी स्वयं गांव गांव घूम कर उनके राहत के विभिन्न कार्य करते थे और सरकारी पदों पर आसीन मिनिस्टरों के प्रति आक्रोश की आग से यहां तक आन्दोलन करते थे कि बीकानेर में उनका घुसना असम्भव हो जाता।'

'मुखाडिया के बहिष्कार के जुझारू कार्यक्रम के दौरान ही जन अपेक्षाओं के राजनेता मुरलीधर व्यास को बेरहम पुलिस ने लाठियों से प्रहार करके अपना मनहूस परिचय दिया। लेकिन उस जुझारू राजनेता ने पूरे एक माह अपना उपचार करवाया और रोगावस्था अवधि के दौरान पुनः अपनी जनता के बीच वे आ खड़े हुए।'

'अनेक बार व्यासजी के स्वयं के राजनीतिक दल द्वारा लिये गये फैसलों के विरुद्ध संघर्षों में हिस्सेदारी लेने पर जब उन्हें जवाबदेही के लिए तलब किया जाता था वे कहते, जहां तक उत्पीडन के खिलाफ संघर्ष का सवाल है, मुझे कोई नहीं रोक सकता। स्व. मुरलीधर व्यास का विशाल व्यक्तित्व किसी भी दलगत मान्यताओं और घेरा-बन्दियों से ऊपर था। मुरलीधर व्यास स्वयं एक संस्था थे। वे जन चेतना के प्रहरी थे।'

अपने राजनीतिक जीवन में नेतागण भिन्न भिन्न दलों में भले ही रहे, शीर्ष नेता व्यक्तिगत जीवन में दल निरपेक्ष रह कर भी पारस्परिक सम्बन्ध बनाये रखते हैं। सार्वजनिक हित के मामलों में तो कई बार वे एक साथ भी आ जाते हैं। ऐसे ही दो नेताओं में श्रीमती कान्ता कथूरिया एवं मुरलीधर व्यास के नाम लिये जा सकते हैं। अपने राजनीतिक मतभेदों के बावजूद श्रीमती कान्ता कथूरिया ने श्री व्यास का कई बार साथ दिया। श्रीमती कान्ता कथूरिया के शब्दों में व्यासजी का व्यक्तित्व इस प्रकार उभरता है—'स्वर्गीय मुरलीधर व्यास सच्चे अर्थों में एक जननेता थे। जनता, विशेष कर के गरीब एवं श्रमिक वर्गों की सेवा में उन्होंने अपने आपको समर्पित कर रखा था।'

अपने विधान सभा के कार्यकाल में उन्होंने अनेक जन समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से उठाया तथा उनके समाधान के लिए अनथक प्रयास किया। वे ओजस्वी व्यक्तित्व के एक ऐसे मुखर नेता थे जिनके भाषणों का जनता पर जबरदस्त असर होता था। राजनीति को उन्होंने कभी भी अपने स्वार्थों की सिद्धि का साधन नहीं बनाया वरन् जनसेवा के माध्यम के रूप में उसका उपयोग किया। उनकी महत्वाकांक्षा पद में न होकर सेवा में थी।'

वे अपने दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्य थे, राजस्थान विधान सभा में विरोधी दल के नेता थे तथा एक उद्भट संघर्षशील व्यक्तित्व होने के साथ साथ जागरूक पत्रकार भी थे। एक आदर्श नेता में जो गुण होने चाहिए जैसे सत्य, निष्ठा, सच्चरित्रता, साहस, सहायता संघर्षशीलता, परोपकार उदार भावना, सतत जागरूकता—ये सब गुण व्यासजी में थे।'

श्रीमती कान्ता कथूरिया ने व्यासजी को अनेक गुणों का संगम माना है। बीकानेर की जनता इस बात को जानती है कि व्यास जी के निधन के आघात को श्रीमती कथूरिया सहन नहीं कर पाई थी तथा श्मशान भूमि पर व्यास जी के दाह के समय वे बेहोश होकर गिर पड़ी थी और उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा था। श्रीमती कान्ता कथूरिया ने सच ही कहा है कि 'मैं उनकी स्मृति को नमन करती हूं।

अब जरा उन लोगों के विचारों का जायजा लें जिन्होंने व्यासजी के नेतृत्व को सर्वोपरि माना तथा उनके प्रति 'देव स्वरूप' निष्ठा व्यक्त की। उनमें से एक हैं श्री शिव दयाल जी उर्फ बुई महाराज। बुई महाराज का कहना है—'मीरा जैसे कृष्ण की दीवानी थी—मीरा को जैसे कृष्ण ही कृष्ण दिखते थे—हम लोगों को वैसे ही 'मुरली ही 'मुरली' दिखाई देते थे। मैं सन् 1952 में व्यासजी के साथ था। हर

चुनाव म मन उनक समथन म काम किया। मीटिगो म जहा व्यास जी बोलत थ, जनता उमड पडती थी।'

व्यास जी की मृत्यु का वणन करत हुए बुई महाराज न कहा—'वे सत्य क पुजारी थे। मैं उनका पूरी तरह स भक्त बना रहा। जब उनका निधन हुआ तो सारा बीकानर शाकमग्न हो गया। उनकी शवयात्रा म हजारा हजारा लोग थ। सकडा नर नारी अपनी छता स उनक दशन कर रह थे। मैं अन्त्येष्ठी स्थल तक नगे पाव गया। जेठ का महीना था। पावा म छाले हा गय। पूरे रास्त लोग रोत—विलखत दिखाई देत थे। लोगो की अश्रुधारा राके नही रुकती थी। श्रीमती का ता कथूरिया तो बेहोश हाकर गिर पडी। व्यासजी गरीब नवाज थे। हि दू मुसलमान सभी रो रह थ।'

बुई महाराज न व्यासजी की स्मृति म कुछ ममस्पर्शी गीता की रचना की थी। गीता क उद्धारण इस प्रकार ह —

(1) तेरे जान के बाद तरी याद आइ
दिल लगाने के बाद तेरी याद आई
जब तेरी चिता जल रही थी/ता मरे मन म यह उमड रही थी
तरे दीवाने ने तेरे मरघट पर यह कसम खाई
दिये वोट तुझको, अब किसी का नही देंगे मेरे भाई
तर जाने के बाद तरी याद आई

(2) जीना तरी गली म मुरली मरना तरी गली म
मरन के बाद खुशबू हागी गली गली म।

बुई महाराज ने व्यास जी क प्रति समपण भाव रखा। अपनी भावात्मक शपथ का निवाह करत हुए 1971 के बाद उ हाने किसी भी चुनाव मे अपना मतदान नही किया। जीवन भर का वोट मुरलीधर जी के साथ ही समाप्त हो गया।

व्यासजी न बीकानेर नगर म कई दीवान भक्तो की एक अनमोल कतार तयार की। इनमे स एक है श्री नटवर लाल, जो नटवर 'उवाडा' के नाम से विख्यात ह। श्री नटवर लाल का कहना ह — हम व्यासजी का भाईसा समझते थ। उनका भी हमार साथ ऐसा ही सम्ब घ था। व मुझे पुत्रवत मानते थे। मरा व्यासजी स 1966 म सम्पक हुआ। मैं उन दिनो उनकी जीप चलाया करता था। मैने 18 20 महीना तक गाडी चलाई। जब वि नाणी बगीची म शिविर लगाया गया तो मने उसम भाग लिया था। इस शिविर म नाना डेंगले और लखनलाल कपूर आए थ। मैं व्यासजी के साथ लोकसभा चुनाव मे महाराजा डा करणी सिह जी के समथन म चुरू गया। देशनोक

भी गया। 1967 के चुनाव में मैं व्यासजी का कार्यकर्ता था। हम लोग साइकिल पर प्रचार करते, पर्चे बांटते तथा जन समर्थन जुटाते थे।'

श्री नटवर लाल ने व्यासजी की जनसेवा का चित्रण इन शब्दों में किया है – 'व्यासजी बहुत बीमार थे। उन्हें अपने लीवर और तिल्ली के इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती होना पड़ा लेकिन लोग अपनी समस्याएं लेकर उनके पास जाते रहते। आमतौर से व्यासजी सवेरे अस्पताल में भर्ती होते और शाम को फिर किसी की सहायता करने अस्पताल से वापिस आ जाते। ऐसा कम से कम 50 बार अवश्य हुआ होगा। मृत्यु से दो तीन महीने पहले डा. के. डी. गुप्ता और डॉ. ओझा ने लिवर के खराब होने तथा तिल्ली बढ़ जाने की चेतावनी व्यासजी को दे दी थी। उन्हें पूर्ण विश्राम करने एवं नियमित उपचार करवाने का परामर्श भी दिया था। व्यासजी ने बात मान ली, लेकिन बाद में फिर वही क्रम शुरू हो गया। उन दिनों अकाल के प्रसंग में घास मंगवाया गया था। समय पर नहीं उठा पाने से डमरेज लग गया। व्यासजी इसी प्रकरण को लेकर अपने स्वास्थ्य की पूर्ण उपेक्षा करते हुए अस्पताल से वापिस आ गये। मृत्यु के संकट का सामना करते हुए भी उन्होंने जनसेवा से मुंह नहीं मोड़ा।

श्री नटवर लाल व्यासजी के विश्वस्त शिष्यों में रहे। 30 मई की रात को जब व्यासजी का निधन हो गया तो प्रजा समाजवादी पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय तथा अन्य नेताओं को उन्होंने ही तार द्वारा यह दुखद सूचना दी। मृत्यु वाली रात को ही जगह जगह घूमकर लोगों को भी सूचित किया। श्री नटवरलाल तो उस रात 'तान्त्रिक उपाय' करके भी व्यासजी पर 'टूणे' के खतरे को समाप्त करना चाहते थे (चाहे श्मशान में रात को अकेले ही तान्त्रिक उपाय क्यों न करना पड़े) पर विधि को यह मंजूर नहीं था। व्यासजी का निधन होना था, नियति के चक्र को कोई नहीं रोक सका। वे चल बसे।

व्यासजी की इस शिष्य परम्परा में एक नहीं अनेक नाम हैं। उनके शिष्यों के साथ सत्ताधारियों ने चाहे कठोरता दिखाई हो पर उनमें से एक भी शिष्य विचलित नहीं हुआ। सभी फौलादी चट्टान सिद्ध हुए। ऐसे ही एक अन्य 'फौलादी' व्यक्तित्व हैं श्री रूपनारायण। रूपनारायण के मन में व्यासजी की मंजुल मूर्ति की छवि जस आज भी उसी दिव्यता के साथ जगमगा रही है। उनका कहना है – '1967 के चुनाव में मैंने व्यासजी के समर्थन में एक गीत बनाया था जिसे सभाओं में खूब गाया गया। मैं व्यासजी के साथ प्रजा समाजवादी दल के राष्ट्रीय अधिवेशन के समय कानपुर भी गया था। बाद में हम लोग कलकत्ता गये। कलकत्ता में व्यासजी का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। श्री समर गुहा साहब भी उस अवसर पर उपस्थित थे।

व्यवस्थारको म श्री वृज माहन तूफान, श्री सत्य नारायण पुराहित, श्री माहन लाल पुराहित आदि भी थे। चुनाव म पराजित होन क बाद व्यासजी कलकत्ता गय थे लकिन उनके प्रति लोगा म श्रद्धा वैसी का वसी बनी रही। महान् जनसवक थे व्यासजी।'

श्री रूपनारायण न भी बताया कि व्यासजी गम्भीर रूप स बीमार होन तथा अस्पताल म भर्ती होन के बावजूद गरीब लोगा क काम के लिए प्राय अस्पताल स आ जाया करते थे। धीरे-धीरे रोग गम्भीर होता चला गया। मृत्यु की रात को 10 बजे तक मैं उनके पास था। सत्य नारायण पारीक स व्यासजी ने बातचीत की। अपन पुत्र घनश्याम का बुलाया — बात की। बस उसी रात व चल बसे। हमार सिर से उनका साया उठ गया। गरीबा का हितैषी, गरीबा का मसीहा चल बसा।

व्यासजी का व्यक्तित्व तो राष्ट्रव्यापी था लकिन उन्होन अपन स्थानीय समथन का सदव मजबूत बनाय रखा। उनके समथक एस थे और ह जो आजीवन उनक साथ रह और व्यासजी की मृत्यु के उपरान्त भी उनकी विचारधारा के साथ ह। एसे एक समथक ह श्री काशीराम स्वणकार। श्री स्वणकार उन दिना के साथी है जब व्यासजी जन विद्यालय म अध्यापक थ तथा बच्चा को आजादी की कहानिया सुना कर प्रेरित किया करत थ। श्री स्वणकार ने बताया कि व्यासजी छात्रो के जबरदस्त हितैषी थे। जब जन विद्यालय समिति न मोहनलाल पुरोहित नामक छात्र को अकारण विद्यालय मे निकाल दिया तो मोहल्ले वाला न इसका विरोध किया। व्यासजी न भी छात्र को पुन प्रवश दने की हिमायत की। विद्यालय पर काग्रेसी विचारधारा वाले लोगा का वचस्व था तथा छात्र माहनलाल काग्रेस का विराध करता था। बस इतनी सी बात पर उसे निकाल दिया गया था। बाद म मोहल्ले के निवासियो और व्यासजी की पुरजोर हिमायत क दबाव म आकर उस वापिस भर्ती करना पडा।

श्री स्वणकार प्रजा समाजवादी दल की कायकारिणी के सदस्य थ। विधान सभा क लिए उम्मीदवार का चयन किया जाना था। श्री सत्य नारायण पारीक एव व्यासजी क बीच म उम्मीदवारी का निणय होना था। भारी दबाव क बावजूद श्री स्वणकार ने व्यासजी के पक्ष म मत दिया तथा वहा सभवत निणायक मत था। व्यासजी का चयन हो गया। उन दिना प्रत्याशी का निणय करन के लिए राष्ट्रीय कायकारिणी के सदस्य श्री अशोक महता आए हुए थे। व्यासजी क चुनाव की खुशी सब को हुई— यहा तक कि श्री भवर लाल महात्मा की पत्नी (जिस व्यासजी ने धम बहिन बना रखा था) भी काफी प्रसन्न थी। उनक पति श्री महात्मा श्री सत्य नारायण पारीक के पक्ष धर थे लेकिन व्यक्तिगत जीवन म व्यासजी के साथ उनका पारिवारिक सम्ब ध बना रहा।

व्यासजी जन हितैषी थे। लोगो की सेवा मे अहर्निश जुटे रहते थे। श्री स्वणकार ने ऐसे दो-तीन दृष्टान्त बताये जब अस्पताल मे रोगियो को भर्ती नही किया गया लेकिन व्यासजी ने रात को दो दो तीन तीन बजे जाकर उन्हे भर्ती करवाया। ऐसा एक प्रकरण कन्हैया लाल सोनी का है जिसके रीढ की हड्डी मे चोट आई थी। राजनीतिक दबाव के कारण उसे अस्पताल मे भर्ती नही किया गया। लोग बाग व्यासजी के घर पहुँचे। आधी रात को स्वय बीमार होते हुए भी व्यासजी पैदल कोटगेट तक बुड्ढा बीडी वालो के निवास पर गये तथा वहा से फोन करके अस्पताल वालो से रोगी को भर्ती करने के लिए कहा। जब उन्होने आना कानी की तो स्वय अस्पताल पहुचे तथा उसे भर्ती करवाया। इसी तरह कैंसर के रोगी मालचद को जब लम्बी बीमारी देखते हुए अस्पताल से निकाल दिया तो व्यासजी ने हस्तक्षेप कर के उसे पुन प्रवेश दिलाया तथा अस्पताल की तरफ से कीमती औषधिया और इन्जक्शनो की भी नि शुल्क व्यवस्था करवाई।'

'स्वर्ण नियन्त्रण अधिनियम के विरोध मे व्यासजी ने कई सभाए की—कई जुलूस निकाले तथा इसे काले कानून की सज्ञा दी। उस समय मोरारजी देसाई वित्त मत्री थे।' श्री स्वणकार ने बताया कि व्यासजी गरीबो के हित मे अलख जगाते थे। अस्पताल और जेल मे वे प्राय चक्कर लगा कर देखते रहते थे कि रोगियो/बदियो को कोई परेशानी तो नही हो रही है। वे वास्तव मे एक देवपुरुष थे।

व्यासजी के अनन्य समर्थको मे से एक हैं हनुमान आचार्य (एडवोकेट)। श्री आचार्य सन् *1956* से *1966* तक *10* वर्षो तक प्रजा समाजवादी दल के सचिव रहे। सन् *1957* मे व्यासजी के चुनाव अभियान के समय वे उनके इलेक्शन एजेन्ट भी थे। 1962 के चुनाव के समय दल मे आन्तरिक सघर्ष की स्थिति आ गई लेकिन श्री हनुमान आचार्य, काशीराम स्वणकार तथा दादा घेवरचद आदि ने व्यासजी का प्रबल समर्थन किया। श्री आचार्य तो उस निर्णायक सभा के अध्यक्ष थे जिसमे प्रत्याशी का चयन गुप्त मतदान द्वारा होना था। कुछ नेताओ ने मतदान के परिणाम को नही माना। बाद मे अशोक मेहता बीकानेर आए। श्री हनुमान आचार्य ने उनको दल की आतरिक स्थिति से अवगत कराया। निर्णय व्यासजी के हक मे ही हुआ। श्री माणिकचद सुराणा को कोलायत से प्रत्याशी बनाया गया। लोगो मे इस भ्रान्ति को पनपाया गया कि व्यासजी एव सुराणाजी मे घने मतभेद हैं तथा वे एक दूसरे को पराजित करना चाहते हैं। इस भ्रान्त धारणा का उन्मूलन करने के लिए श्री हनुमान आचार्य (व्यासजी के चुनाव एजेन्ट) तथा श्री धनसुख दास चाण्डक (सुराणा के चुनाव एजेन्ट) ने मिल कर एसी व्यवस्था की जिसके अनुसार सुराणा के चुनाव क्षेत्र की सभाओ मे व्यासजी ने भाषण दिये तथा व्यासजी के चुनाव क्षेत्र मे सुराणाजी

ने समाओ मे भाग लिया। इस गगा-जमुनी मिलन से दोनो चुनाव क्षेत्रो मे प्रजा समाजवादी दल की ही विजय हुई। एक और एक मिल कर दो नही ग्यारह वन गये।'

श्री हनुमान आचाय, एडवोकेट, न वताया कि म व्यासजी के साथ वढैया (बिहार) म प्रजा समाजवादी दल के राष्ट्रीय अधिवेशन मे भाग लेन गया था। उस अधिवेशन मे (जा 1966 म हुआ) जयप्रकाश नारायण, एन जी गोरे, सूरज बाबू और लखनलाल कपूर जैसे दिग्गज नेता मौजूद थे। व्यासजी ने राजस्थान की राजनीतिक स्थिति वताते हुए तत्कालीन मुख्य मत्री श्री माहनलाल सुखाडिया के 'भ्रष्टाचार' का पर्दाफाश किया। उनके अकाट्य प्रमाणा से सभी लोग बेहद प्रभावित हुए। बिहार के जन समुदाय पर व्यासजी का जादू इस कदर छाया कि उन्हे आसपास के कई क्षेत्रो से निमनण मिला। पूव निर्धारित कायक्रम को रोक कर भी व्यासजी उन सभी क्षेत्रा म गये तथा लोगो म राजनीतिक जागृति पैदा की। बाद मे कलकत्ता मे व्यासजी का अभूतपूव स्वागत किया। मैं उस समय भी उनके साथ था।'

श्री आचाय न वताया कि इक्के तागे वालो ने घोडा के लिए सस्ती दर पर चना दिये जाने की माग की तव कलैक्टर स मिलने एक तरफ व्यासजी और दूसरी तरफ गोकुल प्रसाद जी गय। कलैक्टर ओतिमा बोर्डिया ने कहा कि 'मैं नही जानती इक्के ताग़ा वाले का असली नेता कौन है ?' व्यासजी कुछ नही बोले। दूसरे दिन इक्के तागे वालो का जुलूस लेकर पब्लिक पाक गये — पूरा पब्लिक पाक इक्को तागा से भर गया। जिलाधीश को मानना पडा कि वास्तविक नेता व्यासजी ही हैं।'

'व्यासजी की आर्थिक स्थिति बहुत खराव रहा करती थी। कई वार तो ऐसा होता कि घर से 5 10 रुपये लेकर निकलते ताकि घर पर गेहूँ भिजवा सकें लेकिन रास्ते म ही लोगा के साथ उनके काम करवान इधर-उधर चले जाते। सारा रुपया तागो के किराये म ही चला जाता। घर वाले भी भूखे और खुद भी भूखे — ऐसा घटनाए तो अनेको वार हुई थी। 1967 मे व्यासजी पर राजस्थान भर का दायित्व डाल दिया गया। उ ह प्रजा समाजवादी दल के प्रत्याशिया के समथन म जगह जगह पर जाना पडा। स्वय के चुनाव क्षेत्र की उपेक्षा करके भी उन्होन यह काय किया। उनकी पराजय के अनक कारणा म एक कारण यह भी था कि वे अपने चुनाव क्षेत्र पर अधिक ध्यान नही दे पाए। और भी अनेक कारण थे जि ह जनता अच्छी तरह जानती है।'



श्री नारायण दास रगा न भी एक घटना के वारे म बताते हुए कहा कि व्यासजी धारा 144 तोडने मे अग्रणी रहते थे। 29 माच 1966 के भारत बद के दिन

उन्होंने मज्जनालय के सामने 'इन्कलाब जिन्दाबाद' कह कर धारा 144 की धज्जियाँ उड़ाई तथा अपनी गिरफ्तारी दी। चारों ओर राइफलधारी पुलिस की टुकड़ियाँ थीं। वातावरण में तनावपूर्ण अशान्ति थी। गिरफ्तार होने वालों में व्यासजी के अतिरिक्त श्री बी डी राठी, और दो तीन रामनीधर के कर्मचारी तो थे ही, मुझे भी गिरफ्तार कर लिया गया। दो तीन दिनों बाद छोड़ दिया गया।'

प्रश्न गिरफ्तारी अथवा रिहाई का नहीं – प्रश्न इस बात का है कि जन चेतना के क्षेत्र में खतरे के सामने पहला वार कौन करता है। व्यासजी सदैव हरावल पंक्ति में रहने वालों में से थे। खतरे का सामना देख कर वे विचलित होने के स्थान पर उससे जूझने को तत्पर रहा करते थे। उनके जीवन के अनेक प्रसंग अनेक साथियों को आज भी कंठस्थ हैं। ऐसे ही एक साथी हैं सरदार मोहकम सिंह, जो बीकानेर में ध्वनि प्रसारकों के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं।

सरदार मोहकमसिंह का व्यासजी से सम्पर्क सन् 1952 में ही हो गया जब वे गंगा गेट के पास 'न्यू रेडियो सेन्टर' के नाम से ध्वनि प्रसारक यंत्रों की दूकान चलाया करते थे। व्यासजी के चुनाव अभियान में सभी ध्वनि प्रसारक यंत्र, दरियाँ, मंच तथा बिजली का प्रबंध सरदार साहब के जिम्मे ही रहा करता था। यहाँ तक कि सभाओं के लिए ताँगों में प्रचार की व्यवस्था भी सरदार साहब अपने व्यक्तियों के माध्यम से ही करवाते थे। सरदार मोहकमसिंह ने बताया कि 'जब मैंने अपना स्वतन्त्र व्यापार/व्यवसाय शुरू करना चाहा तो सब से पहले किराये के भवन की समस्या सामने आई। व्यास जी ने अपने कार्यालय की चाबी मुझे सुपुर्द करते हुए कहा कि आगे की तरफ आप दुकान चलाइये, पीछे के कमरे में हमारी पार्टी का कार्यालय चलता रहेगा। तब से मैंने वहीं पर अपना कार्य शुरू कर दिया। भवन तथा बिजली का किराया मैं देता रहा। उन दिनों जामसर आंदोलन के श्रमिक नेता राधेश्याम गौड़ तथा गुप्ता जी आदि वहाँ आते जाते रहते थे। व्यास जी की सभाओं में व्यवस्था का दायित्व प्रायः मुझे ही संभालना होता था। सभाओं में भीम पांडिया डफली लेकर गीत गाते, बावरा जी, हरीश जी तथा लालचंद भावुक ओजस्वी कविताएं सुनाते, बुलाकी जी व्यास (बूला महाराज) चुनावी गीत गाते, दाऊ धवरचंद, सत्य नारायण पारीक, माणिकचंद सुराणा आदि के भाषण होते और तब कहीं जाकर अंत में व्यासजी अपना भाषण दिया करते थे। यदि व्यासजी का भाषण पहले करवा दिया जाता तो लोग बाग उठकर चले जाते तथा सुनने वाला कोई नहीं बचता। सारे शहर में मीटिंगें होती थीं–रानी बाजार, चौपड़ा कटला, गंगा गेट, नायकों का बास, दम्माणियों का चौक, बारह गुवाड़, कोचरों का चौक, मोहतों का चौक और दाती बाजार सभाओं के प्रमुख स्थान थे।,

[illegible] व्यासजी के [illegible] [illegible] [illegible]। व्यासजी के [illegible] [illegible]।

सन् 195[illegible] [illegible] व्यासजी [illegible] लेकिन [illegible] [illegible]। [illegible] 1967 में [illegible] लेकिन [illegible] सन् 1972 में [illegible] कर ली थी। [illegible] व्यासजी [illegible] आ चुके थे।

[illegible] साहब के कथनानुसार—कई बार आंदोलनों के समय पुलिस हमारे माइक उठा ले जाती, जब्त कर लेती अथवा उन्हें तोड़-फोड़ देती। व्यासजी ऐसे अत्याचारों के खिलाफ विधान सभा में भी दिखाने से नहीं चूकते थे। जब जयपुर में विधान सभा के सामने प्रदर्शन किया गया तो मैं भी व्यासजी के साथ गया था। बीकानेर से दो-तीन बसें भर के प्रदर्शनकारी जयपुर गये थे। जबरदस्त जुलूस निकला, जलेबी चौक में लाठी चार्ज हुआ। जनता का नाक भरा हुआ था। विधान सभा के घेराव का आयोजन था। व्यास जी इन अत्याचारों से तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने ओज[illegible] भाषण दिया।

सरदार साहब श्री व्यासजी के पल-पल के साथी थे। उनका कहना है कि 'व्यासजी आंदोलन के दिनों में कई बार डागा बिल्डिंग के बंद कमरे से भाषण देते तथा मा[illegible]क बाहर की ओर लगा दिया जाता। हजारों लोग सड़कों पर खड़े होकर भी उनका भाषण सुना करते थे। हमारे माइक तो कई जगह तोड़े गये—स्टेशन पर, रतन बिहारी पार्क में, डागा बिल्डिंग पर, लेकिन मैंने पार्टी से कभी भी पैसा नहीं लिया। पूरे चुनाव में व्यासजी की अनेकों सभाएं होती पर मैं नाममात्र की राशि से माइक व्यवस्था कर दिया करता था। मेरा उनसे ऐसा आत्मीय सम्बन्ध था। व्यास जी एक सच्चे नेता थे। जनहित में जिससे लड़ते तो खुल कर लड़ते थे। लुका छिपी नहीं करते। उन्हें कांग्रेस में आने एवं मिनिस्टर बनाये जाने के प्रलोभन भी दिये गये लेकिन कोई भी प्रलोभन उन्हें कभी भी डिगा नहीं सका। वे वास्तव में महान् नेता थे।

ये विचार है एक सच्चे, सात्विक समर्थक के। अब जरा एक कलाकार की भावनाओं से व्यासजी के व्यक्तित्व को परखा जाए तो उसमें और अधिक ताजगी, संवेदनशीलता तथा साहित्यिक सांस्कृतिक रूझान के दर्शन होंगे। कलाकार है सुप्रसिद्ध स्वर साधक श्री मोतीलाल रंगा, जिन्होंने अपनी रचनाओं तथा संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से व्यासजी के संदेश को जन जन तक पहुँचाने का श्लाघनीय काम किया और आज भी कर रहे हैं।

श्री मोतीलाल रंगा ने व्यासजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 'मुरली और माता' नाम से एक हस्तलिखित संकलन तैयार किया है जिसमें उनका संस्मरण दिये गये हैं। कुछ एक उद्धरण यहां पर प्रस्तुत है—

एक बार व्यासजी को न मालूम क्या मेरी आवश्यकता हुई। उन्होंने श्री नारायण दास रंगा को मुझे घर से बुला लाने को कहा। मैं घर व अन्य जगहों पर भी नहीं मिला। दूसरे दिन जब मैं उनसे मिलने गया तो उन्होंने मुझे कहा—आप कहां चले जाते हैं, कहीं भी नहीं मिलते? मैंने स्पष्ट किया कि व्यासजी इस विकट जमाने में खुराक नहीं मिलने से रियाज (अभ्यास) तो होता नहीं। सोमवार को शिवजी, मंगलवार को श्री नागणेचेजी मां एवं पवनसुत हनुमानजी बुधवार को गणेशजी, गुरुवार को श्री गुरु महाराजा, शुक्रवार को संगीत तथा शनिवार को माताजी हनुमान जी के जाया करता हूँ। व्यास जी बोले रविवार बच गया है। मैंने कहा देखिये व्यासजी, आपकी और मेरी सिंह राशि है। आप मुझसे बडे है। रविवार आपको समर्पित है। व्यासजी ने कहा—इसका मतलब हुआ कि हर रविवार को आप मुझसे मिलने आया करोगे। मैंने कहा—हां। मै नियमपूर्वक हर रविवार को व्यासजी से मिलने जाने लगा। बडे दुःख के साथ लिखना पडता है कि व्यासजी ने रविवार को ही इस संसार से हमेशा के लिए प्रस्थान किया, लेकिन मैं अभागा हॉस्पिटल जाकर भी उनसे अंतिम समय नहीं मिल सका क्यों कि मैं उन्हें मरते देख सकने में कांप रहा था। देख नहीं सकता था।

'सन् 1967 में एक बार मेरे मकान संबंधी संकट उत्पन्न हुआ। मेरे रिश्तेदारों ने नोटिस दिया कि दे दो या ले लो। मैं इस संकट में दुःखी होकर व्यासजी के पास गया। मैंने कहा—व्यासजी! मेरे घर में मेरे चाचा लोगों ने कमरों के ताले लगा दिये है। संकट है। मुझे उस वक्त बहुत वर्ष पहले हाउस बिल्डिंग लोन का फार्म भरा हुआ था, याद आ गया जो जिलाधीश की स्वीकृति पर निर्भर था। व्यासजी बोले—मैं जिलाधीश से बात करूंगा। व्यासजी ने मुझे उपयुक्त लोन दिला कर मेरे लिए घर दिलाया जबकि व्यासजी दस वर्ष एम एल ए रह कर भी अपना घर नहीं बसा

सकें। सारी उम्र किराये के मकान म रहे। मकान मरम्मत हो जाने पर व्यासजी मेरा घर देखने पधारे–ऊपर से नीचे तक घर देख कर बडे खुश हुए।'

'साले की होली म काग्रेस की चुनाव सभा चल रही थी, जिसे देखने परखने सुनने-समझन बीकानेर की सारी जनता वहा उपस्थित थी। चारो ओर टोपधारी पुलिस गश्त लगा रही थी। मोहनलाल सुखाडिया, तत्कालीन मुख्यमत्री ने कहा–ऐसे सकडो मुरलीधर सुखाडिया से टकराकर खत्म हो जायेंगे। लोग मुस्कराकर कहने लगे–यह एक डिक्टेटर है। इस आबोहवा म मेरा मानस भी कुछ बदला। याद आई व्यास जी की बात। (वे मुझसे सहयोग चाहते थ) सहयोग। सहयोग ।। सहयोग ।।। विह्वल स्थिति। घर जाकर बद कमरे म कलम उठाई। गीत को स्वरूप देने। 15 मिनटो म गुरु महाराजा की कृपा स डिक्टेटर के भावो के अनुरूप ही गीत तयार हो गया। जसे पहले स बना हुआ हो। नीचे टपकने मात्र की देर हो। दौडा दौडा पहुचा व्यास जी के पास। व बोले–यह ठीक है लेकिन इसे गायेगा कौन? इस पर चुप्पी साधना ही ठीक समझा। मरे पास कोई गायक नही था और मैं ठहरा सरकारी कमचारी। निराश मुद्रा म बठा हुआ ही था कि मेरा लडका स्व मवरलाल आ गया। मने उस गीत की प्रेक्टिस करवाई। उसने पहली बार यह गीत भुजिया बाजार की सभा म गाया। डॉ हरिप्रसाद के पुत्रो स्व प्रद्युम्नकुमार तथा जयहिंद प्रकाश न वाद्ययत्रो पर सगति की। चुनाव सभा मे अपार जन समुदाय था। शेरे व्यासजी जिन्दाबाद के नारे जम कर लग रहे थे। गुरु महाराज की कृपा से गीत हिट हो गया। जनता साथ साथ गाने लगी। हर अन्तरे पर करतल ध्वनि होने लगी। गीत जनता की जबान पर चढ गया—

डिक्टेटर का कट्टर दुश्मन है यह बीकानेर
सारा बीकानर सत्य की रहा है। माला फेर। डिक्टेटर 'सच्चे नेता की पहचान यही है कि वह अपने साथ भावी नेतत्व को भी पनपाता रहता है। वह आत्म केन्द्रित नही होता–किशोरो और युवको की एक पीढी को तयार करता है। स्व मुरलीधर व्यास म यह विशेषता थी। वे प्रत्येक व्यक्ति के छद्म गुणो को पहचानकर उस आम लोगो के सामन आग लाने की चेष्टा किया करते थे। उनक चुम्बकीय प्रभाव मे किशोर भी आए और युवक भी। साधारण आर्थिक स्थिति क किशोर और युवको म स एक हैं श्री बिशन मतवाला। श्री बिशन मतवाला आपत् कालीन स्थिति के दौरान 19 महीनो तक बीकानर की जल म बदी रहे थ। उन्होने साहस और जावट की दीक्षा व्यासजी से ही ली थी। श्री मतवाला का कहना है– आदरणीय श्री मुरलीधर जी व्यास मेरे सावजनिक जीवन के अग्रणी रहे है। उनके जीवन को देख कर उनसे प्रेरणा लेकर मैंने अपना सावजनिक जीवन बनाया। मैंने स्व

मुरलीधर जी व्यास के साथ पहली बार सन् 1966 वे जेल यात्रा की। दाती बाजार मे धारा 144 को हमने तोडा तथा गिरफ्तार कर लिय गय। ठिठुरती सर्दी म हम पहले पुलिस लाइ म ले जाया गया फिर रात्रि को लगभग 2 3 बजे जेल म डाल दिया गया। आन्दोलन के दौरान बहुत सारे लोग जेल गये थे जिनम स्व मुरलीधर व्यास, भीम पाडिया, हनुमान दास आचाय माणिक्चद सुराणा, मास्टर सु दर दास, स्व डॉ जग नाथ (जगू) तथा मेरा नाम सम्मिलित है। इस आ दोलन के दौरान सिटी उच्च माध्यमिक विद्यालय के पास अश्रुगस छोडी गई। अदालत के अहाते म लाठी चाज किया गया तथा सार स्कूल कॉलेज वद रहे।

'दूध–निकासी आदोलन' के समय कई महिलाए भी जेल गइ जिनम चादा दवी गुलाब देवी, मदनजी व्यास की धम पत्नी, वशीधर जी व्यास की धम पत्नी श्रीमती राधा बाई तथा मुरलीधर जी की लडकी शाति भी थी। पुलिस चुपचाप महिलाओ को रिहा करना चाहती थी लेकिन व्यासजी को जबरदस्ती जल म डाल कर बाद म रिहाई करने को आमादा थी। व्यासजी ने उ हे डाटा 'मुझे जबरदस्ती जेल म डाल कर महिलाओ के साथ अभद्र व्यवहार कर के उ ह अपमानित करना चाहते हो। मैं ऐसा नही होने दूगा। पहले महिलाओ को जेल के भीतर भेजो फिर मैं बात करूगा। महिलाओ के छोडे जाने पर उ हे मालाए पहनाई गई।'

जब मुझे मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया तो मजिस्ट्रेट ने पूछा तुमने धारा 144 तोडी ? मैंने कहा–हा 'बार बार तोडी और बाहर निकला तो फिर तोडूगा। यह सारा जोश खरोश और साहस व्यास जी की ही देन थी।'

व्यासजी ने जिन परिपक्व चिन्तनशील युवको को तयार किया उनम दो नाम सहज ही सामने आते हैं। एक हैं श्री बुलाकी दास बावरा तथा दूसरे हैं श्री लालचद भावुक। दोनो कवि हैं, ओजस्वी वक्ता हैं तथा शिक्षक समाज मे प्रतिष्ठित है। श्री बावरा जन विद्यालय के समय से ही व्यासजी की सभाओ म कविताए बोला करते थे, जुलूसो म जाते, सभाओ की व्यवस्था करते तथा चुनाव के समय लोकप्रिय गीत बना कर सभाओ मे गाया करते थे। उनका गीत मतवाली दुल्हन' आज भी जन जन की जुबान पर है। श्री भावुक अत्य त ओजस्वी वक्ता तथा प्रखर कवि हैं। उ होंने कई सघर्षों म किशोरावस्था स ही व्यासजी का साथ देना शुरू कर दिया था। व्यासजी की सभाओ म वे कविताए बोलते तथा भाषण दिया करते थे। चुनाव के दिनो म व्यासजी के लिए प्रचार करने, जनमत को प्रभावित करने तथा कई यात्राओ म उनके साथ रहने का सौभाग्य श्री भावुक को प्राप्त है। सरकारी सेवा म रहते हुए भी श्री भावुक ने सदव साहस का वरण किया। श्री भावुक आज भी कमचारी आ दोलनो तथा अ य सघष की घडियो म सदा आगे रहते है। यही स्थिति श्री बावरा की भी है।

कवि श्री अब्दुल वहीद 'कमल' का कहना है कि आदरणीय व्यासजी की जिन्दगी के मुख्तलिफ पहलुओं पर बहुत कुछ कहा जा सकता है और कहा जाता रहेगा। यह है भी एक हकीकत कि उनकी शख्सियत, आमतौर पर सियासी शख्सियत का जामा इतना वसीह है कि उस पर जितना भी कहा जाय कम है। उनके नजदीकी और दूर के लोग इस सच्चाई से बाखूबी वाकिफ हैं कि व्यासजी की शख्सियत सही मान में सेक्युलेरिज्म की हामी, जुल्म के खिलाफ, मजलूम और मेहनतकश की बहुत बड़ी हिमायती थी। ऐसी शख्सियत को, जिसकी मुल्क की जंगेआजादी से लेकर किसी सियासी मामले में मुल्क के किसी बड़े लीडर से कम देन नहीं रही है, जिसकी आवाज की बुलन्दी राजस्थान की असेम्बली में ही नहीं, बल्कि मरकजी हुकूमत के पाना तक को चौंका देती थी और मरकज की नेहरू सरकार से लेकर प्रोविन्स की सुखाडिया सरकार तक में एक मुखालिफ पार्टी के लीडर की हैसियत से जनाब व्यासजी का जो दर्जा हासिल था वह सियासतदां वा खूबी जानता है।'

व्यासजी के जीवन का इतिहास अनेक घटनाओं को समेटे हुए है। अनेक व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए तथा पूरे प्राणप्रण से उनके अनुयायी—एक प्रकार से अंध समर्थक तक बन गये। आज भी ऐसे हजारों व्यक्ति—व्यापारी, सरकारी कर्मचारी, मजदूर, ठेले वाले, श्रमिक संघों के सदस्य पुरुष और महिलाएँ हैं जो बात-बात में व्यासजी का गुणगान करने से नहीं चूकते। उनके लिए मुरलीधरजी एक पूर्णतया आदर्श पुरुष, एक निस्पृह समाजसेवी एवं एक ऐसे समर्पित जननेता हैं जिनका विकल्प आज तक उन्हें नहीं मिला।

व्यासजी के प्रमुख समर्थकों में श्री मजलीदास रूप का नाम महत्वपूर्ण है। श्री रूप ने उनके नेतृत्व में आंदोलनों में भाग लिया, सम्मेलनों का आयोजन किया तथा कर्मठ युवकों का एक समूह तैयार किया। 'झोंपड़ी की आवाज' के सम्पादक के रूप में श्री रूप का योगदान सदैव याद रहेगा। व्यासजी जैसे नेता के सान्निध्य में रहने से उन्हें भारत के महान समाजवादी नेताओं के सम्पर्क में आने का भी अवसर प्राप्त हुआ। श्री रूप स्वयं एक अच्छे लेखक हैं। जब माया पत्रिका ने मुरलीधर जी का नामोल्लेख किये बिना अपना एक लम्बा लेख छापा तो श्री रूप ने उसका अत्यंत पुरजोर प्रतिवाद किया। 'माया' के सम्पादक को कहना पड़ा कि भविष्य में यदि ऐसी कोई सामग्री मुद्रित होगी तो उस समय इस तथ्य पर पूरा ध्यान रखा जाएगा।

व्यासजी के समर्थकों में श्री शिखर चन्द सुराणा एवं श्री सुखदेवजी मुनीम का नाम अग्रगण्य है। इन लोगों ने विरोधी शक्तियों की परवाह नहीं करते हुए सदैव व्यासजी का साथ दिया तथा उनके द्वारा संचालित आन्दोलनों में पूर्ण सहयोग दिया। व्यासजी

के चुम्बकीय व्यक्तित्व से ये हमेशा प्रभावित तथा अनुप्राणित रहे तथा आज भी है।

बीकानेर म भारत सेवक समाज को प्रारंभिक वर्षो म गतिशील बनाने वाले तथा समाज सुधार के अनेक आयाम स्थापित करने वालो मे श्री लूणकरण जी पुरोहित का नाम अग्रगण्य है। श्री पुरोहित भी व्यासजी के प्रमुख समथको म रहे हैं। उन्होंने सामाजिक जीवन मे जो मानक स्थापित किये, वे आज भी भारत सेवक समाज के उन दिनो के सचालको तथा सदस्यो म चर्चित है। व्यासजी क सस्मरण सुनाते हुए श्री पुरोहित भावविभोर हो जाते हैं तथा एस प्रेरणाप्पद ढग स सारी घटनाओ का वणन करते है कि उस समय का चित्र आँखो के सामने आ जाता है। सब जानते हैं कि व्यासजी का बहुआयामी व्यक्तित्व राष्ट्रीय धरातल स गाँव शहर तक छाया हुआ था। उन्होंने एक ऐसी पीढी का नेतृत्व किया जो आज भी जीवन के विविध क्षेत्रो मे पूरी सिद्धान्तप्रियता तथा सघषशीलता स अपना वचस्व स्थापित किये हुए है।

इस अध्याय म राष्ट्रीय स्तर के नेताओ से लेकर किसान मजदूर तथा छात्रवग तक के विचार सकलित किये गये हैं। सैकड़ो न अपनी बात कही पर हजारो हजारो के विचार इन बातो के समथन मे अनकहे रहे गये हैं। हर पीढी अपने लिए एक 'आदर्श पुरुष' चाहती है जिससे सकट की घडियो म भी प्रेरणा ली जा सके। आज के समझौतापरक सिद्धान्तहीन तथा स्वार्थी युग म उन महापुरुषो की पीढी सिमट कर रह गई है जो जन की पीडा को मिटाने के लिए अपने आप का कुर्बान करने को तयार रहे, जो जनहित म समर्पित हो तथा किसी भी परिस्थिति म अथवा किसी भी लोभ के कारण विचलित नही हो। ऐसे शिखर पुरुष, ऐसे सलाका पुरुष, एसे आदर्श पुरुष कम अवश्य होते हैं। लेकिन जब भी सामने आते है, जमाना उनके साथ चलने लगता है। व्यासजी उनम से एक थे।

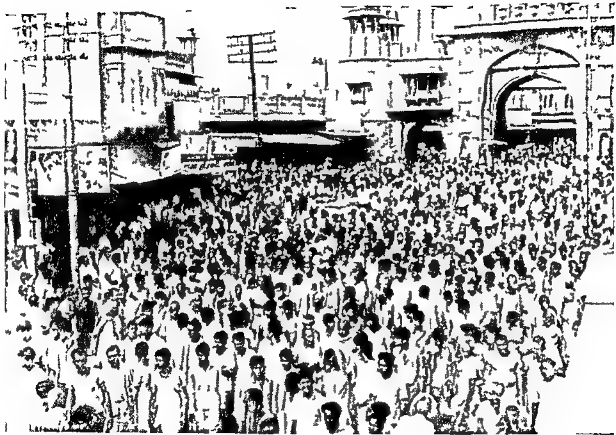
व्यासजी की मृत्यु के बाद बीकानेर तथा राजस्थान म उनके नाम पर कई आयोजन हुए हैं। बीकानेर नगर म उनकी दो मूर्तियां है—एक स्टेशन के पास आदमकद प्रतिमा तथा दूसरी सुथारा की बडी गुवाड मे मूर्ति। एक का अनावरण लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने किया तो दूसरी का लोकप्रिय महाराजा डा करणीसिंह ने। उनके नाम पर ट्रस्ट स्थापित हुआ, सम्मेलन आदि किये गये तथा कलकत्ता म भी कायक्रम हुए—उन सबका विवरण आगामी अध्याय मे है।



लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास पी बी एम हास्पिटल क एक कक्ष म ।
क्रूरतम लाठिया की मार से आहत ।



लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास का पार्थिव शरीर एवं पास में बैठे हैं व्यासजी के परिजन एवं अनुयायी श्री विष्णुदत्त नु एवं श्री मगनलाल आचार्य।



लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की महा प्रयाण यात्रा का एक विशाल जुलूस बीकानेर के सिंह द्वार कोटगेट के आर पार।

महाप्रयाण का एक दृश्य।
अपार जन समुदाय अपने नेता को कंधा देकर अश्रुपूरित विदाई दे रहा है।

चिर निद्रालीन लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास का अंतिम दर्शन

लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास की अंतिम यात्रा । महाप्रयाण के पदचाप ।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की अंतिम धूम-यात्रा। पचभूत म विलीन काया भस्मीभूत हुइ। अगणित जन समुदाय की अश्रुपूरित आंखें नम होकर-गम म स्वर गद्द—जब सूरज चांद रहगा—मुरली तरा नाम रहगा।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मति म आयोजित कायक्रमो के बारे म जानकारी देत हुए श्री बालच द साड। तत्कालीन पुलिस उप महानिरीक्षक श्री भागीरथ राय विश्नाई एडवोकेट श्री पुनमचद खडगावत, श्री प्रेमबहादुर सक्सना, श्री कमल मुकीम एव श्री नारायणदास व्यास दत्त चित्त होकर सुन रह है।

लोकनता स्व श्री मुरलीधरजी व्यास की पुण्य स्मति म आयोजित सभा म मुख्य अतिथि डा करणीसिहजी भूतपूर्व महाराजा बीकानेर का स्वागत कर रह ह माल्यापण स श्री बालचन्द साड। साथ म हैं श्री भॅवरलाल चोरडिया, लहरचन्द मुकीम आदि।

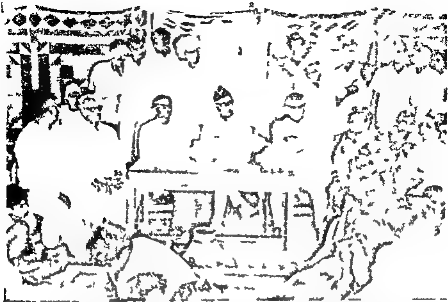
लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मति स्वरूप मुकीम-बोथरा चौक, बीकानेर म
आयोजित थैली भेट सभा के साक्षी हैं डा करणीसिहजी, गोकुलप्रसाद पुरोहित
गोपाल जोशी, मोतीलाल रगा, भवानी शकर व्यास, बालचन्द साड ।
श्री लहरचन्द मुकीम श्रद्धाजलि देत हुए ।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म थैली भेट सभा के मच क एक दृश्याकन म
श्री नारायणदास रगा श्री लहरचन्द मुकीम, डा करणीसिहजी, श्री बालचन्द मांड
श्रीशुभू पटवा श्री गणेश रगा, श्री मोतीलाल रगा श्री भवानी शकर व्यास
विनोद' एव श्री राजेन्द्र कुमार मांड आदि स्मृतियो की लहरा म आत्मविभार

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मति मे आयोजित कायक्रमा के बारे म जानकारी
देत हुए श्री बालच द साड। तत्कालीन पुलिस उप महानिरीक्षक श्री भागीरथ राय विश्नोई
एडवोकेट श्री पुनमचद खडगावत, श्री प्रेमबहादुर सक्सना, श्री कमल मुकीम एव
श्री नारायणदास व्यास दत्त चित्त होकर सुन रह है।



लोकनता स्व श्री मुरलीधरजी व्यास की पुण्य स्मति म आयाजित सभा म मुख्य
डा करणीसिहजी भूतपूव महाराजा बाकानर का स्वागत कर रह ह माल्यापण
श्री बालचन्द साड। साथ म हैं श्री भँवरलाल चोरडिया, ल्हरच द मुकीम आ।

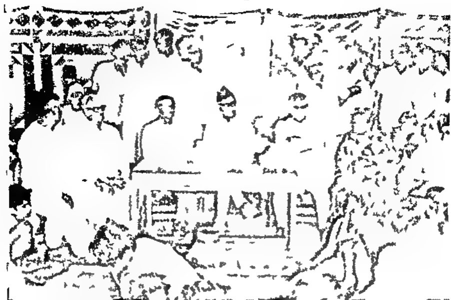


बीकानेर में स्व. श्री मुरलीधर व्यास की प्रतिमा प्रतिस्थापन के सन्दर्भ में पधारे नेपाल के भू.पू. प्रधानमंत्री श्री मातृका प्रसाद कोयराला दम्पति के साथ मंच पर सर्वश्री भानुप्रतापसिंह (भू. पू. मंत्री, नेपाल) भंवरलाल कोठारी, सत्यनारायण पारीक, तोलाराम दुग्गड़ एवं अन्य नागरिकगण

टेशन के पास स्व. व्यासजी के प्रतिमा स्थल पर शिलान्यास कार्यक्रम का एक दृश्य। चित्र में मुख्य अतिथि श्री एम. पी. कोयराला परिवार, श्री भानुप्रतापसिंह (भू. पू. मंत्री, नेपाल) एवं श्री भँवरलाल कोठारी के सान्निध्य में कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री भवानीशंकर व्यास। आत्मविभोर होकर गीत प्रस्तुत करते हुए श्री शिवदयाल व्यास 'बुई महाराज'।

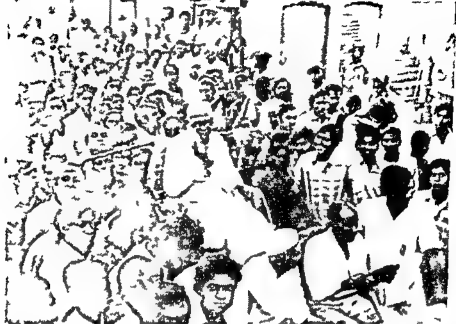


वीकानर स्टेशन पर स्थित स्व श्री मुरलीधर व्यास की आदमकद मूर्ति की स्थापना हेतु नपाल के भू पू प्रधानमंत्री श्री मातृकाप्रसाद कोयराला] भूमि-पूजन करत हुए ।



बीकानेर मे स्व श्री मुरलीधर व्यास की प्रतिमा प्रतिस्थापन के स दर्भ मे पधारे नेपाल के भू पू प्रधानमंत्री श्री मातृका प्रसाद कोयराला दम्पति के साथ मच पर सव श्री भानुप्रतापसिंह (भू पू मंत्री, नेपाल) भंवरलाल कोठारी सत्यनारायण पारीक, तोलाराम दुगड एव अन्य नागरिकगण

स्टेशन के पास स्व व्यासजी के प्रतिमा स्थल पर शिलान्यास कार्यक्रम का एक दृश्य। चित्र मे मुख्य अतिथि श्री एम पी कोयराला परिवार, श्री भानुप्रतापसिंह (भू पू मंत्री नेपाल) एव श्री भँवरलाल कोठारी के सान्निध्य मे कार्यक्रम का सचालन करते हुए श्री भवानीशकर व्यास। आत्मविभोर होकर गीत प्रस्तुत करते हुए श्री शिवदयाल व्यास 'बुई महाराज'।



लोकनायक स्व श्री जयप्रकाश नारायण बीकानेर म लोकनेता श्री मुरलीधर व्यास की मूर्ति-अनावरण के बाद जुलूस मे जनता का अभिवादन स्वीकारते हुए आगे बढ रहे है । जीप म आग की ओर बैठे हैं प्रमुख सर्वोदयी नेता श्री गोकुल भाई भट्ट एव श्री सिद्धराज ढड्ढा । श्री आर क दास गुप्ता पास म खडे है ।

व्यासजी की मूर्ति क अनावरण क अवसर पर लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण के आगमन पर बीकानेर स्टेशन के बाहर उमडता हुआ जन-समुदाय ।



बीकानेर रेल्व स्टेशन के वाहर स्थित जननता स्व मुरलीधर व्यास की आदमकद मूर्ति का एक दृश्य। मूर्तिकार श्री ईसरजी सुथार द्वारा माल्यापण।



स्व श्री मुरलीधरजी व्यास की प्रतिमा
(सुपारो की बडी गुवाड, बीकानेर)

डा करणीसिंहजी द्वारा लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की मूर्ति का माल्यार्पण।

काल को चीरती हुई एक दिव्य स्मृति-रेखा

राजनीतिक जीवन अनको उतार चढाया स युक्त होता है। बुल दी के न्नि आते हैं ता गर्दिश वे न्नि भी पीछा नही छोडते। जनता की स्मृति इतनी लघु होती है कि गर्दिश मे आये हुए नेताओ को विस्मृत करते देर नही लगती। बुलन्दियो के जो शिखर केवल राजनीतिक जोडतोड के बल पर दमदमाय थ वे देखते ही देखते ध्वस्त हो जाते हैं। कई नेताओ का तो कोई नामलेवा भी नही रहता। हा, त्याग और तपस्या सेवा और साधना, सघप और चेतना के बल पर जो आग वढते है वे नेता अमर हो जाते हैं। न तो उ ह राजनीतिक बुन न्दी लुभाती है और न गर्दिश वे दिन उनके उज्ज्वल नाम के आगे धुधलका ही ला सकते हैं। स्व मुरलीधर व्यास इसी उज्ज्वल और दीप्त परम्परा के अग थे। यही कारण है कि न तो जनता ने उनको अपने जीवन काल म भुलाया और न मृत्यु के बाद के 18 वर्षों म ही आज तक भुला पाई है।

बीकानेर नगर म उनकी दो भव्य मूर्तियाँ है—एक आदमकद मूर्ति स्टेशन के बाहर है तो दूसरी सुथारा की बडी गुवाड म है। नगर निवासी प्रतिवप उनके दो दिवस मनाते हैं—30 मई को स्मृति दिवस तथा 4 जुलाई को जय ती उत्सव। समाज सुधार के काय हो या चुनावी दगल के न्नि—मुरलीधर व्यास आज भी लागो की चेतना मे छाये हुए हैं।

व्यासजी की मृत्यु के एक वप के भीतर दो महत्वपूण घटनाएँ हुईं। 23 जनवरी 1972 का सुथारो की बडी गुवाड म उनकी भव्य मूर्ति का अनावरण किया गया। मुख्य अतिथि महाराजा डा करणीसिंह न जब जनता के श्रद्धा भाजन नेता की मूर्ति का अनावरण किया तो सारा वातावरण व्यासजी की जय जयकार स गूज उठा। सुभाप जय ती का दिन और व्यासजी की प्रतिमा का अनावरण—दोनो एसी बातें थी जो सिद्धा तो और आदर्शों के लिए उत्सग करने वाले नेताओ की स्मृति का जीव त बना रही थी। सभा म लगभग सभी विचार धाराओ और दलो के नेताओ ने व्यासजी को अपनी श्रद्धाजलिया दी। कवियो ने उनकी स्मृति मे कविता पाठ किया तथा श्रद्धालुओ ने शेरे व्यासजी जि दाबाद के नारो के द्वारा अपनी भावनाओ को अभिव्यक्ति दी। श्रद्धाजलि देने वाले नताओ म प्रमुख थे सव श्री पडित प्रेम नारायण वद्य, बाबूलाल यास, शिवकिसन आचाय 'ऋजलसा', जनादन व्यास, भवरलाल कोठारी

किशन भा, बुलाकीदास बोहरा और नारायणदास रगा आदि । श्रद्धांजलि देने वाले कवियो म बुलाकीदास 'बावरा', भवानीशकर व्यास 'विनोद', लालचद भावुक, भवरलाल आय, अम्बिकादत्त गोस्वामी आदि के नाम उल्लेखनीय है । कार्यक्रम का सचालन श्री बुलाकीदास जोशी ने किया । प्रतिमा को माल्यार्पण करने एव पुष्पाजलि देने वालो का उत्साह देखते ही बनता था । दो तीन हजार व्यक्तियो के कठो से निकलने वाली जय जयकार ध्वनि वातावरण को एक सार्थक एव अविस्मरणीय स्वरूप दे रही थी । महाराजा डॉ करणीसिंह जी तो इतने अभिभूत थे कि उनके शब्दो म विषाद और आन्तरिक भावनाओ की मिलीजुली ध्वनियाँ मुखरित हो रही थी । व्यासजी के निधन को उन्होने पूरे राजस्थान के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया । दूसरी महत्वपूर्ण घटना 9 फरवरी 1972 को हुई । कलकत्ता के प्रवासी राजस्थानी भाइयो और व्यासजी के शिष्यो ने श्रद्धा के अनुष्ठान के रूप म बीस हजार रुपयो की धनराशि एकत्रित की थी । व्यासजी के परिवार के लिए एक कोष का निर्माण किया जा रहा था । सबकी इच्छा थी कि इस अवसर पर महाराजा डा करणीसिंह जी पधारें और बीस हजार रुपया की यह राशि व्यासजी के परिवार हेतु अपने कर कमलो से प्रदान करें । मुकीम बोथरो के मोहल्ले म एक विशाल सभा का आयोजन किया गया । सभा प्रारभ होने से लगभग दो घण्टे पहले ही वाहनो के आवागमन को रोक दिया गया था । सडक के दोनो ओर जहाँ तक नजर जाती थी, लोगो की अपार भीड थी । विशाल जन समुदाय और जय जयकार के गगन भेदी नारे श्रद्धा का एक उमडता हुआ सैलाब मुख्य अतिथि को माल्यार्पण करने वालो की एक अपूर्व होड और उनके बीच म व्यासजी के चित्र के सामने पुष्पाजलि के मार्मिक दृश्य सभी लोग जैसे एक अविस्मरणीय दृश्य पटल के साक्षी बने हुए थे ।

व्यासजी को श्रद्धाजलि देने वालो म प्रमुख थे—महाराजा डा करणीसिंह जी, सर्व श्री रतनलाल पुरोहित (जोधपुर वाले) विधायक गोकुलप्रसाद पुरोहित, गोपाल जोशी गोविन्दलाल वैद्य सत्यनारायण पारीक, माणकचद सुराना भवरलाल कोठारी, शिवकिसन आचार्य 'कजनसा', सत्यनारायण पुरोहित नारायणदास रगा मदनमोहन जोशी, भवरलाल चोरडिया शुभू पटवा, बुलाकीदास बोहरा और विष्णुदत्त नू पहलवान आदि । ट्रस्ट की तरफ से बीस हजार रुपयो की थैली श्री बालचद साड एव श्री लहरचद मुकीम ने अर्पित की तथा महाराजा डॉ करणीसिंह जी ने उसे ग्रहण करते हुए व्यासजी के परिवार के लिए बनाये गये कोष हेतु प्रदान कर दी । इस अवसर पर दो प्रमुख श्रमिक नेताओ के भी भाषण हुए । काव्य के माध्यम से श्रद्धाजलि देने वालो म सर्वश्री बुलाकीदास बावरा लालचद भावुक एव भवरलाल आर्य प्रमुख थे । स्वर साधक मोतीलाल रगा उनके सुपुत्र झवरलाल रगा एव साथी बुई महाराज ने जब अपने भावप्रवण गीत प्रस्तुत किये तो हजारो कठो ने उनके साथ सगति की ।

पूरा वातावरण ही जस मुरलीमय बन चुका था। बीकानेर के इतिहास म यह एक ऐसा अपूर्ण श्रद्धास्पद दृश्य था जो कम ही देखने को मिलता है। सारे दल, सारी विचार धाराएँ एव सभी आयु वग एव श्रेणिया क व्यक्ति एक ही धारा म प्रवाहित हो रहे थे। विधान सभा चुनावो के सभी प्रतिद्वन्द्वी प्रत्याशी उस सभा म उपस्थित थे लेकिन उनके स्वरो म पारस्परिक कटुता के स्थान पर एक सच्चे जन नेता के प्रति श्रद्धा के भाव थे। सबकी भावनाए स्फटिक की तरह स्पष्ट एव श्रद्धा की तरलता की तरह निमल थी।

स्व मुरलीधर व्यास का देशव्यापी व्यक्तित्व इतना प्रखर था कि बाहर स आने वाले राष्ट्रीय नेता आज भी उनकी मूर्ति पर माल्यापण करना गौरव की बात मानते हैं। मूर्ति क अनावरण के एक महीने की अवधि म ही प्रमुख श्रमिक नेता श्री पीटर अल्वरिस बीकानेर पधारे। सुनारो की बडी गुवाड स्थिति मूर्ति पर माल्यापण करने के बाद उन्होने कई कायक्रमो म भाग लिया तथा शाम को रतन बिहारी पाक मे एक सभा को सम्बोधित किया। सभा मे पीटर अल्वरिस व अतिरिक्त सत्यनारायण पारीक ने भी भाषण दिया। सभी नेताओ के भाषणो मे रह रह कर मुरलीधर व्यास की सेवाओ का उल्लेख किया गया और जब-जब भी ऐसा हुआ, लोगो न जोर व्यासजी जिन्दाबाद के नारे लगाये।

22 फरवरी 1972 को मुरलीधर व्यास फमिली ट्रस्ट की एक अत्यावश्यक बैठक म (जो श्री बालचद सांड क निवास स्थान पर हुई थी) यह तय हुआ कि ट्रस्ट द्वारा एकत्रित राशि को स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर म जमा करवा दिया जाए। रकम के ब्याज को उठाने के लिए ट्रस्ट के सदस्य श्री शिवकिसन बिस्सा को अधिकृत किया गया। सभा म सव श्री मोतीलाल मालू, भवरलाल चोरडिया, श्री बालचद सांड एव श्री शिवकिसन बिस्सा न अपने विचार प्रकट किये।

व्यासजी क प्रबल समथक एव स्थानीय प्रमुख समाजवादी नेता दादा घेवरचद का 8 अक्टूबर 1972 का प्रात देहावसान हो गया। दादा का व्यासजी स घनिष्ठ आत्मीय सम्बन्ध था। शोक सभा म जहाँ लोगो ने दादा को अपनी विनीत श्रद्धाजलिया दी वही व्यास जी को भी श्रद्धापूवक याद किया।

31 मई 1971 से व्यासजी के प्रबल समथको के मन म तीव्र इच्छा थी कि बीकानेर म किसी मुख्य स्थल या चौराहे पर व्यासजी की आदम कद मूर्ति स्थापित की जाव। योजनाएँ बनती रही, मन म मन मिलते रहे और प्रस्ताव मूत रूप धारण करते रहे। अतत 17 माच 1974 रविवार का वह दिन आया जब व्यासजी की प्रतिमा के शिलान्यास का कायक्रम सम्पन्न किया जा सका। सौभाग्य स उन दिनो नेपाल के

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मातृकाप्रसाद कोयराला एवं भूतपूर्व मंत्री श्री भानुप्रतापसिंह किसी विवाह समारोह में भाग लेने बीकानेर आये हुए थे। स्मारक निर्माण समिति के सदस्यों ने श्री कोयराला से आग्रह किया कि वे मूर्ति स्थल का विधिवत् शिलान्यास करें। समारोह में कोयराला दम्पति और भानुप्रतापसिंह दम्पति के अतिरिक्त प्रमुख उद्योगपति श्री तोलारामजी दुगड़ (नेपाल वाले) भी उपस्थित थे। मन्त्रोच्चारण एवं भूमि पूजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। स्थानीय प्रतिनिधि दैनिक (सप्ताक) के अनुसार 'समारोह में सैकड़ों नर नारियों ने उपस्थित होकर व्यासजी के प्रति श्रद्धा और प्रेम का परिचय दिया। इस अवसर पर श्री एम पी कोयराला ने लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मारक समिति के सदस्यों और पदाधिकारियों का आभार प्रकट करते हुए व्यासजी की लोक सेवा की भावना की सराहना की। समिति के अध्यक्ष श्री भवरलाल कोठारी ने उपस्थित जन समुदाय के सामने समिति द्वारा किये गये कार्यों का विस्तार से ब्योरा प्रस्तुत करते हुए व्यासजी की लोकप्रियता और महानता को निर्विवाद बताया। व्यासजी के भक्त श्री मोतीलाल रंगा ने समारोह में अपने बहुचर्चित गीत सुनाये जो जनता ने बहुत पसंद किये। कवि बुलाकीदास बावरा ने कविता पाठ किया। शिलान्यास से पूर्व समिति के सचिव श्री हीरालाल आचार्य ने अपने विचार रखते हुए इस समारोह को दलगत राजनीति से ऊपर एक लोकमंच की संज्ञा दी। समाजवादी नेता सत्यनारायण पारीक ने अवसर के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी महानुभावों को धन्यवाद दिया। संयोजन श्री भवानीशंकर व्यास विनोद ने किया।'

सभा में भाषण देने वालों में सर्वश्री मातृकाप्रसाद कोयराला (भूतपूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल), श्री भानुप्रतापसिंह (भूतपूर्व मंत्री नेपाल), श्री भवरलाल कोठारी, श्री सत्यनारायण पारीक, श्री हीरालाल आचार्य तथा श्री नारायणदास रंगा आदि प्रमुख थे। बुई महाराज के मार्मिक भावप्रवण गीतों को सुनकर श्रोतागण अभिभूत हुए बिना नहीं रहे।

लोकप्रिय पाक्षिक पत्र सप्ताहान्त ने अपने राजस्थान दिवस विशेषांक में समारोह का सटीक विवरण प्रस्तुत किया। पत्र के अनुसार स्टेशन के सामने जहाँ प्रतिमा अवस्थित होगी, एक विशाल समारोह हुआ। नेपाल के भू पू प्रधानमंत्री कोयराला ने कहा कि इस महान नेता की प्रतिमा लगाना बीकानेर की राजनीतिक चेतना के प्रति अमिट श्रद्धा का कार्य है। श्री व्यासजी राजस्थान में समाजवादी दल के प्रमुख नेता थे तथा एक दशक तक प्रदेश की विधानसभा में विरोधी दल के प्रमुख नेता रहे थे। मरुदीप साप्ताहिक के अनुसार सभा में नगर के प्रसिद्ध सामाजिक, राजनीतिक तथा मजदूर संगठनों के लोग काफी संख्या में उपस्थित थे। पत्र ने

कोयरालाजी को उद्धृत करते हुए लिखा कि व्यासजी उन लोगों म से एक थे जो समाज को कुछ देते हैं, लेते नही।' समारोह म घोषणा की गई कि व्यासजी की प्रतिमा क अनावरण के लिए लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण से अनुरोध किया जाएगा।

स्थानीय एव बाहर के प्रमुख पत्रों के माध्यम स इस कार्यक्रम का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। प्राय सभी न मुरलीधरजी के अनन्य शिष्य श्री बालच द साड के प्रयत्नों की सराहना की जो व्यासजी क अन्य समर्थकों के साथ मिलकर इस जन-नेता की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखन म सक्रिय रह है।

मार्च 1974 म ही एक विचार रह रह कर कौंधन लगा था कि व्यासजी जैसे तपो-निष्ठ व्यक्ति के जीवन-वृत्त को प्रकाशित करवाया जाए ताकि आने वाली पीढियो के सामने एक मानक आदर्श प्रस्तुत किया जा सके। 20 मार्च 1974 को जब सप्ताहान्त कार्यालय की एक मित्र गोष्ठी म इस विचार को संस्थाबद्ध स्वरूप दिया गया उस समय एक धुधली सी रूपरेखा सामने थी। विचार यह था कि लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मृति ग्र थ के प्रकाशन हेतु एक व्यवस्था समिति गठित की जावे जो ग्रथ सम्ब धी प्रब धकीय दायित्वों का निवहन करे। कुछ समय बाद जब समिति गठित की गई तो उसम निम्नांकित सदस्य सम्मिलित किये गये सर्वश्री बालचद सांड, लहरचद मुकीम, भवरलाल कोठारी, चादमल अभाणी, झवरलाल बोथरा, मोहनलाल पुरोहित, नारायणदास रंगा, रिखबदास भसाली, हिम्मत माई, मोतीलाल मालू तथा धनराज कोठारी।

व्यासजी के मूर्ति स्थल के शिलान्यास के समय से ही लोगों की दृढ इच्छा थी कि मूर्ति का अनावरण लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण क कर कमलो द्वारा करवाया जाए। इस सम्ब ध म जयप्रकाशजी स जब अनुरोध भी किया गया तो व तत्काल तैयार हो गये लेकिन दिन फिर भी निश्चित नही हो पा रहा था। 25 अक्टूबर 1974 को एकाएक यह सूचना मिली कि बाबू जयप्रकाश नारायण 27 अक्टूबर 1974 को बीकानेर आने वाले है। दो दिन म हो अनथक प्रयासों स मूर्ति स्थल पर मूर्ति को अवस्थित कर दिया। 27 अक्टूबर को प्रात दिल्ली मेल से जयप्रकाशजी बीकानेर पधारे। स्टेशन पर उनका भावभीना स्वागत किया गया। बीकानेर म उनका प्रथम सार्वजनिक कार्यक्रम स्व मुरलीधर व्यास की प्रतिमा क अनावरण का ही था। अनावरण के समय जयप्रकाशजी न कोई भाषण नही दिया, सिर्फ इतना भर कहा कि शाम को स्टेडियम मे होने वाली सभा म वे मुरलीधर व्यास के बारे मे अपने विचार

प्रगट करेंगे। नागरिक लोकनायक जयप्रकाश नारायण को एक भव्य जुलूस एवं जय जयकार के नारों के साथ नगर में ले जाया गया।

दिन के समय चिलचिलाती धूप की परवाह न करते हुए हजारों नागरिक स्टेडियम मैदान में एकत्रित हुए। सभा की अध्यक्षता की सुप्रसिद्ध दर्शनवेत्ता एवं तात्विक चिन्तक डॉ छगन मोहता ने। स्व मुरलीधर व्यास को श्रद्धांजलि देते समय श्री जयप्रकाश नारायण भाव विभोर हो गये—बोले 'वे मुझसे बहुत छोटे थे—होना तो यह चाहिए था कि वे मेरी प्रतिमा का अनावरण करते लेकिन नियति को यही मंजूर था कि उनकी प्रतिमा का अनावरण आज मैं करूं। वे त्याग और संघर्ष की मूर्ति थे। कोई भी लालच उन्हें डिगा नहीं सकता था। वे सेवा भावी थे और राजनीतिक भ्रष्टाचार का विरोध करने में सदैव आगे रहते थे। ऐसे नेता दुर्लभ होते हैं और उनका स्थान जनता के दिलों में होता है।' जिस समय जयप्रकाशजी ये उद्गार प्रकट कर रहे थे, रह रह कर नारे सुनाई देते थे—लोकनायक जयप्रकाश नारायण—जिन्दाबाद, स्वर्गीय मजदूर नेता मुरलीधर व्यास—अमर रहे।' लगभग एक घण्टे से भी अधिक समय तक जयप्रकाशजी ने देश की हालत से लोगों को अवगत किया। उनके भाषण का तेवर क्रांतिकारी था—आने वाले दिनों की पद चाप साफ सुनाई देती थी उस भाषण में।

स्वर्गीय व्यासजी की मृत्यु के उपरान्त उनकी स्मृति में समय समय पर विशेष कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं। कुछ कार्यक्रम तो इतने स्मरणीय थे कि समय का अन्तराल भी उनके प्रभाव को मिटा नहीं सकता। ऐसा ही एक भव्य आयोजन 1 दिसम्बर 1974 को महावीर जैन स्कूल, 18 सुकियास लेन कलकत्ता में सम्पन्न हुआ। यह अपने आप में एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन तो था ही, पर उपस्थित वक्ताओं के भाषणों ने उसे एक स्मृति सभा का रूप भी दे दिया। कलकत्ता के नियमित हिन्दी दैनिक विश्वमित्र एवं सन्मार्ग में कार्यक्रम की पूर्व सूचना प्रकाशित हुई तथा दूसरे दिन समाचार पत्रों में कवि सम्मेलन एवं स्मृति सभा का सचित्र विवरण प्रकाशित किया गया। खचाखच भरे हुए हॉल में एक तरफ मुरलीधरजी का चित्र सज्जित था। श्रद्धा पुष्पों से सुरभित और दमकते हुए चेहरे का एक भव्य चित्र और सामने बैठे थे सैकड़ों प्रशंसक श्रोता के रूप में। प्रारम्भ में श्री रिखबदास भंसाली एवं भवानीशंकर व्यास 'विनोद' ने व्यासजी के जीवनवृत्त का वर्णन करते हुए उनकी स्मृति में आयोजित कई समारोहों का परिचय दिया तथा व्यासजी के व्यक्तित्व पर प्रकाशित होने वाले ग्रंथ की रूपरेखा प्रस्तुत की। कवि सम्मेलन में देश के सुप्रसिद्ध कवि श्री आत्मप्रकाश शुक्ल श्री रामावतार 'शशि' आदि के साथ श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद' ने अपनी रचनाओं से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध

कर दिया। कलकत्ता के गहमागहमी भरे जीवन मे यह समारोह अपनी अमिट छाप छोडने वाला था। समारोह को सफल बनाने मे श्री बालचद सांड, श्री लहरचद मुकीम, श्री चादमल अम्माणी, श्री मोतीलाल मालू, श्री रिखबदास भसाली, श्री मोहनलाल पुरोहित, श्री इन्द्रचद बेगानी और श्री कमल मुकीम आदि मुख्य थे। व्यासजी के जीवनकाल के सैंकडो सैंकडो प्रशसक उस सभा म उपस्थित थ। 28 नवम्बर 1974 स 3 दिसम्बर 1974 तक और भी अनेक आयाजन हुए तथा एक बार तो ऐसा लगने लगा जैस व्यासजी भौतिक नही पर आत्मिक रूप से कलकत्ता वापस आए हो। कवि सम्मेलन और स्मृति सभा के य आयाजन महीनो तक लोगो की चर्चा क केन्द्र म रहे।

न ता समय कभी रुकता है, न अमिट स्मृतिया कभी धुधली हो हाती है। व्यासजी ता इस बात के मूर्तिमान प्रतीक थ। मृत्यु के पश्चात भी वे लोगो की स्मृतिया म लगातार छाए रहे। अवसर चाहे जो हो, धुर विरोधी नताओ के मिलन म भी उनकी स्मृति को जीवन्त रूप मे दखा जा सकता था। राजनीतिक कायक्रमो (चुनाव अथवा जन-अभियान) का प्रारम्भ मुरलीधर व्यास की प्रतिमा पर माल्यापण से होना शुरू हो चुका था। सामाजिक समाराहो मे भी उनके व्यक्तित्व की चर्चाओ की अनुगूज सुनी जा सकती थी। 15 फरवरी 1975 म शादी के एक समारोह म भाग लने वाले नेता थे तत्कालीन विधायक गोपाल जोशी, सत्यनारायण पारीक, गोविन्द नारायण बैंद, रामरतन कोचर, मक्खन जोशी और साहित्यकार नदकिशोर आचाय, हरीश भादानी, शुभू पटवा एव समाज के अनेक वर्गो के प्रतिनिधिगण। दूसरे दिन महेश भवन म आयोजित पार्टी म सगीत एव कविताओ के कायक्रम रखे गये। स्वर और शब्दो की उस दुनिया मे भी स्वर्गीय नेता मुरलीधर व्यास के कार्यो की प्रतिध्वनि रूपायित हो रही थी। राजनीति, साहित्य व्यवसाय आदि के खाचे सिमट गये थे और सभी लोग मुक्त-कठ स स्वर्गीय नेता के सम्बन्ध म मार्मिक रचनाओ का आनद ले रहे थ। गोष्ठी म सवश्री रामरतन कोचर, लालचन्द कोठारी, गोपाल जोशी, शुभू पटवा, हनुमान सोपानी, गोपाल कल्ला किशनलाल चाडक, बालचन्द साड, गिरधर बद, अजीतसिह सिंघवी, मोतीलाल रगा, भीम पाडिया, मोहनलाल बरडिया, गणेश रगा भगवानदास व्यास, शिवनारायण जोशी एव मोहम्मद सदीक आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

सुथारा की वडी गुवाड स्थित व्यासजो के प्रतिमा-स्थल की समय-समय पर मरम्मत करवान प्रतिवष उनकी जयन्ती एव पुण्य तिथि पर कायक्रम आयाजित करने, स्टशन के निकट स्थित प्रतिमा के चारा ओर सगमरमर पर जीवत-वृत को उत्कीर्ण करवान आदि क काय साथ-साथ चलते रहे। हिसाब किताब का सारा

दायित्व मत्र श्री शिवकिसन बिस्सा पर था जिन्होंने जीवन-पर्यन्त उसे अत्यन्त सजगता और ईमानदारी से सम्पन्न किया।

इस बीच 25 जून 1975 को देश भर में आपात्कालीन स्थिति लागू कर दी गई। दमन का एक चक्र चला और विरोधी दलों के प्रमुख नेताओं के साथ साथ देश भर में हजारों अन्य व्यक्तियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। व्यासजी के सच्चे साथी और अनुयायी भला इससे कैसे वंचित रह सकते थे। उनमें से कुछ प्रमुख व्यक्तियों को तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया और राजस्थान की भिन्न भिन्न जेलों में रखा गया। उन्नीस महीनों का यह समय समाजवादी विचारधारा के लोगों के लिए घोर त्रासदी का समय था। वातावरण में भय, आतंक, संशय और किसी भी भवितव्यता की आशंका वाली व्यथा थी। राजनीतिक गतिविधियां थम चुकी थीं। लोग संकेतों में बातें करते और पुण्य तिथि जैसे अवसरों पर भी सामने आने से कतराते थे लेकिन जहां तक उनके हृदयों का प्रश्न है, श्रद्धा के भाव जस के तस थे। सावतगिरी की गुफा में अब भी कार्यक्रम होते थे। ऊपर से भक्ति के आवरण में भी जब कभी मौका मिलता, व्यासजी की विचारधारा के गीत गूंज उठते। सामाजिक समारोहों में लोग उन्हें याद करते। आपात्काल की पकड़ ज्यों ज्यों ढीली पड़ती गई लोगों का मौन कुछ अधिक मुखर होने लगा। और देखते देखते सन् 1976 आ गया।

राज्य के प्रमुख नेता सर्वश्री प्रो. केदार, मानिकचंद सुराणा, श्योपतसिंह, भैरोंसिंह शेखावत, ललित किशोर चतुर्वेदी, पंडित रामकिशन आदि जेलों में बंद थे। उनमें से कुछेक को बीकानेर जेल में भी रखा गया। बीकानेर जेल में बन्दी स्थानीय लोगों में श्री आर. के. दास गुप्ता, श्री मक्खन जोशी, श्री नारायणदास रंगा श्री पूर्णानंद और श्री किशन मतवाला मुख्य थे। पूर्व विधायक श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित भी उन दिनों बन्दी बना कर बीकानेर जेल में रखे गये थे।

4 मई 1976 को कर्नाटक के तत्कालीन राज्यपाल एवं राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया दिल्ली मेल से बीकानेर आए। गंगाशहर में रामपुरिया विद्या निकेतन के सामने वाले मैदान में उनका नागरिक अभिनंदन किया गया। सभा में श्रीमती कान्ता कथूरिया ने अभिनंदन पत्र प्रस्तुत किया। श्री सुखाड़िया ने उसी दिन शाम को लक्ष्मीनाथजी मंदिर के परिसर में एक महती सभा को सम्बोधित किया। सभा में उन्होंने स्व. मुरलीधर व्यास को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा गरीबों, मजदूरों एवं उत्पीड़ित व्यक्तियों के लिए उनके जीवन पर्यन्त संघर्ष की सराहना की। श्री सुखाड़िया ने श्री व्यास के साथ अपने मतभेदों की बात स्वीकारते हुए कहा कि

जहाँ तक सिद्धान्तो के प्रति अडिगता एव जन सेवा की प्रतिबद्धता का प्रश्न है, व्यासजी को, नही भुलाया जा सकता। वे एक तप तपाये जन नेता थे। लक्ष्मीनाथ जी परिसर की सभा मे तत्कालीन विधायक श्री गोपाल जोशी भी उपस्थित थे।

मई 1976 मे आपात्कालीन नियत्रणो मे कुछ कमी आने लगी थी। बीकानेर जेल मे राजनीतिक बदियो से मिलने जाने वाले साहित्यकार बधु छोटी-छोटी अनौपचारिक गोष्ठियाँ करने लगे थे। उन दिनो जेल मे चूरू के श्री प्रदीप शर्मा भी थे। सव श्री श्योपतसिंह, हेतराम, मक्खन जोशी, नारायण रगा आदि श्रोता बनते और स्थानीय कवि एव बदी साहित्यकार कविताएँ सुनते सुनाते थे।

18 मई 1976 को सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री शभुदयाल सक्सेना का निधन हो गया। श्री सक्सेना ने ही व्यासजी के लोकप्रिय पत्र 'झोपडी की आवाज' का विमोचन किया था। साहित्यकारो एव राजनेताओ की मिलीजुली शोक सभा मे साहित्यकार-पत्रकार श्री सक्सेना को भावभीनी श्रद्धाजलियाँ दी गई। सभा मे 'सेनानी' के साथ-साथ 'झोपडी की आवाज' का भी जिक्र आया।

उन्ही दिनो स्टेशन के निकट स्थित व्यासजी की प्रतिमा के चारो ओर शिलालेख लगाने का उपक्रम चलने लगा था। श्री शिवदयाल (बुई महाराज) इस दिशा मे काफी सक्रिय थे। वे ग्रथ के सम्पादको से निरन्तर सम्पर्क मे रहते तथा शिला लेखो पर उत्कीर्ण होने वाली सामग्री की प्रगति से अवगत करते रहते। श्री भवरलाल कोठारी भी इस कार्य मे पूर्ण रुचि ले रहे थे।

आपात्काल की विभीषिका से भरा हुआ 1976 का वर्ष बिना किसी विशेष उल्लेखनीय घटना के समाप्त हो गया। 1977 के प्रारभ मे जिस अप्रत्याशित राजनीतिक घटना चक्र ने पूरे देश को प्रभावित किया, उसका प्रभाव राजस्थान की राजनीति पर भी पडना स्वाभाविक था।, काग्रेस के पराभव एव जनता पार्टी के अभ्युदय ने प्रशासन की सस्कृति को एक नया स्वरूप दिया। खुलेपन और स्वतत्रता का एक नूतन वातावरण बना और समाजवादी नेताओ के हाथो मे नये दायित्व आए। बाबू जयप्रकाश नारायण एव आचार्य कृपलानी के प्रयासो से मोरारजी देसाई के नेतृत्व मे नये केन्द्रीय मत्रिमण्डल के गठन का पथ प्रशस्त हुआ।

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के महत्वपूर्ण समाजवादी नेता थे सव श्री मधु दण्डवते, जार्ज फर्नाडिस और राजनारायण जबकि राजस्थान मन्त्रिमण्डल मे मानिकचद सुराणा एव प्रोफेसर केदार जैसे पुराने समाजवादी नेताओ के सम्मिलित होने से आशा बधी कि स्व व्यासजी के सपनो के समाज की सरचना हो सकेगी।

व्यासजी के शिष्यों के मन में अपने गुरु के प्रति आस्था तो थी ही, वे चाहते थे कि व्यासजी के छोटे पुत्र और पुत्री की शादी भी धूमधाम से हो। कलकत्ता और बीकानेर में अपने अपने स्तर पर तैयारियाँ होती रही और जब शादी की तिथि तय हो गई तो उसमें भाग लेने के लिए सर्व श्री बालचंद सांड और चांदमल अभानी विशेष रूप से कलकत्ता से बीकानेर आए। 19 मई 1977 को आयोजित इस भव्य समारोह में बीकानेर के अनेकों जन प्रतिनिधियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं प्रवासी व्यवसायियों ने भाग लिया। बीकानेर के तत्कालीन जिलाधीश श्री डी एन उपाध्याय एवं पुलिस उप महानिरीक्षक श्री भागीरथ राय विश्नोई आदि भी इस अवसर पर उपस्थित थे। स्वर्गीय नेता मुरलीधरजी की अनुपस्थिति तो निश्चित रूप से अखरने वाली थी लेकिन अन्य सभी पक्षों में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया कि शादी की व्यवस्था, अतिथियों के स्वागत एवं सम्भ्रान्त नागरिकों की उपस्थिति आदि ऐसी हो जिससे यह आभास हो सके कि लोगों के हृदयों में व्यासजी के परिवार के प्रति अपरिमित प्रेम एवं सद्भाव है। शादी की औपचारिक आवश्यकताओं, रीति-रिवाजों, उत्सवों, विद्युत-सजावट आदि पर पूरा पूरा ध्यान दिया गया। व्यासजी के पुत्र श्री चन्द्रशेखर 'आजाद' और पुत्री मंजु के विवाह पर समाज के सभी वर्गों के उत्साह ने प्रदर्शित किया कि लोगों के मन में स्वर्गीय नेता के प्रति अपार श्रद्धा के भाव है।

दो दिन पश्चात् 21 मई 1977 को जो भव्य कवि सम्मेलन रखा गया, बीकानेर के निवासी आज भी उसे याद करते है। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं गीतकार पंडित भरत व्यास ने की। अभिनेता बी एम व्यास भी इस अवसर पर उपस्थित थे। मुख्य अतिथि थे पुलिस उप महानिरीक्षक श्री भागीरथ राय विश्नोई। हजारों श्रोताओं ने देर रात तक कवि सम्मेलन का आनन्द लिया। सभी उपस्थित महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने स्व व्यासजी की सुथारों की बड़ी गुवाड स्थित प्रतिमा को माल्यार्पण किया तथा कविताओं के अतिरिक्त श्री मोतीलाल रंगा के व्यासजी विषयक गीतों के साथ स्वर-संगति करके वातावरण को व्यासमय बना दिया। कवियों में पंडित भरत व्यास के अतिरिक्त भीम पांडिया, धनंजय वर्मा, भवानीशंकर व्यास 'विनोद', प्रेम सक्सेना, राजानंद भटनागर, अजीज आजाद, दीन मोहम्मद मस्तान, इब्राहिम गाजी, भूरसिंह निर्वाण, शिवराज छंगाणी, बुलाकीदास बावरा, लालचंद भावुक, मदन केवलिया, विशन मतवाला, सांवर दइया, मृगेन्द्र अग्रवाल, चिरंजीलाल, अम्बिकादत्त गोस्वामी आदि मुख्य थे। पंडित भरत व्यास ने अनेक लोकप्रिय कविताएं एवं गीत सुनाकर लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया।

उसी वर्ष 30 मई 1977 को व्यासजी की छठी पुण्य तिथि मनाई गई। दोनों प्रतिमाओं

पर माल्यार्पण तो हुआ ही, सुथारो की बडी गुवाड म रात्रि के समय एक महती जन सभा का आयोजन भी किया गया। वक्ताओं ने व्यासजी के जीवन के विभिन्न पक्षो पर प्रकाश डाला। प्रमुख वक्ता थे सवश्री सत्यनारायण पारीक, महबूब अली, मक्खन जोशी, ओम आचार्य, कजलीदास हुप, नारायणदास रगा, भवरलाल कोठारी, श्यामसुन्दर व्यास, नबदाशकर आचार्य, डी पी जोशी, गणपत शर्मा एव नरेन्द्र विस्सा।

इस बीच देश भर क प्रमुख नेताओ स ग्रथ प्रकाशन हतु पत्रो द्वारा सम्पक किया जाता रहा। साथ-साथ आधारभूत सामग्री का सकलन और चयन भी चलता रहा। कई स्थानो से दुलभ चित्र एकत्रित किये गये। व्यासजी की प्रतिमा के चारो ओर लगाये जाने वाले शिला लेखो को उत्कीण करने का काय श्री मगलाजी सुथार को दिया गया था। वह काय भी प्रगति पर था।

लोकनायक मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रथ प्रकाशन समिति की ओर से समय समय पर कलकत्ता म भी कई आयोजन किये गय। ऐसा ही एक आयोजन 1 जनवरी 1978 का जैन विद्यालय 18 D सुकियास लेन, बबॉन रोड, कलकत्ता मे सम्पन्न हुआ। वक्ताओ ने व्यासजी के जीवन के अनेको प्रसगो पर प्रकाश डाला। खचाखच भरे हुए हाल और गलरियो म लोगो ने भाषणो क साथ साथ कविताओ का भी आनन्द लिया। उपस्थित लोगो मे कलकत्ता क प्रमुख व्यक्तियो के अतिरिक्त बीकानेर के सवश्री गोपाल जोशी, व्रजूभा, मठाधीश, हनुमान ठाकुर, नथमल पुरोहित, मुखियाजी आदि भी उपस्थित थे। कवियो म सर्व भीम पाडिया, श्री हुप, शिवराज छगाणी, धनजय वर्मा, भवानीशकर व्यास 'विनोद', लालचद भावुक, बल्लभेश दिवाकर एव जोशी निर्भीक ने अपनी भावप्रवण कविताए सुनाईं। व्यासजी के भव्य चित्र पर लोगो ने पुष्पाजलियाँ दी।

3 जनवरी 1978 का माहेश्वरी पुस्तकालय, 4 शोभाराम बशाख स्ट्रीट कलकत्ता म आयोजित एक अ य समारोह म भी देश के प्रख्यात भोजपुरी कवियो के अतिरिक्त बीकानेर के साहित्यकारो ने भाग लिया। कविताओ और गीतो की अनुगूज लगभग वसी ही थी जसी ग्रथ प्रकाशन समिति के कायक्रम मे सुनाई दी थी। कलकत्ता के मुख्य कायक्रमो म सवश्री मन्नू बाबू पारख, बालचद माड, चाँदमल अभानी, लहरचद मुकीम, नथमल भसाली, रिखवदास भमाली आदि की सक्रियता उल्लेखनीय थी। दिनाक 25 माच 1978 से 27 माच 1978 तक होने वाले एक त्रिदिवसीय आयोजन म भी स्व मुरलीधर व्यास स प्रेरित और प्रभावित व्यक्तियो ने पर्याप्त रुचि प्रदर्शित की।

ग्रथ के लिए सामग्री आनी शुरू हो गई थी। उसम सन्देशो और श्रद्धाजलियो के

अतिरिक्त व्यासजी के जीवन पर आधारित आलेख भी सम्मिलित थे। सामाजिक समारोहों में भी जब कभी समाजवादी विचारधारा के लोग मिलते, वे स्वर्गीय व्यासजी की चर्चा अवश्य करते। ऐसा ही एक अवसर श्री मानिकचंद सुराणा (तत्कालीन वित्त मंत्री, राजस्थान) के लड़के की शादी का था। 9 दिसम्बर 1978 को आयोजित इस समारोह में जोधपुर से सुप्रसिद्ध श्रमिक नेता श्री जोरावरमल बोडा भी आए थे। जहाँ श्री जोरावरमल बोडा, सत्यनारायण पारीक, चम्पालाल उपाध्याय, श्री चौधरी, श्री कजलसा, मोकुल घी वाला और नारायणदास रंगा जैसे व्यक्ति उपस्थित हों और पुरानी बातें हो रही हों तो चर्चा का रुख सहज में ही समझा जा सकता है। श्री बोडा ने व्यासजी के जीवन के अनेक प्रसंग सुनाये और ग्रंथ के बारे में अपने कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव भी दिये।

10 दिसम्बर 1978 को 'श्री मुरलीधर व्यास फैमिली ट्रस्ट' की एक आवश्यक बैठक श्री मोतीलाल मालू के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि दिवंगत श्री बंशीलालजी व्यास के स्थान पर श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद' को ट्रस्ट का सदस्य बनाया जाय। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। सुथारों की बड़ी गुवाड़ स्थित व्यासजी की प्रतिमा के प्लेटफार्म को पत्थर एवं मजिये से पक्का बनवाने तथा नियमित मरम्मत करवाते रहने के लिए ट्रस्ट ने कुछ राशि पृथक से निश्चित कर दी।

4 फरवरी 79 को सुप्रसिद्ध साहित्यकार और मध्यप्रदेश की पूर्व मंत्री श्री बाल कवि बैरागी राजलदेसर आए हुए थे। अपने मित्र श्री बालचंद साड के अस्वस्थ होने का समाचार पाकर वे बीकानेर आ गये। अपने त्रि दिवसीय प्रवास में बालकवि बैरागी ने मुरलीधर जी व्यास की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तथा स्मृति ग्रंथ प्रकाशन समिति के तत्वावधान में आयोजित एक कवि गोष्ठी में भी भाग लिया। 6 फरवरी 1979 को आनंद निकेतन में आयोजित विचार गोष्ठी एवं कवि गोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध दर्शनवेत्ता डा. छगन मोहता ने की। बालकवि बैरागी ने दिल खोलकर अपनी प्रगतिशील रचनाएं सुनाईं। स्थानीय कवियों ने भी रचना पाठ किया। सम्मेलन में श्री अजीतसिंह सिंघवी, श्री शुभू पटवा, श्री भवरलाल कोठारी, श्री शिवकिसन बिस्सा एवं श्री प्रकाश बाबू के अतिरिक्त प्रायः सभी प्रमुख स्थानीय कवि तथा सहृदय श्रोतागण उपस्थित थे। शिक्षा विभाग की पत्रिका शिविरा ने इस गोष्ठी पर एक विशेष आलेख प्रकाशित किया। तीन घंटा तक चली इस महत्त्वपूर्ण गोष्ठी का ध्वन्यांकन कर लिया गया जिसे आज भी सुना जा सकता है।

25 फरवरी 1979 को राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया एक बार पुनः बीकानेर आए। श्री सुखाडिया जो किसी समय विधान सभा में व्यासजी

के विकट प्रहारो को झेलते रहते थे, बाद के दिनो व्यासजी के प्रसग आने पर श्रद्धा पूर्ण भाव प्रकट करने से नही चूकते थे। कर्नाटक के राज्यपाल के रूप मे जब उन्हे व्यासजी के ग्रथ के बारे मे सूचना मिली तो उन्होने यह इच्छा प्रकट की थी कि वे व्यासजी पर अपनी ओर से कुछ अवश्य लिखेंगे। उन्ही दिनो बीकानेर के एक साहित्यकार ने श्री सुखाडिया से पत्र व्यवहार किया। श्री सुखाडिया ने उस समय भी व्यासजी के प्रति श्रद्धा भाव प्रदर्शित किये तथा ग्रथ प्रकाशन के काय की जिज्ञासा के साथ जानकारी प्राप्त की। व्यासजी की मृत्यु के पश्चात् पेंशन आदि के प्रकरण मे भी श्री सुखाडिया काफी सक्रिय रहे थे।

यह तो था श्री सुखाडिया का एक पक्ष लेकिन दूसरा पक्ष सत्ता मे रहते समय विरोधी दलो के नेताओ के साथ उनके व्यवहार का था। 'माया' ने अपने मार्च 1978 के अक मे 'मोहनलाल सुखाडिया—राजस्थान के मुगल सरदार' शीर्षक मे सुभाष मोदी का एक लेख प्रकाशित किया था। पूरे आलेख मे कही भी श्री मुरलीधर व्यास की भूमिका के बारे मे एक शब्द भी नही था। हा, विरोधी दलो के अन्य नेताओ (जो बाद मे सत्ता मे आ गये थे) की विस्तृत चर्चा की गई थी। इस आलेख से खिन्न होकर बीकानेर के समाजवादी नेता श्री कजलीदास हर्ष ने 29 अप्रल 1978 को 'माया' के सम्पादक श्री आलोक मित्र को एक पत्र लिखा। पत्र मे 14 बिन्दुओ का उल्लेख किया गया जो व्यासजी की जोरदार विरोधी भूमिका को प्रकट करने वाले थे। श्री कजलीदास हर्ष ने प्रारम्भ मे लिखा, 'या तो व्यक्ति विशेष को, जो इस समय सत्ता मे आये है—उन्हे उभारने को, *या फिर राजस्थान मे असली व्यक्तित्व* जिसने अपने खून से राजस्थान मे विरोध (सुखाडिया सरकार का) की मशाल को जीवन-पर्यन्त प्रज्ज्वलित रखा, को इतिहास से साफ करने के लिए यह एक सुनियोजित षड्यन्त्र है। *लेख मे सुभाष मोदी ने उस महान विभूति को नमन तक नही किया।* लेखन मे यह बौद्धिक बलात्कार या तो सत्ता मे नये आये चेहरो से कुछ लाभ लेने के लिए या फिर घटकवाद की घुडदौड मे अपने सम्बन्धित घटक के घोडे को ही आगे रखने की चतुर चाल को *चलकर राजस्थान के इतिहास मे महाराणा प्रताप को हटा-कर* अकबर के विरोधियो की सी स्थिति उत्पन्न की है।'

श्री कजलीदास हर्ष ने जो 14 बिन्दु गिनाये उनमे प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को दिया गया सुखाडिया विरोधी आरोप पत्र, विधान सभा मे गुडा बाध की जमीन की न्यायिक जाच का प्रकरण, *ठोस एव सटीक प्रमाणो के साथ आरोपो को* पुष्ट करने की क्षमता, सरकारी मशीनरी की सहायता से विरोधियो को कुचलने की साजिश पर प्रहार, अपने दल के राष्ट्रीय बडौदा सम्मेलन मे सुखाडिया सरकार सम्बन्धी प्रस्ताव की प्रस्तुति, भ्रष्टाचार के अनेक प्रकरणो का साहसिक उद्घाटन,

चुनाव म पराजित होने के पश्चात् भी राजस्थान-व्यापी विरोध क शीर्ष पुरुष वाली स्थिति, अगस्त 70 मे व्यासजी पर निमम लाठी प्रहार और झापडी की आवाज क माध्यम से जन-जागरण के बिन्दु आदि सम्मिलित थे। प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार पूवक चर्चा की गई थी।

'माया' के सम्पादक न 6 जून 1979 के पत्र म उत्तर दिया था, 'आप माया का बडे मनोयोग म पढते हैं। यह जानकर हम अच्छा लगा है। आपने श्री मादी व सुखाडिया सम्बन्धी लेख पर अपनी प्रतिक्रिया भेजी है पर अब हम इसका उपयोग नही कर पायेंगे। इसलिए हम आगे राजस्थान सम्बन्धी विषयो पर सामग्री की आवश्यकता पडेगी तो आपस सम्पक स्थापित करेंगे।'

14 महीना क बाद किसी पत्र का ऐसा औपचारिक, रूखा और सवेदनहीन उत्तर स्वय सिद्ध करता है कि पत्रिका को सच्चाई के उद्घाटन म कोई विशेष रुचि नही थी। पत्रकारिता की भी अपनी एक राजनीति होती है। अस्तु।

4 जुलाई 1979 को सुथारो की बडी गुवाड मे व्यासजी की 61 वी जयन्ती मनाई गई। मोहल्ले के निवासियो न दरियो, पाटो, मच लाइटो और ठण्ड पानी की मुकम्मिल व्यवस्था की। कुछ युवा साथी—श्री नरेन्द्र विस्सा, श्री बृजरतन पुरोहित, श्री हमू विस्सा एव श्री गाविन्द जोशी आदि ने इस काय म पर्याप्त रुचि ली। भाषण हुए, कविताएँ हुई, श्रद्धाजलियाँ दी गइ। अन्य लोगो के अतिरिक्त श्री हरीश भादानी, श्री नदकिशोर आचाय, श्री कजलीदास हप एव श्री के राज ने भी अपने विचार व्यक्त किय। बीकानेर के प्राय सभी प्रमुख कवि इस अवसर पर उपस्थित थ।

1979 की एक अविस्मरणीय घटना स्व लोकनायक जयप्रकाश नारायण के अस्थि विसजन की थी। दिनाक 28 अक्टूबर 1979 को बाबू जयप्रकाश नारायण की पवित्र अस्थियो का एक लघु कलश बीकानेर लाया गया। बीकानेर स्टेशन पर तत्कालीन जिला कलक्टर श्री गुमानसिंह न उसे आदर एव राजकीय सम्मान सहित ग्रहण किया। पुलिस की एक टुकडी ने हथियार उल्टे करके सलामी दी। जिला कलक्टर ने कलश ग्रहण करके उसे सुप्रसिद्ध सर्वोदय नेता श्री मोहनलाल मोदी को दिया जो कलश लेकर एक जुलूस के रूप मे सव प्रथम मुरलीधरजी की प्रतिमा-स्थल पर पहुँचे। गगनभेदी नारो ने बाबू जयप्रकाश अमर रहे, मुरलीधर व्यास अमर रहे का स्वरनाद किया। प्रतिमा स्थल पर कलश पर माल्यापण किया गया तथा पुष्पाजलियाँ दी गइ। बाबू जयप्रकाश के महाप्रयाण (8 अक्टूबर 1979) के बीस दिनो बाद कोलायत मे उनकी भस्मी विसजन का दृश्य अत्यन्त मार्मिक था। कोलायत के घाट पर श्री आर के दास गुप्ता की अध्यक्षता मे एक श्रद्धाजलि सभा आयोजित

की गई। सभी महत्वपूण दलो के नेताओ ने बाबू जयप्रकाश नारायण को अपनी श्रद्धाजलियाँ अर्पित की। महत्वपूण वक्ता थे सवश्री सत्यनारायण पारीक, मोहनलाल मोदी, रामेश्वर पाडिया, बाबूलाल ओझा, शुभू पटवा, मक्खन जोशी, भवरलाल कोठारी तथा ओमप्रकाश रगा। सूर्यास्त के समय कोलायत के पवित्र सरोवर म रामधुन के साथ अस्थि विसजन कर दिया गया। 1980 के अप्रैल माह म व्यासजी के एक प्रिय शिष्य गिरधर वद का लुधियाना म निधन हो गया। व्यासजी की पुण्य तिथि एव जयन्ती इस वष भी पूरी श्रद्धा के साथ मनाई गइ।

व्यासजी द्वारा सस्थापित नेताजी सुभाष सभा म सुभाष जयन्ती का आयोजन होता रहता है। 1981 म सुभाष जयन्ती के अवसर पर एक त्रिदिवसीय आयोजन रखा गया। पहले दिन 22 जनवरी को 'क्राति की बुनियादी अवधारणा' पर एक विचार गोष्ठी हुई जिसम अमरनाथ कश्यप, नद किशोर आचाय बी डी जोशी आदि ने भाग लिया। दूसरे दिन एक विराट कवि सम्मेलन तथा तीसरे दिन सास्कृतिक आयोजन सम्पन्न हुए।

जीवन म सयोग की भी अपनी एक निराली ही भूमिका होती है। राजस्थान की राजनीति म 1957 स 1971 तक दो ध्रुव पुरुष देखे थे एक छोर पर थे स्व श्री मोहनलाल सुखाडिया तथा दूसरे पर थ स्व श्री मुरलीधर व्यास। व्यक्तिगत जीवन म एक दूसरे के प्रति स्नेह एव सम्मान रखने वाले य दोनो ध्रुव पुरुष सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र म एक दूसरे से सवथा विपरीत थे। एक सत्ता के शिखर पुरुष थे तो दूसरे विरोध के सशक्त स्वर।

अब जरा सयोग को ओर देखें। सन् 1971 म व्यासजी को जिस चिकित्सालय मे स्वगवास हुआ था, सन् 1982 म उसी चिकित्सालय म सुखाडियाजी भी देवलोक को प्राप्त हुए। व्यासजी को जिस वाइटल केयर सल (गहन चिकित्सा कक्ष) मे रखा गया था, सुखाडियाजी को भी मत्यु से पूव के 2-3 दिन उसी मे गुजारने पडे। व्यासजी के पार्थिक शरीर को थोडी देर के लिए जहाँ रखा गया, सुखाडियाजी की निष्प्राण देह भी जनता के दशनाथ उसी स्थान पर लाई गई। व्यासजी के कारण सुखाडियाजी के सावजनिक कायक्रम बीकानेर म प्राय कम ही होते थे पर सुखाडियाजी का अतिम सावजनिक भाषण बीकानेर के स्टेडियम के मैदान मे ही हुआ। दिनाक 30 जनवरी 1982 को काग्रेस के तत्कालीन महामत्री श्री राजीव गाधी, बीकानर आये थे। यहाँ पर उन्होने पचायत राज सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन किया। एक विशाल समारोह म जिन नेताओ ने भाषण दिया उनम केंद्रीय गृहमत्री ज्ञानी जलसिंह कृषि उपमत्री बाल्देश्वर राव, स्व श्रीसुखाडिया, शिवचरण माथुर (तत्कालीन मुख्य

मन्त्री) श्री बी डी कल्ला, मोहम्मद उस्मान आरिफ और काता कथूरिया आदि मुख्य थे। श्री सुखाडिया को सभास्थल पर ही दिल का दौरा पडा था और उन्हें तत्काल ही बीकानेर के पी बी एम राजकीय चिकित्सालय में भरती करवाया गया। बम्बई से डॉ महता बुलाये गये लेकिन उपचार का कोई असर नही हुआ और अतत दिनाक 2 फरवरी 1982 को सुखाडियाजी का स्वर्गवास हो गया। शव का बी एस एफ के एक विशेष वायुयान से उदयपुर ले जाया गया। स्व सुखाडिया के पार्थिव शरीर को लेकर जाने वाले लोगो मे तत्कालीन उपमत्री श्री बी डी कल्ला एव नगर विकास न्यास के अध्यक्ष श्री भवानी शकर शर्मा मुख्य थे। व्यासजी के ध्रुव राजनीतिक विरोधी को बीकानेर की ओर से यह अतिम विदाई थी।

व्यासजी के घनिष्ठ मित्रो और समाजवादी नताओ म प्रोफेसर केदार काफी निकट के व्यक्ति माने जाते है। दोनो अ तरग मित्र थ। बाद म प्रोफेसर केदार राजस्थान के गृह मत्री भी रहे। दिनाक 16 अप्रेल 1982 को प्रो केदार ने व्यासजी के ग्रथ के लिए तीन घण्टे का एक वृहद साक्षात्कार दिया तथा स्वर्गीय नेता के कई ज्ञात अज्ञात प्रसगो को उद्घाटित किया। दिनाक 17 जून 1982 को व्यासजी की प्रतिमा स्थल (स्टेशन के निकट) पर सगमरमर की विवरण पट्टिकाए लगाई गई। श्री मगलजी सुथार द्वारा उत्कीण इन पट्टिकाओ को लगाये जाने के समय प्रतिमा स्थल पर सवश्री बालचद साड, भवरलाल कोठारी, शिवकृष्ण आचाय रजल्सा, नारायण दास रगा आदि उपस्थित थे। और इस तरह 1982 भी बीत गया।

व्यासजी के एक पुराने साथी श्री सोहनलाल कोचर के बीकानेर आगमन पर 20 अप्रल 1983 को एक स्नह सम्मेलन रखा गया। इस अवसर पर श्री कोचर ने पाचवे दशक की राजनीतिक गतिविधिया पर प्रकाश डाला। 18 जून 1983 को मुरलीधर व्यास परिवार ट्रस्ट की एक आवश्यक बठक म ट्रस्ट की लेखा स्थिति पर विचार किया गया। इस बठक म ट्रस्ट के लगभग सभी सदस्य उपस्थित थे। बठक म ट्रस्ट की गतिविधिया के साथ साथ ग्रथ प्रकाशन की प्रगति की समीक्षा भी की गई। सन् 1984 म 30 मई एव 4 जुलाई का क्रमश व्यासजी की पुण्य तिथि एवम् जयती के अवसर पर पारम्परिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

काल की नियामक गति के आगे कोई नही टिक पाता। व्यक्ति का यश ही ऐसा है जिसे काल का चक्र भी भेद नही सकता। मुरलीधर व्यास एक व्यक्ति थे जो काल चक्र के प्रहारो के बावजूद अमर हैं और अमर रहेंगे।

□

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म कलकत्ता मे जैन विद्यालय, 18 डी सुकिया लेन म आयोजित कवि सम्मेलन मे श्री भवानीशकर व्यास 'विनोद' कविता पाठ कर रह है।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म आयोजित कवि गोष्ठी म अतिथि कवि श्री बालकवि वरागी कविता पाठ कर रहे है। पास मे वठे है गोष्ठी के अध्यक्ष डा छगन मोहता।



लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म आयोजित एक काव्य गोष्ठी का दृश्य। गोष्ठी म देश के लब्ध प्रतिष्ठ कवि श्री बालकवि बैरागी ने भी भाग लिया। चित्र मे सवश्री बालकवि बरागी और डा राजानद (कविता पाठ करत हुए)। सभागी हृ सवश्री बालचद सांड, गौरीशकर मधुकर, इन्द्रनारायण मूथा, भवानी शकर व्यास, शिवकिसन बिस्सा, गोविन्द जोशी, बुलाकीदास बावरा, लालचद 'भावुक, मोहम्मद सदीक, विशन मतवाला, अजीतसिंह सिंघवी, भवरलाल कोठारी एव अजीज आजाद आदि भाव विभोर होकर सुन रहे हैं।

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृ
विशिष्ट अतिथि और श्री
मध्यक्ष श्री बृजरतन), श्री
उमाणी



सुथारा की बडी गुवाड प्रतिमा स्थल, बीकानेर म स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म
आयोजित कवि सम्मेलन मे कविता पाठ करते हुए कवि श्री भरत व्यास

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रथ के लिए सस्मरण लिखत हुए श्री भवानीशकर व्यास। सस्मरण सुनाते हुए समाजवादी नता प्रो केदार और उपस्थित है श्री बालचद माड, जतनलाल डागा व नारायणदास रगा



लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति सभा म सुप्रसिद्ध गायक श्री मोतीलाल रगा व्यासजी के गुण गौरव की स्वर-सौरभ महका रहे हैं। साथ मे है श्री गणेश रगा।



सुथारो की बडी गुवाड, बीकानेर स्थित स्व श्री मुरलीधरजी व्यास की मूर्ति के पास आयोजित विशाल कवि सम्मेलन के मच की एक भव्य झांकी

लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास स्मृति ग्रथ के लिए सस्मरण लिखते हुए श्री भवानीशकर व्यास। सस्मरण सुनाते हुए समाजवादी नता प्रो केदार और उपस्थित है श्री बालचद सांड, जतनलाल डागा व नारायणदास रगा



लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति सभा म सुप्रसिद्ध गायक श्री मोतीलाल रगा व्यासजी के गुण-गौरव को स्वर-सौरभ महका रहे हैं। साथ मे है श्री गणेश रगा।



लोकनता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म सुथारा की बडी गुवाड, बीकानर म आयोजित कवि सम्मेलन का रसास्वादन कर रहे है विशेष गणमान्य नागरिक साहित्यानुरागी सुधी श्रोतागण। मुख्य सभागी गण है (दायें से) श्री भवरलाल बैद, श्री मोतीलाल माल्लू, श्री भवरलाल कोठारी एव श्री जतनलाल डागा।



लोकनेता स्व श्री मुरलीधर व्यास की स्मृति म सुथारा की बडी गुवाड, बीकानर म आयोजित कवि सम्मलन म मच को गौरवान्वित कर रह हैं सवश्री भरत व्यास मक्खन जोशी, बृजमोहन व्यास महबूबअली बुलाकीदास बावरा गोकुलजी पुरोहित (घरनाक वाल) शिवनारायणजी विस्सा इलाहीबक्श उस्ता शायर इब्राहिम गाजी, मस्तान शमीम, अम्बिकादत्त गोस्वामी आदि।

और अन्त मे : कुछ विचार, कुछ सस्मरण

स्मृति शेष की स्थिति ही ऐसी है जब व्यक्ति नही होता लेकिन उसकी स्मृति कायम रहती है। इस या भी कह सकते ह कि स्मृति ही उस व्यक्ति का पर्याय बन जाती है। आज व्यासजी की स्मृति जन जन म रमी हुई है और यही उनको जन नायक भी बनाये हुए है। इस स्मृति का राष्ट्रीय फलक के नेतागण तो प्रणाम करत ही हैं, प्रातीय और स्थानीय लोग भी उनस प्रेरणा प्राप्त करत ह। सच पूछो तो स्थानीय लोगो के लिए यह एक प्रकार की निधि है जिसे वे बडे ही मनोयोग से सजाये हुए है। व्यासजी के स्मृति ग्रथ के लिए और भी कई लोगो न अपने विचार और श्रद्धाजलि आलेख भेजे हैं। कुछ एक आलेखो के अश, जो कुछ विलम्ब म प्राप्त हुए, यहाँ उद्धृत किये जाते हैं।

पूर्व विदेश राज्यमत्री, ससद सदस्य और सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री समरेन्द्र कुन्दु न अपने आलेख म ये विचार प्रकट किये है 'हम दोनो लम्बे समय तक साथ रहे। हमने सामाजिक परिवर्तन और समान न्यायवादी समाज की सरचना के लिए साथ-साथ सघर्ष किया। व मेरे परम निजी मित्र थे। उनक निधन स हमने सामाजिक न्याय एवम् आर्थिक समानता के महान् योद्धा को खोया है। मुझे विश्वास है कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को समर्पित यह ग्रथ कई लोगो को प्रेरणा देगा जिसम व उन लाखो करोडो दीन-हीन लोगो के लिए समर्पित जीवन बिता सकेग।' श्री समरेन्दु कुन्दु न हिन्द मजदूर सभा म व्यासजी की भूमिका का विशेष जिक्र करते हुए कहा है कि उन्होन श्रमिको और दलितो के लिए सघर्ष किया और इस क्रम म प्रतिष्ठा और सम्मान अर्जित किया। व अपने सिद्धान्तो म अटल एक ऐस जननेता थे जिनकी चुम्बकीय उपस्थिति को हर जगह महसूस किया जाता था। वे समाजवाद, धर्म निरपेक्षता और प्रजातन्त्र के महान् हिमायती थे। कोई भी लालच उनको अपने पथ से नही डिगा सकता था।'

राजस्थान क पूर्व शिक्षा मत्री श्री गुलाबचन्दास कल्ला ने अपनी श्रद्धाजलि देत हुए कहा है कि 'व्यासजी एक लोकप्रिय जननेता थे। उन्होने राजस्थान और विशेषकर बीकानेर की जनता को एक सुयोग्य और सफल नेतृत्व दिया। वे अपने सिद्धान्तो म अटल एक ऐस ओजस्वी वक्ता थे जो अपने पथ स कभी विचलित नही होत थे।

उनके नेतृत्व ने बीकानेर को एक राष्ट्रीय पहचान दी। उन्होंने जनता की दिल खोल कर सेवा की और जनता ने भी उनको दिल खोलकर श्रद्धा दी। बीकानेर की जनता के लिए व्यासजी को भुला पाना सभव नही है।'

राजस्थान विधानसभा के पूर्व सदस्य, बीकानेर नगर परिषद् के पूर्व अध्यक्ष एवम् प्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्ष श्री गोपाल जोशी ने ये विचार व्यक्त किये है,' राज नीति म उन्होने सत्य, त्याग और सात्विकता के अध्याय जोडे। राष्ट्रीय स्तर के प्रभावशाली नेता होते हुए भी उन्होन न तो कभी राजनीति को अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन बनाया और न ही समूहवाद एवम् सकुचित परिवार वाद के पोषक बने। सेवा उनका धर्म एवम् इष्ट था। विधानसभा म उनकी सिंह गर्जना, अकाट्य तर्क शक्ति और वाग्विदग्धता अपने आप मे एक मिसाल थी। वे जनहित की बात कहने मे कभी भी नही चूकते थे लेकिन ऐसा करते हुए व्यक्तिगत कटुता की भावना से दूर रहते थे—यही उनका प्रबल जनाधार था।'

गोआ मुक्ति सग्राम के एक सेनानी हैं श्री भरूदत्त चौधरी। वे स्वर्गीय मुरलीधर व्यास के नेतृत्व मे बलिदानी जत्थे के सदस्य के रूप म गोआ गये थे। उन्होने व्यासजी के योग्य नेतृत्व और देश हित म प्राणोत्सर्ग करने की भावना का मार्मिक वर्णन किया है। अपने सरल शब्दो मे उन्होने गोआ सग्राम के उन दिनो को याद किया है जब मातृभूमि के लिए मरने को एक पर्व माना जाता था। उनके शब्दो मे 'मैंने मुरलीधर जी व्यास को कहा कि मैं भी आपके साथ गोआ चलूगा। मेरे जज्बात उठ खडे हुए थे। मेरे साथियो ने समझाया कि तुम मत जाओ तुम नौकर आदमी हो। लेकिन मैं रेलगाडी मे बैठ गया। मेडता रोड स्टेशन पर व्यासजी ने कहा—'चौधरी साहब, आप भावना म आकर बैठ तो गये हैं। अभी CROSS गाडी जा रही है। चाहे तो बीकानेर लौट सकते है।' इस पर मैंने कहा—'मै एक्स सर्विस मन हू। सिपाही कदम आगे बढाने के बाद वापस नही लौटता।' व्यासजी समझ गये कि इनका निश्चय अटल है। बीकानेर से जयपुर तक की उस यात्रा मे ही म व्यासजी के अत्यन्त निकट आ गया। हम दोनो की काफी घनिष्टता हो गई।

जयपुर होते हुए हम बम्बई पहुचना था। जयपुर से बलिदानी जत्था पहले ही निकल चुका था। हम वहाँ जयनारायण जी व्यास से भी मिलने के लिए गये। उन्होने हमें, आशीर्वाद दिया। उन्होने कहा कि आप 13 अगस्त को ही रवाना हो जाओ ताकि समय पर गोआ पहुच सको। गोआ म हमे 15 अगस्त को प्रवेश करना था।'

14 अगस्त को हम सुबह 8 बजे कल्याण पहुचे। फिर पूना, सितारा होते हुए रात को 2 - 2½ बजे बेलगाम पहुचे। वहाँ लाहिया जी और अनेक उच्च नेता तथा

कायकर्ता मौजूद थे। व्यासजी और त्यागी बाबा उनसे मिले तथा आगे के कार्यक्रम के लिए परामर्श किया। लोहिया जी ने बताया कि राज्य सरकार ने आगे के रास्ते बंद कर दिये हैं। 15 तारीख को सत्याग्रह करना है। अगर आपको जाना है तो इसी गाडी से लौंडा जंक्शन चले जाओ। वहाँ से गाडी कैसलरॉक जाती है। यह रास्ता पहाडी और दुर्गम है। अगर आप हिम्मत रखते हो तो इस रास्ते से जा सकते हो।' व्यासजी और त्यागी बाबा ने निश्चय किया कि चाहे जो हो जाए, हम गोआ की धरती मे अवश्य प्रवेश करेंगे। सत्याग्रह जरूर करेंगे। जयपुर की पार्टी के 11 आदमी पहले ही आ चुके थे—वे भी हमारे साथ हो लिये। त्यागी बाबा के साथ 28 आदमी थे। त्यागी बाबा मथुरा के थे। 4 बजे लौंडा जंक्शन पहुंचे। वहाँ की जनता ने हमें कहा कि हम प्रभात फेरी कर रहे हैं—आप भी हमारे साथ आइये। हम उनके साथ हो लिये। तब तक बलिदानी जत्थों के 181 आदमी इकट्ठा हो चुके थे। प्रभात फेरी के बाद झण्डा फहराया गया। व्यासजी ने हिन्दी में ओजस्वी भाषण दिया। इस भाषण का सभी साथियों और स्थानीय जनता पर गहरा असर पडा।

फिर हम कैसलरॉक पहुंचे। लोगों ने बताया कि यहा से आगे गाडी नहीं जाती। हमे खुश्की रास्ते से आगे बढना पडेगा। तीन मील का पहाडी रास्ता है। उसके आगे फिर रेलवे लाइन मिल जाएगी। कैसलरॉक में हमने पार्टी कार्यालय में अपना रुपया पैसा और फालतू सामान जमा करवा दिया। कारण यदि गोआ मे हमें गिरफ्तार किया जाता तो वहा की पुलिस यह सब कुछ छीन लेती। वहाँ से हम 12 बजे रवाना हो गये। बरसात हो रही थी और पहाडी पर चारों ओर झरने टपक रहे थे। दो-ढाई मील चलने पर इण्डियन पुलिस का चैक पोस्ट आया। उन्होंने हमें कहा कि इस रास्ते से मत जाओ। यह दुर्गम रास्ता है। पहाडों के अन्दर से गुफाओं के अन्दर से गुजरना होगा। बेहतर है आप लौट जाएं। हमने नहीं माना और भारत माता की जय का नारा लगाते हुए आगे बढ गये। मील भर के बाद एक बडी गुफा थी, फिर जंगल था। हम लोग रेलवे लाइन के साथ साथ चलते रहे। मार्ग दर्शक हमारे साथ था। आधा मील चलने पर एक बोर्ड दिखाई दिया जिस पर एक तरफ लिखा था—बोम्बे और दूसरी ओर लिखा था—गोआ। एक कदम रखते ही हम गोआ में प्रवेश करने वाले थे। हमने वहाँ पर मीटिंग की। व्यासजी ने भाषण दिया। सभी बलिदानी जत्थों ने अपने अपने नाम लिखकर फेहरिस्त बनाई। कुल 181 आदमी थे। सबने गोआ की धरती की मिट्टी से तिलक किया और हम गोआ में प्रवेश कर गये।'

'एक फर्लांग के बाद फिर एक गुफा थी जिसमे से होकर रेलवे लाइन आगे गई थी। हमारे दल मे भैरूदत्त भारद्वाज के हाथ में झण्डा था। फिर व्यासजी और उनके पीछे हम लोग चल रहे थे। हमारे आगे भी कुछ लोग थे और पीछे भी कई

लोग थे। हम बीच म थे। गुफा के अपर म तीन आदमी दिखाई दिय। उन्होंने हम कहा कि लौट जाओ। हमारे त्यागी बाबा ने कहा—हम नहीं लौटेंगे। हम आगे बढ़ेंगे। भारत माता की जय। लाठी गोली खायेंगे, गोआ मुक्त कराएंगे आदि के नारे लगाये। ये तीनों आदमी गायब हो गये। अभी नारे बन्द ही नहीं हुए थे कि स्टेनगन से तरर-तरर गोलियाँ चलने लगी। फायर शुरू हो गया। रिपीट फायर आने लगे। गुफा में हड़बड़ी मच गई। लगातार फायरिंग हो रही थी। इतने में भरूदत्त भारद्वाज के पेट की साइड में गोली लगी और वह चक्कर खाने लगा। मेरे बायें कंधे पर एक झटका लगा। मैं व्यासजी का चूकिया पकड़ कर एक दम दीवार के सहारे खड़ा हो गया। मैंने कहा नीचे लमलेट हो जाओ वरना गोली लग जाएगी। एक गोली व्यासजी के दाहिनी बांह से निकल गई। इतने में मैंने देखा—अजमेर वाला साथी रेंगते हुए जा रहा था। उसकी कमर में गोली लगी थी। मैंने कहा—देखलो, यह हालत होगी। व्यासजी ने कहा हिम्मत रखो। हमने देखा कि एक सज्जन के गोली लगने से उनका कंधा गिर गया था। बहुत से लोग रेंगते हुए गुफा से बाहर निकलने लगे। हम लोग गुफा के बाहर आकर दाहिनी ओर खड़े हो गये। बहुत से लोग बाईं तरफ से आकर बायें भाग में खड़े हो गये। बीच में गोलियाँ चल रही थी।'

'व्यासजी कहने लगे—भरूदत्त भारद्वाज, सत्यनारायण रूप और भंवरलाल को देखो। भरूदत्त भारद्वाज गोली लगने से जख्मी हो चुका था। शेष दोनों सुरक्षित थे और गुफा के बाहर खड़े थे। गुफा में वापस जाने पर मैंने देखा कि भरूदत्त भारद्वाज बेहोश पड़ा है। भगवती देवी औरत होते हुए भी हमारे साथ दुबारा गुफा में घुसी थी। हमने भारद्वाज को उठाया और गुफा के बाहर लाये। वहाँ एक आदमी और था। उसने हमारी मदद की। हम लोग फिर गुफा में गये। और भी जख्मी लोगों को बाहर निकाला। कुछ व्यक्तियों ने हमारी मदद की। हमने देखा कुछ लोग मरे पड़े हैं। कुछ जिन्दा ही दीवारों के साथ दुबके हैं और मिलिट्री वाले उन्हें बन्दूकों के कुन्दों से मार रहे हैं। जब उन्होंने हमारे पांवों की आहट सुनी तो फिर फायर किया। हम लोग गुफा से बाहर आ गये। हमने गिना दो लाशें और 61 जख्मी थे। फिर हमने टोटल मिलाया तो हमारे 26 व्यक्ति कम मिले। 7 आदमी गिरफ्तार कर लिये गये थे जिन्हें तीन दिन बाद छोड़ दिया गया। 19 मारे गये। दो की लाशें हमारे सामने थी। कुल 21 लोग मरे थे। धोतियों के स्ट्रेचर बनाकर हम लोग मुर्दों और गंभीर रूप से घायलों को चेक पोस्ट तक लाये। जहाँ इण्डियन पुलिस थी। उन्होंने कहा—हमने आपको पहले ही बता दिया था कि गुफा में मत जाओ पर आप नहीं माने। हमने कहा—यह हमारा फर्ज था। हमने मातृ भूमि का कर्ज उतारा है।

सुप्रसिद्ध श्रमिक नेता श्री कल्याणसिंह व्यासजी के काफी निकटस्थ रहे हैं। व्यासजी ने समय-समय पर मार्गदर्शन, परामर्श एवम् सहयोग देकर बीकानेर में श्रमिक आन्दोलनों को गति दी थी। 1968 में आयोजित एक दिवसीय रेलवे हड़ताल का स्मरण करते हुए श्री कल्याणसिंह ने निम्न विचार व्यक्त किये, पूरे भारतवर्ष में रेलवे हड़ताल का आह्वान किया गया था। उसी क्रम मे 19 सितम्बर 1968 को बीकानेर में भी एक दिवसीय हड़ताल का आयोजन किया गया। उस समय बीकानेर के पुलिस अधीक्षक श्री पी सी मिश्रा थे। व्यासजी के नेतृत्व मे हमने 16 सितम्बर को उनसे मुलाकात की और कहा कि यह केवल प्रतीकात्मक हड़ताल है। अनावश्यक दमन और गिरफ्तारियों से स्थिति बिगड़ सकती है। पुलिस अधीक्षक ने इस सुझाव पर ध्यान नही दिया और सभी महत्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। व्यासजी को तो 17 सितम्बर को ही गिरफ्तार कर लिया गया। अन्य गिरफ्तार लोगों में श्री हीरासिंह और श्री लक्ष्मणसिंह (ए ग्रेड ड्राइवर्स) तथा श्री पूर्णानंद व्यास सम्मिलित थे।

19 तारीख को प्रात 8 बजे ही स्टेशन पर गोली काण्ड हो गया। बाजार बंद हो गये। पूरे नगर में हड़ताल रही। मैं उस समय रतनबिहारी पार्क में कहीं पर भूमिगत था। गोली काण्ड का सुनकर मैं स्टेशन गया। फिर जब मैं हॉस्पीटल की तरफ जाने लगा तो रास्ते में मुझे भी गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय मैं यूनियन का अध्यक्ष था। जब तक मुझे जेल में डाला गया, 4 बज चुके थे। उधर व्यासजी हीरासिंह और लक्ष्मणसिंह ने गोली काण्ड के विरुद्ध भूख हड़ताल कर रखी थी। व्यासजी ने बाहर की स्थिति के बारे मे पूछा। मैंने कहा कि चतुर्भुज शंकर के गोली लगी है, किसनगोपाल शहीद हो चुका है तथा एक रेलवे कर्मचारी की लड़की मंजु सक्सेना के पिण्डली में गोली लगी है। मंजु काफी आक्रामक मुद्रा में थी, उसने एक अधिकारी के थप्पड़ जड़ दिया था। व्यासजी को बहुत गुस्सा आया। उसी समय जेल अधीक्षक के पास गये—कहा मुझे कलेक्टर से बात कराओ। कलेक्टर से बात हुई। व्यासजी ने कहा कि बीकानेर की जनता इस बर्बर अत्याचार को कभी बर्दास्त नही करेगी। उधर बीकानेर के हालात गंभीर हो रहे थे। सरकार ने जाँच के लिए शेरसिंह आयोग की घोषणा करदी। दूसरे दिन एक विराट आम सभा हुई। व्यासजी ने सरकार की नीयत पर अविश्वास प्रकट करते हुए शेरसिंह आयोग को धोखे की संज्ञा दी।'

श्री कल्याणसिंह मानते हैं कि व्यासजी ने ही उनको ट्रेड यूनियन का रास्ता सिखाया था। '1961 में मैं नार्दन रेलवे मैन्स यूनियन वर्कशाप शाखा में कार्यकारिणी का सदस्य बना। व्यासजी का इस शाखा पर प्रभाव था। व्यासजी ने एक बार मेरी

ईमानदारी की परीक्षा भी ली थी। उन्होंने मुझसे कहा कि 'मैं तुम्हें सीमेण्ट के दिनों का परमिट दिला देता हूं। हाथ अच्छी तरह चलेगा। सुखी रहोगे।' उन दिनों सीमेन्ट का बड़ा टिन 5-6 रुपया में आता था। मैंने कहा—व्यासजी, मुझे तो बस, आपका आशीर्वाद चाहिए। कुछ देना ही हो तो ट्रेड यूनियन की शिक्षा दीजिए। व्यासजी बोले—'शाबाश मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। मेरे पास जो भी आता है मैं उसकी भावना देखता हूं। तुम्हारी भावना लालच की नहीं है।'

बाद में व्यासजी ने मुझे हिन्द मजदूर सभा का उपाध्यक्ष बनाया। वे मुझे लड़के के समान मानते थे। उनकी ही कृपा से मैं आज सातों वर्कशापों का अध्यक्ष हूं। सात वर्कशाप हैं—जोधपुर, जगाधरी, अमृतसर, कालका, लखनऊ, आलम बाग और चार बाग। व्यासजी ने रेलवे कर्मचारियों के लिए क्या नहीं किया? उन दिनों चौगूटी से लालगढ़ तक की सड़क नहीं थी। रेलवे कर्मचारियों के बच्चे रेल पटरी के साथ-साथ चलकर अपने घरों से आते-जाते थे। हर समय दुर्घटना का खतरा बना रहता। व्यासजी ने पी डब्ल्यू डी मंत्री राजा हरिश्चन्द्र से मिलकर 27000 रुपया की स्वीकृति पी डब्ल्यू डी को दिलवाई। उसी से यह सड़क बनी।'

संस्मरणों की शृंखला में श्रमिक नेता श्री राधेश्याम गौड़ ने दो घटनाओं का जिक्र किया है। उनके शब्दों में, 'सन् 1958 में हम लोग जेल में थे। जेल में व्यासजी की तबियत कुछ खराब हो गई, मेरा भी स्वास्थ्य ठीक नहीं था अतः हम दोनों को अस्पताल ले जाया गया। दो-चार मजदूर भी हमारे साथ थे। पी बी एम हास्पिटल में भी हमारे हथकड़ियां लगी हुई थी। व्यासजी विधायक थे अतः उनके हथकड़ी नहीं लगाई गई। पीछे-पीछे सिपाही चल रहे थे। जब हम डाक्टर के कमरे से निकले तो एक छोटी सी लड़की ने पीछे से व्यासजी का पल्ला पकड़ा और कहा कि आपको वह स्त्री बुला रही है। मैंने देखा—व्यासजी की पत्नी वहां खड़ी थी। गोदी में बच्चा था जो सीरियस था। उसे डाक्टर को दिखाने के इंतजार में वह वहां खड़ी थी। पत्नी ने कहा—आप तो जेलों में जाते रहते हो—यहां यह बच्चा मौत के मुंह में जा रहा है। मैं दिखाने लाई हूँ। व्यासजी डाक्टर से मिले। बच्चे को भरती करवाया। पत्नी के भोजन की व्यवस्था होटल से करवाई। मैंने कहा—व्यासजी, बच्चा इस कदर बीमार है तो फिर जमानत क्यों नहीं करवा लेते?' व्यासजी बोले—'बच्चे का इलाज तो डाक्टर करेगा। बचेगा तो बचेगा। मैं क्या करूंगा?' मेरी आंखों में आंसू आ गये। व्यासजी बोले—'मैं जेल से तभी छूटूंगा जब सरकार सभी साथियों को छोड़ देगी।'

'1958 में जेल यात्रा के समय व्यासजी विधायक थे अतः उन्हें प्रथम श्रेणी की सुविधा दी जानी थी। व्यासजी ने जेल अधीक्षक से कहा कि वे अन्य साथियों को मिलने वाली

सुविधाएँ ही स्वीकार करेंगे। हम सब थर्ड क्लास के हकदार थे। व्यासजी ने लिख कर दे दिया कि 'मैं स्वेच्छा से थर्ड क्लास में रहना चाहता हूं। ऐसे महान् नेता का भला कौन भूल सकता है?'

इसी संदर्भ में सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री रामेश्वर पांडिया का एक अंतरंग अनुभव उल्लेखनीय है। श्री पांडिया ने उन दिनों को याद करते हुए लिखा है कि 'इन्हीं दिनों मेरी पत्नी बीमार बच्चे को लेकर पी बी एम हास्पिटल डॉक्टर को दिखाने गई थी। डॉक्टर की राय के अनुसार खून की जांच जल्दी से जल्दी होनी जरूरी थी। लगभग 12 बज चुके थे। खून जांच विभाग के लोगों ने उस दिन खून की जांच करने के लिए इन्कार करके दूसरे दिन आने के लिए कहा क्योंकि जांच का समय समाप्त हो चुका था। पत्नी बच्चे को लेकर निराश मन से जब हास्पिटल से बाहर जा रही थी तो अचानक श्री व्यासजी की दृष्टि उन पर पड़ी। व्यासजी ने तुरन्त अपने पुत्र घनश्याम को भेजा और हास्पिटल आने का कारण पूछा। खून जांच न करने की बात को सुनकर बच्चे को अपनी गोद में ले लिया और पुनः अपने साथ खून परीक्षण के कक्ष में ले गये। जांच के लिए खून दिलवाया और मेरी पत्नी को यह कहकर घर भेज दिया कि इस कार्य के लिए आपको दुबारा यहां आने की जरूरत नहीं है। उसी दिन शाम होते-होते जांच की रिपोर्ट हास्पिटल से लेकर घर भिजवादी।'

ऐसे अनेक प्रसंग और संस्मरण हैं जो व्यासजी के अंतरंग जीवन की झांकी प्रस्तुत करते हुए उनके उत्तम मानवीय गुणों को दिग्दर्शित करते हैं। सच बात तो यह है कि व्यासजी का जीवन उन सब के लिए एक प्रतिमान बन गया है जो राजनीति को आदर्शों से जोड़ना चाहते हैं। इसी संदर्भ में पूर्व विधायक श्री रामकिसनदास गुप्ता के विचार उल्लेखनीय है। श्री गुप्ता के अनुसार राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो बीकानेर संभाग में आजादी के बाद के बीस वर्ष मुरलीधर व्यास के माने जाएंगे।'

'साधारण लोगों के मतों से जीतकर उन्होंने लगातार दस वर्षों तक विधानसभा में सत्ता व धन के नशे में चूर तत्कालीन प्रजातांत्रिक राजाओं के समक्ष उनके भ्रष्ट कृत्यों को चौर-चौर के नंगा कर जनता जनार्दन के सामने उन्हें दयनीय स्थिति में खड़ा कर दिया। साथ ही जनता के अभाव अभियोगों को अपनी ओजस्वी हुंकार से विधानसभा में रखकर विधायक के दायित्व का सफलता पूर्वक निर्वाह भी किया।

'मुझे आज भी याद है। जब मुझे सन् 1977 में विधायक के रूप में राजस्थान विधानसभा में बोलने का अवसर मिला तब विधानसभा के कई कर्मचारियों और दर्शकों ने कहा कि, 'अच्छा, आप मुरलीधर जी के शहर से आये हैं, तब ही विधानसभा के हॉल को गुंजा रहे हैं, हिला दे रहे हैं। आपने तो व्यासजी की याद दिला दी है।'

'मैंने विधान सभा से लेकर सचिवालय तक व आम सड़कों पर लोगों को व्यासजी का नाम इज्जत के साथ लेते हुए सुना है। आम लोगों द्वारा आज भी बीकानेर में राजनीतिक कार्यकर्ताओं की जाच-परख व्यासजी के व्यक्तित्व और योगदान को ही मद्देनजर रख कर की जाती है। वास्तव में व्यासजी राजनीतिक पैमाना बन गये हैं।'

बीकानेर में व्यासजी के राजनीतिक जीवन के प्रथम दशक में श्रम आन्दोलनों तथा विधि प्रकरणों में सक्रिय सहयोग देने वाले सुप्रसिद्ध एडवोकेट श्री जयचंद लाल नाहटा ने संस्मरण के रूप में ये विचार व्यक्त किये हैं—'स्व श्री मुरलीधरजी के साथ मुझे भी कार्य करने का अवसर मिला। सन् 1956 में जामसर में जिप्सम कंपनी वालों ने मजदूरों पर भयंकर अत्याचार किये एवम् सैंकड़ों मजदूरों को नौकरी से भी निकाल दिया था। उस समय श्री मुरलीधरजी समाजवादी नेता के रूप में आगे आये एवं उन्होंने बीकानेर, जयपुर एवं दिल्ली तक लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में मैं उनके साथ था। श्री व्यासजी को इसमें पूर्ण सफलता मिली और उसके परिणाम स्वरूप बीकानेर के मजदूर वर्ग में जबरदस्त चेतना आई। स्व श्री मुरलीधरजी एक सच्चे जननेता थे।

व्यासजी के जीवन से सक्रिय रूप से जुड़े हुए कुछ नेताओं का स्मरण करना समीचीन होगा। इन नेताओं में कर्पूरी ठाकुर, बांका बिहारी, राजवंत सिंह, सेठ गोविंददास और गेंदासिंह आदि सम्मिलित हैं। अन्य राजनीतिक नेताओं एवं कार्यकर्ताओं में महारानी गायत्री देवी, परमानंद त्रिपाठी, चौधरी रामचंद्र, बंशीलाल एडवोकेट, भाई भगवान, चौधरी राजेन्द्रसिंह, परसराम त्रिवेदी, शान्ति त्रिवेदी (उदयपुर), परमानंद त्रिपाठी (भीलवाड़ा), रामचन्द्र सक्सेना (बूंदी), माणकलाल ठाकुर (ननवां), मिश्रीलाल (निवाहेड़ा), प्रदीप बोस (कलकत्ता), प्रकाश पुरोहित (पॉपूलर), नवनीत पालीवाल (नाथद्वारा), सूर्यनारायण व्यास, शकुन्तला देवी (श्रीमती कल्याणसिंह), डा राजनारायण व्यास एवं कुशलसिंह (चूरू) आदि अनेक नाम गिनाये जा सकते हैं।

ग्रंथ का समाहार सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिंतक श्री हरीश भादानी के शब्दों से किया जा रहा है। उनके अनुसार 'स्व मुरलीधर व्यास के राजनैतिक कार्यकलाप की अलग पहचान बनाने के कई कारण रहे। सबसे पहले तो यह कि गांधी विचार और पद्धति से प्रभावित होकर भी कम पक्ष का जहां तक सम्बन्ध रहा, वे कांग्रेस में चलते आ रहे समाजवादी चिंतकों—आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण और डा राममनोहर लोहिया से अधिक प्रभावित रहे। अलग पहचान का दूसरा और अहम् कारण उनका अपना राजनैतिक कार्य क्षेत्र अमरावती-अकोला हिंगनघाट-वर्धा में दीक्षित होकर उन्होंने अपने राजनैतिक कार्य के लिए सामंती क्षेत्र को चुना। निश्चित रूप से परिस्थितियों का सही अनुमान करते हुए मुरलीधर व्यास ने बीकानेर को अपना राजनीतिक कार्य क्षेत्र बनाया। और विरोधी दल के रूप में समाजवादी दल की पहल मुरलीधर व्यास ने ली।' □

सदर्भ सूची

'मैंने विधान सभा स लेकर सचिवालय तक व आम सडको पर लोगो को व्यासजी का नाम इज्जत के साथ लेते हुए सुना है। आम लोगो द्वारा आज भी बीकानेर म राजनीतिक कायकताओ की जाच परख व्यासजी के व्यक्तित्व और योगदान को ही मद्देनजर रख कर की जाती है। वास्तव म व्यासजी राजनीतिक पमाना बन गये है।'

बीकानेर म व्यासजी के राजनीतिक जीवन के प्रथम दशक म श्रम आन्दोलना तथा विधि प्रकरणा म सक्रिय सहयोग देने वाले सुप्रसिद्ध एडवोकेट श्री जयचद लाल नाहटा ने सस्मरण क रूप म ये विचार व्यक्त किय ह—'स्व श्री मुरलीधरजी क साथ मुझे भी काय करन का अवसर मिला। सन् 1956 म जामसर म जिप्सम कपनी वालो ने मजदूरा पर भयकर अत्याचार किये एवम् सैकडा मजदूरो को नौकरी से भी निकाल दिया था। उस समय श्री मुरलीधरजी समाजवादी नेता क रूप म आगे आये एव उ हान बीकानर, जयपुर एव दिल्ली तक लडाई लडी। इस लडाई म मैं उनके साथ था। श्री व्यासजी को इसम पूण सफलता मिली और उसके परिणाम स्वरूप बीकानर क मजदूर वग में जबरदस्त चेतना आई। स्व श्री मुरलीधरजी एक सच्चे जननता थे।'

व्यासजी के जीवन स सक्रिय रूप स जुडे हुए कुछ नेताओ का स्मरण करना समीचीन होगा। इन नेताओ मे कर्पूरी ठाकुर, बाबा विहारी, राजव त सिंह, सेठ गोवि ददास और गेदासिंह आदि सम्मिलित हैं। अ य राजनीतिक नेताओ एव कायकर्ताओ म महारानी गायत्री देवी, परमान द त्रिपाठी, चौधरी रामच द्र, बशीलाल एडवाकेट, भाई भगवान, चौधरी राजेद्रसिंह, परसराम त्रिवेदी, शाति त्रिवेदी (उदयपुर), परमानद त्रिपाठी (भीलवाडा), रामच द्र सक्सना (बूदी), माणक्लाल ठाकुर (ननवा), मिश्रीलाल (निंवाहेडा), प्रदीप दास (कलकत्ता), प्रकाश पुरोहित (पापूलर), नवनीत पालीवाल (नाथद्वारा), सूयनारायण व्यास, शकुन्तला देवी (श्रीमती कल्याणसिंह), डॉ राजनारायण व्यास एव कुशलसिंह (चूरू) आदि अनेक नाम गिनाय जा सकते हैं।

ग्रथ का समाहार सुप्रसिद्ध साहित्यकार एव चिन्तक श्री हरीश भादानी क श दो स किया जा रहा है। उनक अनुसार 'स्व मुरलीधर व्यास के राजनतिक कायकलाप की अलग पहचान बनान के कई कारण रह। सबस पहले तो यह कि गांधी विचार और पद्धति स प्रभावित होकर भी वम पक्ष का जहाँ तक सम्ब ध रहा, व कांग्रेस म चलत आ रह समाजवादी चितका—आचाय नर द्र दव, जयप्रकाश नारायण और डॉ राममनोहर लोहिया स अधिक प्रभावित रहे। अलग पहचान का दूसरा और अहम् कारण उनका अपना राजनैतिक काय क्षेत्र अमरावती-अकोला हिंगनघाट-वर्धा म दीक्षित होकर उ होन अपन राजनतिक काय क लिए सामती क्षेत्र को चुना। निश्चित रूप म परिस्थितियो का सही अनुमान करत हुए मुरलीधर व्यास न बीकानर को अपना राजनीतिक काय क्षेत्र बनाया। और विरोधी दल क रूप म समाजवादी दल की पहल मुरलीधर व्यास न की।' ☐

सदर्भ सूची

ओ, औ

क

ख

ग

त

द

ध

न

प

म

र



भवानी शकर व्यास विनोद'

जन्मतिथि
11 अगस्त 1935 (आश्विन शुक्ला सप्तमी वि स 1992)
जन्म स्थान
बीकानेर
शिक्षा
एम ए (अंग्रेजी साहित्य) बी एड विशारद
(हिन्दी साहित्य सम्मलन प्रयाग)
लेखन प्रकाशन
कविता ललित निबन्ध समीक्षा एवम् बाल साहित्य पर
अनेक पुस्तकों का प्रकाशन
सम्पादन
रैपिड रीडर कक्षा एकादश (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान
अजमेर) बीकानेर पचशती स्मारिका आदि
आलेख प्रकाशन
प्रतिष्ठित शैक्षिक पत्रिकाओं में अनेक आलेखों का प्रकाशन
परिभ्रमण
कवि सम्मेलनों में भाग लेने हेतु पजाब राजस्थान गुजरात
महाराष्ट्र दिल्ली उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश पश्चिम बगाल
आन्ध्र प्रदेश एव तमिलनाडु में अनेक नगरों का भ्रमण।
सचालन
राष्ट्रीय एव राज्य स्तरीय विविध सम्मेलनों एव गोष्ठियों
का सचालन
प्रसारण
अनेक रेडियो वार्ताओं का प्रसारण
सम्मान
राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार (1974)
सम्प्रति
वरिष्ठ सम्पादक विभागीय प्रकाशन (सेवानिवृत्त व्याख्याता) (शिविरा नया शिक्षक)
शिक्षा निदेशालय बीकानेर
सम्पर्क
1 स 9 एम्प्लॉयमेंट ब्लॉक? अध्यासन बड बीकानेर